विषय-सूची

पूर्वालंकृत प्रकरण ।

(१६८१-१७९०)

अट्ठारहवाँ अध्याय ।

पूर्वालंकृत हिन्दी ।

महात्मा सूरदास और तुलसीदास का समय हिन्दी साहित्य
लिए जैसा गौरव-पूर्ण हुआ था, यह हम ऊपर देख चुके हैं ।
का विषय है कि गोस्वामीजी के पीछे देवजी पर्यन्त यह
य कविता के लिए और भी अधिक महत्त्व का हुआ । उस
के साथ उत्तम तथा परिपक्व भाषा का जन्म हुआ था और
ही ने अभूतपूर्व सर्वांगपूर्ण चमकती हुई कविता का मुख
तो भी शैशवावस्था और यौवनावस्था में अन्तर होना
ही है । इसी नियमानुसार इस काल की भाषा अधिक
।

मय एक अनहोनी सी यह भी हुई कि चिर काल से
और विमर्दित हिन्दू जाति ने फिर से सिर उठाया
ताब्दियों से विजयी यवनों का साम्राज्य बिगड़ते
न ही हो गया । इसी काल में महाराजा शिवा जी ने
गोलकुंडा और दिल्ली को विमर्दित कर के विशाल

महाराष्ट्र राज्य स्थापित किया, इसी काल में महाराजा ज
वन्तसिंह ने हिन्दूपन के भाव को जागृत करके मुग़लों
सेवा करते हुए भी खुल्लमखुल्ला कई बार औरङ्गज़ेब की ज़ुकँदी
शिवा जी से मिल कर शाइस्ता ख़ाँ की दुर्गति करा डाली,
काल में महाराणा राजसिंह ने मुग़लों की अधीनता को
मार कर छ प्रचंड युद्धों में स्वयं औरङ्गज़ेब को पराजित कि
इसी काल में जसवन्तसिंह के मर जाने पर भी शूरशिरो
राठौरों ने ३० वर्षों तक मुगलों से घोर युद्ध कर के अपने बा
महाराज अजीतसिंह तथा माड़वार राज्य की रक्षा की,
काल में चम्पतिराय ने अपने प्रभाव से सारे बुँदेलखंड को दं
मान करके मुगलो को हिला दिया, इसी काल में महाराजा
साल ने केवल ५ सवार और २५ पैदलों के ही सहारे से
आरम्भ कर के मुग़लों का सामना किया और धीरे धीरे वि
पर विजय प्राप्त करते हुए अन्त में दो कोटि वार्षिक आ
विशाल राज्य बुँदेल खंड में और उसके आस पास सस्थापित
दिया, और इसी अनुपम काल में शौर्य्यमूर्ति बाला जी विश्वनाथ
बाजीराव पेशवा ने मुग़ल साम्राज्य को चकनाचूर कर भारत
५०० वर्षों से खोये हुए आर्य्यसाम्राज्य को फिर से स्थापित कि

ऐसे दर्पपूर्ण प्रतिभाशाली सुकाल में साहित्य की
दोन्नति परम स्वाभाविक थी और वह हुई भी। सूर और
दास के समय में जैसे कृष्ण और राम भक्ति की ध
उमड कर उत्तरी भारत को पुनीत किया था प्रक
भूषण और देव वाले काल में उत्साह डी

और वीर रस ने हिन्दी-साहित्य को एक बार कुछ समय के लिए मारोही कर के छत्रमुकुट से सुशोभित कर दिया, माना यह क्षात् दीपक राग का प्रतिरूप बन गया। और काल के पीछे सीदास के समय जो विविध विषय-वर्णन की परिपाटी चली थी, उसने और भी पुष्टि पाई और हिन्दी को सैकड़ों विषयों की पुस्तकों से सर्वांगपूर्ण बनाया। उस काल ने नवरत्नों में तीन रत्न उत्पन्न किये तो इस ने चार प्रकट करके दिखला दिये। नव रत्नों के अतिरिक्त उत्तम कवियों की संख्या इस काल में बहुत अधिक पाई जाती है। वास्तव में प्रथम कक्षा के इतने कवि किसी अन्य समय में नहीं देख पड़ते।

भक्त-शिरोमणि प्राणनाथ, सुन्दरदास, गुरु गोविन्दसिंह, ध्रुव-स आदि ने इसी समय को पुनीत किया। महात्मा प्राणनाथजी पन्ना में रह कर समस्त बुँदेलखंड पर बड़ा विशद प्रभाव ला और एक नया पन्थ ही स्थापित कर दिया। सुन्दरदास ने दू पन्थ को उन्नत किया। गुरु गोविन्द सिंह जी ने भक्ति को र्य से मिला कर सिक्खों में जातीयता का बीज बोया और सिक्ख ाल राज्य की नींव डाली। यदि यह महात्मा संसार में न हो होता, तो महाराजा रणजीतसिंहजी को एक ही शताब्दी पीछे ा विस्तृत साम्राज्य स्थापित करने का सौभाग्य कभी न प्राप्त । इस महात्मा ने हिन्दी-कविता भी बढ़िया की है।

महाराजा जसवन्तसिंह, तत्पुत्र महाराजा अजीतसिंह (दोनों रुन्ने‍ा ही हैं) [illegible]राजा राजसिंह, महाराजा छत्रसाल (बुँदेल [illegible]लकुंडा के) राजा बुद्धसिंह (बूँदीनरेश) और महा

राजा नागरीदासजी (कृष्णगढ़-नरेश) इस देदीप्यमान प्रसिद्ध कवि ग्रैार कवियों के कल्पवृक्ष हो गये हैं। महाराजा बन्तसिंह का बनाया हुआ "भाषा भूषण" अब तक अलंकार जि सुर्यों के गले का हार हो रहा है। वे लोग प्रायः यह ग्रन्थ ग्रैार कुल कंठाभरण के ही अलंकार समझने के लिए पढ़ते हैं। राजसिंह की भी कविता अच्छी होती थी। मान कवि ने के यहाँ आश्रय पाकर इनके चरित्रवर्णन में राजविलास नाम विशाल ग्रन्थ बनाया, जो नागरी-प्रचारणी ग्रन्थ माला में है। महाराजा छत्रसाल की कविता ऐसी मनोहर होती थी, जै कि सुकवियों की होती है। इनका एक ग्रन्थ बुँदेलखण्ड में एक ध के पास वर्तमान है, परन्तु वह उसे किसी के दिखाता भी नहीं महाराज ऐसे गुणग्राहक थे कि इतने बड़े राजा होने पर भी इन्ह एक बार भूषण की कविता से प्रसन्न हो कर उनकी पालकी डंडा अपने कन्धे पर रख लिया था। लाल कवि ने इन्हीं के य कीर्त्तन में प्रसिद्ध ग्रन्थ छत्रप्रकाश बनाया। इनके दरबार सैकड़ों कविगण जाते ग्रैार आदर पाते थे। भूषण ग्रैार हरि समान उद्दंड सत्कवि, नेवाज जैसे शृंगारी, ग्रैार लाल केऐसे प्रासंगिक प्रबल लेखक, सभी इस पारिजात की उदारता के हैं। जितने सत्कवियों की बनाई हुई इस महाराजा की प्रशंसा मि है, उनके आधे भी सरस्वती सेवियों ने किसी भी राजा की विरदावली का गान नहीं किया है। एक ग्रैार भी बात है कि इन्होंने प्रायः परमोत्तम कवियों का ही विशेष मान जिस से इन की साहित्यपटुता प्रकट होती है। राव

द्धसिंह भी कवियों के प्रसिद्ध आश्रयदाता थे। महाकवि मतिराम इन्हीं के यहाँ रहते थे, और भूषण तथा कवीन्द्र ने भी इन की प्रशंसा के छन्द कहे हैं। यह भी उत्कृष्ट कवि और गुणग्राहक थे। महाराजा नागरीदास के विषय में यहाँ कुछ कहना व्यर्थ है। इनके साहित्य और गुणों का वर्णन इस अध्याय में यथा स्थान कुछ विस्तृत रूप से मिलेगा। महाराजा शिवा जी ने भी भूषण ऐसे प्रसिद्ध कवि को आश्रय देकर अपनी गुणग्राहकता दिखाई। जैपुर के महाराजा जयसिंह ने बिहारीलाल का समादर किया था। इन महाराजाओं के अतिरिक्त अन्य राजा महाराजाओं ने भी कवियों को आश्रय दिया, जिसका वर्णन उन कवियों के साथ मिलेगा। इन में शाहजहाँ, औरङ्गजेबात्मज आजम शाह, अकबर अलीख़ाँ, कुमरुद्दीन ख़ाँ आदि मुसलमान महाशय भी परिगणित हैं।

भाषा-साहित्य के आचार्य भी इस काल में बहुत हो गये, जिन में देव, भूषण, मतिराम, चिन्तामणि, श्रीपति, कवीन्द्र, महाराजा जसवन्तसिंह, सूरति मिश्र, रसलीन, कुलपति और सुखदेव मिश्र प्रधान हैं। सबल कविता करने वालों में इस काल के बैताल, लाल, भूषण और हरिकेश अगुआ हैं, और प्रेमियों में नेवाज, शेख़ और आलम मुख्य माने जाते हैं। घाघ ने मोटिया नीति ग्रामीण भाषा में कही है। गद्य काव्य सूरति मिश्र ने रची, और कृष्ण तथा सूरति से टीकाओं की प्रणाली फिर से चलती है। उर्दू और फ़ारसी के तलाज़मे यदि हिन्दी में कहीं पाये जाते हैं, तो बिहारी आदि में। देव जी ने तो मानों सभी कुछ कहा और भाषा की यह अभूत पूर्व उन्नति की, जो दर्शनीय है। जैसी सोहावनी

भाषा का प्रयोग देव और मतिराम ने किया है वैसी हिन्दी किसी काल वाले किसी कवि ने नहीं लिख पाई।

इस समय अन्य विषयों के अतिरिक्त शृंगार काव्य ने बहुत उन्नति की और नायिका भेद के ग्रन्थ बनाने की परिपाटी सी पड़ गई। अलंकार, षट्ऋतु आदि के ग्रन्थों एवं रीति की पुस्तकों में भी शृंगार रस का ही महत्त्व क्रमशः होगया। यद्यपि इस काल में शौर्य्य का प्राधान्य भारतवर्ष में रहा और अच्छा समय था कि कवियों का चित्त शृंगार से उचट कर वीर काव्य में लग जाता, पर शृंगार कविता की नींव हिन्दी में ऐसी दृढ़ हो चुकी थी कि वीर कविता के होने पर भी कवियों एवं उनके आश्रयदाताओं का ध्यान शृंगार की ओर से न हटा और वीर एवं शृंगार दोनों रसों की कविता अब भी पूर्ण रीति से होती रही। इस समय भारत में बहुत से वीर पुरुष वर्त्तमान थे। उनके प्रोत्साहन से वीर कविता ने अच्छा आदर पाया और शौर्य्य वर्णन के ग्रन्थों की मात्रा-वृद्धि भी ख़ूब हुई, पर इसके पीछे देश में कादरता बहुत बढ़ी, सो कुछ दिनों में वीर-ग्रन्थों का मान अच्छा न रहा। इस कारण ऐसे बहुत से ग्रन्थ नष्ट हो गये और बहुत से जहाँ के तहाँ दबे पड़े हुए हैं। यही कारण है कि हिन्दी में वीर-ग्रन्थों का बाहुल्य होते हुए भी वह बहुधा देखने में नहीं आते और शृंगार ग्रन्थों से ही भाषा-कविता भरी हुई जान पड़ती है।

प्रौढ़ माध्यमिक काल में प्राचीन दबी हुई कथा-प्रासंगिक प्रणाली की उन्नति न हुई। इसके आदि में स्वयं सूरदास, कुतबन, एवं जायसी ने कथायें कहीं, पर अन्य किसी सुकवि ने ऐसा न किया। पीछे से नरोत्तमदास, तुलसीदास एवं केशवदास ने कथा-

प्रासंगिक ग्रन्थ रचे, परन्तु किसी अन्य सुकवि का ध्यान इस ग्रोर न गया । इन कथाओं में मुसलमान कवियों ने ते साधारण विषयों का आदर किया, परन्तु शेष कवियों ने राम या कृष्ण को ही प्रधान रक्खा । उस समय के बहुत से भक्त सुकवियों ने विशेषतया कृष्ण-भक्ति-पूर्ण स्फुट छन्दों एवं पदों ही पर सन्तोष किया ।

इस पूर्वालंकृत काल में भक्तिपूर्ण कथा प्रासंगिक साहित्य में कनता हुई ग्रोर केवल छत्र तथा सबलसिंह ने महाभारत का कथन किया, परन्तु इन ग्रन्थों में भी भक्तिप्रचुरता नहीं पाई जाती। सेनापति एवं देव ने भी कुछ कुछ कथाप्रसङ्ग चलाया है, परन्तु उन्होंने कथा का डोर इतना पतला, तथा कोरे काव्योत्कर्ष पर इतना अधिक ध्यान रक्खा है कि उन्हें कथा-प्रासंगिक कवि कहना नहीं फबता । सुकवियों में धर्म से सम्बन्ध न रखने वाली कथायें नेवाज, लाल, एवं सूरति ने कहीं । से इस समय में कथा-प्रसङ्ग का विशेष बल नहीं हुआ, परन्तु फिर भी लाल के होते हुए यह विभाग हीन नहीं कहा जा सकता । धर्मप्रचारकों में इस काल केवल स्वामी प्राणनाथ एवं गुरु गोविन्दसिंह थे, से धर्म-चर्चा का भी बाहुल्य न था । भक्त कवियों में सुन्दर, ध्रुवदास, नागरीदास एवं सेनापति प्रधान थे । इन नामों से प्रकट है कि इस समय भक्ति कविता का प्राधान्य बिल्कुल न था, ग्रोर शृङ्गार तथा वीर रसों ही ने साहित्य पर पूरा प्रभाव डाला ।

इस काल का सर्वप्रधान गुण यह है कि इस के कवियों ने भाषा को अलंकृत करने में पूरा बल लगाया । प्रौढ़ माध्यमिक काल में भाषा भलीभांति परिपक्व हो चुकी थी, अतः पूर्वालंकृत

काल में कवियों ने हिन्दी को भाषा-सम्बन्धी आभरणों से सुसज्जित करना आरम्भ किया। इस प्रकार भाषा श्रुतिमधुर एवं सुष्ठु होने लगी। फिर भी ये कविगण भाव बिगाड़ कर भाषा लालित्य लाने का प्रयत्न नहीं करते थे।

सारांश यह कि इस काल में भाषा अलंकृत हुई, वीर एवं शृङ्गार की वृद्धि रही, आचार्यता में परिपक्वता आई, भक्ति एवं कथा-प्रसंग शिथिल पड़े और काव्योत्कर्ष की सन्तोषदायक उन्नति हुई। यह समय हिन्दी के लिए बड़े गौरव का हुआ।

उन्नीसवाँ अध्याय।

(२७८) महाकवि सेनापति।

(१६८१)

महात्मा तुलसीदास के पीछे हिन्दी में छः महाकवि थोड़े ही समय में हुए, अर्थात् सेनापति, बिहारीलाल, भूषण, मतिराम, लाल, और देव। इन सत्कवियों की पीयूषवर्षिणी वाणी ने हिन्दी जानने वाले संसार को पूर्णतया आप्यायित कर दिया और हिन्दी भंडार को ख़ूब परिपूर्ण किया। इनमें से सेनापति और लाल प्रथम श्रेणी के कवि हैं और शेष चार तो नवरत्न में परिगणित हुए हैं। हिन्दी-कविता के लिए इतने गौरव का कोई अन्य समय कठिनता से ठहरेगा। इस अध्याय में हम इन्हीं कवियों में से प्रथम का वर्णन कुछ विस्तार के साथ करते हैं।

सेनापति दीक्षित कान्यकुब्ज ब्राह्मण परशुराम के पौत्र और गंगाधर के पुत्र थे। इनके गुरु का नाम हीरामणि था। सेनापतिजी गंगातट के वासी थे। जान पड़ता है कि इनका जन्म संवत् १६४६ के इधर उधर हुआ होगा। इन्हों ने अपना कवित्तरत्नाकर नामक ग्रन्थ संवत् १७०६ में सम्पूर्ण किया। इस ग्रन्थ में इन्होंने लिखा है कि मेरे केश श्वेत हो गये हैं, मैं बुड्ढा हो गया हूँ और अब चाहता हूँ कि इस असार संसार को छोड़ कर कृष्णानन्द में मगन रहूँ और ब्रज के बाहर न निकलूँ। इससे विदित होता है कि ये उस समय साठ वर्ष से कम न होंगे। इसी के पीछे यह क्षेत्र-संन्यास ले कर वृन्दावन में रहने लगे। क्षेत्र-संन्यास का यह भी अर्थ है कि संन्यासी अपने निवासस्थान के बाहर न जावे। अतः विदित होता है कि यह महाकवि अपनी इच्छा को पूर्ण रूप से प्राप्त करने में समर्थ हुआ था। इनके मृत्यु-संवत् का हमें कोई पता नहीं लगा। ये महाराज पूर्ण कवि होने के अतिरिक्त पूरे भक्त भी थे। इनके निर्मल चरित्र और ऊँचे एवं विशुद्ध विचार औरों को उदाहरण-स्वरूप हैं। सूरदास और तुलसीदास जी की भाँति सेनापति भी पूरे ऋषि थे।

शिवसिंहजी ने लिखा है कि इनका 'काव्यकल्पद्रुम' नामक एक ग्रन्थ है और हज़ारा में इनके बहुत से छन्द मिलते हैं। हमारे पास काव्यकल्पद्रुम एवं हज़ारा नहीं हैं, परन्तु पंडित युगुलकिशोर मिश्र के पुस्तकालय में इनका 'कवित्तरत्नाकर' नामक ग्रन्थ वर्त्तमान है, जो इस समय हमारे पास उपस्थित है। पंडित नकछेदी तिवारी ने सेनापति के एक तृतीय ग्रन्थ षट्-ऋतु का नाम लिखा

है, परन्तु यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है, वरन, कवित्तरत्नाकर का एक तरंग मात्र है।

कवित्तरत्नाकर का संवत् सेनापति ने यों लिखा है:—

सम्वत् सत्रह सै छ मैं सेइ सिया पति पाय।
सेनापति कविता सजी सज्जन सजी सहाय॥

इस ग्रन्थ में पाँच तरंग हैं। प्रथम में ९४ छंद हैं और उसमें श्लेष कविता तथा रूपकों का कथन है। द्वितीय तरंग में ७४ छन्दों द्वारा शृंगार रस की कविता है, एवम् तृतीय में ५६ छन्दों द्वारा षटऋतु का वर्णन किया गया है। चतुर्थ तरंग में ७६ छंद हैं और उसमें रामायण का विषय वर्णित है तथा पंचम तरंग में ५७ छन्दों द्वारा भक्ति और शेष २७ छन्दों द्वारा चित्र कविता कही गई है। सेनापतिजी ने निम्न छन्दों द्वारा अपना परिचय दिया है और अपनी कविता की प्रशसा भी की है:—

दीक्षित परशुराम दादो है विदित नाम
जिन कीने यज्ञ जाकी जग में बड़ाई है।
गंगाधर पिता गंगाधर के समान जाके
गंगातीर वसति अनूप जिन पाई है॥
महा जान मनि विद्या दान हूते चिंतामनि
हीरामनि दीक्षित ते पाई पंडिताई है।
सेनापति सोई सीतापति के प्रसाद जाकी
सब कवि कान दै सुनत कविताई है॥

मूढ़न को अगम सुगम एक ताको जाकी
तीखन विमल विधि बुद्धि है अथाह की।
कोई है अभंग कोई पद है सभंग
सोधि देखे सब अंग सम सुधा परवाह की॥
ज्ञान के निधान छंद कोप सावधान
जाकी रसिक सुजान सब करत हैं गाहकी।
सेवक सियापति को सेनापति कवि सोई
जाकी द्वै अरथ कविताई निरबाह की॥

दोष सों मलीन गुनहीन कविताई है
तौ कीने अरबीन परबीन कोई सुनि है।
बिनुही सिखाए सब सीखिहैं सुमति
जोपै सरस अनूप रस रूप या मैं धुनि है॥
दूषन को करिको कबित्त बिनु भूषन को
जोकरै प्रसिद्ध ऐसो कौन सुर मुनिहै।
राम अरचतु सेनापति चरचतु दोऊ
कबित रचतु याते पद चुनि चुनि है॥

राखति न दोषै पोषै पिंगल के लच्छन को
बुध कबि के जो उपकंठहि बसति है।
जोपै पद मन को हरख उपजावत है
तजै को कुनरसै जो छंद सरसति है॥
अच्छर हैं बिसद करत ऊखै आपुस मैं
जाते जगती की जड़ताऊ बिनसति है।

मानौ छबि ताकी उदयत सविता की
सेनापति कवि ताकी कविताई विलसति है ॥
तुकनि सहित भले फल को धरत सूधे
दूरि को चलत जे हैं धीरजिय ज्यारी के।
लागत विविधि पच्छ सोहत हैं गन संग
श्रवन मिलत मूठि कीरति उज्यारी के ॥
सोई सीस धुनै जाके उर मैं चुभत नीके
वेगि बिधि जात मन मोहि नरनारी के।
सेनापति कवि के कवित्त विलसत अति
मेरे जान बान हैं अचूक चापधारी के ॥
बानी सौं सहित सुबरन मुँह रहै जहाँ
धरत बहुत भाँति अरथ समाज को।
संख्या करि लीजै अलंकार हैं अधिक या मैं
राखौ मति ऊपर सरस ऐसे साज को ॥
सुनौ महाजन चोरी होति चारि चरन की
ताते सेनापति कहै तजि उर लाज को।
लीजियो बचाइ ज्यों चुरावै नाहिँ कोई सौंपी
वित्त कीसी थाती मैं कवित्तन के ब्याज को ॥

"सेनापति बरनौ है बरखा सरद रितु मूढ़न को अगम सुगम परवीन को"।

शिवसिंहजी निम्न वाक्यों द्वारा सेनापति जी की प्रशंसा करते हैं.—"काव्य में इनकी प्रशंसा हम कहाँ तक करैं अपने समय के भानु थे"।

ये छन्द देखने से जान पड़ता है कि इन्होंने अपनी कविता की बहुत बड़ी प्रशंसा कर डाली है, परंतु हमारा मत है कि इनकी प्रायः कुल दर्पोक्तियों से भी इनकी पूरी प्रशंसा नहीं हो सकी है। इनको कविजन केवल इसी कारण बहुत कम जानते हैं कि इन्हों ने चोरी हो जाने के डर से अपनी कविता छिपा डाली थी और इनका कोई भी ग्रंथ अब तक मुद्रित नहीं हुआ।

सेनापति की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है, परंतु दो एक छन्दों में इन्होंने प्राकृत मिश्रित भाषा भी कही है। इनकी कविता में मिलित वर्ण बहुत ही कम आने पाये हैं और उसमें अनुप्रास व यमक का बाहुल्य है। ऐसी उत्तम भाषा सिवा बड़े बड़े कवियों के और कोई लिखने में समर्थ नहीं हुआ। इनकी भाषा का उदाहरण-स्वरूप एक छंद नीचे लिखा जाता है।

दामिनी दमक सुर चाप की चमक स्याम
　　घटा की घमक अति घोर घन घोरते।
कोकिला कलापी कल कूजत हैं जित तित,
　　सीतल है हीतल समीर झकझोरते॥
सेनापति आवन कह्यो है मनभावन
　　लगो है तरसावन विरह जुर जोर ते।
आयो सखि सावन विरह सरसावन
　　सु लागो बरसावन सलिल चहुँ ओर ते॥

सेनापति जी को रूपकों से विशेष प्रेम था। इनकी रचना में जहाँ देखिए वहाँ रूपक बाहुल्य है।

ये उपमायें भी अच्छी ओज ओज कर कहते थे। इनको श्लेष कविता बहुत प्रिय थी और इनके उदाहरण ग्रंथ में हर जगह प्रस्तुत हैं। उत्तम उपमा के उदाहरण स्वरूप तृतीय तरंग के छंद नं० २८ तथा ३५ एवं चतुर्थ तरंग का छन्द नं० २९ द्रष्टव्य है।

इनका षटऋतु बहुत ही चित्ताकर्षक बना है। इसको इन्हों ने केवल उद्दीपन का मसाला न बनाकर इसमें प्राकृतिक शोभा का बड़ा विलक्षण वर्णन किया है और एक अध्याय भर में इसी का समा बँधा है। भाषा काव्य में प्रकृति-वर्णन का कुछ कुछ अभाव सा देख पड़ता है, परन्तु सेनापति जी ने इस अभाव को पूर्ण करने का अच्छा प्रयत्न किया है। इनके प्राकृतिक वर्णन बहुत ही सुघर और अनूटे होते हैं। हमारे मत में देव को छोड़ भाषा के किसी कवि ने षटऋतु का ऐसा विशद वर्णन नहीं किया है। उदाहरणार्थ दो छंद ग्रीष्म और वर्षा के लिखते हैं। इनकी कविता में उद्दण्डता का भी प्रधान गुण है। उस में प्रत्येक स्थान पर इनकी आत्मीयता झलकती है। आपने प्रायः कहीं भी किसी दूसरे का असाधारण भाव नहीं ग्रहण किया और न किसी संस्कृत श्लोक का ही उलथा या भाव लिया है। इनकी कविता इन्हीं की कविता है और सत्र इन्हीं के मस्तिष्क से निकली है।

उदाहरण।

बालि को सपूत कपिकुल पुरहूत रघुबीर
जू को दूत धरि रूप बिकराल को।

युद्ध मद गाढ़ो पाउँ रोपि भयो ठाढ़ो
सेनापति बल बाढ़ो रामचंद भुवपाल को ॥
कच्छप कहलि रह्यो कुंडली टहलि रह्यो
दिग्गज दहलि त्रास परो चक चाल को ।
पाँव के धरत अति भार के परत भयो
एक ही परत मिलि सपत पताल को ॥

वृष को तरनि तेज सहसौ करनि तपै
ज्वालनि के जाल बिकराल बरसत है ।
तचति धरनि जगु झुरतु झुरनि सीरी
छाँह को पकरि पंथी पंछी बिरमत है ॥
सेनापति नेक दुपहरी ढरकत होत
धमका बिषम जो न पात खरकत है ।
मेरे जान पौन सीरे ठौर को पकरि कोनौ
घरी एक बैठि कहूँ घामै बितवत है ॥

सेनापति उनए नए जलद सावन के
चारि हू दिसान घुमरत भरे तोय के ।
सोभा सरसाने न बखाने जात केहू भांति
आने हैं पहार मनौ काजर के ढोय कै ॥
घन सों गगन छप्यो तिमिर सघन भयो
देखि न परत मानौ गयो रवि खोय कै ।
चारि मास भरि स्याम निसा को भरम मानि
मेरे जान याही ते रहत हरि सोय कै ॥

बिना षट ऋतु का पूरा वर्णन पढ़े उसका ठीक अनुभव नहीं हो सकता।

उद्दण्डता के साथ ही साथ सेनापति ने अपनी रचना में कठिनता की मात्रा भी बढ़ा रक्खी है। उनको इस बात का शौक़ था कि मूर्ख उनकी कविता को न समझ सकें, जैसा उन्हों ने कहा है कि "सेनापति बरनी है बरखा सरद रितु मूढ़न को अगम सुगम परबीन को"।

सेनापति ने स्वयं लिखा है कि उन्हों ने अपनी कविता के पद चुन चुन कर रक्खे हैं। अतः यदि कोई इनकी कविता में कोई बुरा अथवा शिथिल छंद ढूँढना चाहे, तो उसको व्यर्थ का श्रम उठाना पड़ेगा। इनके सभी छंद उत्कृष्ट हैं। अच्छे छंदों के उदाहरण में यहाँ एक छंद देते हैं।

> दूरि जदुराई सेनापति सुखदाई देखो
> आई रितु पावस न पाई प्रेम पतियाँ।
> धीर जलधर की सुनत धुनि धरकी सुदरकी
> सुहागिनि की छोह भरी छतियाँ॥
> आई सुधि बर की हिए में आनि खरकी सुमिरि
> प्रान प्यारी वह प्रीतम की बतियाँ।
> बीती औधि आवन की लाल मन भावन की
> डग भईं बावन की सावन की रतियाँ॥

इनकी कविता में प्रत्येक स्थान पर इनकी तल्लीनता देख पड़ती है। इस कवि की समस्त कविता सच्ची है। इसने प्रायः न कहीं किसी दूसरे का भाव लिया है और न अपने चित्त के प्रतिकूल कोई बात लिखी है। इनकी तल्लीनता निम्न चार पदों से प्रकट होगी:—

दीन बंधु दीन के न वचन करत कान मैान है
रहे है। कछू भाति मन माये है।।
याते राजा राम जगदीस जिय जानी जाति
मेरे कूर करम कृपाल कीलि राखे है।।
क्योंरे कलि काल मोहिँ काले। ना निदरि सकै तें तै
मति मूढ़ अति कायर गँवार को।
सेनापति निरधार पाँयपोस बरदार हैँ। तै
राजा रामचन्द्र जू के दरबार के।॥

यह कवि अपनी धुन का इतना पक्का था कि इसको सवैया छंद पसंद न होने के कारण इस ने एक भी सवैया अपने काव्य में नहीं रक्खा। चोरी होने के डर से इनको अपने प्रत्येक छंद में नाम रखना बहुत ज़रूरी समझ पड़ता था और सवैया में इनका नाम नहीं आ सकता था। शायद इसी कारण सवैया इन्होंने न लिखा हो।

इनकी प्रगाढ़ भक्ति भी इनके जीवन का एक प्रधान गुण है। सेनापति की कविता में उनके विचार भरे पड़े हैं। अपने विषय इतनी बातें भाषा के बहुत कवियों ने न कही होंगी। इनकी भक्ति पंचम

तरंग के छन्द नम्बर ९, १३, १६ और ३१ से विदित होती है, वरन यों कहें कि चतुर्थ और पंचम तरंग भर में भक्ति टपकी पड़ती है। सेनापति की भक्ति सूरदास और तुलसीदास की भक्ति से शायद कुछ ही कम हो। उदाहरणार्थ केवल एक छन्द नीचे उद्धृत करते हैं:—

> ताही भाँति धाऊँ सेनापति जैसे पाऊँ
> तन कंथा पहिराऊँ करौं साधन अतीन के।
> भसम चढ़ाऊँ जटा सीस मैं बढ़ाऊँ
> नाम याही को पढ़ाऊँ दुखहरन दुखीन के॥
> सबै बिसराऊँ उर तासों उरझाऊँ
> कुंज बन बन धाऊँ तीर भूधर नदीन के।
> मन बहिराऊँ मन मनहिं रिझाऊँ
> बीन लैकै कर गाऊँ गुन याही परबीन के॥

आप के निर्मल विचारों और पुनीत जीवन का कुछ कुछ परिचय पंचम तरङ्ग के छन्द नं० १०, ११ और ४० से भी मिलता है। इनसे यह भी जान पड़ता है कि आप के बाल सफ़ेद हो गये थे और अवस्था आधी से अधिक बीत गई थी। कोई मनुष्य पचास वर्ष से ऊपर हुए बिना साधारणतः यह कभी नहीं कह सकता कि मेरी आयु आधी से अधिक बीत गई है। इसीसे हमारा विचार है कि जिस समय यह ग्रन्थ इन्हों ने समाप्त किया, उसी समय इनकी अवस्था प्रायः ६० बरस की होगी। छन्द नं० ४० से यह भी जान पड़ता है कि ये महाशय बादशाही नौकर थे, क्योंकि उस छंद के बनाते समय इनको उससे अश्रद्धा हो चुकी थी। यथा:—

केतो करौ कोय पैये करम लिखोय ताते
दूसरी न होय उर सोय ठहराइए ।
आधी ते सरस बीति गई है बरस अब
दुज्जन दरस बीच रस न बढ़ाइए ॥
चिन्ता अनुचित धरु धीरज उचित
सेनापति ह्वै सुचित रघुपति गुन गाइए ।
चारि बरदानि तजि पाय कमलेछन के
पायक मलेछन के काहे को कहाइए ॥

इनके चित्त का पूर्ण वैराग्य निम्न लिखित छन्द से पूरा प्रकट होता है और यह भी मालूम पड़ता है कि यह कंगाल नहीं थे । यथा :—

महा मोह कंदनि में जगत जकंदनि में
दिन दुख दंदनि में जात है बिहाय कै ।
सुख को न लेस है कलेस सब भाँतिन को
सेनापति याही ते कहत अकुलाय कै ॥
आवै मन ऐसी घर बार परिवार तजौं
डारौं लोकलाज के समाज बिसराय कै ।
हरि जन पुंजनि में वृन्दावन कुञ्जनि में
रहौं बैठि कहूँ तर वर तर जाय कै ॥

ठाकुर शिवसिंह जी ने लिखा है कि इन्हों ने क्षेत्र-संन्यास ले लिया था । इनकी कविता से ज्ञात होता है कि ये क्षेत्र-संन्यास लेना भी चाहते थे, क्योंकि ये वृन्दावन की सीमा के बाहर जाना नहीं चाहते थे ।

पान चरनामृत को गान गुन गानन को
हरि कथा सुने सदा हिये को हुलसिबो।
प्रभु के उतीरन की गूदरी यौ चीरन की
भाल भुज कंठ उर छापन को लसिबो॥
सेनापति चाहत है सकल जनम भरि
वृन्दावन सीमा ते न बाहेर निकसिबो।
राधा मन रञ्जन की सोभा नैन कंजन की
माल गरे गुंजन की कुंजन को बसिबो॥
बारानसी जाय मन करनी ग्रन्हाय मेरो
संकर सों राम नाम पढ़िये को मन है॥

इतने बड़े भक्त और कड़े विचारों के मनुष्य होने पर भी सेनापति कोमल भावों के वर्णन में भी पूर्णतया समर्थ हुए हैं। महादेवजी की आज्ञा पाकर बहुत से गण कुम्भ करण के कटे हुए सिर को उठाने गये, उसके वर्णन में सेनापति ने हास्यरस उत्तम कर दिया है।

जोर कै उठायो जुरि मिलि कै सजन त्योंहीं
गिरिहुते गरुवो गिरो है उगुलाय कै।
हाली भुव गगन को चाली चपि चूर भयो
काली भाजी हँस्यो है कपाली ठहराय कै॥

इतने बड़े भक्त होने पर भी सेनापति धार्मिक विषयों तक में स्वतन्त्र विचार रखते थे। इन्होंने प्रथम तरंग में कलि के गोसाइयों को पूरे भिखमंगे बनाया है। पंचम तरङ्ग में कई धार्मिक विषयों

पर इस कवि की स्वतन्त्र अनुमतियाँ द्रष्टव्य हैं, जिनमें से कुछ यहाँ लिखी जाती हैं।

आपने करम करि हौंहीं निबहौंगो
　　तौब हौंहीं करतार करतार तुम काहे के॥
धातुसिला दारु निरधारु प्रतिमा को
　　सारु सो न करतारु है विचारु बैठि गेहरे।
करु न सँदेह रे कहे मैं चित देह रे
　　कहा है बीच देह रे कहा है बीच देहरे॥
तोरि मरौ पाउँ करौ कोरिक उपाउ सब
　　होत है अपाउ भाउ चित को फलतु है।
हिये न भगति जाते होइ नभ गति जब
　　तीरथ चलत मन ती रथ चलतु है॥

सेनापति के गुण दोष हम यथाशक्ति ऊपर दिखा चुके। बड़े शोक का विषय है कि इस कवि के केवल ३८४ छन्दों का एक ग्रन्थ हमें देखने को मिला। इतनी सजीव कविता हमने बहुत ही थोड़े कवियों की देखी है। प्रत्येक छन्द में सेनापति का रूप देख पड़ता है। इतने कम छन्दों में इतने विचार भर देने में बहुत कम लोग समर्थ हुए होंगे। अपने ग्रन्थ में सेनापति ने कोई ख़ास क्रम नहीं रक्खा है। जान पड़ता है पहले ये महाशय स्फुट कविता बनाते गये हैं और फिर इन्हों ने संवत् १७०६ में उसे एकत्र करके ग्रन्थस्वरूप में परिणत कर दिया। इनका काव्य कल्पद्रुम भी अवश्य ही उत्तम होगा। अनुमान से जान पड़ता है कि 'कालिदास हज़ारा' में लिखे हुए इनके स्फुट छन्द कवित्तरत्ना-

र के ही होंगे, क्योंकि इस ग्रन्थ में सब स्फुट कविता ही
री है। दुर्भाग्यवश अभी इनका एक भी ग्रन्थ प्रकाशित नहीं
आ है। यदि भाषा का कोई भी अमुद्रित ग्रन्थ प्रकाशित होने की
ाग्यता रखता है, ते सेनापति के ग्रन्थ सब से पहले नम्बर
र हैं।

नवरत्न में केशवदास के वर्णन में हम ने संस्कृत और भाषा-
साहित्य की प्रणाली का कथन किया है। सेनापति की रामायण
काव्यसम्बन्धी प्रथा की है। सेनापति ने ऐसी सजीव, अनूठी,
सच्ची, और मनमोहनी कविता की है कि कुछ ही महाकवियों को
ाड़ शेष सभी कवि समाज का इन्हें वास्तविक सेनापति बरबस
मानना ही पड़ता है। सेनापति जी की गणना कवियों की प्रथम
कक्षा में है और उस में भी ये महाशय प्राय सर्वोत्कृष्ट हैं।

बीसवाँ अध्याय।

सेनापति-काल।

(१६८१ से १७०६)

इस अध्याय में हम सेनापति के समय वाले कवियो का वर्णन
समयानुसार करेंगे।

[२७९] ध्रुवदास।

हमारे मित्र बाबू राधाकृष्णदास ने वल्लभाचार्यीय संप्रदाय
एवं भक्त कवियो के इतिहास प्राप्त करने में बहुत श्रम किया था,

और इस विषय के कितने ही ग्रंथ संपादित करके उन्होंने नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा तथा अन्य प्रकार से प्रकाशित कराये। उनका यह श्रम बहुत ही प्रशंसनीय और उनके विचार माननीय हैं। इन्हीं महाशय ने ध्रुवदास की भक्त नामावली को भी नागरी-प्रचारिणी ग्रंथमाला में प्रकाशित कराया। यह केवल१० पृष्ठों का ग्रंथ है, परंतु टिप्पणी व मुखबंध इत्यादि मिला कर बाबू साहेब ने इसे ८८ पृष्ठों में मुद्रित किया है। यह लेख उन्हीं के विचारों के आधार पर लिखा गया है।

ध्रुवदास ने निम्न लिखित छोटे छोटे ग्रंथ निर्माण किये:—

बानी, वृन्दावनसत, सिंगारसत, रसरत्नावली, नेहमंजरी, रहसिमंजरी, सुखमंजरी, रतिमंजरी, वनविहार, रंगविहार, रसविहार, आनंददशाविनोद, रंगविनोद, नितैविलास, रंग हुलास, मानरसलीला, रहसिलता, प्रेमलता, प्रेमावली, भजनकुंडली, बावन-वृहत्पुराण की भाषा, भक्तनामावली, मनसिंगार, भजन सत, सभामंगल शृंगार, मनशिक्षा, प्रीतिचौवनी, मानविनोद, व्यालिस बानी, रसमुक्तावली, और सभामंडली। इनमें सभामंडली संवत् १६८१ में, वृन्दावन सत १६८६ में, और रहसिमंजरी संवत् १६९८ में बनीं। शेष ग्रंथों का समय नहीं दिया है। रासससर्वस्व से विदित होता है कि ध्रुवदास जी रासलीला के बड़े अनुरागी एवं करहली ग्राम वाले रासधारियों के बडे प्रेमी थे। भक्तनामावली में ध्रुवदास ने १२३ भक्तों के नाम और उनके कुछ कुछ चरित्र लिखे। बाबू राधाकृष्णदास ने उनमें से प्रत्येक के विषय धर्मग्रन्थों और इतिहासों में जो कुछ मिलता है, उसको बड़े परिश्रम से इस ग्रंथ

के भेट में दे दिया है। इन्होंने अपनी कविता ब्रज भाषा में
है और वह अच्छी है। इन का काव्य भक्ति पूर्ण और सरस है।
भक्तनामावली से कुछ छंद नीचे दिये जाते हैं:—

हित हरि बंसहि कहत ध्रुव बाढ़ै आनँद बेलि।
प्रेम रँगी उर जगमगै जुगुल नवल वर केलि॥
निगम ब्रह्म परसत नहीं सो रस सब ते दूरि।
कियो प्रगट हरिवंस जी रसिकन जीवन मूरि॥
पति कुटुंब देखत सबनि घूंघुट पट दिय डारि।
देह गेह बिसरयो तिन्हैं मोहन रूप निहारि॥

खोज में इन के निम्न लिखित ग्रन्थों का पता और चला है:—
रसानदलीला, (२) ख्यालहुलासलीला, (३) सिद्धान्तविचार
(४) रसहीरावली, (५) हितसिंगारलीला, (६) ब्रजलीला, (७)
आनंदलता, (८) अनुरागलता, (९) जीवदशा, (१०) वैद्यक
लीला, (११) दानलीला, और (१२) व्याहलो।

इनके व्यालीस लीला, बानी और पदावली ग्रन्थ हम ने छतर-
पूर में देखे। ये उपरोक्त नामावली में नहीं हैं। बानी में ब्रजभाषा
द्वारा शृंगार रस के सवैया, कवित्त इत्यादि तथा अन्य छन्दों में
श्री कृष्णचंद्र जी की लीलाओं के वर्णन ३०० पृष्ठ फुल्सकैप साइज
पर बड़े ही सरस तथा मधुर किये गये हैं। इनकी कविता बड़ी
मधुर और प्रशंसनीय है। हम इन्हें तोष की श्रेणी का कवि सम-
झते हैं।

उदाहरण।

सेज सरोवर राजत हैं जल मादक रूप भरे अरुनाई ।
अंगन आभा तरंग उठें तहँ मीन कटाच्छन की चपलाई ॥
प्यासी सखी भरि अंजुलि नैन पियें सिगरी उपमा ध्रुव पाई ।
प्रेम गयंदनि डारे हैं तोरि कै कंजन केल चहूँ दिसि माई ॥

जीव दसा कछु यक सुनि भाई, हरि जस अमृत तजि विष खाई ।
छिन भंगुर यह देह न जानी, उलटी समुझि अमर ही मानी ॥
घर घरनी के रँग यों राच्यो, छिन छिन में नट कपि ज्यों नाच्यो ।
बय गै बीति जात नहिँ जानी, जिमि सावन सरिता को पानी ॥
माया सुख में यों लपटान्यो, विषय स्वाद ही सरबसु जान्यो ।
काल समय जब आनि तुलानो, तन मन की सुधि तबै भुलानो ॥

ध्रुवदास जी स्वमद्वारा हितहरिवंश के शिष्य हुए थे । ये सदैव उन के शिष्य रहे और माने गये ।

(२८०) स्वामी चतुर्भुजदास जी अष्टछाप वाले इसी नाम के कवि से पृथक् हैं। उनका समय १६२५ था और इनका सं० १६८४ । इनके बनाये हुए धर्मविचार (४० पद), बानी (६८ पद), भक्तप्रताप (१५ पद), सन्तप्रसाद (१८ पद), सिच्छासार (५६ पद), हितउपदेश (४६ पद), पतितपावन (१४ पद), मोहनीजस (२० पद), अनन्यभजन (४२ पद), राधाप्रताप (२२ पद), मंगलसार (४२ पद), और विमुख सुखभंजन (३४ पद) नामक ग्रन्थ हमने छत्रपूर में देखे हैं। इन ग्रन्थों में पदों ही में वर्णन हैं। द्वादश-यश भी इन्हीं की एक रचना है। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण ।

मन ते तन नीचो श्रति कीजै, देह अमान मानता दीजै ।
सहन सुभाय वृक्ष को सो करि, रसना सदा कहत रहिये हरि ॥
वृषभ वृक्ष पर पाँव न दीजै, क्रीड़ा अर्थ न नीर तरीजै ।
श्रागि गाँव वन में न लगावै, भोजन जल न अनर्पित पावै ॥

नाम—(२८१) व्यास जी श्रोड़छावाले ।
ग्रन्थ—(१) श्रीमहावाणी (१३५ पृष्ठ), (२) पद (४८ पृष्ठ), (३) नीति के दोहे, (४) रागमाल, (५) पदावली ।
कविता-काल—१६८५
वृत्तान्त—इनके छन्द हज़ारा में मिलते हैं । ये साधारण श्रेणी के कवि थे । इनके १ व २ ग्रन्थ छत्रपूर में हमने देखे । इनको हर-व्यास देव भी कहते थे । ये निम्बार्क सम्प्रदाय के थे ।

उदाहरण ।

भगति बिन अगति जाहु गे बीर ।
वेगि चेति हरि चरन सरन गहि छांड़ि विषै की भीर ।
कामिनि कनक देखि जनि भूलै मन में धरियो धीर ॥
साधुन की सेवा करि लीजो जब लैां जियत सरीर ।
मानुस तन बोहित करिया हरि गुन अनुकूल समीर ॥

नाम—(२८२) खीमराज चारण ग्राम खीमपुरा उदयपुर ।
ग्रन्थ—फुटकर गीत कविता ।
कविता संवत्—१६८५ ।

आश्रयदाता महाराजा जगतसिंह उदयपुर और म० रा० गजसिंह जोधपुर ।

(२८३) सदानन्द ।

इस कवि के केवल तीन छन्द हमने देखे हैं । इसके जीवन-चरित्र का हमें कुछ भी वृत्तान्त ज्ञात न हो सका, पर इसका समय संवत् १६८५ के आस पास है ।

इसकी कविता सरस और अच्छी है । हम इसकी गणना साधारण श्रेणी में करते हैं ।

उदाहरण ।

सोहे सेत सारी मंजु मोतिन किनारी धारी
भीर मैं निहारी जात संग सखियान के ।
सदानन्द सुन्दरी न कोऊ यह रूप जाके
आनन की आभा सी न आभा ससि भान के ॥
दृगन की कोर लागी कानन की छोर जैसी
भृकुटी मरोर जोर जोरे धनुबान के ।
धीरी चालवारी मुख बीरी लालवारी
वह पीरी सालवारी रहै गोरी अँखियान के ॥

(२८४) मलूकदास ब्राह्मण कड़ा मानिकपुर निवासी थे । इनका समय सरोज में १६८५ लिखा है, परन्तु कोई ग्रंथ इनका हमारे देखने में नहीं आया । इनकी कविता बड़ी मनमोहिनी है । हम इनकी गणना तोष की श्रेणी में करते हैं ।

छही ग्रस्तु छाई छाजै आछी छवि देखन को
मानुप की कहा कहँ इन्द्र तरसत है॥

इन्होंने संस्कृत की भी अच्छी कविता की है। योगवाशिष्ठसार नामक इनका एक और ग्रन्थ खोज में मिला है। ये काशी-वासी थे।

नाम—(२८७) माधुरीदास।

ग्रन्थ—(१) श्रीराधारमण विहारि माधुरी, (२) वंशीवट विलास माधुरी, (३) उत्कंठा माधुरी, (४) वृन्दावन केलि माधुरी, (५) दानमाधुरी, (६) मानमाधुरी, (७) वृन्दावनविहार माधुरी, (८) मानलीला।

कविता-काल—१६८७।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी। इस कवि ने इन छोटे छोटे ग्रन्थों में कृष्णयशगान किया है।

उदाहरण।

जुगुल प्रेम के दान हित किया जुगुल अवतार।
आप भक्ति आचरन करि जग कीनो विस्तार॥

निसि दिन तिनकी कृपा मनाऊँ। नित वृन्दावन वासहि पाऊँ।
पिय प्यारी की लीला गाऊँ। जुगुल रूप छवि लखि बलि जाऊँ।

(२८८) सुन्दर ब्राह्मण ग्वालियर वासी शाहजहाँ बादशाह के दरबार में थे। शाह ने इन्हें प्रथम कविराय की और फि महा कविराय की उपाधि दी। इन्होंने संवत् १६८८ में सुन्दर

शृंगार नामक नायिकाभेद का ग्रन्थ बनाया, जिसमें उपर्युक्त बातें लिखी हैं। सिंहासनबत्तीसी नामक इनका एक दूसरा ग्रन्थ भी है। खोज में ज्ञानसमुद्र नामक ग्रन्थ भी इनके नाम लिखा है, पर यह सुन्दरदास दादूपन्थी का जान पड़ता है। इनकी कविता परम मनोहर और यमकयुक्त है। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

काके गये बसन पलटि आये बसन
　　सुमेरो कछु बस न रसन उर लागे हौ।
भौंहैं तिरिछौहैं कवि सुन्दर सुजान सोहैं
　　कछू अलसौहैं गौहैं जाके रस पागे हौ॥
परसों मैं पायँ हुते परसों मैं पायँ गहि
　　परसों ये पायँ निसि जाके अनुरागे हौ।
कौन बनिता के हौजू कौन बनिता के
　　हौसु कौन बनिताके बनि ताके संग जागे हौ॥

'बारहमासी' नामक इन का एक और ग्रन्थ है।

(२८६) पुहकर कवि।

ये जाति के कायस्थ भूमिगाँव गुजरात सोमनाथजी के पास रहते थे। संवत् १६८१ में जहाँगीरशाह के समय में कहा जाता है कि ये आगरे में क़ैद हो गये थे, जहाँ जेलख़ाने में इन्होंने रसरतन नामक ग्रन्थ बनाया, जिस पर प्रसन्न होकर जहाँगीरशाह ने इन्हें

छही ऋतु छाई छाजै आछो छवि देखन को
मानुष की कहा कहैं इन्द्र तरसत हैं॥

इन्होंने संस्कृत की भी अच्छी कविता की है। योगवाशिष्ठसार नामक इनका एक और ग्रन्थ खोज में मिला है। ये काशी-वासी थे।

नाम—(२८७) माधुरीदास।

ग्रन्थ—(१) श्रीराधारमण विहारी माधुरी, (२) वंसीवट विलास माधुरी, (३) उत्कंठा माधुरी, (४) वृन्दावन केलि माधुरी, (५) दानमाधुरी, (६) मानमाधुरी, (७) वृन्दावनविहार माधुरी, (८) मानलीला।

कविता-काल—१६८७।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी। इस कवि ने इन छोटे छोटे ग्रन्थों में कृष्णयशगान किया है।

उदाहरण।

जुगुल प्रेम के दान हित कियो जुगुल अवतार।
आप भक्ति आचरन करि जग कीनो विस्तार॥

निसि दिन तिनकी कृपा मनाऊँ। नित वृन्दावन वासहि पाऊँ॥
पिय प्यारी की लीला गाऊँ। जुगुल रूप लखि लखि बलि जाऊँ॥

(२८८) सुन्दर ब्राह्मण ग्वालियर वासी शाहजहाँ बादशाह, के दरबार में थे। शाह ने इन्हें प्रथम कविराय की और फिर महा कविराय की उपाधि दी। इन्होंने संवत् १६८८ में सुन्दर-

शृंगार नामक नायिकाभेद का ग्रन्थ बनाया, जिसमें उपर्युक्त बातें लिखी हैं। सिंहासनबत्तीसी नामक इनका एक दूसरा ग्रन्थ भी है। खोज में ज्ञानसमुद्र नामक ग्रन्थ भी इनके नाम लिखा है, पर वह सुन्दरदास दादूपन्थी का जान पड़ता है। इनकी कविता परम मनोहर और यमकयुक्त है। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

काके गये बसन पलटि आये बसन
सुमेरो कछु बस न रसन उर लागे हैा।
भैाहैं तिरिछैाहैं कवि सुन्दर सुजान सोहैं
कछू अलसैाहैं गैाहैं जाके रस पागे हैा॥
परसैां मैं पायँ छुते परसैां मैं पायँ गहि
परसैां ये पायँ निसि जाके अनुरागे हैा।
कैान बनिता के हैाजू कैान बनिता के
हैासु कैान बनिताके बनि ताके संग जागे हैा॥

'बारहमासी' नामक इन का एक श्रौर ग्रन्थ है।

(२८६) पुहकर कवि।

ये जाति के कायस्थ भूमिगाँव गुजरात सोमनाथजी के पास रहते थे। संवत् १६८१ में जहाँगीरशाह के समय में कहा जाता है कि ये आगरे में कैद हो गये थे, जहाँ जेलख़ाने में इन्होंने रसरतन नामक ग्रन्थ बनाया, जिस पर प्रसन्न होकर जहाँगीरशाह ने इन्हें

चंद कलंकी कहा करिहै सरि कोकिल कीर कपोत लजाने।
विद्रुम हेम करी अहि केहरि कंज कली औ अनार के दाने॥
मीन सरासन धूम की रेख मलूक सरोवर कम्बु भुलाने।
ऐसी भई नहिं है भुव में नहिं होइगी भारि कहा कवि जाने॥१॥

अलंकार छंद काव्य नाटक अगार राग
रागिनी भँडार बरवानी को निवास है।
कोक कारिका विख्यात पंकज को कोस
मानौं निकसत जामें भाँति भाँति को सुबास है॥
फूल से झरत बानी बोलत मलूक प्यारी
हँसनि में होत दामिनी को परकास है।
ऐसो मुख काको पटतर दीजै प्यारे लाल
जामें कोटि कोटि हाव भाव को विलास है॥२॥

(२८५) दामोदर स्वामी हितहरिवंश की अनन्य सम्प्रदाय के थे। इन्होंने संवत् १६८७ में 'नेमबत्तीसी' बनाई। इनके बनाये हुए नेमबत्तीसी, रेखता, भक्तिसिद्धान्त, रासविलास और स्वयंगुरुप्रताप नामक ग्रन्थ हमने छत्रपूर में देखे। इनकी कविता अच्छी होती थी। हम इन्हें साधारण श्रेणी में समझते हैं।

उदाहरण।

श्री हरिवंश कृपाल लाल पद पंकज ध्याऊँ।
वृन्दावन में बसों सीस रसिकन को नाऊँ॥
अँचऊँ जमुना नीर जीव राधापति गाऊँ।
नैननि निरखौं कुंज रेनु या तन लपटाऊँ॥

कहुँ झूठ न बोलौं सति कहौं निन्दा सुनौं न कान।
नित पर जुवती जननी गनौं पर धन गरल समान॥

(२८६) कवीन्द्राचार्य सरस्वती ब्राह्मण।

इन महाशय ने शाहजहाँ बादशाह-देहली की प्रशंसा में "कवीन्द्रकल्पलता" नामक ग्रंथ बनाया, जिसमें कुल १५० छन्दों द्वारा उक्त बादशाह व उसके पुत्रों इत्यादि की प्रशंसा की गई है। शाहजहाँ का समय संवत् १६८३ से १७१४ तक है। इसी के बीच में यह ग्रंथ बना होगा। सम्भवतः कवि जी का जन्म-काल सं० १६५० के लगभग होगा। सं० १६८७ में समरसार नामक इनका द्वितीय ग्रन्थ बना। इस विचार से ये महाशय तुलसीदास जी के समकालीन ठहरते हैं। सरोज में इनका संवत् १६२२ दिया हुआ है, जब शायद शाहजहाँ या इनका स्वयं जन्म भी न हुआ हो। ये महाराज संस्कृत के भी पूर्ण विद्वान् थे। इनकी सानुप्रास भाषा में व्रज और अवध की बोलियों का कुछ कुछ मिश्रण है और वह ललित है। हम इनको पद्माकर जी की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण लीजिए:—

मंदर ते ऊँचे मनि मन्दिर प सुन्दर हैं
मेदिनी पुरन्दर को पुर दरसत है।
हिय मैं हुलास होत नगर विलास लखि
रूप कयलास हू ते अति सरसत है॥
दुंदुभि मृदंग नाद विविध सुवाद जहाँ
साहिजहाँबाद अति सुख बरसत है।

कारागार से मुक्त कर दिया। इसमें रेभावती व सूरकुमार की कथा बड़े विस्तार से वर्णन की गई है। ग्रन्थ में व्रज भाषा और कहीं कहीं प्राकृत मिश्रित भाषा का प्रयोग है। छन्द बहुत प्रकार के हैं, परन्तु दोहा एवं चौपाइयों की प्रधानता है। कुल २७६६ छन्दों व ५५६ पृष्ठों में ग्रन्थ समाप्त हुआ है। कविता अच्छी है। हम इनको छत्र की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

चले मत्त मैमंत झूमंत मत्ता, मनौ बद्दला स्याम माथै चलंता।
बनी बागरी रूप राजंत दंता, मनौ बग्ग आषाढ पाँतैं उदंता॥
लसैं पीत लालै सुढालैं ढलक्कैं, मनौं चंचला चौंधि छाया छलक्कैं।

कवित्त।

चन्द की उजारी प्यारी नैनन निहारी
परै चन्द की कला में दुति दूनी दरसाति है।
ललित लतानि मैं लतासी गहि सुकुमारि
मालती सी फूलै जब मृदु मुसुकाति है॥
पुहकर कहै जित देखिए विराजै
तित परम विचित्र चारु चित्र मिलि जाति है।
आवै मनमाहिँ तब रहै मनही में
गडि नैननि बिलोके बाल बैननि समाति है॥

इनकी पुस्तक हमने दरबार छतरपूर में देखी। खोज से पता चलता है कि यह परतापपूर जिला मैनपुरी के थे।

(२६०) जोयसी कवि का रचनाकाल १६८८ है। ये महाशय तोष कवि की श्रेणी में हैं। इनका सिर्फ़ एकही छंद मिलता है जो परम विशद है।

रचि पाँय भर्चांय दई मेंहँदी तेहि को रँगु होत मनो नगु है।
अब ऐसे में स्याम बुलावैँ भट्ट कहु जाँउँ पयों पंकु मयो मगु है॥

अधराति अँध्यारी न सूझै गली भनि जोयसी दूतिन को सँगु है।
अब जाउँ तो जात धुयो रँगुरो रँगु राखौं तो जात सबै रँगु है॥

(२६१) लूणसागर जैनी पंडित ने संवत् १६८९ में ज्ञान विषय का अञ्जनासुन्दरीसंवाद नामक ग्रन्थ रचा।

(२६२) चिन्तामणि त्रिपाठी।

महाराज रत्नाकर के चार पुत्रों में ये महाशय सब से बड़े थे। इन के तीन भाई भूषण, मतिराम ग्रैार जटाशंकर थे। इन के ग्रन्थों से इन की उत्पत्ति के संवत् का ठीक पता नहीं लगता। भूषण की कविता से हमने निष्कर्ष निकाला है कि उन का जन्म-काल संवत् १६७० के लगभग था। इस विचार से चिन्तामणि का जन्म-काल संवत् १६६६ के लगभग मानना चाहिए।

ये महाशय तिकवाँपुर ज़िला कानपूर के वासी थे। इस मैाज़े का वर्णन भूषण की समालोचना में है। ठाकुर शिवसिंहजी ने लिखा है कि चिन्तामणि जी "बहुत दिन तक नागपुर में सूर्यवंशी भोंसला मकरन्द शाह के यहाँ रहे ग्रैार उन्हीं के नाम 'छन्दविचार' नामक पिंगल बहुत भारी ग्रन्थ बनाया, ग्रैार 'काव्यविवेक', कविकुल-

कल्पतरु, काव्यप्रकाश, 'रामायण' ये पाँच ग्रन्थ इनके बनाये हुए हमारे पुस्तकालय में मौजूद हैं। इन की बनाई रामायण कवित्त और नाना अन्य छन्दों में बहुत अपूर्व है। बाबू रुद्रसाहि सुलंकी, शाहजहाँ बादशाह, और जैनदी अहमद ने इन को बहुत दान दिये हैं। इन्हों ने अपने ग्रन्थ में कहीं कहीं अपना नाम मणिमाल भी कहा है।" हमारे पुस्तकालय में इन का केवल कविकुल-कल्पतरु ग्रन्थ है, जिस में काव्य गुण, श्लेष, अलंकार (शब्द एवं अर्थ), दोष, पदार्थनिर्णय, ध्वनि, भाव, रस, भावाभास, और रसाभास का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इन्हों ने इस ग्रन्थ में लिखा है कि इन का एक पिंगल भी है। अतः इन्हों ने प्रायः दशांग कविता पर रीति ग्रन्थ लिखे हैं। इन का बनाया पिंगल हमने देखा भी है और वह शिवसिंह सेंगर के पुस्तकालय में है। रसमंजरी नामक एक और ग्रन्थ इन का खोज में लिखा है। इन की भाषा-साहित्य के आचार्यों में गणना है।

चिन्तामणि की भाषा शुद्ध व्रजभाषा है; केवल दो एक स्थानों पर इन्होंने प्राकृत में भी कविता की थी। ये महाराज बड़ी ही मधुर एवं सानुप्रास भाषा प्रयोग करने में समर्थ हुए हैं। इन्होंने बहुत विषयों पर रचना की है और ये सदैव उत्कृष्ट कविता रच सके हैं। ठाकुर शिवसिंहजी के सरोज में दिये हुए इन के अन्य ग्रन्थों के उदाहरण देखने से विदित होता है कि कल्पतरु के अतिरिक्त इन के वे ग्रन्थ भी बढ़िया हैं। इनका बड़े बड़े महाराजाओं के यहाँ अच्छा मान रहा। इन को हम दास जी की श्रेणी में रखते हैं। इन की कविता के उदाहरणार्थ कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

चिन्तामणि कच कुच भार लंक लचकति
सोहै तन तनक बनक छवि दान की।
चपल बिलास मद आलस बलित नैन
ललित बिलोकनि रसनि मृदु बान की ॥
नाक मुकुताहल अधर रंग संग लीन्हों
रुचि सन्ध्या राग नखतन के प्रमान की।
बदन कमल पर अलि ज्यों अलक लोल
अमल कपोलनि झलक मुसक्यान की ॥

इक आजु मैं कुन्दन बेलि लखी मनि मन्दिर की रुचि वृन्द भरै।
कुरविन्दु को पल्लव इन्दु तहाँ अरबिन्दन ते मकरन्द झरै ॥
उत बुन्दन के मुकुता गन ह्वै फल सुन्दर द्वै पर आनि परै।
लखि यो दुति कन्द अनन्द कला नँद नन्द सिलाद्रव रूप धरै ॥
पई उधारत हैं तिन्हैं जे परे मोह महोदधि के जल फेरे।
जो इन को पल ध्यान धरै मन ते न परै कबहूँ जम घेरे ॥
राजै रमा रमनी उपधान अभै बरदानि रहै जन नेरे।
हैं बल भार उदंड भरे हरि के भुज दंड सहायक मेरे ॥

(२६३) बेनी।

ये महाशय असनी के बन्दीजन थे। इनका समय १६९० के आस पास कहा जाता है। इनका एक ग्रन्थ शिवसिंहजी ने देखा था पर हमने नहीं देखा। स्फुट कवित्त इनके बहुतायत से देखने और सुनने में आये हैं। जान पड़ता है कि इन्होंने नखशिख अथवा षटऋतु पर ग्रन्थ निर्माण किया है। इनकी भाषा साधारण है और

उमक का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। ब्रह्म कवि की भाँति एक उपमा पहने के ही लिए यह भी कभी कभी कवित्त बना डालते थे। यह गोस्वामी तुलसीदास जी के बड़े भक्त थे और उनके रामायण ग्रन्थ की प्रशंसा में एक कवित्त इन्होंने बनाया है, जो उत्तम न होने पर भी विख्यात है। इसी नाम के एक अन्य बन्दीजन महाशय भी हैं, जिनके दो ग्रन्थ हमने देखे हैं और जो भँडौवा अधिक बनाते थे। पहले तो हमें सन्देह था कि ये दोनों महाशय एकही होंगे, परन्तु इन बेनी के छन्द बेनी भँडौवाकार के ग्रन्थ में नहीं पाये जाते और शिवसिंह जी ने भी इन्हें दो मनुष्य माने हैं। अतः हम भी इन्हें दो समझते हैं। दूसरे बेनी अपने के प्रायः बेनी कवि कहते थे।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी ने अपने सुन्दरीतिलक में पहला सवैया इन्हीं का देकर इनका आदर किया है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी का कवि मानते हैं।

उदाहरण —

छहरैं सिर पै छवि मोर पखा उनकी नथ के मुकता थहरैं।
फहरै पियरो पट बेनी इतै उनकी चुनरी के झबा झहरैं॥
रसरंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिकाश्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं॥१॥
कवि बेनी नई उनई है घटा मोरवा बन बोलन कूकन री।
छहरै बिजुरी छिति मंडल छ्वै लहरै मन मैन भभूकन री॥
पहिरौ चुनरी चुनि कै दुलही सँग लाल के झूलहु झूकन री।
ऋतु पावस यों ही बितावती हौ मरिहौ फिरि बावरी हूकन री॥२॥

(२६४) बनवारी संवत् १६९० के लगभग हुए। इन्होंने महाराजा जसवंतसिंह के बड़े भाई अमरसिंह की प्रशंसा की। शाहजहाँ के दरबार में सलावन खाँ ने अमरसिंह को गँवार कह दिया था। इसी पर क्रुद्ध होकर उन्होंने उसको दरबार ही में मार डाला, जिसकी तारीफ़ में बनवारी ने नीचे लिखे छन्द कहे। इनकी शृंगार रसकी कविता भी बड़ी उत्तम तथा सानुप्रास होती थी। इनकी गणना पद्माकर कवि की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण।

धन्य अमर छिति छत्रपति अमर तिहारो मान।
साहजहाँ की गोद में हन्यो सलावन खान ॥१॥
उत गँकार मुख ते कढ़ी इत निकसी जमधार।
वार कहन पायो नहीं कीन्हो जमधर पार ॥२॥
आनि कै सलाबत खाँ जोर कै जनाई बात
तोरि धर पंजर करेजे जाय करकी।
दिलीपतिसाह को चलन चलिये को भयो
गाज्यो गजसिंह को सुनी है बात बर की॥
कहै बनवारी बादसाहि के तखत पास
फरकि फरकि लोथि लोथिन सों अरकी।
करकी बड़ाई कै बड़ाई बाहिबे की करौं
बाढ़ि कि बड़ाई कै बड़ाई जमधर की ॥३॥
नेह बरसाने तेरे नेह बरसाने देखि
यह बरसाने बर मुरली बजावैंगे।

साजु लाल सारी लाल करैं लालना री
देखिये की लालसा री लाल देखे सुख पावैंगे ॥
तूही उर बसी उर बसी नहिं और तिय
कोटि उरबसी तजि तोसों चित लावैंगे।
सेज बनवारी बनवारी तन आभरन
गोरे तनवारी बनवारी आजु आवैंगे ॥४॥

(२६५) जसवन्तसिंह (महाराजा माड़वार)।

महाराजा जसवन्तसिंह का जन्म संवत् १६८२ में हुआ था। ये महाराज गजसिंह के द्वितीय पुत्र थे। इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम अमरसिंह था। संवत् १६९१ में महाराजा गजसिंह ने अपने बड़े पुत्र के उद्दत स्वभाव के कारण उसे अराजक करके देश से निकाल दिया। महाराजा जसवन्तसिंह अपने पिता के स्वर्गवास होने पर संवत् १६९५ में सिंहासनारूढ़ हुए। महाराजा जसवन्तसिंह के राज्य से मूर्खता और अज्ञान निकल गये और उसमें विद्या का पूर्ण सत्कार हुआ। इतिहास में लिखा है कि इनके लिए न जाने कितनी पुस्तकें बनाई गईं। ये महाराज मध्य प्रदेश में बादशाह की ओर से लड़े थे। फिर ये महाशय मालवा के गवर्नर बनाये गये। जब औरंगजेब ने राज्य पाने को विद्रोह किया, तब ये शाही दल के सेनापति नियत हुए। औरंगजेब ने शाही दल को पराजित करके जसवन्तसिंह को गुजरात का गवर्नर कर दिया। फिर वहाँ से शाइस्ता ख़ाँ के साथ ये महाराज शिवाजी से लड़ने को दक्षिण भेजे गये। वहाँ इन्होंने हिन्दू धर्म्म का पक्ष किया और छिपे

छिपे शिवाजी से मिलकर शाइस्ता ख़ाँ के दल की दुर्गति करा डाली। वहाँ से ये औरंगज़ेब की ओर से अफ़गानों को जीतने के निमित्त काबुल भेजे गये। वहीं संवत् १७३८ में इनका शरीरपात हुआ।

ये महाशय भाषा के बहुत अच्छे कवि थे। इनके भाषा-भूषण के अतिरिक्त निम्न लिखित ग्रन्थ हैं:—१ अपरोक्षसिद्धांत, २ अनुभवप्रकाश, ३ आनंदविलास, ४ सिद्धांतबोध, ५ सिद्धांत सार, ६ प्रबोधचंद्रोदय नाटक। भाषाभूषण को छोड़कर इनके शेष ग्रन्थ वेदांत के हैं। इन्होंने भाषाभूषण नामक २६१ दोहों में रीति का बड़ाही उत्तम ग्रन्थ बनाया। इसमें इन महाराज ने प्रथम भाव भेद कहा, परन्तु उसके अंगों के उदाहरण न देकर केवल लक्षण दिये। उसके पीछे अर्थालंकारों का ग्रन्थ में बड़ा उत्तम वर्णन है। अर्थालंकारों में इन्होंने लक्षण और उदाहरण दोनों दिये हैं। सब से प्रथम अलंकारों का ग्रन्थ कृपाराम ने और फिर महाकवि केशवदास ने संवत् १६५८ में बनाया। यह ग्रन्थ कविप्रिया है। परन्तु केशवदास भरत मतानुसार नहीं चले। उनके पश्चात् सब से प्रथम अलंकारों ही का वर्णन महाराज जसवन्तसिंह ने किया। जिस प्रकार इन्होंने अर्थालंकार कहे हैं, उसी रीति से वे अब भी कहे जाते हैं। इस ग्रन्थ के कारण ये महाराज भाषालंकारों के आचार्य्य समझे जाते हैं। यह ग्रन्थ अद्यावधि अलंकारों के ग्रन्थों में बहुत पूज्य दृष्टि से देखा जाता है। माड़वार (जोधपुर) के राज-कवि मुरारिदान के जसवन्तजसोभूषण से भी विदित होता है कि भाषाभूषण वास्तव में इन्हीं महाराज का बनाया हुआ है (देखिए उसका पृष्ठ नं० १४)।

इस ग्रन्थ की टीका दलपतिराय वंसीधर ने संवत् १७९२ में की। इस टीका का नाम अलंकाररत्नाकर है। जिज्ञासु के लिए अब भी यह प्रायः सर्वोत्तम ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ इस समय हमारे पास मौजूद है। भाषाभूषण का दूसरा तिलक प्रसिद्ध कवि परताप साहि ने बनाया। यह अभी हमारे देखने में नहीं आया, परन्तु परताप की काव्यनिपुणता से हमें निश्चय है कि यह टीका भी परमोत्तम होगी। भाषाभूषण की तृतीय टीका कवि गुलाब ने भूषणचन्द्रिका ग्रन्थ द्वारा बनाई। यह टीका भी हमारे पास वर्त्तमान है और बहुत अच्छी बनी है।

महाराजा जसवन्तसिंह को अलंकारों का भारी आचार्य्य समझना चाहिए। इन्हीं की रीति पर अन्य कवि चले हैं। इनकी कविता भी परम मनोहर है। बड़े सन्तोष की बात है कि इन्होंने बड़े महाराज होकर भी भाषा का इतना आदर किया कि स्वयं काव्यरचना की और भाषाभूषण सा उत्तम ग्रन्थ रचा। यह हिन्दी के लिए बड़े सौभाग्य की बात है।

उदाहरण।

मुख ससि वा ससि सों अधिक उदित जोति दिन राति।
सागरते उपजी न यह कमला अपर सोहाति॥
नैन कमल ए ऐन हैं और कमल केहि काम।
गमन करत नीकी लगै कनक लता यह वाम॥
धरम दुरै आरोप तै सुद्धापन्हुति होय।
उर पर नाहिँ उरोज ये कनक लता फल दोय॥
परजस्ता गुन और को और विषे आरोप।

हाय सुधाधर नाहिँ यह बदन सुधाधर ओप ॥

हम इन्हें दास की श्रेणी में रखते हैं।

नाम—(२६६) नीलकंठ त्रिपाठी उपनाम जटाशङ्कर, भूपण के भाई।

ग्रन्थ—अमरेशविलास (१६९८)।

कविताकाल—१६९८।

विवरण—इन्होंने जमक पूर्ण उत्तम कविता की है। हम इन्हें तोप की श्रेणी में रक्खेंगे। अपने भाइयों में ये सब से छोटे थे।

उदाहरण।

तन पर भारतीन तन पर भारतीन
तन पर भारतीन तन पर भार हैं।
पूजैं देवदार तीन पूजैं देवदार तीन
पूजैं देवदार तीन पूजैं देवदार हैं ॥
नीलकंठ दारुन दलेल खाँ तिहारी धाक
नाकतों न द्वार ते वै नाकतों पहार हैं।
आँधरेन कर गहे बहिरे न संग रहे
बार छूटे बार छूटे बार छूटे बार हैं ॥

(२६७) ताज।

ये कोई मुसलमान जाति की स्त्री थीं। इनके वंश, स्थान इत्यादि का कोई ठीक ठीक पता नहीं लगा। कवि गोविन्द गोला भाई के यहाँ इनके सैकड़ों छन्द विद्यमान हैं, पर इनके विषय में कुछ हाल उनको भी नहीं मालूम है। शिवसिंहसरोज में इनका संवत्

१६५२ कहा गया है, और मुन्शी देवीप्रसाद ने संवत् १७०० के लग भग इनका समय लिखा है। इनकी कविता बहुत ही सरल और मनोहर है। ये अपनी धुन की बहुत ही पक्की थीं। रसखानि की भाँति ये भी श्रीकृष्णचन्द्रजी की भक्ति में ख़ूब रँगी थीं। इनकी भक्ति का परिचय इनकी कविता से मिलता है। इनकी भाषा पंजाबी और खड़ी बोली मिश्रित है, जो आदरणीय है। जान पड़ता है कि ये पन्जाब के तरफ़ की हैं। इनको हम तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ इनके दो छन्द उद्धृत किये जाते हैं।

सुनो दिल जानी मेड़े दिल की कहानी
तुम दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं।
देवपूजा ठानी मैं निवाज हू भुलानी
तजे कलमा कुरान साड़े गुनन गहूँगी मैं॥
स्यामला सलोना सिरताज सिर कुल्ले दिये
तेरे नेह दाग मैं निदाग हो दहूँगी मैं।
नन्द के कुमार कुरबान तांड़ी सूरत पै
तांड़ नाल प्यारे हिन्दुवानी हो रहूँगी मैं॥

छैल जो छबीला सब रङ्ग में रँगीला
बड़ा चित्त का अड़ीला कहूँ देवतों से न्यारा है।
माल गले सोहै नाक मोती सेत सोहै कान
मोहै मन कुंडल मुकुट सीस धारा है॥
दुष्ट जन मारे सतजन रखवारे ताज
चित हित वारे प्रेम प्रीति कर वारा है।

नन्दजू का प्यारा जिन कंस को पछारा
वह वृन्दावन वारा कृष्ण साहेब हमारा है॥

नाम—(२६८) शिरोमणि ब्राह्मण।

रचना—कई ग्रन्थ।

समय—१७०० लगभग।

विवरण—शाहजहाँ बादशाह के दरबार में थे। साधारण श्रेणी का काव्य है।

उदाहरण देखिए।

सागर के पार जुद्ध माच्यो राम रावनहि
सिरोमनि भारी घमसान यक बार भो।
घुमत घायल जहाँ अलल अलल बोलैं
बलल बलल बहै लोहू यक तार भो॥
छिन छिन छूटत पनारे रतनारे भारे
नारे खोरे मिलि कै समुद्र यक सार भो।
बूड़ि गयो बैल व्याल नायक निकरि गयो
गिरि गई गिरिजा गिरीस पैरि पार भो॥

इस समय के अन्य कवि गण।

नाम—(२६९) केशवदासचारण।

ग्रन्थ—(१) महाराज गजसिंह का गनरूपकबन्ध, (२) विवेक-वार्त्ता।

रचना काल—१६८१।

नाम—(३००) वल्लभदास साधु।
ग्रन्थ—(१) सेवक वानीकी सिद्धान्त, (२) स्फुट भजन।
रचनाकाल—१६८१ के लगभग।
विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३०१) हेमराज।
ग्रन्थ—१ नय चक्र, २ भक्त स्तोत्र भाषा।
जन्म-संवत्—१६६०।
रचना-काल—१६८४।

नाम—(३०२) खरगसेन कायस्थ ग्वालियर वाले।
ग्रन्थ—(१) दानलीला, (२) दीपमालिका-चरित्र।
जन्म-संवत्—१६६०।
रचना-काल—१६८५।

नाम—(३०३) छेमराम।
ग्रन्थ—फ़तेहप्रकाश।
जन्म-सवत्—१६५७।
रचना-काल—१६८५।

नाम—(३०४) जगतसिंह राणा।
ग्रन्थ—जगद्विलास।
रचना-काल—१६८५ से १७११ तक।
विवरण—ये महाराजा-मेवाड़ कवियों के प्रेमी थे। जगद्विलास इनके समय में एक भाट ने वनाया, जिसका नाम नहीं मालूम है।

नाम—(३०५) जगनंद वृन्दावनवासी।
जन्म-संवत्—१६५८।
रचना-काल—१६८५।
विवरण—इनके कवित्त हजारा में हैं। निम्न श्रेणी।

नाम—
ग्रन्थ—वृन्दावनस्तव।
रचना-काल—१६८६।
विवरण—यह ग्रन्थ १११ दोहाओं का है। इसे हमने छत्रपूर में देखा है, पर इसके रचयिता का नाम नहीं मिला।

नाम—(३०६) जनमुकुन्द।
ग्रन्थ—१ भवरगीत, २ ध्रुवगीता।
रचना-काल—१६८७।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३०७) मुकुटदास।
ग्रन्थ—भगतविरदावली।
रचना-काल—१६८७।

नाम—(३०८) मोहनदास कायस्थ कुरसट हरदोई।
ग्रन्थ—१ स्नेहलीला, २ स्वरोदय-पवनविचार, ३ पवन-विजय-स्वरशास्त्र।
रचना-काल—१६८७।

नाम—(३०९) रसराम।
ग्रन्थ—मददीपिका।
रचना काल—१६८७।

नाम—(३१०) गोकुलबिहारी।

जन्म संवत्—१६६०।

रचना-काल—१६९०।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(३११) परशुराम ब्रजवासी।

ग्रन्थ—वैराग्यनिर्णय।

जन्म संवत्—१६६०।

रचना काल—१६९०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३१२) हरिनाथ महापात्र।

ग्रन्थ—स्फुट छन्द।

रचना-काल—१६९०।

विवरण—यह कवि शाहजहाँ बादशाह का कृपापात्र था। ये नरहरि के पुत्र थे। इनके विषय यह दोहा प्रसिद्ध है।

दान पाय दोई बढ़े की हरि की हरिनाथ।
उन बढ़ि नीचे कर किया इन बढ़ि ऊँचे हाथ॥

इसी दोहे पर प्रसन्न होकर इन्होंने एक लाख से अधिक की सम्पत्ति दोहा बनानेवाले को देदी थी।

नाम—(३१३) रघुनाथराय।

रचना-काल—१६९१।

विवरण—राजा अमरसिंह जोधपुर वाले के यहाँ थे। साधारण कवि थे।

नाम—(३१४) चतुरदास।

ग्रन्थ—१ एकादशस्कंध भाषा, २ श्रीहितजू को मंगल।

रचना-काल—१६९२।

विवरण—ये सोमसंतदास के चेले थे।

नाम—(३१५) मानसिंह।

ग्रन्थ—अश्वमेधपर्व।

रचना-काल—१६९२।

विवरण—चौहान ठाकुर हरिगाँव (खीरी)।

नाम—(३१६) त्रिविक्रमसेन राजा।

ग्रन्थ—(१) शालिहोत्र पृ० ८२ पद्य।

रचना-काल—१६९४।

नाम—(३१७) बिहारीदास व्रजवासी।

ग्रन्थ—(१) संबोधिपंचाशिका, (२) वासुदेव की साठिका।

जन्म-संवत्—१६७०।

रचना-काल—१६९५।

नाम—(३१८) अहमद।

ग्रन्थ—स्फुट काव्य।

जन्म-संवत्—१६६०।

रचना-काल—१६९६।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३१९) गोपनाथ।

जन्म-संवत्—१६७०।

रचना-काल—१६९६।
विवरण—निम्न श्रेणी।
नाम—(३२०) सदल बच्छ।
ग्रन्थ—सादेयदिच्छ सावलग्या का दूहा।
रचना-काल—१६९७।
नाम—(३२१) शिरोमणि मिश्र (पुँडरिको ग्राम)।
ग्रन्थ—उर्वशी।
रचना-काल—१६९७।
विवरण—ब्राह्मण माथुर थे। सम्राट् शाहजहाँ के समय में हुये।
नाम—(३२२) निधान।
रचना-काल—१६९८।
नाम—(३२३) अलि कृष्णावति।
ग्रन्थ—स्फुट पद।
रचना काल—१७०० के लगभग।
नाम—(३२४) कृष्ण गिरिधर जी।
ग्रन्थ—स्फुट पद।
रचना काल—१७०० के लगभग।
नाम—(३२५) जगन्नाथदास।
रचना-काल—१७०० के क़रीब।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। निम्न श्रेणी।
नाम—(३२६) रायचन्द नागर।
ग्रन्थ—(१) गीतगोविन्दादर्श, (२) लीलावती।

रचना-काल—१७०० के करीब।
विवरण—मुर्शिदाबाद के जगत सेठ डालचन्द के यहाँ थे।

नाम—(३२७) कपूरचन्द।
ग्रन्थ—भाषा रामायण।
रचनाकाल—१७००।

नाम—(३२८) कलानिधि प्राचीन।
जन्म-संवत्—१६७२।
रचनाकाल—१७००।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३२९) कारे बेग फ़क़ीर।
रचना-काल—१७००।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३३०) गोपालदास ब्रजवासी।
ग्रन्थ—(१) मोहविवेक, (२) परिचय स्वामी दादूजी की।
रचना-काल—१७००।
विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। इस नाम के दो कवि खोज में लिखे हैं, परन्तु हमें दोनों एक ही जान पड़ते हैं।

नाम—(३३१) गोविन्द अटल।
जन्म-संवत्—१६७०।
रचनाकाल—१७००।
विवरण—इनकी रचना हज़ारा में है।

नाम—(३३२) छबीले ब्रजवासी।

रचनाकाल—१७००।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। साधारण श्रेणी। इनक
नाम सूदन ने भी सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(३३३) छैल।

रचनाकाल—१७००।

विवरण—इनके छन्द हज़ारा में हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(३३४) ठाकुर प्राचीन।

रचनाकाल—१७००।

विवरण—पदुमाकर श्रेणी। इनके छन्द कालिदासहज़ारा में हैं

नाम—(३३५) तुलसीदास।

ग्रन्थ—(१) कविमाल (१७००), (२) ध्रुवप्रश्नावली।

रचनाकाल—१७००।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(३३६) धोंधे।

रचनाकाल—१७००।

विवरण—इनके पद रागसागरोद्भव में हैं। निम्न श्रेणी।

नाम—(३३७) परमेश प्राचीन।

[illegible] १६८०।

रचना-काल—१७०० ।

विवरण—तोषश्रेणी ।

नाम—(३३८) प्रतापसहाय सिरोहिया उदैपूर तथा बूँदी ।

ग्रन्थ—स्फुटकाव्य ।

रचना-काल—१७०० ।

विवरण—ये पहले उदैपुर में राणा राजसिंह के यहाँ थे। वहाँ गड़बड़ हो जाने से बूंदी चले गये। वहाँ इनको जागीर तथा रावराजा का ख़िताब मिला और फिर ये वहीं रहे। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(३३९) रज्जबजी ।

ग्रन्थ—ग्रन्थसर्वांगी ।

रचना काल—१७०० ।

विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाशय दादूजी के शिष्य थे। इन्होंने खड़ी बोली लिये हुए भी कविता की है।

नाम—(३४०) सभाचंद ।

ग्रन्थ—कालीचरित्र ११२ पद्य ।

रचना-काल—१७०० ।

नाम—(३४१) रघुराम गुजराती अहमदाबादवासी ।

ग्रन्थ—(१) सभासार, (२) माधवविलास ।

रचना काल—१७०१ ।

नाम—(३४२) ब्रजलाल ।

रचना-काल—१७०२ ।

विवरण—इनकी रचना हज़ारा में है। साधारण श्रेणी।

नाम—(३४३) हीरालाल कायस्थ भोजमन वाले।

ग्रन्थ—रुक्मिणीमंगल।

रचना-काल—१७०४।

विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी। ग्रन्थ देखा।

नाम—(३४४) अभिमन्यु।

जन्म-संवत्—१६७२।

रचना-काल—१७०५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३४५) गिरिधारी।

ग्रन्थ—भक्तिमाहात्म्य। पृ० ११४ पद्य।

रचना-काल—१७०५।

नाम—(३४६) जगजीवन।

रचना काल—१७०५।

विवरण—इनकी रचना हज़ारा में है। साधारण श्रेणी।

नाम—(३४७) रसिकशिरोमणि।

रचना-काल—१७०५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३४८) हीरामणि।

जन्म-संवत्—१६८०।

रचना-काल—१७०५।

विवरण—इनके छंद हजारा में हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(३४६) क़ाज़ी क़दम।

ग्रन्थ—साखी।

रचना काल—१७०६ से प्रथम।

नाम—(३५०) मधुसूदन।

जन्म-संवत्—१६८१।

रचना-काल—१७०६।

विवरण—साधारण श्रेणी।

इक्कीसवाँ अध्याय।

बिहारीकाल (१७०७ से १७२० तक)

(३५१) महाकवि बिहारीलाल जी।

ये महाशय ककोर कुल के माथुर ब्राह्मण थे। इनका जन्म अनुमान से संवत् १६६० में ग्वालियर के निकट वसुवागोविंदपुर में हुआ था। इनकी बाल्यावस्था बुँदेलखंड में बीती और तरुणावस्था में ये मथुरा अपनी ससुराल में रहे। कहते हैं कि इनके टीकाकार कृष्ण कवि इन्हीं के पुत्र थे। इनका मरण-काल अनुमान से संवत् १७२० समझ पड़ता है। ये महाशय जैपूर के मिर्ज़ा महाराजा जयसिंह के यहाँ रहा करते थे। कहते हैं कि एक समय जयसिंह एक छोटी सी रानी के प्रेम में ऐसे मग्न हो गये थे कि कभी बाहर निकलते ही नहीं थे। इस पर

निम्नलिखित दोहा विहारी जी ने किसी तरह से महाराज के भिजवाया —

> नहिँ पराग नहिँ मधुर मधु नहिँ विकास यहि काल।
> अली कली ही सों बिँध्यो आगे कौन हवाल ॥

इसको पाकर महाराज बाहर निकले और तभी से दरबार में विहारी का बड़ा मान होने लगा। इस के बाद कहते हैं कि विहारी को प्रति दोहा १ अशरफ़ी मिलती रही और ये महाराय समय समय पर दोहे बना कर महाराज को देते रहे। इसी तरह सात सौ दोहे एकत्र हो गये, जो पीछे क्रमबद्ध कर दिये गये। इनके कुलविषयक कुछ लोग सन्देह उठाते और इन्हें भाट बतलाते हैं। हम ने हिन्दीनवरत्न में इनके चौबे होने के विषय में कुछ प्रमाण दिये हैं। पीछे से यह निश्चयरूप से जान पड़ा कि ये महाराय चौबे थे। इन के वंशज अमरकृष्ण चौबे बूँदी दरबार के राजकवि हैं, जिन का कथन इस ग्रन्थ में संवत् १९५२ के कवियों में किया गया है। उन्होंने दो छन्दों द्वारा अपने पिता से लेकर विहारीलाल तक सब पूर्व पुरुषों के नाम गिना दिये हैं। वह दोनो छन्द उनके वर्णन में लिखे हैं।

सतसई में कुल ७१९ दोहे हैं और ७ दोहों में उसकी प्रशंसा की गई है। इस ग्रंथ पर बहुत से कवियों ने टीकायें कीं और बहुतों ने इसी के प्रतिबिंब पर कुंडलिया, सवैया, श्लोक, शेर, इत्यादि बनाये हैं। इनके टीकाकारों में सूरति, चंद्र (पठान सुल्तान अली), कृष्ण, सरदार और भारतेंदु जी सुकवि हैं। इनकी

सतसई पर लगभग ३० टीका और प्रतिबिंब रचने वाले कवियों के वर्णन स्थान स्थान पर इसी इतिहास में मिलेंगे। इसका क्रम जो आज कल देख पड़ता है, वह आज़म शाह ने कराया, अतः वह आज़मशाही कहलाता है।

सतसई के प्रथम, पंचम और सप्तम शतक बड़े ही उत्तम हैं। इसमें कोई क्रमबद्ध वर्णन नहीं किया गया, परंतु कितने ही विषय आगये हैं। इनकी कविता में बहुत प्रकार और भाषाओं के शब्द मिलते हैं, पर वह सब मिला कर ब्रज भाषा और बुँदेल खंडी का मिश्रण और बहुत ही प्रशंसनीय है। इनका बोल चाल बहुत ही स्वाभाविक तथा इबारतआराई बहुत ही उत्कृष्ट है। इन्होंने यमक तथा पद-मैत्री का बहुत प्रयोग किया है और शृंगार के कोमल वर्णन करने पर भी यह कविरत्न ज़ोरदार भाषा लिखने में भी समर्थ हुआ है। इन्हों ने काव्यांग बड़े ही स्पष्ट कहे हैं और रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि बड़े चमत्कारी लिखे हैं। बिहारी ने रंगों के मिलाव के वर्णन बड़े ही विशद किये हैं, तथा प्रकृतिनिरीक्षण का फल इनके बहुत से छन्दों में देख पड़ता है। अंतिम गुण के साथ इनका काइयाँपन भी ख़ूब मिल जाता था और इन्होंने मानुपीय प्रकृति का वर्णन बड़ा ही उत्तम, सत्य और हृदयग्राही किया है। नागर वर्णनों में इन्हों ने सुकुमारता की मात्रा बहुत रक्खी है, यहाँ तक कि ग्रामीण वर्णनों तक में वह प्रस्तुत है। बिहारी की कविता में चोज बहुत हैं और वह बढ़िया भी होते हैं। इनकी रचना में सुष्ठु छंदों की मात्रा बहुत अधिक है और उसमें बहुत से ऊँचे और ख़ास इनके ख़याल

ज्ञात बहुतायत से हैं। बिहारी ने धार्मिक ख़याल भी बहुत अच्छे कहे हैं और दूर की कौड़ी भी यह ख़ूबही लाये हैं। कलियुग के दानियों की इन्होंने बहुत निंदा की है और अपनी कविता में यत्र तत्र मज़ाक भी अच्छा रक्खा है। हिन्दी में बिहारीलाल ने उर्दू के ढंग की भी कविता की है और इसमें उन्हें कृतकार्यता भी हुई है। सम्भवतः इसी कारण यह आजमशाह, पठान सुल्तान, आदि को बहुत पसन्द पड़ी। सतसई एक बड़ा ही मनोहर और चित्ताकर्षक ग्रंथ है। हम इनको परम प्रशंसनीय कवि समझते हैं और हिन्दी में तुलसीदास, सूरदास तथा देव के बाद इन्हीं की गणना है। इनका विशेष वर्णन हमारे रचित नवरत्न में मिलेगा।

उदाहरण।

पति रितु औगुन गुन बढ़त मान माह को सीत।
जात कठिन ह्वै अति मृदौ रवनी मन नवनीत॥
कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात नर यह पाए बौराय॥
तंत्री नाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।
अन बूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग॥
बिरह बिकल बिनही लिखी पाती दई पठाय।
आंक बिहीनी ये सुचित सूने बांचत जाय॥
लिखन बैठि जाकी सबिह गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर॥
बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनि हँसै देन कहै नटि जाय॥

रनित भृंग घंटावली झरत दान मधुनीर।
मंद मंद आवत चल्यो कुंजर कुंज समीर॥

केसरि केसरि क्यों सकै चंपक कितक अनूप।
गात रूप लखि जात दुरि जातरूप को रूप॥

गोरी गदकारी परै हँसत कपोलनि गाड़।
कैसी लसति गँवारि यह सोनकिरवा की आड़॥

वै न इहाँ नागर बड़े जिन आदरतो आब।
फूल्यो अनफूल्यो भयो गवईं गावँ गुलाब॥

अनी बड़ी उमड़ी लखे असि बाहक भट भूप।
मंगल करि मान्यो हिये भो मुहँ मंगल रूप॥

यहि आसा अटक्यो रहै अलि गुलाब के मूल।
ऐहैं बहुरि बसन्त ऋतु इन डारन वै फूल॥

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परे स्याम हरित दुति होय॥

मिलि परछाहीं जोन्ह सौं रहे दुहुन के गात।
हरि राधा इक साथ ही चले गलिन मैं जात॥

बन को हितु उनहीं बनै कोई करौ कितेक।
फिरत काक गोलक भयो दुहू देह जिउ एक॥

सुनत पथिक मुहँ माह निसि लुवैं चलत वहि गाम
बिनु पूछे बिनही कहे जियत बिचारी बाम॥

अंग अंग प्रतिबिम्ब परि दरपन से सब गात।
दोहरे तेहरे चौहरे भूषन जाने जात॥

पत्राही तिथि पाइये वा घर के चहु पास।
नित प्रति पूनोई रहै आनन ओप उजास॥

(३५२) शम्भुनाथ सुलंकी राजा।

ये महाराज शम्भुनाथ सिंह सुलंकी, शम्भु कवि, नाथकवि, नृप शम्भु आदि कई नामों से विख्यात हैं। ये सितारागढ़ के राजा स्वयं कवि और कवियों के लिए कल्पवृक्ष थे। कहते हैं कि प्रसिद्ध कवि मतिराम इनके मित्र थे। इनका उत्पत्तिकाल सरोज में संवत् १७३८ लिखा है और खोज में इनका कविताकाल १७०७ दिया है। हमारे मत में मतिराम का जन्म १६७४ के लगभग हुआ और उनका कविता-काल १७१० के लगभग है। हमें नृप शम्भु का कविता-काल खोज के अनुसार १७०७ के लगभग जँचता है। सरोज में लिखा है कि इनका एक नायिका भेद का ग्रन्थ उत्कृष्ट है, पर हमारे देखने में वह नहीं आया। तथापि इनका ऐसा ग्रन्थ होना अनुमान सिद्ध है, क्योंकि इनके नायिका भेद के बहुत छन्द मिलते हैं। हमने इनका एक नखशिख मुद्रित देखा है। ऐसा चटकीला नखशिख हमने किसी दूसरे कवि का नहीं देखा। इस महा कवि में भाषा और भाव दोनों ही का अच्छा चमत्कार देख पड़ता है। इनके छन्द बहुत ही टकसाली होते थे। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

फाग रच्यो नँद नन्द प्रवीन बजैं बहु बीन मृदंग रबावैं।
खेलतीं वै सुकुमारि तिया जिन भूषन हू की सहीं नहिं दावैं॥

सेत अबीर के धूधुर में इमि बालन की बिकसों मुख आवैं।
चाँदनि में चहुँ ओर मनो नृप सम्भु विराजि रहीं महतावैं॥
कोहर कौल जपा दल विद्रुम का इतनी जु बँधूक में कोति है।
रोचन रोरि रची मेहँदी नृप शम्भु कहैं मुकुता सम पोति है॥
पायँ धरै ढरै ईंगुरई तिन में खरी पायल की घनी जोति है।
हाथ द्वै तीनिक चारिहुँ ओर लौं चाँदनि चूनरी के रँग होति है॥

नाम—(३५३) बारहट नर हरिदास।

ग्रन्थ—१ दशम स्कन्ध भाषा, २ रामचरित्रकथा (कागभुशुण्डी-गरुड़-संवाद), ३ अहिल्या पूर्व-प्रसंग, ४ अवतार-चरित्र (अवतार-गीता), ५ बानी।

कविताकाल—१७०७।

विवरण—ये महाशय सुकवि थे और इनकी गणना तोष श्रेणी में की जाती है। इन्होंने अपने सभी छन्दों को उत्तम प्रकार से कहा है और प्रत्येक ग्रन्थ में एक अच्छी कथा भी कही है। इन्हों ने विषय चुनने में बड़ी पटुता दिखाई और वर्णन सफलतापूर्वक किये। आश्चर्य है कि इनके ग्रन्थ संसार में भली भाँति प्रचलित नहीं हैं। कथाप्रसंग के अनुरूप इन्होंने छन्द भी उत्तम चुने हैं।

उदाहरण।

यहि प्रकार कोशल कुमार ऋषि नारि उधारिय।
इन्द्र घोप पति शाप मोपि सिल देह सुधारिय॥

पावन पदरज परस पाप परिहरि पुनीत भय।
सुमन बरषि सुर गगन बानि जस गावत जय जय॥
जेहि चरन सरन नर हरि सुकवि विग्रह बंधन छेदि गनि।
सोइ राम करन कारन समथ महाबाहु अवतार मनि॥
या धवला गिरि वास वेष वरणी हंसं वरं वाहनी।
या धवलं अवतंस अंग अमलं कर वीणा वाणी वरा॥
या धवलं वसना विसाल नयनी स्याम'च सरलं कया।
सा अनुकंप्य सरस्वती सुवदना विद्यावरं दायनी॥

नाम—(३५४) प्राणनाथ प्रसिद्ध पन्ना के धर्म-प्रचारक।

ग्रन्थ—(१) क़यामतनामा, (२) राजविनोद, (३) ब्रह्मवाणी, (४) कीर्त्तन, (५) प्रगट बानी, (६) बीस गरोहों का बाच, (७) पदावली।

समय—१७०७।

विवरण—इन्हों ने १४ ग्रन्थ बनाये। क़यामतनामा में फ़ारसी के शब्द बहुत हैं। ये महाराज पन्ना में थे और इन्हों ने पन्ना के महाराज को हीरा की खानि बनाई। पन्ना में इनकी अब तक पूजा होती है। ये बड़े ही अच्छे साधु थे। इन्हों ने बुन्देलखण्ड में जातीयता जागृत की थी। इन की स्फुट कविता बहुत सुनी है जो बड़ी ही ज़ोरदार और भक्तिपूर्ण है।

उदाहरण।

चन्द बिन रजनी सरोज बिन सरवर
तेज बिन तुरग मतङ्ग बिन मद को।

विनु सुत सदन नितम्बिनी सुपति विन
धन विन धरम नृपति विन पद को ॥
विनु हरि भजन जगत सो है जन कौन
नोन विनु भोजन विटप विना छद को
प्राननाथ सरस सभा न सोहै कवि
विनु विद्या विन बात न नगर विना नद को ॥

(३५५) भरमी ने संवत् १७०८ के लगभग रचना की। रचना इनकी स्फुट देखने में आती है, जो अच्छी है। कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आया। काव्यनोष कवि की श्रेणी का है।

उदाहरण।

जिन मुच्छन धरि हाथ कछू जग सुजस न लीनो।
जिन मुच्छन धरि हाथ कछू परकाज न कीनो॥
जिन मुच्छन धरि हाथ दीन लखि दया न आनी।
जिन मुच्छन धरि हाथ कबौ पर पीर न जानी॥
अब मुच्छ नहीँ वह पुच्छ सम कवि भरमी उर आनिए।
नित दया दान सनमान नहिँ मुच्छ न तेहि मुख जानिए॥

(३५६) भीष्म कवि।

इन्होंने दशमस्कन्ध भागवत के प्रथमार्द्ध का परम मनोहर छन्दोबद्ध उल्था 'बालमुकुन्द-लीला' के नाम से किया। इन की कविता सर्वथा प्रशंसनीय है, पर इन के समय कुल गोत्र आदि के विषय में कोई पता नहीं लगता। सरोज में एक भीषम का उत्पत्ति-

काल १६८१ लिखा है और दूसरे का १७०८। जान पड़ता है ये दोनों भीष्म एक ही हैं। सरोज के उदाहरण की उत्तमता खोज के उदाहरण से समानता करती है। हम इन का कविता-काल १७१० मानते और इन्हें तोष की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण।

थोपि थलकत झलकत बाल बिधु भाल
सेंदुर लसत मानो बानो बीर बेस को।
मद जल झरत लसत अलि बृन्द सुंड
कुंडली करत मन हरत महेस को॥
भीषम भनत ऐसो ध्यान जो धरत नर
लेस न रहत उर कुमति कलेस को।
सांकरे सहायक सकल सिधि दायक
समत्थ सुभ सत्थ पगपूजिये गनेस को॥

नन्द बबा कि सैां मारिहैां सांटि उतारि कै तो गहने सब लैहैां।
भैाहँ कमान तू काहे चढ़ावति नैनन डाटेते हैां न डरैहैां॥
देखत ही छिन एक में भीषम ग्वालन पै दधि दूध लुटैहैां।
गूजरी गाल न मारु गँवारि हैां दान लिये बिन जान न दैहैां॥

(३५७) दामोदरदास।

ये महाशय दादू के शिष्य जगजीवनदास के चेले थे। इससे इन का समय १७१५ संवत् के लगभग समझना चाहिए। इन्हें ने गद्य में मार्कंडेय पुराण का उल्था बनाया। यह गद्य राजपूतानी

भाषा में है। अतः इस कवि का भी नाम प्राचीन समय के गद्य-लेखकों में आता है।

उदाहरण।

अथ बन्दन गुरु देव कू नमस्कार। गोविन्द जीकूं नमस्कार। सर्व परकार के सिध साध ऋपि मुनि जन सरब हीकू नमस्कार। अहो तुम सब साध ऐसी बुधि देहु जा बुधि करि या ग्रन्थ की वारतीक भाषा अरथ रचना करिये। सरब सन्तन की कृपा ते समस्त कारज सिधि होजी।

इन्हों ने दोहे भी कहे हैं।

सगति सुरझे प्राणि सब च्यार चरण कुल सद्य।
हरि सुमरण हित सूं करे कारज होवै तद्य॥
कोटि कोटि कित कीजिये जो कीजे सत संग।
सत सगत सुमरण बिना चढ़े न जिउ के रंग॥

(३५८) मणिमंडन मिश्र उपनाम मंडन।

यह कवि जैतपुर बुँदेलखंड में सवत् १६९० में उत्पन्न हुआ था। इन के तीन ग्रन्थ सुने जाते हैं पर हमारे देखने में एक भी नहीं आया, यद्यपि इन के स्फुट कवित्त बहुतेरे सुने और देखे गये हैं। इन के विषय में यह किंवदंती कुछ कुछ प्रसिद्ध है कि ये भूपण और मतिराम इत्यादि के भाई थे पर यह बात बिलकुल अशुद्ध है। यह बुँदेलखंडी थे और भूपण इत्यादि जिला कानपुर के रहने वाले। हमने भूपण के वासस्थान तिकवांपुर (जिला कानपुर) में इस का

पता चलाया, तो मडन को कोई भी इन का भाई नहीं बतलाता। मंडनजी भाग्यशाली कवि हैं, क्योंकि कविमंडली में इनका नाम खूब है, यहाँ तक कि कुछ लोग इन्हें बड़ेही ऊँचे दरजे का कवि मानते हैं। इन की कविता सरस और मधुर होती थी। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी का कवि समझते हैं।

उदाहरण।

अलि हौं तो गई जमुना जल को सु कहा कहौं वीर विपत्ति परी।
घहराय कै कारी घटा उनई इतने ही मैं गागरि सीस धरी॥
रपट्यो पग घाट चढ्यो न गयो कवि मंडन ह्वै कै बिहाल गिरी।
चिरजीवहु नन्द को बारो अरी गहि बाहँ गरीब ने ठाढ़ी करी॥१॥
खेलन को रस छाँड़ि दियो दिन द्वै कते राति कहाँ बसती हौ।
मंडन अंग सम्हारन का नित चंदन केसर लै घसती हौ॥
छाती बिहारि निहारि कछू अपनी अँगिया की तनी कसती हौ।
तो तन को अचरा उघरो कहो मो तन ताकि कहा हँसती हौ॥२॥

मडनजी के नाम से हमने कुछ पद भी सुने हैं, जैसे,

"अरे हाँ हाँ हाँ, अरे हाँ हाँ हाँ, मकराकृत कुंडल कानन माँ।
हम धाया राम जनक पुर माँ॥

पर अवश्यही यह कविता किसी और ही मनुष्य की है, क्योंकि मंडनजी ऐसी गँवारी ठेठ बैसवारे की बोली में भला कब कविता करने बैठते।

इनके बनाये हुए रसरत्नावली, रसविलास, जनकपचीसी, जानकी जू का बिवाह और नैनपचासा नामक ग्रन्थ खोज में लिखे हैं। इन्होंने पुरंदरमाया १७१६ में रची।

(३५६) महाकवि मतिरामजी।

ये महाकवि तिकवांपूर ज़िला कानपूर-निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र और प्रसिद्ध कविभूषण के सगे भाई, कान्यकुब्ज ब्राह्मण त्रिपाठी वंश में सं० १६७४ के लगभग उत्पन्न हुए थे। इनका स्वर्गवास अनुमान से सं० १७७३ में होना समझ पड़ता है। मतिरामजी बूंदी के महाराज राव भाऊसिंह के यहाँ रहते थे और उन्हीं के यश-वर्णन में इन्होंने ललितललाम ग्रन्थ अलंकार का बनाया। भाऊसिंह का राजत्वकाल सं० १७१६ से १७४५ तक है। इसी बीच में यह ग्रन्थ बना होगा। काव्य प्रौढ़ता से यह मतिराम का प्रथम ग्रन्थ समझ पड़ता है, परन्तु फिर भी यह बड़ाही विशद ग्रन्थ है और इस में अलंकारों के उदाहरण बहुत ही साफ़ तथा प्रतिभावान् हैं। इस में शृंगार प्रधान तथा भाऊसिंह की प्रशंसा के छन्द बराबर बराबर हैं, तथा अन्य विषयों के भी कुछ छन्द हैं। इसके कुछ बढ़िया छन्द मतिराम ने रसराज में भी रख दिये हैं। यदि कोई मनुष्य बिना गुरु की सहायता के अलंकार का विषय जानना चाहे, तो वह इस ग्रन्थ से जान सकता है। इन्हों ने पहला ग्रन्थ प्रायः ४५ वर्ष की अवस्था में बनाया। इससे जान पड़ता है कि इन्होंने विद्या कुछ देर को पढ़ी और बहुत काल तक केवल स्फुट कविता की। सम्भव है कि साहित्यसार इसके प्रथम का हो। इन का कविता-काल संवत् १७१० से समझना चाहिए। इन का प्रथम ग्रन्थ इसी समय के लगभग से बनने लगा होगा।

उदाहरण।

धारि के विदार कर धारन के धारिबे को
बारिधर विरची इलाज जयकाज की।
कवि मतिराम बलवन्त जलजन्त जानि
दूरि भई हिम्मति दुरद सिरताज की॥
असरन सरन चरन की सरन गही
ज्योंहीं दीनबन्धु निज नाम क इलाज की।
धाये एते मान अति आतुर उताल मिटी
बीच ब्रजराज के गरज गजराज की॥

सूबनि उमेंड़ि दिल्ली दल दलिबे को
चमू सुभट समूहनि सिवा की उमहति है।
कहै मतिराम ताहि रोकिबे को सगर में
काहू के न हिम्मति हिये में उलहति है॥
सत्रुसाल नन्द के प्रताप की लहरि सब
गरबी गनीम बरगीन को दहति है।
पति पातसाह की इजति उमरावन की
राखी रैया राव भावसिंह की रहति है॥

यह ग्रन्थ बनाने के पीछे जान पड़ता है कि मतिराम का सम्बन्ध बूंदी दरबार से टूट गया, क्योंकि उन्होंने अपने शेष ग्रन्थ छन्द सार पिंगल, साहित्यसार और रसराज बूंदीनरेश के नाम नहीं बनाये। इनके साहित्यसार और लक्षणशृंगार ग्रन्थ अभी हमारे देखने में नहीं आये, परन्तु वे खोज में मिले हैं। छन्दसार

ग्रन्थ मतिराम ने महाराजा शम्भुनाथ सुलंकी के नाम पर बनाया। ये महाराज स्वयम् अच्छे कवि थे और कवियों का सम्मान भी खूब करते थे। छन्दसार के थोड़ेही से पृष्ठ हमारे देखने में आये हैं क्योंकि हमारी प्रति अपूर्ण है। यह ग्रन्थ भी परम मनोहर है। इसके बनाने के पीछे मालूम होता है कि महाराज शम्भुनाथ का भी देहान्त होगया, क्योंकि इन्होंने अपना तीसरा ग्रन्थ रसराज किसी को भी समर्पित नहीं किया। मतिराम का संवन्ध बूंदी से राव बुद्ध के राज्यत्वकाल में छूटा। यह समय सं० १७६५ के लगभग है, सो रसराज इस समय के पीछे बना होगा। यह एक भावभेद का परमोज्ज्वल ग्रंथ है और इसमें भी उदाहरण बहुत ही साफ़ तथा मनोहर आये हैं। नायिकाभेद पढ़ने वाले प्रायः इसे और जगद्विनोद को पहले पढ़ते हैं। नायिकाभेद भावभेद का एक अंशमात्र है और भावभेद के अंतर्गत आलम्बन-विभाव में आता है, परन्तु मतिराम ने नायिकाभेद ही से ग्रन्थ आरम्भ किया और अन्त में भावभेद का कथन किया। उस जगह पर इन्होंने भाव भेदांतर्गत नायिकाभेद उचित स्थान दिखला दिया है। रसराज की कविता बहुत प्रसादगुणपूर्ण है और भाषा की उत्तमता का चमत्कार इस समस्त ग्रन्थ में देख पड़ता है। इसमें से थोड़े से छन्द तो ऐसे उत्कृष्ट हैं कि जिनकी बराबरी साहित्य-संसार में सिवाय देवजी के छन्दों के और किसी के छन्द नहीं कर सकते। उत्तमता में रसराज का पूर्वार्द्ध उसके उत्तरार्द्ध से कुछ अच्छा हुआ है।

मतिराम की भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है। सिवा देवजी के और

कोई भी कवि ऐसी सुस्पष्ट और श्रुतिमधुर भाषा लिखने में समर्थ नहीं हुआ। इनको अनुप्रास का इष्ट न था, पर उचित रीति पर सभी भाषासम्बन्धी सद्गुण इनकी रचना में पाये जाते हैं। उपमायें भी इनकी बहुत अच्छी होती हैं और मानुषीय प्रकृति के भी कहीं कहीं इन्होंने परमोत्कृष्ट चित्र खींचे हैं। इनके काव्य में मनोहर छन्दों की मात्रा विशेषता से पाई जाती है और बुरे छन्द खोज निकालना कठिन काम है। बिहारी के बाद इन्होंने दोहे भी परम चमत्कारयुक्त बनाये हैं। दोहाकारों में बिहारी की और दूसरे छन्दों में देव की समानता इसी कविरत्न ने की है। मतिराम भाषा-सौन्दर्य एवं भावगाम्भीर्य में परम प्रतिष्ठित हैं। इनकी आचार्यता भी ऊँचे दरजे की है। इनका एक ग्रन्थ और मिला है, जिसका नाम सतसई मतिराम है।

काव्य का उदाहरण।

गुच्छन के अवतंस लसै
　　सिखि पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी कर
　　पल्लव सों मतिराम सोहायो॥
गुञ्जन के उर मञ्जुल माल
　　निकुञ्जन ते कढ़ि बाहर आयो।
आजु को रूप लखे नँदलाल को
　　आजु ही आँखिन को फल पायो॥

वैसेई चितै कै मेरे चित को चुरावती हौ
　　बोलती हौ वैसियै मधुर मृदु बानि सों।

कवि मतिराम अंक भरत मयङ्क मुखी
　　वैसेई रहत गहि भुज लतिकानि सों ॥
चूमत कपोल पान करत अधर रस
　　वेसिये निहारी रीति सकल कलानि सों।
कहा चतुराई ठानियत प्रानप्यारी तेरा
　　मान जानियत रूखी मुख मुसुकानि सों ॥

बलय पीठि तरिवन भुजन उर कुच कुंकुम छाप।
तिते जाउ मन भावते जितै बिकाने आप ॥
तरुन अरुन येंड़ीन की किरन समूह उदोत।
वेनी मंडन मुकुत के पुन्ज गुन्ज दुति होत ॥
　सकल सहेलिन के पाछे पाछे डोलति है
　　मन्द मन्द गौन आजु हिय को हरत है।
　सनमुख होत सुख होत मतिराम जब
　　पौन लागे घूँघुट को पट उघरत है ॥
　जमुना के तट, बंसीबट के निकट
　　नन्दलाल को सकोचन ते चाह्यो न परत है।
　तन तौ तिया को बर भाँवरै भरत मन
　　साँवरे बदन पर भाँवरैं भरत है ॥
　मानहु पायो है राज कहूँ
　　चढि बैठत ऐसे पलास के खोढे।
　गुन्ज गरे सिर मोर पखा
　　मतिराम यों गाय चरावत चोढे ॥

मोतिन को मन तोरयो हरा
धरि हाथन सों रही चूनरि पोढ़ें।
पेसेई डोलत छैल भये
तुम्हें लाज न आयति कामरी ओढ़ें॥

आई हो पाँय देवाय महाउर
कुञ्जन ते करि कै सुख सेनी।
साँवरे आजु सँवारयो है अंजन
नैनन को लखि लाजत एनी॥
बात के बूझत ही मतिराम
कहा करती भट्ट भौंह तनैनी।
मूँदी न राखति प्रीति अली यह
गूँदी गोपाल के हाथ की बेनी॥

दूसरे कि बात सुनि परति न ऐसी जहाँ
कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है।
पूरि रहे जहाँ द्रुम बेलिन सों मिलि मतिराम
अलि कुलनि अँध्यारी अधिकाति है॥
तखत से फूलि रहे फूलन के पुंज घन
कुञ्जन में होति जहाँ दिन हू में राति है।
ता बन के बीच कोऊ संग न सहेली कहि
कैसे तू अकेली दधि बेचन को जाति है॥

कुन्दन को रँग फीको लगै
झलकै अति अंगनि चारु गोराई।

आँखिन में अलसानि चितौनि में
मञ्जु बिलासन की सरसाई ॥
को बिनु मोल बिकात नहीं
मतिराम लहे मुसुकानि मिठाई ।
ज्यों ज्यों निहारिय नेरे ह्वै नैननि
त्यों त्यों खरी निसरै सी निकाई ॥

मोरपखा मतिराम किरीट में
कंठ बनी बन माल सोहाई ।
मोहन की मुसुकानि मनोहर
कुंडल डोलनि में छबि छाई ॥
लोचन लोल बिसाल बिलोकनि
को न बिलोकि भयो बस माई ।
वा मुख की मधुराई कहा
कहौं मीठी लगै अँखियानि लोनाई ॥

कोऊ नहीं बरजै मतिराम
रहौ तितही जितही मन भायो ।
काहे को सौंहें हजार करौ तुम
तौ कबहूँ अपराध न ठायो ॥
सोवन दीजै न दीजै हमें दुख
योंहीं कहा रस बाद बढ़ायो ।
मान रह्योई नहीं मन मोहन
मानिनी होय सो मानै मनायो ॥

महावीर सत्रु साल नन्द राव भावसिंह
तेरी धाक अरि पुर जात भय भाय सों।
कहै मतिराम तेरे तेज पुञ्ज लिये गुन
मारुत मैं मारतंड मण्डल बिलोय सों॥
उड़त नवत टूटि फूटि मिटि फाटि जात
बिकल सुखात धीरौ दुग्रन समोय सों।
तूल से तिनूका से तरोवर से तोयद से
तारा से तिमिर से तमीपति से तोय से॥
ज़ोर दल ज़ोरि साहिज़ादो साहिजहां जङ्ग
जुरि मुरि गयो रही राव में सरम सौ।
कहै मतिराम देव मन्दिर बचाये जाके
बर बसुधा मैं बेद श्रुति विधि यों बसी॥
जैसो रजपूत भयो भोज को सपूत हाड़ा
वैसो और दूसरो भयो न जग मैं जसी।
गाइन कौं बकसी कसाइन की आयु सब
गाइन की आयु सो कसाइन को बकसी॥

इस कवि ने प्रत्येक छन्द में मुख्य भाव को बहुत ही पुष्ट किया है, और इस पुष्टीकरण को छोड़ कर अनावश्यक भाव प्रायः कहीं नहीं लिखे।

(३६०) सबलसिंह चौहान।

आप ने सब से पहले महाभारत की वृहत् कथा को क्रमबद्ध रीति से सवा आठ सौ पृष्ठों में दोहा चौपाई में वर्णन किया। अधि·

कांश पर्वों में इन्होंने उनकी रचना का संवत् दे दिया है, जिस से ज्ञात हुआ कि संवत् १७१८ से १७८१ तक इस ग्रन्थ का निर्माण हुआ। संवत् १७८१ की यथार्थता के विषय में सन्देह उठ सकता है, पर वास्तव में यह ठीक प्रतीत होता है। सबलसिंह जी प्रायः सभी ठौर संवत् लिखने में औरंगजेब एवं राजा मित्रसेन का नाम लिख दिया करते थे, पर स्वर्गारोहण पर्व में, जिसका निर्माण-काल संवत् १७८१ लिखा है, औरंगजेब अथवा मित्रसेन का नाम नहीं पाया जाता। वास्तव में संवत् १७८१ में औरंगजेब न था और शायद मित्रसेन भी न होंगे, सो यह संवत् ठीक जँचता है। जिन जिन पर्वों का निर्माण-काल इन्होंने दिया है, उनका ब्योरा नीचे दिया जाता है:—

१ भीष्म	पर्व	मंगल माघ पूर्णिमा संवत्	१७१८
२ कर्ण	,,	आश्विन शुक्ल ५ संवत्	१७२४
३ शल्य	,,	कार्तिक शु० १० संवत्	१७२४
४ सभा	,,	चैत्र शु० ९, गुरुवार, संवत्	१७२७
५ द्रोण	,,	आश्विन शु० १० (विजया दशमी)	१७२७
६ मुशल	,,	भाद्रपद शु० ७ सवत्	१७३०
७ आश्रम वासिक	,,	श्रावण शु० १० बुधवार संवत्	१७५१
८ स्वर्गारोहण	,,	अगहन शु० ११ बुधवार संवत्	१७८१

सबलसिंह ने १८ हो पर्व महाभारत के बनाये, जो सब हमारे पास मौजूद हैं, यद्यपि शिवसिंहसरोज में केवल १० पर्वों का हाल लिखा है। ऊपर लिखे हुए आठ पर्वों के अतिरिक्त कविजी ने और पर्वों का निर्माण-काल नहीं दिया है। इन संवतों के देखने

से प्रतीत होता है कि कवि जी का विचार सम्पूर्ण महाभारत बनाने का पहले न था, पर अन्त में आपने उसे पूरा ही कर दिया। महाभारत के अतिरिक्त इन्होंने रूपविलास पिंगल, षट्ऋतु बरवै और भाषा ऋतुसंहार भी बनाये हैं।

शिवसिंहसरोज में इनका जन्म-काल-संवत् १७२७ दिया है, जो स्पष्ट ही अशुद्ध है, क्योंकि १७१८ में इन्होंने महाभारत भीष्म-पर्व बनाया। यदि इस समय इनकी अवस्था केवल १६ वर्ष की मान ली जाय, तो भी इनका जन्म १७०२ संवत् का ठहरेगा। स्वर्गारोहण पर्व संवत् १७८१ में बना, जब कि सबलसिंह जी की अवस्था कम से कम ७९ साल की थी। अतः इनकी अवस्था ८० या ८५ साल से कम न हुई होगी और सम्भव है कि ये ९०-९५ वर्ष तक के होकर गोलोकवासी हुए हों।

शिवसिंह जी ने लिखा है कि कोई इन्हें चन्द्रगढ़ का राजा बतलाते हैं और कोई सबलगढ़ का, एवं कुछ लोग कहते हैं कि इनके वंश वाले आज तक ज़िला हरदोई में मौजूद हैं, पर स्वयं शिवसिंहजी इनको ज़िला "इटावा के किसी ग्राम के ज़िमींदार" बतलाते हैं। अस्तु, जो कुछ हो, सबलसिंह जी स्वयं राजा नहीं प्रतीत होते, क्योंकि ये आपही लिखते हैं:—

"औरँगसाह दिलीपति राजत। मित्रसेन भूपति तहँ गाजत"॥
"ये नृप के पुरुषन महँ गाए। सबलसिंह चौहान गनाए"॥
आश्रमवासिक पर्व।

इससे अनुमान होता है कि हमारे कविजी राजा मित्रसेन के भाईचारों में थे और वह राजा बादशाह औरंगज़ेब की सेवा में था, नहीं तो उसके दिल्ली में "गाजने" का क्या काम था ? जान पड़ता है कि इसी कारण कविजी औरंगज़ेब का नाम प्रायः सभी ठौर प्रशंसासूचक शब्दों में लिखते हैं। सबलसिंह जी भी कदाचित् राजा मित्रसेन के साथ दिल्लीपति की सेवा में थे और शायद स्वयं युद्धों में सम्मिलित होने के कारण इन्हें भीष्मपर्व से प्रारम्भ कर महाभारत बनाने का उत्साह हुआ। आपने युद्ध पर्वों से प्रारम्भ किया और प्रायः सभी ऐसे पर्व पूर्ण हो जाने पर ग्रन्थ पूरा करने की इनकी इच्छा हो उठी। इनको काव्य का शौक़ मात्र था। कविता बनाना इनका पेशा न था और न इन्होंने सिलसिलेवार काव्य ही किया। जब मौज आजाती थी तभी लिख डालते थे। इनकी कविता साधारण थी और ये मधुसूदनदास जी की श्रेणी के कवि थे। नमूना नीचे दिया जाता है —

गज मुख सुख कर दुख हरन तोहिं कहौ शिर नाय।
कीजे यश लीजै विनय दीजै ग्रन्थ बनाय॥
नृपहि दास दासहि नृपति पवि तृण तृणहि पषान।
जलधि अल्प सर लघुसरहि उदधि करै क्षण मान॥

गुरु गोविंद के चरण मनैये। जेहि प्रसाद उत्तम गति पैये।
शिवसनकादिक अत न पावैं। नर मुख ते केहि विधि यश गावैं॥

इनकी भाषा की प्रणाली श्री गोस्वामी तुलसीदास जी के ढंग की है और ये उन्हीं के अनुयायी कवि भी हैं।

(३६१) सरसदास जी की बानी सं० १७२० में बनी। यह १८ पृष्ठ के छोटे साइज़ में है। कविता साधारण श्रेणी की है। यह ग्रन्थ हमें छत्रपूर दरबार में देखने को मिला। ये महाशय टट्टी सम्प्रदाय के वैष्णव वृन्दावनवासी थे।

उदाहरण:—

राजत नव निकुंज बरजोरी।
सुंदर स्याम रसीले अँग अंग नवल कुँवरि वर गोरी॥
बदन माधुरी सुख सागर वर नागर कुँवरि किसोरी।
सरसदास नैननि सचुपावन कौतुक निपट निथोरी॥

(३६२) अनन्य शील मणि (सीताराम) गलते के महात्मा अग्रदास के गुरु वश में थे। यह इनके ग्रन्थ में लिखा है। 'धर्मावर्णन' इन्होंने ११० छन्दों में कहा है और 'अष्टयाम' में होरी और झूला का वर्णन किया है। इनका ग्रन्थ प्राय १०० पृष्ठों का है, जिसमें राधाकृष्ण की भाँति रामसीता का वर्णन शृंगारात्मक है। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है। आपका समय जाँच से सवत् १७२० जान पडा। इनके ग्रन्थ छत्रपूर में हैं।

उदाहरण।

जोबन जग उमंग है फाग को रंग
गुलाल को एक मिलोरी।
जोरी किसोर किसोरी मिले तस
होरी बहार चढी बरजोरी॥

रोरी कपोल पै गोरी मले हँसे
गारि बकै नव छैल छकोरी।
दोऊ समाज सुमत्त महा सुख
सोलमतो हिय छाय रहोरी॥

इस समय के अन्य कवि गण।

नाम—(३६३) गरीबदास।
ग्रन्थ—अध्यात्मबोध।
रचनाकाल—१७०७।

नाम—(३६४) गिरधरलाल बैसवाड़ा।
रचना-काल—१७०७।

नाम—(३६५) गोवर्धन चारण।
ग्रन्थ—कुंडलिया राज पद्मसिंह जीरी।
रचनाकाल—१७०७।
विवरण—राजपूतानी भाषा में रचना की है।

नाम—(३६६) गंभीर राय।
रचनाकाल—१७०७।
विवरण—मऊ वाले जगतसिंह शाहजहाँ से लड़े थे। उसका वर्णन किया है।

नाम—(३६७) चाँपादे रानी जैसलमेर बीकानेर।
रचनाकाल—१७०७।
विवरण—महारानी बीकानेर रावल हरराज जैसलमेर वाले की पुत्री थीं।

नाम—(३६८) पंचम।

रचनाकाल—१७०७।

नाम—(३६९) वेदांग राय।

ग्रन्थ—पारसीपरकास।

रचनाकाल—१७०७।

विवरण—शाहजहाँ के यहाँ थे।

नाम—(३७०) मनोहरदास निरंजनी।

ग्रन्थ—१ ज्ञानचूर्णवचनिका, २ सतप्रश्ननिरंजन (शतिका), ३ ज्ञानमंजरी (१७१६), ४ षट् प्रश्नी (१७१७), ५ वेदांत परिभाषा (१७०७)।

रचना-काल—१७०७।

विवरण—वचनिका गद्य में होती है।

नाम—(३७१) मिहीलाल।

ग्रन्थ—गुरुप्रकासीभजन।

रचनाकाल—१७०७।

विवरण—वैष्णवदास के शिष्य।

नाम—(३७२) रसजानीदास।

ग्रन्थ—भागवत भाषा।

रचनाकाल—१७०७।

विवरण—नरहरिदास के शिष्य।

नाम—(३७३) रसिकदास जी स्वामी राधावल्लभी।

ग्रन्थ—(१) बानी, (२) प्रसादलता, (३) भक्तिसिद्धान्त, (४) पूजाविलास, (५) एकादशी-माहात्म्य, (६) रसकंद, (७) रसमणि ।

रचनाकाल—१७०७ ।

विवरण—नरहरिदास के शिष्य ।

नाम—(३७४) रसिक विहारिनिदास ।

ग्रन्थ—व्याहलो ।

रचनाकाल—१७०७ ।

नाम—(३७५) राघवदास कायस्थ ।

ग्रन्थ—ज्ञानप्रकाश ।

रचनाकाल—१७०७ ।

नाम—(३७६) राव रतन राठूर ।

ग्रन्थ—रायसा रावरतन ।

रचनाकाल—१७०७ ।

विवरण—राजा उदयसिंह राठूर रतलाम के पैात्र । किसी कवि ने यह रायसा इनके नाम पर बनाया ।

नाम—(३७७) हरीराम ।

उदाहरण में इनके दे। पद लिखे जाते हैं ।

अकबर बीर बर बीर कवि बर केसै। गंग की
सुकबिताई गाई रस पाथी ने ।
एक दल सहित बिलाने एक पलही में
एक भए भूत एक मींजि मारे हाथी ने ॥

ग्रन्थ—(१) नखशिख, (२) पिंगल, (३) छन्दरत्नावली ।

काव्य-संवत्—१७०८

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३७८) दुर्सन।

रचनाकाल—१७०८।

विवरण—इनके छन्द हजारा में हैं। निम्न श्रेणी।

नाम—(३७९) कमंध राजपूताना वाले।

रचनाकाल— १७१० के पूर्व।

विवरण—हीन श्रेणी। इनके समय का वर्णन सरोज में है।

नाम—(३८०) जेठामल कायस्थ नागौर।

ग्रन्थ—नरसीमहता की हुंडी।

रचनाकाल—१७१०।

नाम—(३८१) तत्त्ववेत्ता।

जन्मसंवत्—१६८०।

रचना-काल—१७१०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(३८२) दाराशाह।

ग्रन्थ—(१) दोहास्तवसंग्रह, (२) सारसंग्रह

रचना-काल—१७१०।

नाम—(३८३) परसाद।

जन्मसंवत्—१६८०।

रचना-काल—१७१०।

विवरण—तोप श्रेणी। महाराणा उदैपुर के यहाँ थे।

नाम—(३८४) बल्लभ रसिक।

ग्रन्थ—मांझ।

जन्मसंवत्—१६८१।

रचना-काल—१७१०।

नाम—(३८५) मानदास ब्रजबासी।

ग्रन्थ—रामचरित्र।

जन्मसंवत्—१६८०।

रचना-काल—१७१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३८६) राजाराम।

ग्रन्थ—स्फुटपद।

जन्म संवत्—१६८०।

रचनाकाल—१७१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३८७) श्रीधर।

ग्रन्थ—भवानीछन्द।

जन्म-संवत्—१६८०।

रचना-काल—१७१०।

विवरण—राजपूताना के हैं।

नाम—(३८८) सदानन्ददास।

ग्रन्थ—नन्दजी की वंशावली।

जन्म-संवत्—१६८०।

रचनाकाल—१७१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३८६) सुर्यंसराय कायस्थ सागर।

ग्रन्थ—नरसिंहपचासा।

जन्म-संवत्—१६८०।

रचनाकाल—१७१०।

विवरण—सागरनरेश उदयशाह के दरबार में थे।

नाम—(३९०) आनन्द।

ग्रन्थ—(१) कोकसार, (२) सामुद्रिक।

रचनाकाल—१७११।

विवरण—खोज रिपोर्ट से इसका पता संवत् १७९१ चलता है।

नाम—(३९१) जदुनाथ शुक्ल।

ग्रन्थ—प्राणसुख।

रचना-काल—१७११।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(३९२) तुलसीदास।

ग्रन्थ—(१) रसकल्लोल, (२) रसभूषण।

रचनाकाल—१७११।

नाम—(३९३) श्रीकवि।

रचनाकाल—१७१२ के पूर्व।

नाम—(३९४) श्रीहठ कवि।

रचनाकाल—१७१२ के पूर्व।

नाम—(३९५) साहब।

रचनाकाल—१७१२ के पूर्व।

नाम—(३९६) सिद्ध।

रचनाकाल—१७१२ के पूर्व।

नाम—(३९७) सुबुद्धि।

रचनाकाल—१७१२ के पूर्व।

नाम—(३९८) संख।

रचनाकाल—१७१२ के पूर्व।

नाम—(३९९) वारन।

ग्रन्थ—रत्नाकर।

जन्मसंवत्—१६८६।

रचनाकाल—१७१२।

विवरण—सैयद अशरफ़ कड़ा मानिकपुर के अध्यापक। सुलतान-शुजा की तारीफ़ में कविता की है। साधारण श्रेणी।

नाम—(४००) आचार्य।

ग्रन्थ—विषापहार भाषा।

रचनाकाल—१७१४।

विवरण—शायद जैन थे।

नाम—(४०१) गंगाराम।

ग्रन्थ—(१) सारसंग्रह पृष्ठ ११० पद्य।

रचनाकाल—१७१४।

नाम—(४०२) गोपाल प्राचीन।

रचनाकाल—१७१५।

विवरण—केहरी कल्याणमिश्रजीतसिंह जी के यहाँ यह थे। निम्न श्रेणी।

नाम—(४०३) चन्द।

ग्रन्थ—नागनीर की लीला (काली नाथना)।

रचनाकाल—१७१५।

नाम—(४०४) जगोजी।

ग्रन्थ—रतमहेशदासोतवचनिका।

रचनाकाल—१७१५।

विवरण—गद्यकार।

नाम—(४०५) धीरभानु ब्रजबासी।

रचनाकाल—१७१५।

नाम—(४०६) वनमालीदास गोस्वामी।

जन्मसंवत्—१६९०।

रचनाकाल—१७१६।

विवरण—इनकी रचना वेदान्तसम्बन्धी है। निम्न श्रेणी।

नाम—(४०७) शंकरमिश्र आगरा।

ग्रन्थ—लीलावती का हिंदी अनुवाद।

रचनाकाल—१७१६।

विवरण—पिता का नाम रूप मिश्र था।

नाम—(४०८) दामोदर।
ग्रन्थ—मार्कण्डेयपुराण भाषा।
रचनाकाल—१७१७।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४०९) भगवतीदास ब्राह्मण।
ग्रन्थ—(१) नासकेतोपाख्यान (१७१७), (२) चेतनकर्मचरित्र (१७३२)।
जन्म-संवत्—१६९०।
रचनाकाल—१७१७।
विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(४१०) मान कवीश्वर राजपूताना के।
ग्रन्थ—राजविलास।
रचनाकाल—१७१७।
विवरण—साधारण श्रेणी। इन्हों ने महाराणा मानसिंह का वर्णन इस ग्रन्थ में किया है। यह ग्रन्थमाला में छप रहा है।

नाम—(४११) मेघराज प्रधान ओड़छा।
ग्रन्थ—(१) मृगावती की कथा, (२) मकरध्वज की कथा, (३) सिंहासनबत्तीसी, (४) राधाकृष्ण जू की भगरौ।
रचनाकाल—१७१७।
विवरण—ओडछा के महाराज राजा सुजानसिंह के दरबार में थे।

नाम—(४१२) सदाशिव।

ग्रन्थ—राजरत्नाकर।

रचनाकाल—१७१७।

विवरण—महाराणा राजसिंह के यहाँ थे।

नाम—(४१३) सुखदेव गोलापुर।

ग्रन्थ—१ वणिकप्रिया (वाणिज्य का विषय-वर्णन), २ वाणिज्य के भेद वर्णन।

रचनाकाल—१७१७।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(४१४) जानकीरसिकशरण।

ग्रन्थ—रसिकसुबोधिनी (टीका भक्तमाल की)।

रचनाकाल—१७१९।

नाम—(४१५) हरिवंस मिश्र बिलग्रामी।

रचनाकाल—१७१९।

विवरण—राजा हनुमन्तसिंह अमेठी के यहाँ थे। अब्दुल जलील बिलग्रामी को काव्य पढ़ाया। निम्न श्रेणी।

नाम—(४१६) अनन्त।

ग्रन्थ—अनंतानंद।

जन्म काल—१६९२।

रचनाकाल—१७२०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(४१७) अमरसिंह राठौर महाराज जोधपुर के बड़े पुत्र

जन्म-संवत्—१६९०।

रचनाकाल—१७२० ।

विवरण—गुणग्राही और कवि थे। ये महाराज गजसिंह के पुत्र और महाराजा जसवंतसिंह भाषाभूषणकार के बड़े भाई थे। आपने सलाबतख़ाँ को शाहजहाँ के दरबार में मारा। इन्होंने चन्द के रायसा को खोज कर इकट्ठा कराया। ये अपने उद्धत स्वभाव के कारण राजा न हुए और इनके छोटे भाई ने राज पाया।

इन्हीं की प्रशंसा में यह दोहा कहा गया :—

धन्य अमर छिति छत्रपति अमर तिहारो मान।
साहि जहाँ की गोद में हन्यो सलाबत ख़ान॥

नाम—(४१८) ईश।

काव्यकाल—१७२०।

विवरण—इनकी कविता शान्ति और शृंगार की उत्तम है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

नाम—(४१९) घनराय।

जन्मकाल—१६९०।

रचनाकाल—१७२०।

नाम—(४२०) जुत्रा मोतीसर मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत कविता।

रचनाकाल—१७२० के लगभग।

विवरण—आश्रयदाता महाराजा गजसिंह।

नाम—(४२१) प्रवीण-कविराय।

जन्म-काल—१६९८।

रचनाकाल—१७२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४२२) त्रिलोकसिंह।

ग्रन्थ—सभाप्रकाश।

रचनाकाल—१७२० के लगभग।

विवरण—हीनश्रेणी।

नाम—(४२३) रामचन्द्र साकी बनारस वाले।

ग्रन्थ—(१) रायविनोद, (२) जंबूचरित्र।

रचनाकाल—१७२०।

विवरण—जैन कवि। पद्मराग के शिष्य। इसी नाम के एक मिश्र कवि ने १६२० में नं० (१) नाम का ग्रन्थ रचा था, पर ये दोनों पृथक् पृथक् हैं।

नाम—(४२४) सकल।

जन्म-काल—१६९०।

रचनाकाल—१७२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४२५) हरिजन।

जन्म-काल—१६९०।

रचनाकाल—१७२०।

विवरण—इनके छन्द हज़ारा में हैं। इनकी रचना बड़ी उत्तम एवं चित्ताकर्षिणी है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

बाईसवाँ अध्याय।

भूषणकाल (१७२१ से १७५० तक)।

(४२६) महाकवि भूषण त्रिपाठी।

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण तिकवाँपुर ज़िला कानपूरवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। इनका जन्म अनुमान से संवत् १६७० में हुआ था। चिन्तामणि त्रिपाठी इनके ज्येष्ठ बन्धु और महा कवि मतिराम एव नीलकंठ छोटे भाई थे। इनका नाम कुछ और ही था, परन्तु चित्रकूट के सुलंकी राजा रुद्र ने इनको भूषण की उपाधि दी, तब से इनका यही नाम प्रसिद्ध हो गया। भूषणजी कई राजाओं के यहाँ गये, परन्तु सबसे अधिक मान इनका महाराज शिवाजी और छत्रसाल के यहाँ हुआ, और इनको इन्हीं दो महाराजों का कवि समझना चाहिए। भूषण ने कई कई लक्ष रुपये एक एक छंद पर पाये। ये सदैव राजाओं की भाँति मान और प्रतिष्ठापूर्वक रहा किये और अंत में पुत्र पौत्रवान् होकर प्रायः संवत् १७७२ में ये वैकुंठवासी हुए। नवरत्न में हमने इनका जन्मकाल संवत् १६९२ माना था, पर पीछे इनके छोटे भाई जटाशंकर (नीलकठ) का बनाया संवत् १६९८ का 'अमरेशविलास' ग्रन्थ खोज में देख पड़ा; सो जटाशंकर का ही जन्मकाल १६७८ के

लगभग पड़ता है। भूषण का कवितकाल संवत् १७०५ से सम-
झना चाहिए। परन्तु इनके काल नायक होने से यह वर्णन यहाँ
हुआ। इनकी अवस्था १०२ वर्ष के लगभग आती है।

इन्होंने शिवराजभूषण, भूषणउल्लास, दूषणउल्लास, और
भूषणहजारा नामक चार ग्रन्थ बनाये, परन्तु इनके अन्तिम तीन
ग्रन्थों का अब पता नहीं लगता। उनके स्थान पर शिवाबावनी,
छत्रसालदशक और स्फुट छंद मिलते हैं। शिवराजभूषण और
उपर्युक्त तीन ग्रन्थों को मिला कर भूषणग्रंथावली के नाम से
इनकी कविता का ग्रंथ हमने नागरी-प्रचारिणी ग्रंथमाला में प्रका-
शित कराया है। शिवराजभूषण में अलंकारों का बहुत अच्छा
वर्णन है, और प्रत्येक अलंकार के उदाहरण द्वारा शिवराज का
यश कथन किया गया है। जान पड़ता है कि भूषणजी ने इसे ७
वर्ष में बनाया और संवत् १७३० में यह समाप्त हुआ। इस ग्रंथ में
एवं भूषण जी की कविता में हर जगह वीर, भयानक, और रौद्र
रसों का प्राधान्य है। शिवाबावनी शिवराजसम्बन्धी ५२ छंदों
का एक बड़ाही जोरदार सग्रह है। छत्रसालदशक में इनके दश
बड़े ही उत्तम छन्द लिखे गये हैं। स्फुट काव्य में हमने इनके नै,
छन्द रक्खे हैं।

भूषण ने नायक चुनने में बड़ी पटुता से काम लिया है। इनके
नायक शिवाजी और छत्रसाल हैं, जो समस्त भारत के श्रद्धा-
भाजन थे। फिर भी प्रकट में तो इनके ये महाराज नायक हैं, परन्
वास्तव में इन्होंने हिन्दू जाति को अपना नायक माना है। जाती-
यता का विचार इनकी कविता में सब हिन्दी कवियों से अधिक

और इसी कारण इनकी रचना अधिक लोकप्रिय है । इनकी भाषा व्रजभाषा है, परन्तु उसमें अन्य भाषाओं के बहुत से शब्द मिल गये हैं । इनकी सत्यप्रियता और स्वतन्त्रता प्रशसनीय और प्रावल्य तथा उद्दंडता भी दर्शनीय हैं । उत्तम छन्दों की मात्रा इनकी रचना में विशेषता से पाई जाती है । इनका विशेष वर्णन हिन्दीनवरत्न में मिलेगा और उससे भी वृहत् वर्णन देखने के वास्ते भूषणग्रन्थावली की भूमिका देखनी चाहिए । इनकी गणना नवरत्न में पाँचवें नम्बर पर है ।

उदाहरण ।

अजौ भूतनाथ मुंडमाल लेत हरखत
भूतन अहार लेत अजहू उछाह है ।
भूषन भनत अजौ काटे करवालन के
कारे कुंजरन परी कठिन कराह है ॥
सिंह सिवराज सलहेरि के समीप ऐसा
किये कतलाम दिल्ली दल का सिपाह है ।
नदी रनमडल रुहेलन रुधिर अजौ
अजौ रवि मंडल रुहेलन की राह है ॥

पपा मानसर आदि अगन तलाब लागे
जिनके परन में अकथ जुत गथ के ।
भूषन यों साज्यो रायगढ़ सिवराज
रहे देव चकचाहि के बनाये राजपथ के ॥
बिन अवलंब कलिकान आसमान में है
होत बिसराम जहाँ इन्दु औ उदय के ।

महत उतंग मनि जोतिन के संग
आनि कैयो रंग चकहा गहत रबि रथ के ॥

दाढ़ी के रखैयन की दाढ़ी सी रहति
छाती बाढ़ी मरजाद जस हद हिन्दुवाने की।
कढ़ि गई रैयति के मन की कसक सब
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की ॥
भूषन भनत दिल्लीपति दिल धकधका
सुनि सुनि धाक सिवराज मरदाने की।
मोटी भई चंडी बिनु चोटी के चबाय
सीस खोटी भई सम्पति चकत्ता के घराने की ॥

गढ़न गँजाय गढ़ धरन सजाय करि
छाँड़े केते धरम दुवार दै भिखारी से।
साहि के सपूत पूत बीर सिवराजसिंह
केते गढ़ धारी किये बन बनचारी से ॥
भूषन बखानै केते दीन्हे बन्दी खानै
सेख सैयद हजारी गहे रैयत बजारी से।
महता से मुगल महाजन से महाराज डाँड़ि
लीन्हे पकरि पठान पटवारी से ॥

कीबे को समान प्रभु ढूंढ़ि देख्यो आन पै
निदान दान जुद्ध मैं न कोऊ ठहरात हैं।
पंचम प्रचंड भुजदंड को बखान सुनि
भाजिबे को पंछी लौं पठान थहरात हैं ॥

संका मानि सूखत अमीर दिली वारे
जब चंपति के नंद के नगारे घहरात हैं ।
चहूँ ओर चकित चकत्ता के दलन पर
छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं ॥

निकसत म्यानते मयूखैं प्रलैभानु कैसी
फारैं तम तोम से गयंदन के जाल को ।
लागत लपटि कंठ बैरिन के नागिनि सी
रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन के माल को ॥
लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहुबली
कहाँ लौं बखान करौं तेरी करबाल को ।
प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि
कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को ॥

वेद राखे विदित पुरान राखे सार जुत
राम नाम राखो अति रसना सुघर मैं ।
हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की
कांधे मैं जनेव राखो माला राखी गर मैं ॥
मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे बादसाह
बैरी पीसि राखे बरदान राखो कर मैं ।
हिन्दुन की हद्द राखी तेग बल सिवराज
देव राखे देवल स्वधर्म राखो घर मैं ॥

काल करत कलिकाल मैं नहिँ तुरकन को काल ।
काल करत तुरकान को सिव सरजा करवाल ॥

सिव सरजा के कर लसति सो न होय किरवान।
भुज भुजगेस भुजंगिनी भखति पान अरि प्रान॥
आयो आयो सुनत ही सिव सरजा तव नावँ।
बैरि नारि दृग जलन तें बूड़ि जात अरि गावँ॥

अहमदनगर के थान किरवान लैके
नवसेरीखान ते खुमान भिरयो बल ते।
प्यादेन सों प्यादे पखरैतन सों
पखरैत बखतर वारे बखतर वारे हलते॥
भूषन भनत एते मान घमसान भयो
जान्यो न परत कैान आयो कैान दल ते।
सम वेष ताके तहाँ सरजासिवा के
बाँके बीर जाने हाँके देत मीर जाने चलते॥

सबन के ऊपर ही ठाढो रहिबे के
जोग ताहि खरो कियो जाय जारन के नियरे।
जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धरि
उर कीन्हीं न सलाम न बचन बोले सियरे॥
भूषन भनत महाबीर बलकन लाग्यो
सारी पातसाही के उडाय गये जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि
भये स्याह मुख नैारँग सिपाह मुख पियरे॥

बीर बड़े बड़े मीर पठान खरो रजपूतन को दल भारो।
भूषन जाय तहाँ सिवराज लियो हरि ग्रैारँगजेब को गारो॥

दीन्हो कुज्वाब दिलीपति को अरु कीन्हों वजीरन को मुँह कारो ।
नायो न माथहि दक्खिन नाथ न साथ में सैन न हाथ हथ्यारो ॥

(४२७) गदाधर भट्ट जी गौर सम्प्रदाय (चैतन्य महाप्रभु वाली) में थे। इनका कविता-काल प्रायः संवत् १७२२ के लगभग जाँच से जान पड़ा है। इनकी एक बानी हमने छत्रपूर में देखी, जिसकी रचना बड़ी सोहावनी है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण ।

रक्त पीत सित असित लसत अम्बुज बन सोभा ।
टोल टोल मद लोल भ्रमत मधुकर मधु लोभा ॥
सारस अरु कलहंस कोक कोलाहलकारी ।
पुलिन पवित्र विचित्र रचित सुन्दर मनहारी ॥

(४२८) कुलपति मिश्र ।

कुलपति मिश्र माथुर ब्राह्मण अर्थात् चैाबे थे। चतुर्वेदी ब्राह्मणों में मिश्र, शुक्ल आदि सभी आस्पद होते हैं, सो उनमें से ये महाशय मिश्र थे। इनके पिता का नाम परसुराम मिश्र था, और ये महाशय प्रसिद्ध बिहारी सतसईकार के भानजे थे, ऐसा सुना गया है। ये आगरे के रहने वाले थे और जयपुर के महाराजा जयसिंह के पुत्र महाराजा रामसिंह के यहाँ रहते थे। रामसिंहजी सन् १६६७ ई० में सिंहासनारूढ़ हुए। इन्हीं महाराज के पिता

जयसिंह ने शिवा जी को विश्वास दिला कर दिल्ली भेजा था, परन्तु औरंगज़ेब ने विश्वासघात कर के उन्हें बन्दी कर लिया। ऐसा होने पर रामसिंह ने अपने पिता का वचन स्थिर रखने के विचार से प्रयत्न करके छिपे छिपे शिवा जी को दिल्ली से भाग जाने दिया।

कुलपति मिश्र का केवल एक ग्रन्थ 'रसरहस्य' देखने में आया है। यह वृहस्पति वार, कार्तिकवदी एकादशी संवत् १७२७ वि० में समाप्त हुआ था। इस में कुलपति मिश्र ने संस्कृत के बहुत से रीति ग्रन्थ पढ़ कर बनाया, और इसकी कविता भी प्रौढ़ है, अतः जान पड़ता है कि इन्होंने इसे पचास वर्ष की अवस्था में बनाया होगा। सो अनुमान से इन के जन्म का संवत् १६७७ वि० समझ पड़ता है। इनके मरण-काल का कुछ भी पता नहीं चला। ये महाराज भूषण त्रिपाठी के समकालीन थे। इनके विषय में निश्चित बातें जितनी लिखी गई हैं, वे सब 'रसरहस्य' में इन्हों ने स्वयं लिखी हैं।

कुलपति मिश्र संस्कृत के अच्छे पंडित थे। आप ने अपने ग्रन्थ में काव्यप्रकाश और साहित्यदर्पण के मतों पर विचार किया है। काव्य रीति पर चिन्तामणि के पीछे सांगोपांग ग्रन्थ पहले पहल इन्हीं ने बनाया। इनकी कविता से पूर्ण पांडित्य की झलक देख पड़ती है और उसके गौरव को देख कर इनकी साहित्य-प्रौढ़ता स्वीकार करनी पड़ती है। इनका ग्रन्थ अन्य कवियों के ग्रन्थों की अपेक्षा कुछ कठिन है। कुल बातों पर विचार करने से

जान पड़ता है कि इनको केवल कवि की दृष्टि से न देख कर आचार्य्य की भी दृष्टि से देखना चाहिए।

कुलपति ने अपने ग्रन्थ में मम्मट के मत का सारांश लिया है, परन्तु जहाँ इनका मम्मट से मतविरोध होता था, वहाँ ये महाराज उनका खंडन भी कर देते थे। इन्होंने कविता के लक्षण मेंही मम्मट को न मान कर अपना स्वतन्त्र लक्षण लिखा है, जो कई औरों से शुद्ध तर प्रतीत होता है। अन्य आचार्य्यों के लक्षण प्रायः सभी अशुद्ध हैं। विदित होगा कि भाषाकवियों में केवल कुलपति ने पहले पहल काव्य का कुछ यथार्थ लक्षण लिखा। वह यह है :—

जग ते अद्भुत सुख सदन शब्दरु अर्थ कवित्त।
यह लक्षण मैंने कियो समुझि ग्रन्थ बहु चित्त॥

इसका अर्थ यह कहना चाहिए कि 'जिस वाक्य के अर्थ या शब्द या दोनों के सुनने से अलौकिक आनन्द मिले, वह काव्य है।

काव्य-सम्बन्धी छान बीन इन्होंने बहुतही अच्छी की है। काव्य का प्रयोजन आपने यह कहा है :—

जस सम्पति आनन्द अति दुरितन डारै खोय।
होत कवित में चतुरई जगत राम बस होय॥

काव्य का कारण यह है :—

शब्द अर्थ जिनते बनै नीको भाँति कवित्त।
सुधि धावन समरत्थ तिन कारण कवि को चित्त॥

काव्यांग ये हैं :—

व्यंग्य जीव ताको कहत शब्द अर्थ हैं देह।
गुन गुन, भूषन भूषनै, दूषन दूषन येह॥

काव्य तीन प्रकार का होता है, अर्थात् उत्तम, मध्यम और अधम। कुलपति के अनुसार उत्तम काव्य में रस और व्यंग्य की प्रधानता होती है, मध्यम में व्यंग्य और अर्थ की समता रहती है और अधम में व्यंग्य का अभाव एवं चित्र का प्राबल्य देख पड़ता है। रसरहस्य के द्वितीय अध्याय में शब्दार्थ-निर्णय है, और तृतीय में ध्वनि, रस और रसाभास आदि के कथन हैं। चौथे अध्याय में व्यंग्य और पाँचवें में दोष कहे गये हैं। दोषों का वर्णन बड़ाही उत्तम है। छठे अध्याय में गुणों, सातवें में शब्दालंकारों और आठवें में अर्थालंकारों का वर्णन होकर ग्रन्थ समाप्त हुआ है। कुलपति के मत में उपमा अलंकारों का प्राण है। सो विदित होता है कि कुलपति ने केवल रसांगों का वर्णन नहीं किया है, वरन कविता के कई अंगों का समावेश रसरहस्य में हुआ है। अतः इस ग्रन्थ का नाम काव्य-रहस्य होना तो अधिक उपयुक्त होता।

अलंकारों के उदाहरणों में कुलपति ने प्रधानतः अपने महाराज रामसिंह की प्रशंसा के छन्द कहे हैं, जिनमें से बहुत से श्रेष्ठ हैं, परन्तु यशवर्णन में इन्होंने वास्तविक घटनाओं का सहारा कम लिया है और कोरी प्रशंसा अधिक की है। इनकी प्रशंसा का मुख्यांश ऐसा है कि नाम बदल कर वही छन्द किसी महाराज की प्रशंसा में कहा जा सकता है। आमेर गढ के शीशमहल का इन्होंने भी वर्णन किया है।

कुलपतिजी कहीं कहीं प्राकृत मिश्रित भाषा भी लिखते हैं, और एक छन्द (पृष्ठ ८७ नम्बर ५२) में इन्होंने खड़ी बोली की भाँति उर्दू मिश्रित भाषा भी लिखी है।

हूँ में मुशताक़ तेरी सूरत का नूर देखि
दिल भरि पूरि रहे कहने जवाब से।
मेहेर का तालिब फ़क़ीर है मेहेरबान
चातक ज्यों जीवता है स्वांति वारे आब से॥
तू तो है अयानी यह ख़ूबी का ख़ज़ाना तिसे
खोलि क्यों न दीजै सेर कीजिये सवाब से।
देर की न ताब जान होत है कबाब बोल
हयाती का आब बोलो मुख महताब से॥

इनकी प्राकृत मिश्रित भाषा का उदाहरण नीचे लिखा जाता है।

दुज्जन मद मद्दन समथ्थ जिमि पथ्थ दुहुँनि कर।
चढत समर डरि अमर कम्प थरहर लग्गय धर॥
अमित दान दै जस वितान मंडिय महि मंडल।
चंड भान नहिँ सम प्रभान खंडिय आखंडल॥
राजाधिराज जयसिंह सुव जित्ति कियउ सब जगत बस।
अभिराम काम सम लसत महि रामसिंह कूरम कलस॥

इस कवि की भाषा विशेषतया व्रज भाषा है, जो अच्छी है। इनकी ब्रजभाषा के उदाहरणार्थ हम दो छन्द नीचे लिखते हैं। इन्हीं छन्दों को कुलपति जी के उत्तम छन्दों के भी उदाहरण समझना चाहिए।

देह धरी पर काजहिं को जग माँझ हे तोसी तुही सब लायक।
दौरि थकी अँग स्वेद भयो समुझी सखि ह्यां न मिले सुखदायक॥

मोहूँ सों प्यार जनायो भली विधि जानी जु जानो हितून की नायक।
साँच कि मूरति सील कि सूरति मन्द किये जिन काम के सायक॥
देखिय कुंज घने छवि पुंज रहैं अलि गुंजन यों सुख लीजै।
नैन विसाल हिये बन माल बिलोकन रूप सुधा भरि पीजै॥
जामिनि जाम कि कौन कहै जुग जात न जानिये ज्यों छिन छोजै।
आनँद यों उमग्योई रहै पिय मोहन को मुख देखिबो कीजै॥

रसरहस्य की एक शुद्ध हस्त लिखित प्रति हमारे पास है, परन्तु हमने पण्डित बलदेवप्रसादजी मिश्र द्वारा इंडियन प्रेस में मुद्रित रसरहस्य का हवाला दिया है। खोज में इनके द्रोण पर्व (१७३७), गुण रसरहस्य (१७२४), और संग्रहसार नामक तीन ग्रन्थों का नाम और लिखा है। हाल में युक्तिनरगिनी और नख शिख नामक इनके दो ग्रन्थ और मिले हैं। युक्तितरङ्गिनी संवत १७४३ में बनी। कुलपति की गणना दास वाली श्रेणी में है। इनकी रचना में परम प्रौढ़ काव्य है।

(४२६) भगवान हित ने संवत् १७२८ में ८८ भारी पृष्ठों का 'अमृत धारा' नामक दोहा चौपाइयों में एक विशद ग्रन्थ रचा, जो छत्रपूर में है। इसमें वैराग्य, योग, भक्ति आदि के वर्णन हैं। इन्हों ने अपना स्थान क्षेत्र राज लिखा है। कहते हैं कि ये क्षेत्र खासा में रहते थे। आप अर्जुनदास के शिष्य थे। आप के और भी भर्तृहरि शतक वानी तथा रामायण ग्रन्थ मिले हैं। इनकी गणना श्रेणी में है।

उदाहरण।

लिंग देह मिलि करम कमावै। तिन करमन की देह सुपावै॥
पुन्य करम सुख रूप रहावै। पाप नरक मिश्रित नर गावै॥
पंच भूत हैं कारन रूपा। तिनते कारज विविधि सरूपा॥
दस अरु सात लिंग आभासैं। पुनि अस्थूल पचीस प्रकासैं॥

(४३०) कविराज सुखदेव मिश्र।

ये महाशय भाषासाहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। इन के जन्म अथवा मरण के संवत् नहीं ज्ञात हो सके, परन्तु अपने बनाये हुए दो ग्रन्थों के संवत् स्वयं इन्होंने १७२८ और १७३३ लिखे हैं। ये ग्रन्थ प्रौढ़ कविता का पूरा परिचय देते हैं, अतः हमारा अनुमान है कि इनका जन्म संवत् १६९० के लगभग हुआ होगा और संवत् १७६० तक इनका जीवित रहना अनुमान-सिद्ध है। इन्हों ने वृत्त विचार में अपने जन्म स्थान कम्पिला का विस्तार-पूर्वक बढ़िया वर्णन किया है और इसी ग्रन्थ में अपने पूर्वजों का भी पूरा हाल लिखा है। जान पड़ता है कि उस समय कम्पिला अच्छा नगर था। ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण हिमकर के मिश्र थे। कम्पिला ही में इनका विवाह भी हुआ था और इनके जगन्नाथ और बुलाकीराम नामक दो पुत्र हुए। इनके वंशधर दौलतपूर में अब भी वर्त्तमान हैं। उन्हीं लोगों के कथनानुसार पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती की पंचम संख्या के ३२७ पृष्ठ से ३३७ पर्यन्त सुखदेव मिश्र का एक अच्छा जीवन-चरित्र लिखा है।

पहले इन्होंने कम्पिला में विद्याध्ययन किया और फिर काशी में जाकर एक संन्यासी से तन्त्र एव साहित्य भले प्रकार पढ़ा। मिश्रजी एक साधु पुरुष और महान् पंडित थे। काशी से इन महाशय ने असोथर ग्राम ज़िला फ़तेहपुर के राजा भगवन्त राय खीची के यहाँ जाकर बड़ा मान पाया। फ़तेहपुर के गज़ेटियर में इस भगवन्त राय का हाल लिखा है। कुछ दिनों में वहाँ से असन्तुष्ट होकर ये बकसर नामक ग्राम को चले गये, जो दौलतपूर से दो मील पर है। वहाँ डौंड़िया खेरे के राव मर्दनसिंह की इन पर विशेष श्रद्धा हुई। भगवन्तराय की भाँति ये भी सुखदेव के शिष्य हो गये। सुखदेव जी बहुत दिनो तक डौंड़िया खेरे में रहते रहे। इसके पीछे कुछ दिन तक ये महाशय औरंगजेब के मन्त्री फ़ाज़िल अली के यहाँ भी रहे। अर्जुनसिंह के पुत्र राजसिंह गौर के भी ये आश्रित रहे हैं और अमेठी के राजा हिम्मतसिंह बन्धलगोती ने भी इनका आदर किया। राजा हिम्मतसिंह के छोटे भाई बाबू छत्रसिंह की भी इन्हों ने बडी प्रशंसा की है। अन्त में ये महाशय मुरारि मऊ रियासत के तत्कालीन राजा देवीसिंह के यहाँ गये और उनके हठ करने पर कम्पिला से अपना कुटुम्ब मँगा कर दौलतपूर में रहने लगे। वहाँ राजा साहब ने इनके लिए मकान बनवा दिया और यह ग्राम भी इन्हीं के पुत्रों को दे दिया। पुत्रों को ग्राम देने का यह कारण था कि मिश्र जी ने स्वयं ग्राम लेना पसंद नहीं किया।

इस ग्राम की ज़मींदारी इनके वंशधरों के पास बहुत दिन रही परन्तु अब यह कालगति से उनके हाथ से निकल गई है।

सुखदेव जी को अलायार खां एवं राजसिंह ने कविराज की उपाधि दी। फ़ाज़िल अली प्रकाश में लिखा है कि यह उपाधि अलायार खां की दी हुई है और वृत्तविचार में इसका राजसिंह द्वारा मिलना लिखा है। निष्कर्ष यह निकलता है कि इन दोनों महाराजों ने पृथक् पृथक् समयों में इन्हें यह उपाधि दी।

ठाकुर शिवसिंह जी ने इनके बनाये हुए निम्न ग्रन्थों के नाम लिखे हैं:—

वृत्तविचार, छन्दविचार, फ़ाज़िल अली प्रकाश, अध्यात्म-प्रकाश और दशरथ राय।

पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इनके निम्न ग्रन्थ लिखे हैं:—

रसार्णव, वृत्तविचार, शृंगारलता, और फ़ाज़िल अलीप्रकाश। द्विवेदी जी ने शेष ग्रन्थों के सुखदेव कृत होने में सन्देह प्रकट किया है। उन्होंने लिखा है कि रसार्णव, वृत्तविचार और फ़ाज़िल अली प्रकाश उनके देखने में आये हैं, शेष नहीं। अतः दोनों नामावलियाँ मिलाने से मिश्र जी के सात निम्न ग्रन्थ होते हैं:— वृत्तविचार, छन्दविचार, फ़ाज़िलअलीप्रकाश, रसार्णव, शृङ्गार-लता, अध्यात्मप्रकाश और दशरथ राय। हम इन सब को सुखदेव-कृत मानते हैं। इन के नखशिख नामक एक और ग्रन्थ का पता चला है। फ़ाज़िलअलीप्रकाश हस्तलिखित हमारे पुस्तकालय में है, वृत्तविचार और छन्दविचार पंडित युगुल-किशोर ने हमारे पास भेज दिये हैं, और रसार्णव एवं अध्यात्म-प्रकाश का देखना वे बताते हैं। शृङ्गारलता हमारे किसी मित्र

ने नहीं देखी है, परन्तु द्विवेदी जी ने मिश्र जी के वंश वालों से उसका बनाया जाना प्रामाणिक रीति से सुना है। अब केवल नखशिख और दशरथ राय रह गये, सो उन के विषय में खोज एवं शिवसिंहसरोज के प्रामाणिक न मानने का कोई कारण नहीं है। अध्यात्मप्रकाश हम ने छत्रपूर में देखा है। यह संवत् १७५५ में बना। इसमें व्याससूत्र वेदान्त की भाषा २३४ छन्दों में है। वृत्तविचार संवत् १७२८ में राजसिंह गौड़ के नाम पर बना। यथा:—

> राजसिंह अरजुन तनै गौर गरीब नेवाज।
> दियो साज बहुतै कछू कियो जिन्है कविराज॥

(यहां 'जिन्है' से स्वयं कवि का प्रयोजन है, जो प्रसंग से निकलता है।)

> संवत् सत्रह से बरस अट्ठाइस अति चारु।
> जेठ सुकुल तिथि पंचिमी उपज्यो वृत्त विचारु॥

इस ग्रन्थ में कम्पिला का बडा उत्तम वर्णन है। इसमें प्रायः सब छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण दिये हुए हैं। ऐसे उदाहरणों में यह प्रधानता रक्खी गई है कि उन सब में अधिकांश विराग अथवा देवताओं के विषय पर कविता की गई है। जहां कहीं एकाध छन्द गोपिकाओं आदि के भी हैं, वे ऐसे भक्ति से डूबे हुए हैं, कि उनके भी पढ़ने से मिश्र जी का ऋषिवत् आचरण प्रकट होता है। पिंगलविषयक प्रायः सभी बातें इस ग्रन्थ में पाई जाती हैं। इस में लिखा है कि मिश्र जी ने संस्कृत तथा प्राकृत में

भी कविता की है, परन्तु उसका अब पता नहीं लगता। इस ग्रन्थ में मँझोली सांची के ८४ पृष्ठ हैं। इसके एवं छन्दविचार के कारण मिश्र जी पिंगल के सर्वोत्कृष्ट आचार्य्य समझे जाते हैं। किसी कवि ने ऐसे अच्छे बड़े पिंगल नहीं बनाये हैं।//

उदाहरण —

विघन विनासन हे, आछे आखु आसन हैं,
सेये पाकसासन हैं सुमति करन को।
आपदा के हरन हैं, सम्पदा के करन हैं
सदा के धरन हैं सरन असरन को॥
कंज कुल को है? नव पल्लव न जोहै सरि,
सुखदेव सोहै धरे अरुन बरन को।
बुद्धि के विधायक सकल सुखदायक,
सुसेवो कवि नायक विनायक चरन को।

छन्दविचार में बड़ी साची के ५० पृष्ठ हैं, जिन में हमारी प्रति में प्रथम पृष्ठ के ११ छन्द खंडित हैं। इस ग्रन्थ में अमेठी के राजा हिम्मतसिंह के वंश का विस्तारपूर्वक वर्णन है। यह इन्हीं महाराज की आज्ञानुसार बना है। यथा :—

नृप हिम्मति के हुकुम ते मिश्र सुकवि सुखदेव।
न्यारे न्यारे कहत हैं पिंगल के सब भेव॥

इसमें भी पिंगल का विषय सांगोपांग वर्णित है। इसमें उदाहरणों में बहुत से छन्द हिम्मतसिंह की प्रशंसा के पाये जाते हैं, और कुछ में शृंगारादि का वर्णन है। यह भी परम मनोहर

ग्रन्थ है और इसकी रचना देखने से इसके मिश्र जी कृत होने में कोई सन्देह नहीं रहता । हमारे ग्रन्थ में कोई संवत् नहीं दिया है । उदाहरण—

करत मगन भूमि सम्पति अनेक अरु यगन
सलिल सुरसरि कैसो जस देत ।
रगन अगिनि है करत जारि छार, पुनि सगन है
जम जोरावरी जीव हरि लेत ॥
तगन अकास खाली करै देस औ अवास,
जगन दिनेस सब संकटन को निकेत ।
भगन सुधानिधि सुधा सो बरखत, अरु नगन
फनिन्द सब सम्पति दै करै हेत ॥

फ़ाज़िलअलीप्रकाश में बड़ी साँची के ७० पृष्ठ हैं । इसमें नृपवश, कविवश, नृपयश, गणागण और रसभेद के वर्णन हैं । यह संवत् १७३३ में बना था । मिश्र जी ने उपमायें बहुत मार्के की कहीं और अनुप्रास, जमकादि का भी कुछ कुछ प्रयोग किया । यह भी इनका उत्कृष्ट ग्रन्थ है । इसमें भी कम्पिला का वर्णन है ।

ननँद निनारी, सासु माइके सिधारी, अहै रैनि
अँधियारी भरी सूझत न कर है ।
पीतम को गौन कबिराज न सोहात भौन
दारुन बहत पौन लाग्यो मेघ झर है ।
संग ना सहेली, वैस नवल अकेली,
तन परी तलबेली महा लाग्यो मैन सर है ।

भई अधरात, मेरो जियरा डरात
जागु जागु रे बटोही इहाँ चोरन को डरु है ॥
आभा की अवधि, गुन गन जाके निरवधि
कविराज सील निधि भाग भरो भालु है ।
हिम्मति को हातिमु, महातिमु को महामद्दु,
रिपु तम ताको रबि जाको करवालु है ॥
कीरति धरे अतुल, उजियारो दुहु कुल,
फाजिल अली प्रबल परम कृपालु है ।
साहिबी को सुर बरु, धरती को धराधरु,
दीनन को देवतरु, कूरन को कालु है ॥

रसार्णव आकार में मतिराम कृत रसराज के बराबर है । यह डौंडिया खेर के राव मरदनसिंह की आज्ञानुसार बना था । इसमें नवरस का बड़ा विलक्षण वर्णन है और द्विवेदी जी के मतानुसार यह मिश्रजी के सब ग्रन्थों में श्रेष्ठ है। ग्रन्थ बड़ा ही सराहनीय है ।

कानन टूटे विघन के जानन ते यह ग्यान ।
कज आनन की जाति मिटि गज आनन के ध्यान ॥
मरदन राउ निदेस को सादर सीस चढाय ।
मिश्र सुकवि सुखदेव ने दीन्हों ग्रंथ बनाय ॥
जोहे जहाँ मगु नन्द कुमार
तहाँ चली चन्द्रमुखी सुकुमार है ।
मोतिन ही को कियो गहनो सब
फूलि रही जनु कुन्द की डार है ॥

भीतर ही जु लखी मुलपी श्रम
बाहिर जाहिर होति न दार है।
जोन्ह सी जोन्हैं गई मिलि यों
मिलि जाति ज्यों दूध में दूध की धार है॥

यों कछु कीन्हीं अचानक चोट
जु ओट लखी न सखी के दुकूल है।
देह कँपै, मुँह पीरी परी
सो कह्यो नहिँ जो ह्वै गयो हिय सूल है
माँझ उरोज में आनि लग्यो
अँगिरात जहाँ उचक्यो भुज मूल है।
कौन है ख्याल? खेलार अनोखे!
निसक ह्वै ऐसे चलैयत फूल है॥

शृङ्गारलता इन्होंने मुरारि मऊ के राजा देवीसिंह के लिए बनाई थी। इस पुस्तक के विषय आदि का हाल हम कुछ नहीं जानते।

अध्यात्मप्रकाश में विविध छन्दों द्वारा वेदान्त का विषय वर्णन किया गया है। इसके कुछ छन्दों का अन्तिम पद यही है कि

तामधि एक चिदानँद रूप
सु आतम ब्रह्म प्रकाश करै है।

दशरथ राय के विषय में हम कुछ नहीं जानते।

मिश्रजी ने व्रजभाषा में कविता की और जमकादि का भी थोड़ थोड़ा प्रयोग किया। इनकी भाषा प्रशंसनीय है। हम इनको दास कवि की श्रेणी में रखते हैं। बहुत लोग इन्हें बड़े महात्मा और

पहुँचे हुए मनुष्य मानते हैं। हमारा मत इसके प्रतिकूल है। ये महाशय साधु प्रकृति अवश्य थे, परन्तु इनकी साधुता और महिमा उस ऊँचे दरजे की कदापि नहीं होगी जैसा कि सरस्वती से विदित होता है। यदि मरदनसिंह, हिम्मतसिंह आदि इनके दासों के समान थे, तो इन्होंने यह क्यों कहा है कि मैं उनका हुकुम शिरोधार्य मान कर ग्रंथ बनाता हूँ? फिर इन्होंने औरङ्गज़ेब से परधर्म द्वेषी की स्तुति की है। जब महात्मा कुम्भनदास को अकबर ने बुला कर बड़ा सम्मान किया, तब भी उन्होंने अपनी असन्तुष्टि प्रकट करके कहा कि

'सन्तन का सिकरी सन काम।
आवत जात पनहियाँ टूटीं बिसरि गयो हरि नाम।
जिनके मुख देखे दुख उपजत तिनको करिबे परी सलाम।'

(४३१) कालिदास त्रिवेदी।

ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने शिवसिंहसरोज में कालिदास का जन्म संवत् १७५० माना है। इन के पुत्र उदैनाथ उपनाम कवीन्द्र और पौत्र दूलह भी अच्छे कवि हो गये हैं। ये महाशय त्रिवेदी (कान्यकुब्ज) अन्तरवेद के रहने वाले थे। इन का ग्रन्थ वार वधूविनोद हस्तलिखित हमारे पास वर्त्तमान है। इसकी कोई मुद्रित प्रति हमने नहीं देखी। हमारी प्रति में सन्-संवत् का कोई ब्योरा नहीं दिया है, परन्तु ठाकुर शिवसिंह जी ने उसी ग्रन्थ का एक जयकरी छन्द लिखा है जिसमें संवत् का वर्णन है।

सम्वत सत्रह से उनचास।
कालिदास किय ग्रन्थ विलास॥

जान पड़ता है कि यह छन्द हमारी प्रति में भूल से छूट रहा है। इन्होंने संवत् १७४५ में औरंगज़ेब के साथ रह कर गोलकुंडा की लड़ाई का वर्णन किया। उस समय शाह के साथ होने से जान पड़ता है कि इन की कवित्वशक्ति बढ चुकी थी, सो उस समय इन की ३५ वर्ष की अवस्था होनी अनुमान सिद्ध है। अधिक अवस्था भी न थी क्योंकि इन के सब ग्रन्थ इस समय के पीछे बने। इस से प्रकट है कि कालिदास का जन्म सवत् १७१० नि० के लगभग हुआ होगा। ये महाशय औरंगज़ेब के दल में किसी राजा के साथ स० १७४५ की बीजापुर तथा गोलकुंडावाली लड़ाई में गये थे। इन दोनों रियासतों के औरङ्गज़ेब ने इसी समय में पराजित करके ज़ब्त कर लिया। तब इन्हों ने यह छन्द बनाया :—

गढन गढी से गढिमहल मढी से मढि
बीजापुर ओप्यो दलमलि सुघराई में।
कालिदास कोप्यो वीर औलिया अलमगीर
तीर तरवारि गही पुहुमी पराई में॥
बूंद ते निकसि महि मडल घमंड मची
लोहू की लहरि हिम गिरि की तराई में।
गाडि कै सुझडा आड कीन्हीं पातसाह ताते
डकरी चमुंडा गोलकुंडा की लराई में॥

इसके पीछे कालिदास जी राजा जोगाजीतसिह जम्बूनरेश के यहाँ गये, जिन के नाम पर स वत् १७४९ में बारवधूविनोद बना।

इस में प्रथम सूक्ष्मतया त्रिभंगी इत्यादि छन्दों में नायिकाभेद कहा गया है और फिर नखशिख के पश्चात् नायिकाभेद से मिले हुए विषय पर कविता की गई है। इसमें पांच अध्याय हैं, जिन में कुल मिलाकर दो सौ छन्द हैं। कविता के गुणों में यह ग्रन्थ साधारण है।

इन का जँजीराबन्द नामक बत्तीस घनाक्षरियों का एक मुद्रित ग्रन्थ भी हमारे पास मौजूद है। इसका काव्य आदरणीय है। इन के बनाये हुए क़रीब ७० स्फुट छन्द हमारे पास हैं और राधामाधव-बुधमिलनविनोद नामक एक और ग्रन्थ का नाम खोज में मिलता है। इन का संग्रह किया हुआ हजारा नामक एक और भी ग्रन्थ है। यह ठाकुर शिवसिंहजी के पुस्तकालय में वर्तमान है, परन्तु जहाँ तक हमें ज्ञात है अभी प्रकाशित नहीं हुआ है और न हमने इसे देखा है। शिवसिंह जी ने लिखा है कि इस में सं० १४८१ से लेकर सं० १७७६ तक के २१२ कवियों के एक हजार छन्द संग्रहीत हैं। इन की कविता सरस और भाषा सानुप्रास एवं सराहनीय है। ये महाशय पद्माकर की श्रेणी में रक्खे जा सकते हैं।

महाराज कालिदास ने हज़ारा रचकर हिन्दी-काव्य का इतिहास-सम्बन्धी बड़ा उपकार किया है। पुराने संग्रहों से दो बहुत बड़े काम निकलते हैं, एक तो यह कि जिन कवियों के नाम उनमें आजाते हैं उन के समय के विषय इतना निश्चय अवश्य हो जाता है कि वे संग्रह के समय से पीछे के नहीं हैं। फिर जिन कवियों के ग्रन्थ नहीं होते, केवल स्फुट छन्द होते हैं, अथवा जिन के ग्रन्थ इतने रोचक नहीं होते कि लोग उनकी बड़ी चाह करें, उन के नाम कुछ

दिनों में बिल्कुल भूल जाते हैं। ऐसे कवियों के नाम स्थिर रखने में पुराने संग्रह बड़े उपकारी होते हैं।

फिर सैकड़ों कवियों के नाम एकत्र मिल जाने से भविष्य समालोचकों अथवा इतिहासलेखकों का काम बहुत सुगम हो जाता है। यदि कालिदासजी के हजारा में २१२ कवियों के नाम एकत्र सम्रहीत न मिल जाते, तो शायद शिवसिंहजी का उनका पता लगा लेने में बड़ी कठिनाई होती और फिर भी उन सब के नाम एकत्र न हो सकते। हमें दलपतिराय और वंशीधर-रचित सवत् १७९२ का एक संग्रह मिल गया, जो समय में कालिदास के हजारा से १६ वर्ष पीछे है। इसमें केवल ४४ कवियों के नाम आये हैं, परन्तु तो भी कवियों के समय निरूपण में हमें इससे बड़ी मदद मिली। शिवसिंहजी ने यह ग्रन्थ नहीं देखा था, सो इसी छोटी सी सूची में से छः कवियों के नाम सरोज में नहीं हैं। इस विचार से हमें हजारा के कारण कालिदास को भाषा काव्य का प्रथम इतिहाससहायक समझना चाहिए। यदि शिवसिंहजी इतना विशाल परिश्रम न कर गये होते, तो आज हमें भाषा के इतिहास लिखने का साहस ही शायद न होता। कालिदास की कविता का केवल एक और उदाहरण हम नीचे लिख कर इस प्रबन्ध को समाप्त करते हैं।

हाथ हँसि दीन्हो भीति अन्तर परसि
प्यारी देखतही छकी मति कान्हर प्रवीन की।
निकस्यो झरोखा माँझ विकस्यो कमल
सम ललित अँगूठी तामैं चमक चुनीन की॥

कालिदास तैसी लाल मेहँदी के बुन्दन की
चारु नख चन्दन की लाल अँगुरीन की।
कैसी छवि छाजत है छाप औ छलान की
सुकंकन चुरीन की जड़ाऊ पहुँचीन की॥

(४३२) रामजी।

शिवसिंहसरोज में इनका जन्म-संवत् १७०३ माना गया है और यह कहा गया है कि रामजी के छन्द कालिदासहज़ारा में मिलते हैं। इनका कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ सरोज में नहीं लिखा है। खोज में इनका बरवैनायकाभेद ग्रन्थ मिला है और यह भी लिखा है कि ये भट्ट फ़र्रुख़ाबादी हैं और नवाब सियामख़ाँ के यहाँ थे। उसमें इनकी पैदायश का संवत् १८०३ तथा कविता का १८३० लिखा है। शायद ये दो व्यक्ति हों, क्योंकि खोज में राम भट्ट और सरोज में रामजी है। जो हो। हमारे पुस्तकालय में 'शृङ्गारसौरभ' नामक इनका एक हस्तलिखित ग्रन्थ भी वर्त्तमान है, परन्तु दुर्भाग्यवश इसमें कोई सन् संवत् का ब्योरा नहीं है। इसमें क़रीब डेढ़ सौ के छन्द हैं। यह नायिका भेद का ग्रन्थ है। रामजी की कविता देखने से विदित होता है कि ये एक अच्छे कवि हैं। इनकी कविता ललित और भाषा मधुर है। इनको हम तोष कवि का समकक्ष समझते हैं। उदाहरणार्थ इनके दो छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

चंचलताई तजी न अबै गति पायन हू न सिखाई मरालन।
छीनता नेकु लही न अबै कटि पीनता त्योंही उरोज रसालन॥

रामजी देखत हौ तुमही न लगी भये सौतिन के उर सालन।
आनन पोष सुधाधर की न भट्ट केहि हेत लट्ट भये लालन॥

उमड़ि घुमड़ि घन छोड़त अखंडधार
चंचला उठत तामें तरजि तरजि कै।
बरही पपीहा भेक पिक खग टेरन हैं
धुनि सुनि प्रान उठें लरजि लरजि कै॥
कहै कवि राम लखि चमक खदोतन की
पीतम को रही मैं तौ बरजि बरजि कै।
लागे तन तावन बिना री मन भावन के
सावन दुवन आए गरजि गरजि कै॥

नाम—(४३३) ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी, पीरनगर ज़िला सीतापुर।

ग्रन्थ—रामविलास रामायण।

कविता-काल—१७३०।

विवरण—इन्होंने वाल्मीकीय रामायण का उल्था छन्दोबद्ध किया है। इनकी रचना मनोहारिणी है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है। उदाहरण।

लहत सकल रिधि सिधि सुख संपदाहि
विद्या बुद्धि सुमिरि गनेस गौरि नंदनै।
सिन्दुर बरन सुठि सोहत तिलक लाल
चद्र बाल भाल नैन देत हैं अनन्द नै॥
एकदन्त भुजग विभूषण परशु पानि
धारि भ[illegible] दास [illegible]

सुन्दर विसाल तन ईसुरी सँभारु
मन दया घन हरन विखम दुख दन्दनै ॥

(४३४) महाराजा छत्रसाल।

पन्नानरेश महाराजा छत्रसाल की वीरता एवं दानशीलता जगत्प्रसिद्ध है। आप बुंदेला क्षत्री चम्पतिराय के पुत्र थे। आप का जन्म सं० १७०६ में हुआ था। आप ने एक साधारण घराने में जन्म ग्रहण करके केवल बाहुबल से दो करोड़ वार्षिक आय का विशाल राज्य उपार्जित किया। इन महाराज ने सदा औरंगज़ेब से ही युद्ध करते हुए राज बढ़ाया और बड़े बड़े युद्धों में मुग़लों को परास्त किया।

महाशूर होते हुये आप बड़े दानी और साहित्यसेवी भी थे। आप ने बड़े बड़े कवियों का सम्मान किया और कहते हैं कि उमंगवश एक बार भूषण कवि की पालकी का डंडा अपने कन्धे पर रख लिया। बड़े बड़े भारी कवियों ने इनका यश गान किया है।

आप स्वयं भी कविता करते थे। राजविनोद और गीतों का संग्रह नामक आप के दो ग्रन्थ भी खोज में मिले हैं। आप का रचनाकाल सं० १७३० से माना जा सकता है। इन महाराज का स्वर्गवास संवत् १७८८ में हुआ। आप के उत्साह से हिन्दी-कविता को बड़ा लाभ पहुँचा।

उदाहरण।

इच्छा दै अच्छरनि सिपिय ब्रज माह बसाँइय।
बाल बिलास दिपाइ रास रस रँग रमाइय॥

अक्षर को परतक्ष धाम लीला दरसाइयँ।
सखियन विरह जनाय जोग माया उङसाइयँ॥
सुर मैं भूमाइ भूम नाल मैं लाल हरि प्रेमनि पग्यउ।
सखियन समेत छत्रसाल उर जुगल रूप जग जग जग्यउ॥

नाम—(४३५) नेणसीमूता धानिया (चोसवाल) जोधपुर।

ग्रन्थ—मारवाड़ की ख्यात।

कविताकाल—१७३२।

विवरण—इतिहास, श्लोकसंख्या ३५००। आश्रयदाता महाराजा जसवंतसिंह।

(४३६) अनन्य अथवा अक्षर अनन्य ने ज्ञानबोध (१७ पृष्ट), सिद्धान्तबोध (१०९ छन्द), ज्ञानयोग (८९ छन्द), हर सम्वाद भाषा और योगशास्त्रस्वरोदय नामक ग्रन्थ बनाये, जो हमने छत्रपुर में देखे हैं। खोज में इन का जन्मकाल संवत् १७१० लिखा है, जो अन्य जाँच से भी ठीक जँचता है। इन का कविता-काल सं० १७३५ के लगभग समझना चाहिए। ये कुँवर पृथ्वीराज के यहाँ थे। ये जाति के कायस्थ थे। इनकी कविता साधारणतया अच्छी होती थी। हम इन को साधारण श्रेणी में रखते हैं। इन्होंने विशेषतया धर्म विषयों पर कविता की। आप दतिया राज्यान्तर्गत सेहुँडा ग्राम के निवासी थे और महाराजा दलपति राय दतिया-नरेश के पुत्र कुँवर पृथ्वीराज के गुरु थे। एक बार पन्नानरेश महाराजा छत्रसाल ने आप को बुलवा भेजा, परन्तु आप ऐसे निवृत्त मार्गस्थ

थे कि आपने जाना पसन्द नहीं किया । इन के निम्न चार ग्रन्थों का पता और चला हैः– (१) अनन्यप्रकाश, (२) विवेकदीपिका, (३) देवशक्तिपचीसी, (४) ब्रह्मज्ञान ।

कुछ ग्रन्थों में इन का समय चन्द के कुछ ही पीछे लिखा है, परन्तु वह इन की रचना एवं अन्य बातों से अशुद्ध जान पड़ता है इन के अन्य ग्रन्थ नीचे लिखे जाते हैंः—

ग्रन्थ—१ अनन्ययोग , २ राजयोग, ३ अनन्य की कविता, ४ दैवशक्ति पचीसी (शक्तिपचीसी, अनन्यपचीसी), ५ प्रेमदीपिका, ६ उत्तमचरित्र (श्रीदुर्गा भाषा), ७ अनुभवतरंग, ८ ज्ञानबोध, ९ श्रीसरसमंजावली, १० ब्रह्मज्ञान, ११ ज्ञानपचासा, १२ भवानीस्तोत्र, १३ वैराग्यतरंग ।

उदाहरण ।

जो अन्तर सुमिरत सुरत आइ । तो बाहेर करमन लगत नाइ ॥
जा मति सो गति यह कहत वेद । मन गत साधत यह ज्ञान भेद ॥
जो मत न सधै मन करम भोय । टोपीहि दिये नहिं मुक्त होय ॥
असि ढाल लिये अति कोपि बढ़्यो । जनु कोपि प्रलै कहँ काल चढ़्यो ॥
इमि राज कढ़े सब नग्र कढ़े । रकसी अरु राकस पुंज बढ़े ॥

पहिले तप तीरथ व्रत्त करै करि संगति साधुन की हरसै ।
पुनि भक्ति करै अवतारन की बर युक्ति सु योगिन की परसै ॥
पुनि आपुन तत्व बिचार करै परिपूरन ब्रह्म प्रभाकरसै ।
क्रम सों यह रीति अनन्यमनै सरबस्व सरूप स्वयं दरसै ॥

नाम—(४३७) विजयहर्ष जैनी साधु विमलचन्द्र का शिष्य।
ग्रंथ—सुरसुन्दरी प्रबन्ध।
ग्रन्थ स०—१७२६।
विवरण—सुरसुन्दरी की कथा।

(४३८) घनश्याम शुक्ल।

ये महाशय असनी जिला फ़तेहपुरवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण संवत् १७२७ के लगभग हुए। ये रीवाँनरेश के यहाँ थे और उन्हीं की प्रशंसा में इन्होंने कविता की। इनका एक छन्द काशी नरेश की प्रशंसा का भी सरोज में लिखा है। इनके एक छन्द में कम्पनी शब्द आया है, जिस से इनके आधुनिक कवि होने का भ्रम हो सकता है, पर ऐसा सोचना न चाहिए, क्योंकि अँगरेज़ लोग जहाँगीर के समय से ही भारत में आये थे, सो औरङ्गजेब के समय में ऐसे शब्द के प्रयोग में कोई आश्चर्य्य नहीं है। इन्होंने दलेलखाँ का भी वर्णन किया है, जो औरङ्गजेब का सेनापति था। सरोज और खोज में एक घनश्याम का संवत् १६०५ लिखा है, पर यह दूसरा कवि जान पड़ता है, क्योंकि उस समय दलेलखाँ उत्पन्न भी नहीं हुआ था।

इनका कोई ग्रंथ देखने में नहीं आया, पर सरोजकार ने इनके प्रायः २०० छन्द देखे हैं। हमारे देखने में इनके थोड़े से ही छन्द आये हैं, पर वह परम मनोहर हैं। वीर रस का इन्होंने बड़ा लोमहर्षण वर्णन किया है। ऐसी सबल कविता बहुत कम कविजन कर सके हैं। क्या वीर और क्या शृङ्गार इन्होंने हर एक कथन

में अपना बल निभाया है। अनुप्रास पर भी इनकी दृष्टि विशेष रहती थी। हम इनको दास की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

प्रबल पठान तू दलेल खान बलवान
　　दच्छिन ते दलहि दबायो मनो हासी ते।
बाँकुरो बहादुर बलीन बीर बरछो लै
　　आपहि बचायो है बिलायत बिलासी ते॥
कहै घनस्याम युद्ध कीन्हों मेघनाद जैसे
　　गरुड गोविन्दहि छोडायो नागफासी ते।
कुमेदान कम्पनी कुम्हेडा ककरी से काटि
　　काढि लायो काकहि कृपान करि कासी ते॥

पग मग धरत महीधर डिगत
　　डगमगत पुहुमि चटकत फन सेस के।
उलटि पलटि खलभलत जलधि जल
　　कंपत अवलि अलकेस के लॅकेस के॥
कहै घनस्याम कच्छ मच्छ को कहल होत
　　दहल दहल होत महल सुरेस के।
गढन दलत मृगराजन मलत मद
　　झरत चलत गज बांधव नरेस के॥

बैठी चढि चाँदनी में चन्द्रमा बिलोकन को
　　उन्नत उरोजन ते उछरे हरा परैं।
दमा छमा केतिक तिलोत्तमा हे
　　घनस्याम रमा रति रूप देखि धसकी धरा परैं॥

जेवर जड़ाऊ भोर जगमगी अंगन ते
नेवर जड़ाऊ तेज तरनि सरा परैं।
राधे मुख मंडल मयूखन ते महाराज
छूटि कै छपाकर के ऊपर छरा परैं॥
उमड़ि घुमड़ि घन आवत अटान चाेट
घन घन जाेति छटा छटकि छटकि जात।
सोर करैं चातक चकाेर पिक चहुंवार
मोर ग्रीव माेरि माेरि मटकि मटकि जात॥
सावन लाैं आवन सुनाे है घनस्याम जू काे
आँगन लाैं आय पाँय पटकि पटकि जात।
हिये बिरहानल की तपनि अपार उर
हार गजमाेतिन काे चटकि चटकि जात॥
चन्द अरबिन्द बिम्ब बिद्रुम फनिन्द सुक
कुन्दन गयन्द कुन्द कली निदरति है।
चम्पा सम्पा सम्पुट कदलि घनस्याम कहाँ
कुंकुम काे अगराग अगना करति है॥
केहरी कपाेत पिक पल्लव कलिन्दी घन
दरके निरखि दारयाे छतिया वरति है।
मेरे इन अंगन की नकल बनाई बिधि
नकल बिलाेके माेहिं न कल परति है॥

(४३६) नेवाज।

इस नाम के तीन कवि हुए हैं, जिनमें से एक ने भगवन्तराय खीची का यश वर्णन किया है। हमारे इस लेख के नायक नेवाज

कवि छत्रसाल के समय में हुए जैसा कि भगवत कवि ने कहा है, कि

भली आजु कलि करत हौ छत्रसाल महराज ।
जहँ भगवत गीता पढ़ी तहँ कवि पढ़त नेवाज ॥

यह दोहा भगवत के स्थान पर नेवाज के मुकर्र र हो जाने पर बना था। इनका नाम दासजी ने भी लिखा है, जिस से स्पष्ट है कि ये संवत् १८०० से प्रथम के हैं।

नेवाज कवि ब्राह्मण थे। इनका कोई ग्रन्थ सिवा शकुन्तला नाटक के हमने नहीं देखा है और इनके स्फुट छन्द भी बहुत थोड़े मिलते हैं, परन्तु छन्द जितने मिले वे सब अनमोल हैं। आपके किसी छन्द में हमने निष्प्रयोजन अथवा भर्ती के शब्द नहीं पाये, तथा सब छन्द टकसाली एवं परमोत्तम समझ पड़े। इनके छन्दों में न कहीं भावों की कमी है और न वाक्यशैथिल्य। इनकी भाषा अौवल दरजे की है। इस कवि की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। ये महाशय सेनापति की श्रेणी के हैं। यह कवि बड़ाही आशिकमिजाज और सच्चे भावों का वर्णन करने वाला है। इन्होंने सुरतान्त के अच्छे अच्छे छन्द कहे हैं। उदाहरणार्थ इनके केवल दो छन्द यहाँ लिखे जायँगे। इनके भावों में अश्लीलता की मात्रा विशेष है, परन्तु शब्द एक भी अश्लील नहीं है। इनका समय अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रथमार्द्ध का है। यह भी ठाकुर की भाँति स्वाभाविक और सच्चा कवि था और बड़ा ही प्रेमी हो गुज़रा है। संयोग शृंगार में इसने क़लम तोड़ दी है।

उदाहरण।

छतियाँ छतियाँ सों लगाये दुवौ दुवौ जी मैं दुहूँ के समाने रहैं।
गई बीति निसा पै निसा न भई नये नेह मैं दोऊ बिकाने रहैं॥
पट खोलैं नेवाज न भोर भये लखि घोस को दोऊ सकाने रहैं।
उठि जैवे को दोऊ डेराने रहैं लपटाने रहैं पट ताने रहैं॥ १॥
देखि हमैं सब आपुस में जो कछू मन भावै सोई कहती हैं।
ए घरहाई लोगाई सबै निसि घोस नेवाज हमैं दहती हैं॥
बातैं चबाव भरी सुनि कै रिस आवत पै चुप ह्वै रहती हैं।
कान्ह पियारे तिहारे लिये सिगरे ब्रज को हँसिबो सहती हैं॥ २॥

नाम—(४४०) मोहन विजय जैन जती अणहलपुर पट्टण।
ग्रन्थ—मानतुङ्ग-मानवती।
कविताकाल—१७४०।
विवरण—श्लोकसंख्या १४७०। विषय वैराग्य।
नाम—(४४१) रसिक।
ग्रन्थ—चन्द्र कुँवर की वार्त्ता।
कविताकाल—१७४०।
विवरण—कथा।

(४४२) वृंद कवि।

ये महाशय संवत् १७४२ के लगभग हुए। भावपचासिका, वृन्द-सतसई, और श्रृंगारशिक्षा नामक इनके तीन ग्रन्थ खोज में लिखे हैं। इनका "वृन्द सतसई" नामक सात सौ दोहों का नीति-

सम्बन्धी एक श्लाघ्य ग्रन्थ हमारे पास है। इसमें ब्रज भाषा में दोहों द्वारा प्रायः नीति के श्लोकों का अनुवाद किया गया है, अथवा जनश्रुतियों या कहावतों के आधार पर दोहों की रचना की गई है। भाषा इस ग्रन्थ की अच्छी है और यह ग्रन्थ शिक्षाप्रद एवं देखने योग्य है। हम इस कवि को तोप की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ कुछ दोहे नीचे देते हैं:—

फीकी पै नीकी लगै कहिए समय विचारि।
सब को मन हरखित करै ज्यों विवाह में गारि॥
सो ताके औगुन कहै जो जेहि चाहै नाहिँ।
तपित कलंकी विष भरयौ बिरहिनि ससिहि कहाहिँ॥
सुखदाई जो देत दुख सो सब दिन को फेर।
ससि सीतल संयोग में तपत बिरह की बेर॥
भले बुरे सब एक सम जौलों बोलत नाहिँ।
जानि परत है काग पिक रितु बसंत के माहिँ॥
हितहू की कहिए न तेहिँ जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी होत दिखाए क्रोध॥
सबै सहायक सबल के कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत अगिनि को दीपहिँ देत बुझाय॥
उद्यम कबहुँ न छोंड़िये पर आसा के मोद।
गागरि कैसे फोरिये उनये देखि पयोद॥
छल बल समय बिचारि कै अरि हनिए अनयास।
किया अकेले द्रोन सुत निसि पांडव कुल नास॥

विपति बड़ेही सहि सकैं इतर विपति तें दूर।
तारे न्यारे रहत हैं गहत राहु ससि सूर॥

नाम—(४४३) बाल ग्रली।

ग्रन्थ—१ नेहप्रकाश, २ सीताराम ध्यानमञ्जरी।

कविताकाल—१७४१।

विवरण—इन्होंने नेहप्रकाश में १५१ दोहा, एव सोरठों में रामचन्द्र तथा जानकी का यश वर्णन किया है और सीताराम-ध्यानमञ्जरी में पुर एव राज भवन तथा राम-जानकी का बड़ी ही योग्यता से मनोहर काव्य में हाल कहा है। इनकी गणना तोष की श्रेणी में की जाती है। इन ग्रन्थों पर जनकलाडिलीशरण ने टीका की है। हमने ये ग्रन्थ छतरपुर दरबार में देखे।

उदाहरण —

नेह सरोवर कुँवर दोउ रहे फूलि नव कन्जु।
अनुरागी अलि अलिन के लपटे लोचन मञ्जु॥
स्याम बरन तन सीस जरकसी पाग रही फबि।
नव नीरज ते निकसि प्रात जनु जात भयो रवि॥
श्री मुख पर लिय झलक अलक ग्रस लस घुँघुरारे।
रहे घेरि नव कज मधुप सौरभ मतवारे॥
केसरि तिल्क ललाट पटल छवि परत विसेखै।
ललित कसैाटी उपर मनहु नव कुदन रेखै॥

इस काल के अन्य कवि गण।

नाम—(४४४) दोल्ह।

ग्रन्थ—गुणसागर।

कविता-काल—१७२१।

नाम—(४४५) परबते सोनार ओड़छा।

ग्रन्थ—(१)दशावतारकथा (१७२१), (२) रामरहस्यकलेवा।

कविता-काल—१७२१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४४६) बलिजू।

जन्म-काल—१६९४।

कविताकाल—१७२२।

विवरण—इस नाम के कवि सरोजकार ने दो लिखे हैं, परन्तु जान पड़ता है कि ये दोनों एक थे।

नाम—(४४७) बुधराम।

कविताकाल—१७२२।

विवरण—हजारा में इनकी रचना है। साधारण श्रेणी।

नाम—(४४८) बंसी कायस्थ ओड़छा निवासी।

ग्रन्थ—सजनबहोरा।

कविताकाल—१७२३।

विवरण—लाल मणि के पुत्र। साधारण श्रेणी।

नाम—(४४९) जिन चन्द सूरि।

ग्रन्थ—श्रीधन्ना चौपाई।
कविताकाल—१७२५।

नाम—(४५०) चन्द्रसेन।
ग्रन्थ—माधवनिदान।
कविताकाल—१७२६ के पूर्व।

नाम—(४५१) कल्यान।
कविताकाल—१७२६।
विवरण—इनकी रचना हज़ारा में है। साधारण श्रेणी।

नाम—(४५२) जन अनाथ बंदीजन।
ग्रन्थ—(१) सर्वसार, (२) उपदेश, पृष्ठ ११२, (३) विचार माला।
कविताकाल—१७२६।
विवरण—वेदान्त।

नाम—(४५३) बालकृष्ण नायक।
ग्रन्थ—(१) ध्यानमंजरी, (२) ग्वालपहेली, (३) प्रेमपरीक्षा, (४) परतीतपरीक्षा।
कविताकाल—१७२६।
विवरण—चरणदास के शिष्य।

नाम—(४५४) मोनीजी।
ग्रन्थ—विचारमाल सटीक।
कविताकाल—१७२६।

नाम—(४५५) अभू चौबे आगरा।

ग्रन्थ—गुणरहस्य।

कविताकाल—१७२७।

विवरण—श्लो० सं० २६००। विषय शृंगार।

नाम—(४५६) विष्णुदास, कायस्थ पन्ना।

ग्रन्थ—एकादशी-माहात्म्य।

कविताकाल—१७२७।

विवरण—साधारण।

नाम—(४५७) सित कंठ।

ग्रन्थ—तत्त्वमुक्तावली।

कविताकाल—१७२७।

विवरण—बरेलीवासी।

नाम—(४५८) त्रिलोकदास।

ग्रन्थ—भजनावली।

कविताकाल—१७२९ के पूर्व।

नाम—(४५९) सुदर्शन कायस्थ हमीरपुर।

ग्रन्थ—(१) चिकित्सादर्पण, (२) भिषजप्रिया।

कविताकाल—१७२९।

विवरण—सुजानसिंह उड़छा-नरेश के यहाँ थे। निम्न श्रेणी।

नाम—(४६०) कृष्णदास दतिया।

ग्रन्थ—(१) दानलीला, (२) तीजा की कथा (१७३०), (३) पद, (४) महालक्ष्मी की कथा (१७५३), (५) ऋषिपंचिमी-कथा, (६) एकादशी-माहात्म्य, (७) हरिश्चन्द्र-कथा।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(४६१) कुंभकरण चारण मारवाड।

ग्रन्थ—रतनरासा श्लो० स० ३१५०।

रचना-काल—१७३० लगभग।

विवरण—राठौर रतनसिंह के और गजेंद्र से लडने का हाल।

नाम—(४६२) चतुरसिंह राना।

जन्म-संवत्—१७०१।

रचना काल—१७३०।

विवरण—खडी बोली में रचना की है, जो निम्न श्रेणी की है।

नाम—(४६३) छीत कवि।

जन्म-संवत्—१७०५।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४६४) देवदत्त कुसवारा कन्नौज के पास।

ग्रन्थ—योगतत्त्व।

जन्म-संवत्—१७०३।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४६५) पतिराम।

जन्म-संवत्—१७०१।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—निम्न श्रेणी। इनके छन्द हज़ारा में हैं।

नाम—(४६६) प्रहलाद।

जन्म-संवत्—१७०१।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४६७) बलदेव प्राचीन।

जन्म-संवत्—१७०४।

रचना काल—१७३०।

विवरण—हज़ारा में इनके छन्द हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(४६८) मुकुन्द प्राचीन।

जन्म-संवत्—१७०५।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—साधारण श्रेणी। इनके छन्द हज़ारा में हैं।

नाम—(४६९) लघराज।

ग्रन्थ—(१) प्रस्तावसत ग्रन्थ, (२) सतसई भाषा।

रचना-काल—१७३०।

विवरण—जोधपुर के महाराज जसवन्तसिंह के मन्त्री थे।

नाम—(४७०) शशिशेखर।

जन्म-संवत्—१६९९।

रचना-काल—१७३०।

नाम—(४७१) श्याम।

जन्म-संवत्—१७०५।
रचना-काल—१७३०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४७२) श्यामलाल।

जन्म-संवत्—१७०५।
रचना-काल—१७३०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४७३) श्रीगोविन्द।

रचना-काल—१७३०।
विवरण—साधारण श्रेणी। महाराजा शिवाजी के यहाँ थे।

नाम—(४७४) हुलासराम।

जन्म-संवत्—१७०८।
रचना-काल—१७३०।
विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(४७५) श्रीपति भट्ट।

ग्रन्थ—हिम्मतप्रकाश।
रचना-काल—१७३१।
विवरण—बाँदा के नवाब सैयद हिम्मतख़ाँ के दरबार में थे। औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे।

नाम—(४७६) दरियाव।

ग्रन्थ—दरियावजी की बानी।

रचनाकाल—१७३२ से १८४४ तक कभी।

नाम—(४७७) पीरदान आसिया (मारवाड़ की एक जाति) मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत मरुभाषा।

रचनाकाल—१७३२।

विवरण—आश्रयदाता महाराना राजसिंह।

नाम—(४७८) ब्रजनाथ ब्राह्मण कम्पिला।

ग्रन्थ—पिंगल।

रचनाकाल—१७३२।

नाम—(४७६) बलिराम।

ग्रन्थ—(१) रसिकविवेक, (२) झूलना।

जन्म संवत्—१७०५।

रचनाकाल—१७३३।

विवरण—कविता में पंजाबी लहजा है।

नाम—(४८०) बाजीन्द।

ग्रन्थ—(१) राजकीर्तन, (२) गुण श्रीमुखनामो।

जन्म संवत्—१७०८।

रचनाकाल—१७३६।

नाम—(४८१) लालदास आगरावाले।

ग्रन्थ—(१)इतिहाससार समुच्चय, (२) अवधविलास (१७३४), (३) बारहमासा, (४) भरत की बारामासी।

रचनाकाल—१७३४।

विवरण—अवधविलास हमने देखा है। साधारण कविता उसमें है। इसी नाम के एक वैद्य कवि आगरे में १६४३ में हो गये हैं। दोनो के ग्रन्थों में समय लिखे हैं।

नाम—(४८२) कमनेह राजपूताना।

रचनाकाल—१७३५ के प्रथम।

नाम—(४८३) तेगपाणि।

जन्म-सवत्—१७०८।

रचनाकाल—१७३५।

विवरण—हीन श्रेणी

नाम—(४८४) मीर रुस्तम।

रचनाकाल—१७३५।

विवरण—साधारण श्रेणी। इन के छन्द कालिदासहज़ारा में हैं।

नाम—(४८५) मीरी माधव।

रचनाकाल—१७३५।

विवरण—साधारण श्रेणी

नाम—(४८६) सहीराम।

जन्मसवत्—१७०८।

रचनाकाल—१७३५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४८७) जेनदीन (जैनुद्दीन), महम्मद।

कविताकाल—१७३६।

विवरण—साधारण श्रेणी। एक पीठ का छन्द प्रख्यात।

नाम—(४८८) श्रोसवाल।

ग्रन्थ—मूता नेणसी की ख्यात।

रचनाकाल—१७३७।

विवरण—मूता नेणसी ख्याति राजपूताना का इतिहास है। आज कल सरकार इसके छपवाने का प्रयत्न कर रही है। डिंगल भाषा में यह ग्रन्थ है।

नाम—(४८६) कोविद मिश्र (चन्द्रमणि मिश्र) श्रोड़छा।

ग्रन्थ—(१) भाषाहितोपदेश, (२) राजभूषण।

रचनाकाल—१७३७।

विवरण—महाराजा पृथ्वीसिंहजी दतिया नरेश तथा उदोतसिंह के यहाँ थे। आप सुकवि थे।

नाम—(४९०) दानिशमन्दखाँ।

ग्रन्थ—स्फुट।

रचनाकाल—१७३७।

विवरण—श्रोरङ्गजेब के दरबार में थे।

नाम—(४९१) प्रद्युम्नदास।

ग्रन्थ—काव्यमञ्जरी।

रचनाकाल—१७३७।
विवरण—नागौड़ के राजा दलेलसिंह के यहाँ थे।

नाम—(४६२) वैकुंठ मणि शुक्ल बुन्देलखंडी।
ग्रन्थ—(१)वैसाखमाहात्म्य, (२) अगहनमाहात्म्य।
रचनाकाल—१७३७।
विवरण—दोनों गद्य ब्रजभाषा के ग्रन्थ हैं।

नाम—(४६३) रघुराम कायस्थ ओड़छा।
ग्रन्थ—कृष्णमोदिका।
रचनाकाल—१७३७।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४६४) रणछोर।
ग्रन्थ—राजपट्टन।
रचनाकाल—१७३७।
विवरण— मेवाड़ के राजघराने का इतिहास लिखा।

नाम—(४६५) आसिफखाँ।
रचनाकाल—१७३८।

नाम—(४६६) विहारी।
जन्मकाल—१७१३।
रचनाकाल—१७३८।
विवरण—हज़ारा में इनकी रचना मिलती है।

नाम—(४६७) महाराना जैसिंह मेवाड़।

ग्रन्थ—जैदेवविलास।

रचनाकाल—१७३८ से १७५७ तक।

विवरण—ये महाराज मेवाड़ उदयपुर के महाराणा थे और कवियों के आश्रयदाता थे। इन्होंने अपने वंश के वर्णन में यह ग्रन्थ बनाया है।

नाम—(४६८) सामन्त।

रचनाकाल—१७३८।

विवरण—साधारण श्रेणी। औरंगज़ेब बादशाह के यहाँ थे।

नाम—(४६६) सुजा बन्दीजन माड़वार।

रचनाकाल—१७३८।

विवरण—महाराजा जसवन्तसिंह के यहाँ थे।

नाम—(५००) गंगाधर (गंगेश)।

ग्रन्थ—विक्रमविलास।

रचनाकाल—१७३९।

विवरण—माथुर चौबे थे।

नाम—(५०१) उदैनाथ बन्दीजन बनारस।

जन्मकाल—१७११।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५०२) काशीराम।

जन्म-संवत्—१७१५।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—साधारण कवि। औरँगज़ेब के सूबेदार निज़ामतख़ाँ के यहाँ थे।

नाम—(५०३) ग्वाल प्राचीन।

जन्म-संवत्—१७१५।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—इनकी कविता हज़ारा में हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(५०४) प्राणनाथ।

जन्म-संवत्—१७१४।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—साधारण श्रेणी। राजा कोटा के यहाँ थे।

नाम—(५०५) विचित्र (फफूंद निवासी)।

ग्रन्थ—दानविलास।

रचनाकाल—१७४०।

नाम—(५०६) भृंग।

जन्म-संवत्—१७०८।

रचनाकाल—१७४०

नाम—(५०७) मोतीराम।

ग्रन्थ—माधोमल।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—साधारण श्रेणी। इन के छन्द हज़ारा में हैं।

नाम—(५०८) मोहन।

ग्रन्थ—रामाश्वमेध।

जन्मसंवत्—१७१५।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—तोषश्रेणी के कवि। ये सवाई राजा जैसिंह जयपुर महाराज के यहाँ भी गये थे।

नाम—(५०९) रघुनाथ प्राचीन।

जन्म-संवत्—१७१०।

रचनाकाल—१७४०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५१०) रूपनारायण।

जन्म-संवत्—१७११।

रचना-काल—१७४०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५११) लोधे।

जन्म-संवत्—१७१४।

रचना-काल—१७४०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(५१२) श्रीधर।

ग्रन्थ—कविविनोद।

रचना-काल—१७४०।

विवरण—मुरलीधर के साथ यह ग्रन्थ बनाया।

नाम—(५१३) हरपचन्द साधू।

ग्रन्थ—श्रीपालचरित्र।

रचना-काल—१७४०।

नाम—(५१४) हरिचन्द।

रचना-काल—१७४०।

विवरण—पन्ना में राजा छत्रसाल के यहाँ थे।

नाम—(५१५) काकरेजीजी राजपूतानी।

जन्म-सवत्—१७१६।

रचना-काल—१७४१।

विवरण—भवानी दयावार गुजरात की बेटी माड़वार में ब्याही थीं।

नाम—(५१६) जिनरंग सूरि साधू।

ग्रन्थ—सौभाग्यपंचमी।

रचना-काल—१७४१।

नाम—(५१७) धर्ममन्दिर गणि।

ग्रन्थ—(१) प्रबोधचिन्तामणि, (२) चोपी मुनि चरित्र।

रचना-काल—१७४१-१७५०।

विवरण—जैन कवि।

नाम—(५१८) बलबीर कन्नौज।

ग्रन्थ—(१) पिंगलमानहरण (१७४१), (२) उपमालंकार नख-शिख वर्णन, (३) दंपतिविलास (१७५९)।

रचना-काल—१७४१।

नाम—(५१९) रघुनाथराम।

ग्रन्थ—कृष्णमोदिका।

रचना-काल—१७४१।

नाम—(५२०) अनाथदास वैष्णव।

ग्रन्थ—(१) विचारमाला, (२) रामरत्नावली।

जन्मसंवत्—१७१६।

रचना-काल—१७४२।

विवरण—साधारण श्रेणी। दादूपंथी।

नाम—(५२१) देवीदास बुँदेलखंडी।

ग्रन्थ—(१) प्रेमरत्नाकर, (२) राजनीति, (३) दामोदरलीला।

रचना-काल—१७४२।

विवरण—राजा रतनपालसिंह करौली नरेश के यहाँ साधारण श्रेणी के कवि थे। नीति-संबन्धी कविता इनकी उत्तम है।

नाम—(५२२) भगवानदासजी।

ग्रन्थ—नल राजा की कथा।

जन्म-काल—१७१५।

रचना-काल—१७४२।

नाम—(५२३) रतनपाल भैया।

ग्रन्थ—(१) (नीति-सम्बन्धी) दोहे, (२) रामरत्नाकर, (३) प्रेम-रत्नाकर।

रचना-काल—१७४२।

विवरण—हीन श्रेणी। करौली-नरेश के यहाँ थे।

नाम—(५२४) गंगाराम।

ग्रन्थ—सभाभूषण पृष्ठ ३४।

रचना-काल—१७४४।

विवरण—राग रागिनियाँ। राजा रामसिंह के दरबार में थे।

नाम—(५२५) नन्दराम।

ग्रन्थ—नन्दराम पच्चीसी।

रचना-काल—१७४४।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(५२६) इन्दजी त्रिपाठी घनपुरा चतरवेद।

जन्मकाल—१७१९।

रचना-काल—१७४२।

विवरण—ये औरंगजेब के नौकर थे। इनकी रचना उत्तम और पद्माकर के ढंग की है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

नाम—(५२७) जनार्दन।

जन्म-काल—१७१८।

रचना-काल—१७४५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५२८) रतनजी भट्ट तैलंग ब्राह्मण नरवर।

ग्रन्थ—(१) रतनसागर, (२) सामुद्रिक, (३) गणेशस्तोत्र।

रचना-काल—१७४५।

विवरण—नरवर निवासी। पिता का नाम कृष्ण भट्ट। गुरु का नाम मोहनलाल।

नाम—(५२६) चारणदास।

ग्रन्थ—(१) नेहप्रकाशिका (१७४१), (२) बिहारी सतसई की टीका।

रचनाकाल—१७४२।

नाम—(५३०) दीपचन्द।

ग्रन्थ—(१) परमात्मापुराण, (२) चिद्विलास, (३) ज्ञानदर्पण (१७५०)।

रचनाकाल—१७५०।

नाम—(५३१) बलिरामजी।

ग्रन्थ—स्फुट पद।

रचनाकाल—१७५० के लगभग।

नाम—(५३२) श्रीनिवास।

ग्रन्थ—(१) रससागर, (२) सद्गुरुमहिमा (१६६ पद), (३) माधुरीप्रकाश (६२ पद)।

रचना काल—१७५०।

विवरण—छत्रपूर में देखे। साधारण थे यी। निम्बार्क सम्प्रदाय के।

तेईसवाँ अध्याय।

आदिम देव-काल (१७४१ से १७७० तक)।

(५३३) महाकवि देवजी।

देवदत्त उपनाम देव कवि इटावा के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म सँवत् १७३० में हुआ था। संवत् १८०२ में इनका देहान्त होना अनुमान-सिद्ध है। ये केवल १६ वर्ष की बाल्यावस्था से उत्कृष्ट कविता करने लगे थे। इनको कभी कोई उदार आश्रयदाता नहीं मिला और इसी के खोज में अथवा अन्य किसी कारण से ये प्रायः समस्त भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में घूमे। इस का प्रभाव इन की कविता पर बहुत ही अच्छा पड़ा और प्रत्येक स्थान के निवासियों का इन्होंने सच्चा वर्णन किया। अपने समस्त आश्रयदाताओं में भोगीलाल का हाल इन्हों ने सब से विशेष श्रद्धायुक्त लिखा। कोई कोई इन्हें ५२ ग्रन्थों का और कोई ७२ ग्रन्थों का रचयिता मानते हैं। हमको इनके निम्न लिखित २७ ग्रन्थों के नाम मालूम हुए हैं, जिनमें प्रथम १५ ग्रन्थ हम ने देखे भी हैं:—

(१) भावविलास, (२) अष्टयाम, (३) भवानीविलास, (४) सुन्दरीसिन्दूर, (५) सुजानविनोद, (६) प्रेमतरङ्ग, (७) रागरत्नाकर, (८) कुशलविलास, (९) देवचरित्र, (१०) प्रेमचन्द्रिका, (११) जातिविलास, (१२) रसविलास, (१३) काव्यरसायन या शब्दरसायन, (१४) सुखसागरतरङ्ग, (१५) देवमायाप्रपचनाटक, (१६) वृक्षविलास, (१७) पावसविलास, (१८)

प्रह्मदर्शनपचीसी, (१९) तत्त्वदर्शनपचीसी, (२०) आत्मदर्शनपचीसी, (२१) जगदर्शनपचीसी, (२२) रसानन्दलहरी, (२३) प्रेमदीपिका, (२४) सुमिलविनोद, (२५) राधिकाविलास, (२६) नीतिशतक और (२७) नखशिखप्रेमदर्शन।

सुखसागरतरङ्ग में नायिकाभेद का विस्तारपूर्वक वर्णन है और काव्यरसायन एक उत्तम रीति-ग्रन्थ है, जिसमें प्रधानतया पदार्थनिर्णय, रस, पात्रविचार, अलंकार और पिंगल के वर्णन हे। देवमायाप्रपंच नाटक कोई नाटक नहीं है, परन्तु कुछ कुछ नाटक की भाँति लिखा गया है। रसविलास और जातिविलास में जातियों का वर्णन प्रधान है और यह बहुत ही उत्तम ग्रन्थ हैं। प्रेमचंद्रिका में प्रेम का एक अनूठे प्रकार से वर्णन किया गया है और वह सर्वतोभावेन प्रशंसनीय है। देवचरित्र में कृष्णचन्द्रजी की कथा कंस-वध पर्यन्त कुछ विस्तार से और उसके पीछे नितांत सूक्ष्मरूप से कही गई है। सुन्दरीसिन्दूर एक संग्रह मात्र है जो भारतेंदुजी ने देव की कविता से एकत्रित किया था। रागरत्नाकर में राग-रागिनियों का अच्छा बयान है। अष्टयाममें दिन के प्रत्येक पहर और घड़ी पर, कविता की गई है। भावविलास, भवानीविलास, सुजानविनोद, प्रेमतरङ्ग, कुशलविलास आदि भी अच्छे रीति-ग्रन्थ हैं।

देवजी की कविता में उत्तम छन्द बहुत अधिकतासे पाये जाते हैं। इनकी भाषा शुद्ध व्रजभाषा है और वह भाषा-सम्बधी प्राय सभी आभूषणों से सुसज्जित है। इन्हीं ने तुकांत भी बडेही मनोहर रक्खे हैं, बड़े बड़े विशेषणों एवम् लोकोक्तियों की अपनी कविता में अच्छी छटा दिखलाई है और क्रमसें भी खूब खिलाई हैं। नायिकाओं

के वर्णनों में इन्हों ने स्थान स्थान पर तसवीरें सी खींच दी हैं। देवजी ने ऊँचे ख़यालात भी ख़ूब बाँधे हैं और अमीरी ठाठ सामान का वर्णन इन के बराबर कोई भी नहीं कर सका है। इन्हों ने उपमायें बहुतही विलक्षण दी हैं और इनके रूपक बहुत अच्छे बने हैं। तुलसीदास, सूरदास और देव, इन तीन कवियों को हम बराबर समझते हैं और ये तीनों महाशय शेष भाषा-कवियों से कहीं बढ़े चढ़े हैं। इनका विशेष वृत्तान्त हमारे रचित और ग्रन्थप्रकाशक मंडली प्रयाग द्वारा प्रकाशित नवरत्न में मिलेगा।

उदाहरण।

उज्जल अखंड खंड सातयें महल महा
मंदिर सँवारो चन्द मंडल के चोटहीं।
भीतर हू लालन की जालन बिसाल जोति
बाहर जुन्हाई जगी जोतिन के जोट हीं॥
बरनत बानी चौर ढारत भवानी कर
जोरे रमा रानी राजैं रमन के चोटहीं।
देव दिगपालन की देवी सुखदायनि ते
राधे ठकुरायनि के पायन पलोटहीं॥
केतकी के हेत कीन्हें कौतुक कितेक तुम
भींजि परिमल मैं गये हो गड़ि गात ही।
मिले मल्लि बल्लिन लवंगन सों हिले दुरि
दाड़िमन पिले पुनि पांडर के घात ही॥
कीन्ही रस केली सांझ चूमत चमेली सांझ
देव सेवतीन मांझ भूले भमरात ही।

सग ले कुमोदिनि विनोद मान्यो चहूँ कोद
छपद छिपे हैं पदुमिनि में प्रभात ही ॥

अनुराग के रंगनि रूप तरंगनि अगनि ओप मनो उफनो।
कवि देव हिये सियरानी सबै सियरानी को देखि सोहाग सनो ॥
बर धामन बाम चढ़ी बरसें मुसुकानि सुधा घनसार घनो।
सखियान के आनन इन्दुन तैं अँखियान की बन्दनबार तनो ॥

छपद छबीले रस पीवत सदीव छीव
लम्पट निपट नेह कपट दुरे परत।
भंग भये मध्य मग डुलत खुलत सांस
मृदुल चरन चारु धरनि धरे परत ॥
देव मधुकर टूक टूकत मधूक धोखे
माधवी मधुर मधु लालच लरे परत।
दुहु कर जैसे जलरुह परसत इहाँ
मुँहु पर भाईं परे पुहुप झरे परत ॥

काल्हि ही साझ उड्यो कर माझ ते देव खरो तब ते चित शाल्यो।
एक भली भई बाग तिहारेई श्रीफल औ कदली चढ़ि हाल्यो ॥
बचक बिम्बन चंचु सुभावत कुंज के पिंजर में गहि घाल्यो।
हौं सुक हू नहिं राखि सकी सुकहू सुन्यो तेहौं परोसिनि पाल्यो
देव पुरैनि के पात निचान ते हैं बिबि चक्र सिचान गहेरी।
चंगुल चीनल में परि कै करसायल घायल ह्वै निबहेरी ॥
भौंजि कै मंजु दली कदली लरि केहरि कुंजर लुंज लहेरी।
हेरि सिकार रहेरी कहूँ ब्रजराज अहेरी ह्वै आजु अहेरी ॥

नाहिंनै नन्द को मंदिर ह्यां वृषभानु को भौन कहा जकती हो।
हौंही अकेली तुही पयिदेव जू घू घट कै बिन को तकती हो॥
भेंटती मोहिँ भटू केहि कारन कौन की धों छबि सों छकती हौ।
काए भयो है कहा कहौ कैसी हौ कान्ह कहां हैं कहा बकती हौ॥
अन्तर पैठि दुवौ पट के कवि देव निरन्तर ता उर आनै।
देति मिलाय घने अपने गुन चारु सुई विधौ दूती सुजानै॥
ताहि लिये कर मैं करमी हिय जासु सियैं मरमी सो बखानै।
कीन्ही करेजन की दरजैं दरजी की बहू बरजी नहिँ मानै॥
मूढ़ कहैं मरि कै फिरि पाइये ह्यां जु लुटाइये भौन भरे को।
ते खल खोय खिस्यात खरे अवतार सुन्यो कहुँ छार परे को॥
जीवत तौ व्रत नेम सुचीत सरीर महा सुर रूख हरे को।
ऐसो असाधु असाधुन की मति साधन देत सराध मरे को॥
आवत आयु को दौस अथौत गये रवि ज्यों अँधियारिये ऐहै।
दाम खरे दै खरीद करौ गुर मोह की गोनी न फेरि बिकैहै॥
देव छितीस की छाप बिना जमराज जगाती महा दुख दैहै।
जात उठी पुर देह की पैठ अरे बनिये बनिये नहिँ रैहै॥

मोहि तुम्हैं अन्तर गुनैं न गुरु जन
तुम मेरे हौ तिहारी पै तऊ न पियलत हौ।
पूरि रहे या तन मैं मन मैं न आवत हौ
पंच पूछि देखे कहूँ काहू न हिलत हौ॥
ऊँचे चढ़ि रोई कोई देत न देखाई
देव गातन की ओट बैठे बातन गिलत हौ।

वैसे निरमोही महा मोही में बसत
अरु मोही ते निकसि फिरि मोही न मिलत है॥

(५३४) छत्रसिंह कायस्थ।

इन्होंने संवत् १७५७ में विजयमुक्तावली नामक ग्रन्थ अनेक छन्दों में बनाया। ये महाशय अंटेर गाँव के रहने वाले श्रीवास्तव कायस्थ थे। अंटेर ग्वालियर के भदावर नामक देश में है। छत्र ने लिखा है कि बटेश्वर क्षेत्र वहाँ से निकट है। इनके आश्रयदाता कल्याणसिंह अमरावती में रहते थे।

विजयमुक्तावली में महाभारत की कथा सूक्ष्मतया वर्णित है, परन्तु इस कवि ने बहुत स्थानों पर संस्कृत की कथा से भिन्न अपनी कथा कही और कौरव दल के योद्धाओं का महत्त्व कई अंशों में बहुत घटा कर कहा। कथा वर्णन करने वाले कवियों में इनका पद अच्छा है। इन्हों ने केशवदास की परिपाटी का अनुसरण किया और प्रायः रायल अठपेजी के दो सौ पृष्ठों के ग्रन्थ को एक रस निर्वाह कर दिया। इनकी भाषा में मुख्यांश ब्रज भाषा का है, जो साधारणतया अच्छी है। इन्होंने बहुत स्थानों पर भद्द काव्य किया है और इनका ग्रन्थ बहुत रोचक है। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

कैटभ मधु मुर हरन धरन नख अग्र शैल बर।
हिरनाकुश हिरनाक्ष हरन प्रभु रदन धरनि धर॥
संखासुर संहरन हरन हरि अंध कबंधहि।
खरदूखन वपु भंजि गंजि भंजन दसकंधहि॥

गजराज काज प्रह्लाद ध्रुव दया सिन्धु असरन सरन।
प्रभु नमो नमो कवि छत्र कहि नारायण जग उद्धरन॥
निरखतही अभिमन्यु को विदुर डुलायो शीस।
रच्छा बालक की करौ है कृपाल जगदीस॥
आपुन कांधो युद्ध नहिं धनुष दियो भुव डारि।
पापी बैठे गेह कत पांडु पुत्र तुम चारि॥
पौरुष तजि लज्जा तजी तजी सकल कुलकानि।
बालक रनहिं पठाय कै आपु रहे सुख मानि॥
दीरघ तनु दीरघ भुजा दीरघ पौरुष पाय।
कातर ह्वै बैठे सदन बहु बलवन्त कहाय॥
कवच कुंडल इन्द्र लाने बाण कुन्ती लै गई।
भई बैरिनि मेदिनी चित कर्ण के चिन्ता भई॥
ब्रज रच्छन भच्छन अनल पच्छन गोधन ग्वाल।
भुज वर कर वर सुभुज पर गिरि वर धरन गोपाल॥

नाम—(५३५) अनन्यअली।

रचना—अनन्य अली का काव्य।

समय—१७५९।

विवरण—इनके रचित छोटे छोटे अष्टक तथा लीला आदि के लगभग १०० ग्रन्थ हैं, जिनके नाम अलग अलग विस्तार-भय से नहीं लिखे गये। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है।

कुल ९८४ पृष्ठों में इनकी रचना है।

नाम—(५३६) लोकनाथ चौबे बूँदी।

ग्रन्थ—(१) रसतरंग, (२) हरिवंश चौरासी का भाष्य।

समय—१७६०।

विवरण—ये महाशय दरबार बूँदी में राव राजा बुद्धसिंह जी के आश्रित थे, और इन्हों ने उन्हीं के नाम से यह ग्रन्थ बनाया। एक बार राव राजा काबुल जाते थे। उस समय कवि जी को भी साथ चलने का हुक्म हुआ। तब इनकी स्त्री ने जो कवि थीं इनके पास एक छन्द लिख भेजा, जिसे राव राजा को दिखा कर इन्हों ने वहाँ जाने से छुट्टी पाई। इनका काव्य साधारण श्रेणी का है। उदाहरण लीजिए :—

भूषण निवाज्यो जैसे सिवा महराज जू ने
　　वारन दै बावन धरा पै जस छाव है।
दिल्लीसाह दिलिप भए हैं खानखाना जिन
　　गंग से गुनी को लाखै मौज मन भाव है॥
अंब कविराजन पै सकल समस्या हेत
　　हाथी घोड़ा तोड़ा दै बढ़ायो बहु नाव है।
बुद्धजू दिवान लोकनाथ कविराज कहे
　　दियो इक लोरा पुनि धौलपुर गाँव है॥

नाम—(५३७) कविरानी चौबे लोकनाथ की स्त्री बूँदी।

रचना—स्फुट।

समय—१७६०।

विवरण—इनके पति राव राजा बुद्धसिंह के साथ काबुल जाने वाले थे, तब इन्होंने निम्न छन्द उनके पास लिख भेजा था, जिस पर राव राजा ने उनका काबुल जाना बन्द कर दिया। इनका काव्य साधारण श्रेणी का है।

मैंतो यह जानो ही कि लोकनाथ पाय पति
संगही रहौंगी अरधंग जैसे गिरजा।
एते पै विलच्छन ह्वै उत्तर गमन कीन्हो
कैसे कै मिटत जो वियोग विधि सिरजा॥
अब तौ जरूर तुमें अरज किए ही बनै
वेऊ दुज जानि फरमायहैं कि फिर जा।
जो पै तुम स्वामी आजु कटक उलंघि जैहो
पाती माहिँ कैसे लिखूँ मिश्र मीर मिरजा॥

नाम—(५३८) पृथीसिंह दीवान (रसनिधि)।

ग्रन्थ—रतनहजारा (२८०० दोहे देखे), पद व स्फुट कविता।

समय—१७६०।

विवरण—ये दतिया राज्य के अन्तर्गत जागीरदार थे। इनकी कविता प्रशंसनीय है। इनकी गणना पद्माकर की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण।

रसनिधि मोहन दरस को नैन खरे पल पौरि।
कहा करैं बिन पगन ए आगे सकें न दौरि॥

ज्यौं बिधि मोहन दरस की दीनो चाह बढ़ाय।
त्यौं इन लोभी दृगन के दिए न पंख लगाय॥
धरत जहाँ नँद लाडिलो चरन कमल सुख पुंज।
गोपिन के दृग भँवर ह्वै करत फिरत तहँ गुंज॥
रसनिधि आवत जानि कै मन मोहन महबूब।
उमगि दीठि बरुनीन की दृगनि बँधाई दूब॥

इनके ग्रन्थ ये हैं:—(१) विष्णु पद और कीर्त्तन, (२) कवित्त, (३) बारहमासी, (४) गीतसंग्रह, (५) स्फुट दोहा, (६) रसनिधि की कविता, (७) रसनिधि की कविता, (८) रसनिधि के दोहे, (९) विष्णु पद, (१०) अरिल्ल, (११) कवित्त, (१२) हिंडोरा, (१३) दोहा, (१४) रसनिधिसागर।

(५३९) बैताल बन्दीजन।

ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने इनका जन्म-काल संवत् १७३४ माना है और यह भी लिखा है कि ये महाशय विक्रम शाह के दरबार में थे। यह कथन यथार्थ भी है, क्योंकि इन्हों ने अपने सब छन्द विक्रम को सम्बोधन करके कहे हैं। इनके किसी ग्रन्थ का नाम हमें ज्ञात नहीं है, परन्तु स्फुट छप्पय बहुत मिले हैं। बैताल कवि ने शृंगार रस पर एक भी छन्द न बना कर विविध विषयों पर रचना की है। इन्होंने अधिकतर नीति, कहीं कहीं पहेली और कहीं मर्दुमी, चुप, एवं ऐसेही ऐसे अन्य विषयों पर कविता की। एक स्थान पर इन्होंने यह भी कहा कि अब तो ऐसा बुरा समय आया कि मोची, मल्लाह, भड़भूजे, धोबी, नाई आदि सभी कोई कवित्त पढ़ने लगे। इनके

विचार में नीच मानी हुई जातियों के मनुष्यों को कवित्त पढ़ने क सौभाग्य प्राप्त न होना चाहिए था।

इनकी कविता में अवध ग्रैार ब्रज की भाषाओं का मिश्रण है। आपकी भाषा गिरधर राय के देखते बहुत परिपक्व है, वरन् यों कहना चाहिए कि यह अच्छी है, केवल एकाध स्थान पर उसमें ग्राम्य भाषा मिल गई है।

इनकी कविता में अद्वितीय उद्‌दंडता एक अनुपम गुण है। भाषा-साहित्य में किसी भी भले या बुरे कवि में इतनी उद्‌दंडता नहीं पाई जाती। भाषा में बहुत से कवियों में उद्‌दंडता अधिकता से है, परन्तु उसकी मात्रा सबसे अधिक इसी कवि में है। गिरधरराय की भाँति इन्होंने भी नीति ग्रैार अन्योक्ति का प्राधान्य रक्खा है। इसने भी गिरधर राय के समान रोज की काम-काज-सम्बन्धिनी सर्वप्रिय बातों पर कविता की है। जितने गुण गिरधर राय में हैं प्रायः वे सब इनमें भी वर्तमान हैं, परन्तु उन में से अधिक बातों में इनका पद उनसे बढ़ा हुआ है। इनकी भी कविता सर्वप्रिय एवं प्रशंसा-पात्र है। इसके समान सीधे सादे यथार्थ वर्णन करने में बहुत कम कवि जन समर्थ हुए हैं। इनको भी हम पद्माकर की श्रेणी में समझते हैं। इनकी कविता दुष्प्राप्य होने के कारण हम इनके सात छन्द नीचे लिखते हैं।

> जीभि जाग अरु भोग जीभि बहु रोग बढ़ावै।
> जीभि करै उद्योग जीभि लै कैद करावै॥
> जीभि स्वर्ग लै जाय जीभि सब नरक देखावै।
> जीभि मिलावै राम जीभि सब देह धरावै॥

निज जीभि ओंठ एकत्र करि बाँट सहारे तोलिए ।
वेताल कहैं विक्रम सुनो जीभि सँभारे बोलिए ॥ १ ॥

[illegible] कुल हूल टका मिरदंग बजावै ।
चढ़ै सुखपाल टका सिर छत्र धरावै ॥
[illegible] माय अरु बाप टका भाइन को भैया ।
टका सासु अरु ससुर टका सिर लाड़ लड़ैया ॥
अब एक टके बिनु टकटका होत रहत नित राति दिन ।
वेताल कहे विक्रम सुनो धिक जीवन जग टके बिन ॥ २ ॥

मरै बैल गरियार मरै वह अड़ियल टट्टू ।
मरै करकसा नारि मरै वह खसम निखट्टू ॥
बाँभन सो मरि जाय हाथ ले मदिरा प्यावै ।
पूत वही मरिजाय जु कुल में दाग लगावै ॥
अरु बे नियाउ राजा मरै तबै नींद भरि सोइए ।
वेताल कहे विक्रम सुनो एते मरे न रोइए ॥ ३ ॥

राजा चंचल होय मुलुक को सर करि लावे ।
पंडित चंचल होय सभा उत्तर दै आवे ॥
हाथी चंचल होय समर में सूँडि उठावे ।
घोडा चंचल होय झपटि मैदान दिखावे ॥
हैं ये चारो चंचल भले राजा, पंडित, गज, तुरी ।
वेताल कहै विक्रम सुनो तिरिया चंचल अति बुरी ॥ ४ ॥

दया चट है गई धरम धँसि गयो धरन में ।
पुन्य गयो पाताल पाप भो बरन [illegible] में ॥

राजा करै न न्याउ प्रजा की होत खुवारी।
घर घर मे बेपीर दुखित भे सब नर नारी॥
अब उलटि दान गजपति मँगै सील सँतोष किते गयो।
बैताल कहै विक्रम सुनो यह कलजुग परगट भयो॥ ५॥
मर्द सीस पर नवै मर्द बोली पहिँचानै।
मर्द खिलावै खाय मर्द चिंता नहिँ मानै॥
मर्द देय औ लेय मर्द को मर्द बचावै।
गाढे सँकरे काम मर्द के मर्दै आवै॥
पुनि मर्द उनहिँ को जानिए दुख सुख साथी दर्द के।
बैताल कहै विक्रम सुनौ ए लच्छन हैं मर्द के॥ ६॥
चोर चुप्प ह्वै रहै रैनि अँधियारी पाए।
संत चुप्प ह्वै रहे मढी मैं ध्यान लगाए॥
बधिक चुप्प ह्वै रहै फांसि पछी ले आवे।
छैल चुप्प ह्वै रहै सेज पर तिरिया पावै॥
बर पिपर पात हस्ती श्रवन कोइ कोइ कवि कुछु कुछु कहैं।
बैताल कहै विक्रम सुनो चतुर चुप्प कैसे रहैं॥ ७॥

(५४०) रूप रसिक अनन्य समदाय के थे। इनका कविता काल जाँच से १७६० स० क लगभग जान पडा है। इनका रचा हुआ 'व्यासदेव जसामृत सागर' नामक ६२ मँझोले पृष्ठों का ग्रन्थ हमने छत्रपूर में देखा है। इनकी कविता अच्छी होती थी इन्हें साधारण श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण।

श्रीमत हरि व्यासदेव जस अमृत सागर लहरी।
जीभि [illegible] नेहर महा अरथ की गहरी॥

या लहरी दूजी सुखदाई लागति महा सुहाई ।
रूप रसिक गाई छवि छाई निज पूरनता पाई ॥
वृन्दाबन जमुना तीर रम्य । हरि व्यास सरन विन सो अगम्य ॥
तहँ नव निकुंज महँ मन सुरंज ।
बह त्रिबिधि पौन अलि पुंज गुंज ॥
खोज में इनकी 'वृन्दावन माधुरी' का भी पता चला है ।

नाम—(५४१) रामप्रिया शरण सीताराम मिथिला वासी ।
समय—१७६० ।
विवरण—प्राय. ४०० पृष्ठों में सीताजी की कथा वर्णित है । मधुसूदनदास श्रेणी का काव्य है । यह पुस्तक हमें दरबार छतरपूर में देखने को मिली । समय जाँच से लिखा है ।

उदाहरण:—

पितु दरसन अभिलाष जुगुल कुँवरन मन आई ।
गुरु सनमुख कर जोरि भाँति बहु विनय सुहाई ॥
पुलके गुरु लखि सील राम को अति सुख पाए ।
ताहि समे सब सखा सग लछिमी निधि आए ॥

(५४२) जानकीरसिक शरणजी ने 'अवध सागर' नामक एक भारी ग्रन्थ राम यश गान में बनाया, जिसमें १४ अध्याय और ९१९ छन्द हैं । इसमें अष्टयाम विस्तृत रूप से है और बन-विलास, जलकेलि, रास, सभा, भोजन, शयन आदि के सविस्तर वर्णन अच्छे हैं । यह ग्रन्थ छतरपूर में है । इनका कविता काल जाँच से स० १७६० जान पड़ा ।

उदाहरण।

रथ पर राजत रघुबर राम।
क्रीट मुकुट सिर धनुष बान कर सोभा कोटिन काम॥
स्याम गात केसरिया बानो सिर पर मौर ललाम।
वैजन्ती बन माल लसै उर पदिक मध्य अभिराम॥
मुख मयंक सरसीरुह लोचन हैं सब के सुख धाम।
कुटिल अलक अतरन मैं भीनी दुहुँ दिसि छूटी स्याम॥
कम्बु कंठ मोतिन की माला किंकिनि कटि दुति दाम।
रस माला यह रूप रसिक बर करहु हिये अभिराम॥

झुकी लता द्रुम डार भूमि परसत सुख गामी।
मनहु भये द्रुम लता इहाँ के तीरथ वासी॥
उड़ि उड़ि परति बिहार थली की अँग रज तिन के।
लगे सुभग फल गुच्छ नवल दल पर हित जिन के॥

इनकी कविता परमोत्तम है। हम इनको तोष की श्रेणी में समझते हैं।

नाम—(५४३) सन्तन ब्राह्मण पाँडे जाजमऊ उन्नाव वाले।
उत्पत्ति-काल—१७२८।
कविता-काल—१७६०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

इनका बनाया हुआ एक छन्द यहाँ उद्धृत किया जाता है।

वै धन देत लुटाय भिखारिन यै परिपूरन दानि गऊ के।
वै चितईं अँखिया जुग सों अरु यै चितईं अँखिया चकऊ के॥

वै उपमन्यु दुवे जग जाहिर पाँडे वनस्थी के यै मधऊ के।
वै कवि सन्तन हैं बेंदुकी हम हैं कवि सन्तन जाजमऊ के॥

नाम—(५४४) सतनदुवे बेंदुकी।

उत्पत्ति काल—१७३०।

कविता-काल—१७६०।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि थे। संतन जाजमऊ वाले ने इनका वर्णन अपने उपरोक्त कवित्त में किया है।

(५४५) मोहन भट्ट।

ये महाशय बांदानिवासी कवि पद्माकर के पिता थे। इन का हाल पद्माकर वाले लेख में मिलेगा। इन्होंने भी उत्कृष्ट कविता की श्रोर अनुप्रास का समादर अच्छा किया। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

दावि दल दक्खिन सु सिक्खन समेत
दीन्हे लीन्हे वेगि पकरि दिलीस दहलनि में।
रूम रुहिलान खुरासान हबसान तचे तुरुक
तमाम ताके तेज तहलनि में॥
मोहन भनत यों बिलाइति नरेश ताहि सेर
रतनेस घेरि ल्यायो सहलनि में।
जेहिं अँगरेज रेज कीन्हें नृप जाल तेहिं हाल
करि स्ववस मचायो महलनि में॥

इन का कविता-काल १७६० के आस पास था।

(५४६) आलम।

ये महाशय संवत् १७६० के लगभग थे। शिवसिंहजी ने इन का बनाया हुआ औरंगज़ेब के द्वितीय पुत्र मुवज़्ज़म की प्रशंसा का एक छन्द लिखा है। इससे विदित होता है कि ये महाशय औरंगज़ेब के समय में थे। मुवज़्ज़म जाजऊ की लड़ाई में संवत् १७६३ में मारे गये थे। आलम ब्राह्मण थे, परन्तु शेख़ कवि नामक रँगरेज़िन के प्रेम में फँस कर मुसल्मान हो गये और उसके साथ विवाह कर के सुखपूर्वक रहते रहे। इन के जहान नामक एक पुत्र भी था। इन के चरित्रों का कुछ वर्णन शेख़ के हाल में आवेगा।

इस कवि का हमने कोई ग्रन्थ नहीं देखा, परन्तु प्रायः ३० स्फुट छन्द हमारे देखने में आये हैं। मुंशी देवीप्रसादजी ने लिखा है कि उनके पास आलम और शेख़ के क़रीब ५०० छन्द हैं। इन के छन्द देखने से हमें जान पड़ता है कि इन्हों ने नखशिख का भी कोई ग्रन्थ लिखा होगा। आलम एक स्वाभाविक कवि था और इसकी कविता बड़ी मनोहर है। खोज में आलमकेलि, आलम की कविता तथा माधवानल काम कंदला नामक इनके ग्रन्थ भी मिले हैं। कविता में यह कवि बड़ा कुशल है और इस कौशल का कारण भी इस का अविचल इश्क़ है। जान पड़ता है कि शेख़ इन्हीं के सामने मर गई थी, क्योंकि उसके विरह में इन्हों ने एक बड़ाही टकसाली छन्द कहा है। इस छन्द के रचयिता होने से भाषासाहित्य के किसी भी कवि को अभिमान हो सकता था। इन की भाषा अत्युत्तम और भाव गंभीर हैं। हम इन की गणना पद्माकर कवि की श्रेणी में करते हैं।

कैधौं मोर सोर तजि गयेरी अनत भाजि
　　कैधौं उत दादुर न बोलत हैं ये दई ।
कैधौं पिक चातक महीप काहू मारि डारयो
　　कैधौं वक पाँति उत अन्त गति ह्वै गई ॥
आलम कहै हो आली अजहूँ न आये मेरे
　　कैधौं उत रीति विपरीति विधि ने ठई ।
मदन महीप की दोहाई फिरिवे ते रही
　　जूझि गये मेघ कैधौं बीजुरी सती भई ॥

जाथर कीन्हें विहार अनेकन ताथर कांकरी बैठि चुन्यो करैं ।
जा रसना सों करी बहु बातन ता रसना सों चरित्र गुन्यो करैं ॥
आलम जौन से कुंजन में करी केलि तहां अब सीस धुन्यो करैं ।
नैनन में जे सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं ॥

(५४७) शेख़ रँगरेज़िन ।

इनके माता पिता का कुछ हाल हमें नहीं मालूम है, केवल इतना ज्ञात है कि इनकी प्रीति आलम नामक एक ब्राह्मण कवि से हो गई थी । इन्हीं के इश्क में पड कर वे मुसल्मान हो गये और तब इन दोनों का विवाह भी हुआ । इन दोनों का साक्षात्कार भी विचित्र प्रकार से हुआ । कहते हैं कि आलम कवि ने एक बार इसे एक पगड़ी रँगने के दी, जिसके एक खूँट में भूल से एक काग़ज़ का टुकड़ा बँधा रह गया था । इसने खोल कर देखा तो उसमें लिखा पद लिखा पाया:—"कनक छरी सी कामिनी काहे के कटि छीन?" यह आधा दोहा आलम ने बनाया था, परन्तु शेष न बनने से फिर

विचार करने को पगड़ी में उसे बाँध दिया था। शेख़ कवि ने पगड़ी रँग कर और दोहा पूरा करके उसी प्रकार उसी खूँट में बाँध दिया। दोहा का पद यह थाः—

"कटि को कंचन काटि विधि कुचन मध्य धरि दीन।" आलमजी ने अपनी पगड़ी ले जा कर जब यह पद पढ़ा तो उसे रँगाई देने गये और उससे पूछा कि "इस दोहे को किसने पूरा किया?" उत्तर पाया कि "मैंने"। बस आलम ने एक आना पगड़ी की रँगाई और एक सहस्र मुद्रा दोहे की बनवाई शेख़ कवि को दिये। उसी दिन से इन दोनों में प्रेम हो गया और अन्त में आलम ने मुसल्मानी मत ग्रहण करके इसके साथ निकाह कर लिया। कहते हैं कि शेख़ ने अपने पुत्र का नाम जहान रक्खा था। एक बार आलम के आश्रयदाता शाहज़ादा मुअ़ज़्ज़म ने हँसी करने के विचार से शेख़ से पूछा, "क्या आलम की औरत आप ही हैं?" इस पर उसने तुरन्त उत्तर दिया, "हाँ जहाँपनाह! जहान की माँ मैंहीं हूँ।" मुन्शी देवीप्रसाद जी ने उपर्युक्त दोहे के स्थान पर एक कवित्त के तीन पद लिखे हैं और शेख़ द्वारा उसके चौथे पद का बनना लिखा है। वह कवित्त यह हैः—

✓ प्रेम,रँग पगे जग मगे जगे जामिनि के
जोबन की जोति जगि जोर उमगत हैं।
मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं
झूमत हैं झुकि झुकि झँपि उघरत हैं॥
आलम सो नवल निकाई इन नैनन की
पाँखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं।

चाहत हैं उड़िबे को देखत मयङ्क मुख
जानत हैं रैनि ताते ताहि में रहत हैं ॥

मुन्शी देवीप्रसादजी शेख़ का अकबर के समय में होना लिखते हैं, परन्तु ठाकुर शिवसिंहजी ने इनके पति आलम का शाहज़ादा मुअज़्ज़म के यहाँ होना कहा है। ये बादशाह औरङ्गज़ेब के द्वितीय पुत्र थे और संवत् १७६३ में जाजऊ की लड़ाई में मारे गये थे, जिसके पीछे इनके बड़े भाई बादशाह हुए। इसके प्रमाण में उन्होंने आलमकृत एक छन्द लिखा है, जिसमें मुअज़्ज़मशाह का यश वर्णित है। उन्होंने यह भी लिखा है कि शेख़ के छन्द कालिदासकृत हज़ारा में मिलते हैं। इस हज़ारा में संवत् १७७५ तक के कवियों के छन्द संग्रहीत हैं, अतः यह निश्चय है कि आलम और शेख़ उस समय या उससे पहले अवश्य थे। मुअज़्ज़म का भी समय हज़ारा के प्रतिकूल नहीं पड़ता है। हम शिवसिंहजी के समय को प्रामाणिक समझते हैं।

शेख़ कवि के छन्द परम मनोहर होते थे। मुन्शी देवीप्रसादजी ने लिखा है कि शेख़ और आलम के पांच सौ छन्द उनके पास संग्रहीत हैं। हमने इनका कोई ग्रन्थ नहीं देखा, परन्तु स्फुट छन्द संग्रहों में बहुत पाये हैं। इनकी भाषा व्रज भाषा है। इनकी कविता से इनके प्रेमी होने का प्रमाण मिलता है। यह महिला वास्तव में एक सुकवि थी। इसकी गणना हम तोष कवि की श्रेणी में करते हैं। उदाहरणार्थ इनका केवल एक छन्द यहाँ लिखते हैं।

रति रन विषे जे रहे हैं पति मनमुख
तिन्हैं बकसीस बकसी है मैं बिहँसि कै।
करन को कंकन उरोजन को चन्द्रहार
कटि माहिँ किंकिनी रही है अति लसि कै॥
सेष कही आनन को आदरसों दीन्हों पान
नैनन मैं काजर बिराजै मन घसि कै।
एरे बैरी बार ये रहे हैं पीठि पाछे
ताते बार बार बाँधति हौं बार बार कसि कै॥

(५४८) गुरु गोविन्दसिंह।

ये महाराय सिक्खों के अन्तिम दसवें गुरु थे। इनका जन्म संवत् १७२३ में हुआ था और स्वर्गवास १७६५ में। ये महाराज गुरु होने के अतिरिक्त प्रचण्ड युद्धकर्त्ता भी थे। इन्होंने सिक्खों में जातीयता का बीज बोया। ये महाराय सुहावनी कविता भी करते थे और कविता की दृष्टि से भी साधारण श्रेणी में स्थान पा सकते हैं। जो लाभ इनसे पञ्जाब को पहुँचा उस पर ध्यान देने से ये महाराय किसी भी श्रेणी में रक्खे जा सकते हैं। इनका कविताकाल संवत् १७६१ समझना चाहिए। इन्होंने सुनीतिप्रकाश, सर्वलोहप्रकाश, प्रेमसुमार्ग, बुद्धिसागर, और चण्डीचरित्र नामक ग्रन्थ लिखे और सिक्ख ग्रन्थ का भी कुछ भाग बनाया।

उदाहरण।

आदि अपार अलेस अनन्त
अकाल अभेष अलेख्य अनासा।

के शिव शक्ति दये स्तुति चारि
रजोतम सत्त जिहँद पुरवासा॥
व्योम लिला ससि सूर के दीपक
सृष्टि रची पचि तत्त प्रकासा।
वैर बढ़ाइ लराइ सुरासुर
आपहि देखत आप तमासा॥

(५४६) चन्द व पठान सुल्तान।

ये महाशय राजगढ़ भूपाल के नवाब थे। कविता के ये परम प्रेमी संवत् १७९१ के इधर उधर हो गये हैं। इनके नाम पर चन्द कवि ने विहारी सतसई के दोहों पर कुण्डलियायें लगाईं। चन्द ने ये कुण्डलियाँ आदरणीय कही हैं। इनकी अन्य रचनायें भी परम मनोहर हैं। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण।

ा मोरि नचाय दृग करी कका की सैाहँ।
कसकति हिये गड़ी कटीली भैाहँ॥
ली भैाहँ केस निरवारति प्यारी।
ा चितवनि चितै मनो उर हनति कटारी॥
कहि पठान सुलतान विकल चित देखि तमासा।
याको सहज सुभाव और को बुधि बल नासा॥

खोज में एक चन्द द्वारा 'महाभारत भाषा' का
लिखा है पर उनका समय नहीं दिया है। जान पड़ता है
चन्द ने महाभारत भाषा बनाई। शिवसिंहसरोज में है

लिखे हैं, पर उनका कोई समय नहीं लिखा है और न उनके छन्दों ही से जान पड़ता है कि ये लोग इस ग्रन्थ से पृथक् हैं। हमारे विचार में इस एक ही महाशय का नाम सरोज में तीन जगहों पर लिखा है।

(५५०) उदयनाथ उपनाम कवीन्द्र।

ये महाशय बनपुरा निवासी कान्यकुब्ज तेवारी महाकवि कालिदास के पुत्र और दूलह के पिता थे। दूलह और राजा गुरुदत्त सिंह जी के वर्णन में इनका कुछ हाल मिलेगा। सरोज में इनके विषय में यह लिखा है कि ये अमेठी के राजा हिम्मतसिंह और तत्पुत्र राजा गुरुदत्तसिंह के यहाँ रहे। राजा हिम्मतसिंह ने ही इन्हें रसचन्द्रोदय नामक ग्रन्थ बनाने पर कवीन्द्र की उपाधि दी। इस ग्रन्थ में भी इन्हों ने अपने नाम उदैनाथ और कवीन्द्र दोनों लिखे हैं, जिससे जान पड़ता है कि ये महाशय यह ग्रन्थ आरम्भ करने के समय में ही कवीन्द्र की उपाधि पा गये थे। सरोज में लिखा है कि इसी एक ग्रन्थ के रतिविनोदचन्द्रिका, रतिविनोदचन्द्रोदय, रसचन्द्रिका और रसचन्द्रोदय, नाम हैं। खोज में जगलीला नामक इन के एक और ग्रन्थ का नाम लिखा है। यहाँ के पीछे ये महाशय भगवन्त राय खीची एवं बूँदी के राव राजा बुद्धसिंह के यहाँ भी गये और इन्हों ने अच्छा सम्मान पाया। शिवजी ने लिखा है कि ये जैपुर के महाराजा गजसिंह के यहाँ भी गये इनका कूर्मवंशी राजा गजसिंह की प्रशंसा का एक छन्द इसरोज में लिखा है, परन्तु जैपुर में गजसिंह नामक

कोई भी महाराजा नहीं हुआ। जान पड़ता है कि ये गजसिंह जैपुर के महाराजाओं की ठकुराइस में होंगे। दूलह कवि के वर्णन में हम ने कवीन्द्र का जन्म-काल संवत् १७३६ माना है। इनके बनाये हुए गुरदत्तसिंह, भगवन्तसिंह, गजसिंह, और राव-बुद्ध की प्रशंसा के प्रकृष्ट छन्द मिलते हैं। राजा गुरदत्तसिंह ने संवत् १७९१ में सतसई बनाई थी। इससे भी कवीन्द्र के संवत् का परिचय मिलता है। इन के ग्रन्थ अब तक दो ही मिले हैं, परन्तु इन्हों ने और ग्रन्थ अवश्य बनाये होंगे। इन्हों ने व्रजभाषा में कविता की जो बहुत ही प्रशंसनीय है। इन्हों ने अनुप्रास का भी आदर किया। इन की शृंगार रस की कविता बहुत आदरणीय है। इन की गणना पद्माकर की श्रेणी में की जा सकती है।

उदाहरण लीजिए:—

कुंजन ते मग आवत गावत राग बनावत देवगिरी को।
सो सुनि कै वृषभानु सुता तलफै जिमि पंजर जीव चिरी को॥
तार थके नहिं नैनन ते सजनी अँसुवान की धार झिरी को।
मार मनोहर नन्द कुमार के हार हिये लखि मौलसिरी को।

रन बन भू मैं तव भुज लतिका पै चढ़ी
कढ़ी म्यान बाँबी तै विषम विष भरी है।
जा रिपु को डसै सोतौ तजै प्रान ताही छन
गारुडी अनेक हारे झारे तै न झरी है॥
भनत कबिन्द राव बुद्ध अनिरुद्ध तनै
छुद्ध बीरता सों एक तू ही बस करी है।

तरल तिहारी तरवारि पगनी को यह
मन्त्र है न तन्त्र है न जन्त्र है न जरी है॥

(५५१) श्रीधर उपनाम मुरलीधर।

ये महाशय प्रयाग के रहने वाले थे। बाबू राधाकृष्ण दास ने इनका जंगनामा नागरी-प्रचारिणी-ग्रन्थ-माला में प्रकाशित कराया। उसकी भूमिका में उन्हों ने इन के ग्रन्थों ग्रौर जन्म-काल का वर्णन किया है। उससे जान पड़ता है कि श्रीधर के बहुत से ग्रन्थ बाबू साहेब के पास मौजूद थे। इस भूमिका से विदित होता है कि श्रीधर ने राग-रागिनियों का ग्रन्थ, नायिका-भेद, जैन मुनियों का वर्णन, श्रीकृष्णचरित्र की स्फुट कविता, चित्रकाव्य, जंग-नामा ग्रौर बहुत सी स्फुट कविता बनाई। बाबू राधाकृष्ण दास ने इनका जन्मकाल संवत् १७३७ के लगभग माना है। मुद्रित जंगनामा में ६६ पृष्ठ हैं जिन में जहांदार एवं फ़र्रुख़सियर का युद्ध वर्णित है। फ़र्रुख़सियर बहादुर शाह के बड़े बेटे का पुत्र ग्रौर बादशाही का उचित उत्तराधिकारी था, परन्तु जहांदार शाह ज़बरदस्ती सिंहासनारूढ़ हो गया था। फ़र्रुख़सियर ने उसे पराजित कर के हिन्द का राज्य प्राप्त किया। इस ग्रन्थ में कई छन्दों में कथा वर्णित है ग्रौर दोहा-चौपाइयों की रीति का ग्रनुसरण नहीं हुग्रा है। इसमें व्रजभाषा ग्रौर खड़ी बोली का मिश्रण, कविता साधारण, ग्रौर घोरों के साज-सामान एवं युद्धार्थ तैयारी का वर्णन बहुतायत से है। हम कथा प्रसं-

मिक कवियो में इन्हें मध्यम अर्थात् छत्र कवि की श्रेणी में रखते हैं। इनका एक कवित्त नीचे लिखा जाता है।

इत गल गाजि चढ़यो फरुख सियर साह
　　उत मौजदीन करि भारी भट भरती।
तोप की डकारनि सौं बीर हहकारनि सौं
　　धौंसा की धुकारनि धमकि उठी धरती॥
श्रीधर नवाब फरजन्द खाँ सु जंग जुरे
　　जोगिनी अघाई जुग जुगन की बरती।
हहस्यो हिरौल भीर गोल पै परी ही तू न
　　करतो हिरौली तो हिरौले भीर परती॥

नाम—(५५२) महाराजा राजसिंह कृष्णगढ़।

ग्रन्थ—१ राजप्रकाश, २ रसपायनायक, ३ बाहुविलास।

राजकाल—१७६३ से १८०५ तक।

विवरण—ये महाशय कृष्णगढ के राजा प्रसिद्ध कवि महाराजा सावन्तसिंह (नागरीदास) के पिता थे। इनकी कविता साधारण श्रेणी की थी।

उदाहरण।

श्री गोपाल सहाय है राधा वर रस पुंज।
केलि कुतूहल रास रस कीने कुंज निकुंज॥
तपी जपी जे संयमी निसि दिन सोधत ताहि।
भानु सुता के दरस की सो हरि करत जु चाहि॥

(५५३) लाल कवि मऊ वाले।

इस महाकवि ने संवत् १७६४ के लगभग छत्रप्रकाश नामक दोहा चौपाइयों में एक अनमोल ग्रन्थ बनाया, जिसे काशी नागरी-प्रचारिणी सभा ने अपनी ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया है। इनका द्वितीय ग्रन्थ 'विष्णुविलास' है, जिसमें बरवै छन्दों द्वारा कविता की गई है। इसमें नायिकाभेद का वर्णन है और इसकी कविता साधारण है। इनका पूरा नाम गोरेलाल पुरोहित था। यह पता हमें छत्रपुर में लगा। इनका नाम शिवसिंहसरोज में नहीं दिया गया है परन्तु उसमें लिखा है कि बूँदी के महाराजा छत्रसाल के यहाँ एक लाल कवि थे। छत्रप्रकाश के रचयिता लाल महेवा एवं पन्ना के महाराजा छत्रसाल के यहाँ थे। महेवा छत्रपुर के अंतर्गत मऊ से मिला हुआ अब एक छोटा सा ग्राम है। इन्होंने अपने कुल, निवास-स्थान आदि के विषय में कुछ भी नहीं कहा है। लालजी ने लिखा है कि छत्रप्रकाश स्वयं छत्रसाल की आज्ञा से बनाया गया। इस ग्रन्थ में सं० १७६४ विक्रमाय तक छत्रसाल की जीवनी का वर्णन किया गया है, पर उसके पीछे ग्रन्थ अपूर्ण जान पड़ता है। सम्भव है कि लाल कवि छत्रसाल के पूर्व ही स्वर्गवासी हो गये हों, अथवा नागरी प्रचारिणी सभा को अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई हो। छत्रसाल का स्वर्गवास संवत् १७९० के लगभग हुआ था। उनके ...न-सम्बन्धी २७—२८ साल का हाल इसमें नहीं मिलता है। ...ल ने लिखा है कि छत्रसाल का जन्म-संवत् १७०६ में हुआ। यथा—

संवत् सत्रहसै लिखे आठ आगरे बीस ।
लगत बरस बाईसई उमड़ि चल्यो अवनीस ।

यह संवत् बुँदेलखंड गज़ेटियर से मिलता है। लाल ने कुल कथा सची सची लिखी है, यहाँ तक कि एक युद्ध में छत्रसाल के भागने का भी वर्णन किया है। इनकी कथा सब तरह बुँदेलखंड गज़ेटियर से मिलती है, इसलिए उसे सची मानने में कोई शंका नहीं हो सकती। इनके अनुसार बुँदेला क्षत्री महाराजा रामचन्द्रजी के पुत्र कुश के वंश में हैं, और उनकी काशीश्वर एवं गहिरवार उपाधियाँ हैं। इस वंश में पंचमसिंह एक बड़े प्रतापी राजा हुए। उन्हीं के पुत्र महाराजा बुँदेला उपनाम "वीर" थे और जिस देश में इनके वंशज बसे उसी को लोग बुँदेलखण्ड कहते हैं। उस समय बुँदेला लोग महेवा और ओड़छा में राज्य करते थे। लाल ने बुँदेला के पूर्वजों में हरिब्रह्म से लेकर छत्रसाल पर्यन्त सब के नाम लिखे हैं। ओड़छा के मधुकर शाह इत्यादि का नाम भी इसी वंशावली में आ जाता है। लाल ने चंपतिराय के विजयों का वर्णन बड़ाही उत्तम और विस्तार पूर्वक किया है और अपनी कविता में दिखला दिया है कि तत्कालीन भारतवर्ष के इतिहास पर चंपतिराय का कितना प्रभाव पड़ा। चंपतिराय चार भाई थे। अतः इन्होंने चार पर अपनी कविता में बहुत कुछ कहा है। यथाः—

चारिउ भैया उद्भट जानौ। चारिउ भुजा विष्णु की मानौ॥
चारिउ चरन पुन्य छवि छायौ। चारिउ फलन देन जनु आयौ॥
हिन्दुवान सुर गज उर आनौ। ताके चारौ दंत बखानौ॥

चारौ अंग चमू जिन राखी। चारौ समुद जीति अभिलाखी ॥
अंतःकरन चारि हुलसाए। चारिउ चमा सुजस बगराए ॥
हरि के आयुध चारि गनाए। ते जनु छिति रच्छन हित आए ॥

चंपति के विजयों का हाल निम्न लिखित छन्दों से कुछ विदित होगाः—

गनै कौन चंपति की जीतैं। गनपति गनैं तऊ जुग बीतैं ॥
साहिजहाँ उमड्यो घन घोरा। चपति झंझा पौन झकोरा ॥
साहि कटक झकझोरि डुलायो। गिल्यो बुँदेलखंड उगिलायो ॥
धनि चंपति फिरि भूमि बहारी। भुजन पातसाही झकझोरी ॥
प्रलै पयोद उमंड मैं ज्यौं गोकुल जदुराय।
त्यौं बूड़त बुंदेल कुल राख्यो चपतिराय ॥
कीनो कूच राति उठि जागे। चम्पति भयो सबन के आगे ॥
उमड़ि चल्यो दारा के सौंहैं। चढ़ी उदन्ड जुद्ध रस भौंहैं ॥
चम्पतिराय जगत जसु छायो। ह्वै हरौल दारा विचलायो ॥
धनि चम्पति राप्यो तुम पानी। धनि धनि कालकुँवरि ठकुरानी ॥
धनि चंपति जिन खल दल खंडे। धनि चपति निज कुल जिन मंडे ॥
धनि चपति निरबल जिन थापे। धनि चपति जिन सबल उथापे ॥
धनि चंपति सज्जन मन भाए। धनि चपति जग जस बगराए ॥
धनि चंपति की कठिन कृपानी। धनि चपति की रुचिर कहानी ॥
तब तौ चंपति भयो सहाई। गिली भूमि भुज बल उगिलाई ॥
चंपतिराय कहाँ अब पैये। कैसे अपनो बंस बचैये ॥
ते चंपति करयो पयानो। तबतैं परयो हीन हिंदवानो ॥

लग्यो होन तुरकन कौ जोरा। को राखै हिन्दुन को तोरा ॥
चम्पतिराय तेग कर लीनी। ओप बुंदेलखण्ड कौ दीनी ॥
भुजन पातसाही झकझोरी। गई भूमि जुरि जुद्ध बहोरी ॥

पंचम उदयाजीत के कुल को यहै सुभाउ ।
दलै दौरि दिल्लीस दल ज्यौं दुरदनि बनराउ ॥

चम्पतिराय के मरने के समय समस्त राज्य मुग़लों के क़ब्ज़े में आ गया था। अतः छत्रसाल को, जो चम्पतिराय के तीसरे पुत्र थे, फिर से बादशाह का सामना करना पड़ा। उन्होंने केवल पाँच सवार और २५ पियादों को लेकर औरङ्गज़ेब से बादशाह के साथ लड़ाई का साहस किया। इन्हों ने अपनी पलिसी को इस प्रकार अपने चचेरे भाई से कहा है, कि जिससे इनकी हिम्मत का पूरा परिचय मिलता है:—

"जे भुमियाँ हम में मिलि रैहैं। तेई सङ्ग फोज के हैहैं ॥
जे न लागिहैं सङ्ग हमारे। दोषु न लागै तिनके मारे ॥
जे उमराव चौथि भरि दैहैं। तेई अमलु देस को पैहैं ॥
जिनमें पैंड़ युद्ध की पावो। तिनपै उमँगि अस्त्र अजमावो ॥

तेग छाइहै देस में देस आइहैं हाथ ।
शत्रु भगिहैं मानि भय लोग लागिहैं साथ ॥"

छत्रसाल ने पहले दो चार छोटी छोटी लड़ाइयाँ लड़कर और अपना बल बढ़ा के एक एक करके दागी, रणदूलह, रूमी, तहौवरख़ाँ, दीप़मनवर, सदरुद्दीन, अब्दुलसमद, शेरअफ़ग़ानख़ाँ और शाहकुली को परास्त किया। ये सब दिल्ली के अफ़सर थे और इन

सबके साथ बड़ी बड़ी शाही फ़ौजें थीं, यहाँ तक कि अकेले रणदूल के साथ ३० हज़ार फ़ौज थी। इन सब का युद्ध छत्रप्रकाश में बहुत उत्तम रीति से वर्णित है और इनमें भी सदरुद्दीन एवं अब्दुल-समद का युद्ध बड़ा ही विशद है। इन सब में केवल शेर अफ़ग़ान के सामने से एक बार छत्रसाल को भागना पड़ा था। इस समय संवत् १७६३ में औरङ्गज़ेब का मृत्यु हो गया और उनके पुत्र बहादुरशाह ने छत्रसाल को मित्रभाव से बुलाकर उनसे लोहागढ़ जीत देने की प्रार्थना की। इसपर छत्रसाल ने बादशाह को लोहागढ़ जीत दिया। तब बादशाह ने इन्हें दो करोड़ रुपये वार्षिक आय के राज्य का (जो इनके कुब्जे में था) स्वतन्त्र राजा मान लिया। इसी स्थान पर छत्रप्रकाश समाप्त हो गया है। इसके कुछ पहले किसी व्याज से लाल ने कृष्ण-कथा का १० पृष्ठ में उत्तम वर्णन किया है। छत्रसाल के युद्धों के अतिरिक्त लाल ने पंचम और छठे अध्याय में बहुत उत्तम वर्णन किये हैं। छत्रसाल की प्रशंसा के कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

लखत पुरुष लच्छन सब जानै। पच्छी बोलत सगुन बखानै॥
सत कवि कवित सुनत रस पागै। बिलसन मति अरथन में आगै॥
रुचि सों लखत तुरँग जे नीके। बिहँसि लेन मुजरा सब ही के॥
कह्यो धन्य छिति छत्र छतारे। तुम कुल चंद हिंदुगन तारे॥

चौंकि चौंकि सब दिसि उठैं सूबा खान खुमान।
अब धौं धावै कौन पर छत्रसाल बलवान॥

रूमी भगे साहि त्यों जाने। कारी परी ...

छना कह्यो स्वच्छ सो जानें। सोइ बलवंत सहायक मानें॥
जो प्रभु तिहूँ लोक को स्वामी। घट घट व्यापक अंतरजामी॥
जहाँ सेवकहिँ निद्रा लागी। साहेब तहाँ संग ही जागी॥
गरबीलेन के गरबन ढाहे। गरब प्रहारी बिरद निबाहै॥
केतिक मिरजा की रिस खोटी। प्रभु के हाथ सबन की चोटी॥

इन पूर्वोक्त छन्दों से छत्रसाल की भक्ति भी पूर्ण रूप से प्रकट होती है। कई स्थानों पर छत्रसाल के बड़े ही विलक्षण व्याख्यान इस ग्रन्थ में वर्णित हैं। शिवाजी और छत्रसाल का मिलना इस ग्रन्थ का बहुत ही उत्तम भाग है। छत्रसाल की शिवाजी पर श्रद्धा देख कर यह जान पड़ता है कि अनुपम वीर होने के अतिरिक्त वे शूरवीरों के बहुत बड़े भक्त भी थे।

लाल ने केवल दोहा चैापाइयों में कविता की है, और १५० पृष्ठों के इस ग्रन्थ में कोई भी तीसरा छन्द नहीं लिखा, परन्तु फिर भी वे ऐसी मनोहर कविता रचने में समर्थ हुए हैं कि कहना पड़ता है कि तुलसीदासजी के अतिरिक्त किसी और का उन्हीं के समान दोहा चैापाई बनाना प्रायः असम्भव है। इनकी भाषा गोस्वामीजी की भाषा से पृथक् है और इन्होंने ब्रज भाषा, बुँदेलखण्डी और अवधी बोली का मिश्रण किया है। इनको यमक, अनुप्रास आदि का बिलकुल शौक न था, फिर भी इनकी भाषा बड़ी मधुर है। इन्होने दिखा दिया है कि कवि यमकादि बाह्याडम्बरों को छोड़ कर एक छोटे से छन्द में भी उत्कृष्ट कविता कर सकता है। इनकी कहावत ऐसी मधुर है कि इनके कितने ही पद किंवदन्तियों के रूप में परिणत हो गये हैं; यथा :—

ज्ञान गनन्ता पीछस हारै। सो जीतै जो पहिले मारै॥
रीती भरै भरी ढरकावै। जो मन करै तो फेरि भरावै॥

सत्कवियों का एक यह भी गुण है कि वे अपने नायकों के वर्णन करने में सर्वमान्य यथार्थ बातों का कथन करके उनके साथ अपने नायक के गुणों और कर्मों को उनके उदाहरण स्वरूप दिखला देते हैं। लाल में यह बात पूर्ण रूप से पाई जाती है। यथा:—

दान दया घमसान मैं, जाके हिये उछाह।
सोई वीर बखानिए, ज्यौं छत्ता छितिनाह॥

तिन मैं छिति छयो छवि छाप। चारिहुँ जुगन होत जे आप॥
भूमिभार भुज दण्डनि थम्भे। पूरन करैं जु काज अरम्भे॥
गाय वेद द्विज के रखवारे। जुद्ध जीति के देत नगारे॥
छत्रिन की यह वृत्ति बनाई। सदा तेग की खाय कमाई॥
गाय वेद विप्रन प्रतिपालैं। घाउ ऐंड़ धारिन पर घालैं॥
उद्यम ते संपति घर आवै। उद्यम करै सपूत कहावै॥
उद्यम करै संग सब लागै। उद्यम ते जग मैं जसु जागै॥
समुद उतरि उद्यम ते जैये। उद्यम ते परमेसुर पैये॥
जब यह सृष्टि प्रथम उपजाई। तेग वृत्ति छत्रिन तब पाई॥
यह संसार कठिन रे भाई। सबल उमड़ि निरबल को खाई॥
छनिक राज संपति के काजै। बंधुन मारत बंधु न लाजै॥
कछू काल गति जानि न जाई। सब ते कठिन काल गति भाई॥
सदा प्रबुद्ध बुद्धि है जाकी। तासों कैसे चलै कजाकी॥

साहस तजि उर आलस मांड़े। भाग भरोसे उद्यम छांड़े॥
ताहि तजै जग संपति ऐसे। तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे॥
विपति माहँ हिम्मति ठिक ठानै। बढ़ती भए छिमा उर आनै॥
बचन सुदेस सभनि में भावै। सुजसु जोरिबे में रुचि रावै।
जुद्धनि जुरै अकेले सैसे। सहज सुभाय बड़ेन के ऐसे॥
जाकी धरम रीति जग गावे। जो प्रसिद्ध बलवन्त कहावे॥
जाहि जोट भैयन की भावे। करत अनारबीन घनि आवे॥
लै अवतार बड़े कुल आवे। जुद्धन जुरै जगत जस गावै॥
सत्य वचन जाके ठिक ठाए। प्रीति जोग ए सात गनाए॥

इस कवि की उद्दंडता सभी स्थानों पर सूर्यवत् प्रकाशमान है। भाषा-साहित्य में किसी भी सत्कवि की रचना में इतनी उद्दण्डता नहीं पाई जाती। दो एक उदाहरणों से इसका बोध नहीं कराया जा सकता, परन्तु स्थानाभाव से हम यहां दोही एक उदाहरण दे सकते हैं।

उमडि चल्यौ दारा के सौहैं। चढ़ीं उदण्ड जुद्ध रस भौंहैं॥
तब दारा दिल दहसति बाढी। चूमन लगो सबन की दाढ़ी॥
को भुजदण्ड समर महि ठोंकै। उमड्यौ प्रलय सिन्धु को रोंकै॥
छत्रसाल हाडा तहँ आयो। अरुन रंग आनन छवि छायो॥
भयो हरौल बजाय नगारो। सार धार को पहिरन हारो॥
दौरि देस मुगलनि के मारो। दपटि दिली के दल संघारो॥
एक एक सिवराज निबाही। करै आपने चित की चाही॥
आठ पातसाही झकझोरे। सूबनि पकरि दण्ड लै छोरे॥

काटि कटक बिरधान बल बाँटि जंबुकनि देहु।
ठाटि जुद्ध यहि रीति सों बाँटि धरनि धरिलेहु॥

लाल ने युद्ध प्रायः सभी स्थानों पर उत्तम वर्णन किया है, परन्तु वे सब वर्णन बड़े हैं, अतः यहाँ उद्धृत नहीं किये जा सकते, इसलिए एक छोटा सा वर्णन यहाँ लिखते हैं।

चहुँ ओर सों सूबनि घेरो। दिसनि अलान चम्फ सो फेरो॥
पजरे सहर साहि के बाँके। धूम धूम में दिनकर ढाँके॥
कबहुँ प्रगटि जुद्ध में हाँके। मुगलनि मारि पुहुमि तल ढाँके॥
बाननि बरषि गयंदनि फोरै। तुरकनि तमकि तेग तर तोरै॥
कबहुँ जुरै फौज सों आछे। लेइ लगाइ चालु दै पाछे।
बाँके ठौर ठौर रन मंडे। हाहा करे डांड़ लै छंडे॥
कबहुँ उमड़ि अचानक आवै। घन सम घुमड़ि लोह बरसावै॥
कबहुँ हाँकि हरौलनि कूटै। कबहुँ चापि चँदालनि लूटै॥
कबहु देस दौरिके लावै। रसदिकहुँ की कढ़न न पावै॥
चौकी कहें कहाँ ह्वै जैहौ। जिन देखौ तित चंपति हैहौ॥

चौंकि चौंकि चौकी उठैं दौकि दौकि उमराय।
फाके लसगर में परे थाके सबै उपाय॥

लाल कवि ने उपमायें बहुत कम स्थानों पर दी हैं और जहाँ कहीं वे हैं भी, वहाँ अन्य कवियों की भाँति कोरी उपमा न कह कर मुख्यार्थ निबद्ध क उपमायें रूपक, उत्प्रेक्षा, आदि कहीं हैं और कहीं कहीं उपमायें आदि न कह कर अन्य रीति से उसी प्रकार मुख्यार्थ को वद्धमान किया है।

कटि अरु मुंड उछालत कैसे । बटन खेल खेलत नट जैसे ॥
कढ़ि सरदार गोल ते गाजे । आनन मनों मजीठनि माँजे ॥
कौतुक देखि जोगिनी गाई । खप्पर जटनि माँजती धाई ॥

इस कवि ने यह दिखा दिया है कि अलंकारों की सहायता न लेकर भी कवि उत्तम कविता कर सकता है । लाल ने स्तुति के साथ मुख्य विषय के मिला देने में बड़ी पटुता दिखाई है । इसके उदाहरण ग्रन्थ के द्वितीय, तृतीय और पंचम पृष्ठों पर मिलेंगे । इनकी कविता में रस बहुतायत से आये हैं ।

लाल ने छत्रप्रकाश, विष्णुविलास और राजविनोद नामक तीन ग्रन्थ रचे । अन्तिम ग्रन्थ में विविध छन्दों द्वारा ब्रजवासी कृष्ण का वर्णन है । यह पूरा ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आया ।

कुल बातों पर विचार करके हम लालजी को सेनापति की श्रेणी का कवि मानते हैं । इन्हों ने तुलसीदास जी की भाँति कथा-प्रणाली पर कविता की है और कथा प्रासंगिक कवियों में इनको प्रथम श्रेणी में रखना चाहिए । लाल ने अपनी रचना बहुत ही सर्वांग सुन्दर बनाई और जिस विषय पर कविता की उसी को उत्तमोत्तम रीति से कहा । बुंदेलखंड में प्रसिद्ध है कि लाल जी महाराजा छत्रसाल के साथ युद्धों में स्वयं लड़ते भी थे । कथा-प्रासंगिक युद्ध कविता में इनके जोड़ का कोई भी कवि देखने में नहीं आता । कहते हैं कि लाल का शरीर पात भी किसी युद्ध ही में हुआ ।

(५५४) अब्दुल् रहमान (रहमान)।

ये महाशय दिल्ली के रहने वाले ग्रीर मोअज्जम शाह (क़ुतुबुद्दीन शाह आलम बहादुर शाह) के मनसबदार थे। इन्हों ने यमक शतक नामक ग्रंथ बनाया, जिसमें कुल १०७ दोहे हैं, ग्रीर श्लेष मय, यमकपूर्ण एकाक्षरी इत्यादि दोहे कहे गये हैं, परंतु किसी क्रम से नहीं। भाषा इसकी कठिन है, जिसका कारण शायद चित्र काव्य है। इस ग्रंथ से विदित होता है कि ये महाशय भाषा पूर्ण रीति से जानते थे ग्रीर संस्कृत भाषा भी इनकी कुछ अवश्य देखी होगी। इन्हों ने ग्रंथ निर्माण का संवत् दिया है, परंतु वह ऐसा अशुद्ध लिखा है कि उससे संवत् नहीं जान पड़ता। बहादुर शाह का राज्य-काल संवत् १७६३ से १७६८ तक है, अतः इसी समय में यह ग्रंथ लिखा गया होगा। इन्हों ने अपना परिचय यों दिया है.—

> मोजम छत्रपती सुपति दिल्लीपति सुप्रवीन।
> चकता आलमगीर सुत कुतुबदीन पद लीन॥
> ताको मनसबदा जगत कवि अबदुल रहमान।

हम इनको तोष कवि की श्रेणी में समझते हैं। उदाहरणार्थ इनके कुछ छंद नीचे दिये जाते हैं:—

> पलकन में राखौ पियहिँ पलक न छाँड़ो संग।
> पुतरी सो तै होहिँ जिन डारपत अपने अंग॥
> करकी करकी चूरियाँ बरकी बरकी रीति।
> दरकी दरकी कंचुकी हरकी हरकी प्रीति॥

(५५५) सूरति मिश्र ।

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण मिश्र आगरा निवासी थे, जैसा कि ये स्वयम् लिखते हैं:—सूरति मिश्र कनौजिया नगर आगरे वास। इन्हों ने (१) अलंकार-माला नामक अलंकार-ग्रंथ संवत् १७६६ में लिखा और संवत् १७९४ में (२) अमर-चंद्रिका नामक बिहारी सतसई की टीका बनाई। आपने (३) कवि प्रिया की टीका भी रची जिसमें संवत् नहीं दिया है, परंतु हमारे पास जो पुस्तक है, वह संवत् १८५६ की लिखी हुई है। इनका (४) नख शिख हम ने ठाकुर शिवसिंह जी काँथा निवासी के पुस्तकालय में देखा। उसमें भी संवत् नहीं दिया है, परंतु वह प्रति संवत् १८५३ की लिखी है। इसके अतिरिक्त शिवसिंहसरोज में इनके बनाये (५) रसिकप्रिया का तिलक और (६) रस सरस नामक दो ग्रंथ और लिखे हैं। ये हम ने नहीं देखे। अतः अनुमान से कहा जा सकता है कि सूरति जी सवत् १७४० के लगभग उत्पन्न हुए होंगे। खोज में इनकी (७) रस ग्राहक-चन्द्रिका का भी पता चला है।

ये महाशय अच्छे कवि थे और भाषा इनकी मधुर थी। सतसई, व कवि प्रिया के तिलकों से इनके पांडित्य का पूर्ण परिचय मिलता है। ऐसे उत्तम तिलक बहुत ही थोड़े विद्वान कर सके हैं। सतसई पर कम से कम पंद्रह बीस तिलक हुए हैं, परंतु सूरति जी के तिलक की समानता एक भी नहीं कर सकता। इन्हों ने अपने तिलक में शंकायें करके उनका समाधान

बड़ी उत्तमता से कर दिया है। इनकी कवित्वशक्ति तथा पांडित्य प्रशंसनीय हैं। इनके ग्रंथों का परिचय नीचे दिया जाता है :—

(१) "अलंकारमाला" अलंकार का ग्रंथ कुल ३१७ दोहों में है। इसमें अलंकारों का वर्णन उत्तम रीति से किया गया है और प्रायः लक्षण तथा उदाहरण एक ही दोहे में दे दिये गये हैं।

"हिम सो हर के हास सो जस मालोपम ठानि" (मालोपमा)।

"विधु सो कंज सुकंज सो मंजु बदन यहि बाम" (रसनोपमा)।

"सु असंगति कारन अवर कारज भिन्न सुथान।

चलि अहि श्रुति आनहि डसत नसत और के प्रांन" (असंगति)॥

(२) "नखशिख" में राधा कृष्ण का अच्छा नखशिख ४१ छन्दों में कहा गया है।

त्रिभुवनपति के हरत दुख देखत ही
सहज सुबास ऊँचे बास सोभ रस है।
नेह गुन सरसे बड़ाई सुख सरसे वे
तीनि हू बरन को प्रगट सुदरस है॥
सब दिन एक सो महातम है सूरति यों
नागर सकल सुख सागर परस है।
परी मृगनैनी पिकबैनी सुख देनी अति
तेरी यह बेनी तिरबेनी ते सरस है॥
तेरे ए कपोल बाल अति ही रसाल मन
जिनकी सदाई उपमा विचारियत है।
कोऊ न समान जाहि कीजे उपमान अरु
बापुरे मधूकनि की देह जारियत है॥

नेकु दरपन समता की चाह करी कहूँ
भए अपराधी ऐसे चित्त धारियत है ॥
सूरति सुयाही ते जगत बीच आजु हू लौं
उनके वदन पर छार डारियत है ॥

(३)"अमरचंद्रिका" सतसई के दोहों की टीका इन महाशय ने सं० १७९४ में बनाई। यह महाराजा अमरसिंहजी जोधपूर के नाम से बनाई गई। इसके समान कोई भी टीका सतसई की अब तक नहीं बनी। इस में बहुत से अर्थ कहे गये हैं और अलंकार लक्षणा, व्यंजना, इत्यादि भी खूब साफ़ करके दिखलाई गई हैं। इस पर प्रसन्न होकर महाराज ने इनकी बड़ी ख़ातिर की और कविकुलपति की पदवी दी। वास्तव में यह ग्रन्थ ऐसा ही प्रशंसनीय बना भी है।

(४) "कविप्रिया का तिलक" भी इन महाशय ने बनाया परन्तु इसमें संवत् इत्यादि नहीं दिये गये हैं। यह भी तिलक उत्कृष्ट बना है। इसमें कुल छन्दों का तिलक नहीं किया गया है, परन्तु जो जो स्थल कठिन और विवादपूर्ण हैं उन पर शंकारहित टीका की गई है, जो सर्वतोभावेन प्रशंसनीय है। इससे केशवदास का क्लिष्टकाव्य पाठक सहज में अच्छी तरह समझ सकते हैं।

(५) इन ग्रन्थों के अतिरिक्त इन्हों ने वेतालपंचविंशति का संस्कृत से गद्य ब्रज भाषा में अनुवाद किया। यह उदथा महाराजा जैसिंह सवाई की आज्ञा से किया गया था।

खोज में इनके बनाये हुए काव्य-सिद्धान्त, रसरत्नाकर और रसिकप्रिया की टीका रसग्राहकचन्द्रिका नामक ग्रन्थ लिखे हैं।

उदाहरण।

कमल नयन कमल से हैं नैन जिनके कमलद बरन कमलद कहिये मेघ को बरण है स्याम स्वरूप है कमल नाभि श्रीकृष्ण को नाम ही है कमल जिनकी नाभितें उपज्यो है कमलाप कमला लक्ष्मी ताके पति हैं तिनके चरण कमल समेत गुन को जाप क्यों मेरे मन में रहो।

इन पद्य कविताओं, टीकाओं और गद्य काव्य का विचार करने से सुरति जी एक उत्कृष्ट कवि ठहरते हैं। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। इनकी टीकाओं का पांडित्य बिना पूर्ण ग्रंथावलोकन किये विदित नहीं हो सकता, अतः हम पाठकों से उनके देखने का अनुरोध करते हैं।

(५५६) महाराजा अजीतसिंह।

ये महाराजा जोधपूर के प्रसिद्ध महाराजा भाषा-भूषण के रचयिता जसवन्तसिंह के पुत्र थे और संवत् १७३७ में इनका जन्म काबुल में अपने पिता के मरने के कुछ महीने पीछे हुआ था। उस समय इनके सब भाई मर चुके थे सो जन्म लेते ही ये महाराज हुए। औरंगजेब ने इन्हें उसी समय गिरफ्तार करने का पूरा प्रयत्न किया पर राठूर लोगों ने तीस वर्षों तक युद्ध करके अपने बालक महाराज को बचाया। इनकी बाल्यावस्था इस प्रकार दौड़ने भागने आदि में

व्यतीत हुई थी कि आश्चर्य होता है कि इन्होंने किस प्रकार विद्या पढ़ी और किस प्रकार कविता सीखी? आपने संवत् १७८१ तक राज किया। मुग़ल साम्राज्य की ओर से इन्होंने सरबलन्दख़ाँ को परास्त कर गुजरात प्रान्त को जीता और बादशाह ने इन्हें वहाँ का शासक भी नियत किया। अन्त में इनका बल बहुत बढ़ते देख शाह ने संवत् १७८१ में इनके पुत्रों ही को मिला कर धोखेबाज़ी से इनका वध करवा डाला। इन्होंने निम्न लिखित ग्रन्थ बनाये;—दुर्गा पाठ भाषा, गुणसागर, राजा रूप का ख्याल, निर्वाणी दोहा, महाराज श्री अजीतसिंह जीरा कह्या दोहा, महाराज श्री अजीत सिंह जी कृत दोहा श्रीठाकुरांरा और भवानीसहस्र नाम। आपकी भाषा ब्रज भाषा है जिस में राजपूताने का भी कुछ अंश है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में हो सकती है।

उदाहरण।

पीताम्बर कछनी कछे उर बैजन्ती माल
अँगुरी पर गिरिवर धरयो सग सबै ब्रज बाल॥
जब लग सूर सुमेर चन्द्रमा शङ्कर उड़गन।
जब लगि पवन प्रताप जगत मधि तेज अगिनि तन॥
जब लगि सात समुद्र सयुगत धरा बिराजैं।
जब लगि सुर तैंतीस कोटि आनन्द समाजैं॥
तब लगि यहै भाषा सुकृत सहस नाम जग में रहै।
अगजीत कहै इनको पढ़त सुनत सकल सुख को लहै॥

(५५७) प्रियादास जी ने संवत् १७६९ में भक्तमाल की टीका बनाई। इनका हाल नाभादास जी के वर्णन में देखिए।

इस समय के अन्य कवि गण।

नाम—(५५८) कुन्दन बुँदेलखंडी।
ग्रन्थ—नायिका भेद।
कविता-काल—१७५२।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५५९) गुलालसिंह बक्सी, पन्ना।
ग्रन्थ—दफ़्तरनामा।
कविता-काल—१७५२।
विवरण—साधारण श्रेणी। जमा ख़र्च वग़ैरह के क़ायदों का वर्णन किया है। इनके १८५२ सं० में होने का सन्देह है।

नाम—(५६०) गोपाल रतनपूर बिलासपूर।
ग्रन्थ—(१) श्री सुदामाशतक, (२) रामप्रताप, (३) ,ख़ूनतमाशा।
कविता-काल—१७५३ के पूर्व।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५६१) केशवराज बुँदेलखंडी।
ग्रन्थ—जैमुनी की कथा भाषा।
कविता काल—१७५३।
विवरण—साधारण श्रेणी। महाराज छत्रसाल के दरबार में थे।

नाम—(५६२) करीम।
कविता काल—१७५४ के पूर्व।
विवरण—इनका नाम सूदन कवि ने लिखा है।

नाम—(५६३) कंचन।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन कवि ने लिखा है।

नाम—(५६४) कुँवर।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५६५) खगपति।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५६६) गयंद।

कविता काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन कवि ने लिखा है।

नाम—(५६७) चिरजीव।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५६८) छबीले।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

नाम—(५६९) जीव।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन जी ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५७०) टीकाराम।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सुजानचरित्र में सूदन कवि ने दिया है।

नाम—(५७१) तिलोक।

ग्रन्थ—स्फुट काव्य।

कविता काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सुजानचरित्र में इनका नाम दिया हुआ है।

नाम—(५७२) तुरत।

कविता काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सुजानचरित्र में इनका नाम है।

नाम—(५७३) तेज।

कविता काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने लिखा है।

नाम—(५७४) दयादेव।

कविता काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी। सूदन ने सुजानचरित्र में इनका नाम कहा है।

नाम—(५७५) दुनाराय।

कविता काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन कवि ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५७६) धीरधर।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन कवि ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५७७) नायक।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—निम्न श्रेणी के हैं। इनका नाम सूदन जी ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५७८) नाहर।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन कवि ने लिखा है।

नाम—(५७९) नित्यानन्द।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सुजानचरित्र में सूदन ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५८०) परम शुक्ल।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने लिखा है।

नाम—(५८१) पीत।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन कवि ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५८२) बसंत।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन कवि ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५८३) मनि कंठ।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन ने इनका नाम लिया है।

नाम—(५८४) मान।

ग्रन्थ—(१) महावीर जी को नखशिख, (२) हनुमानपचीसी, (३) रामकूटविस्तार, (४) हनू नाटक।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन जी ने निज कृत सुजानचरित्र में दिया है।

नाम—(५८५) मित्र।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने लिखा है।

नाम—(५८६) मुनीश।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—सूदन कवि ने इनका नाम लिखा है।

नाम—(५८७) रमापति।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—मैथिल कवि हैं। इनका नाम सूदन ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५८८) राधाकृष्ण।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन कवि ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५८६) राम कृष्ण चौबे।

ग्रन्थ—विनयपचीसी।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी के हैं। इनका नाम सूदन जी ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५९०) लच्छीराम।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन कवि ने सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५९१) लीलापति।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने लिखा है।

नाम—(५९२) सवसुख।

कविताकाल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—इनका नाम सूदन ने लिखा है।

नाम—(५९३) केशवराय बघेलखंडी।

ग्रन्थ—(१) नायिकाभेद, (२) रसलतिका।

कविताकाल—१७५४।

विवरण—तोषश्रेणी।

नाम—(५६४) लोकमणि।

ग्रन्थ—वैद्यक।

कविताकाल—१७०४।

विवरण—सूदन ने इनका नाम सुजानचरित्र में लिखा है।

नाम—(५६५) इच्छाराम अवस्थी पचरुआ ज़ि० बारहबंकी।

ग्रन्थ - ब्रह्मविलास।

कविताकाल—१७५५।

विवरण—इन्होंने वेदांत का ग्रन्थ ब्रह्मविलास बनाया है साधारण श्रेणी।

नाम—(५६६) गुरुप्रसाद।

ग्रन्थ—रत्नसागर।

कविताकाल—१७५५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(५६७) गोध।

कविताकाल—१७५५।

नाम—(५६८) गोधूराम।

ग्रन्थ—(१) दशाभूषण, (२) दशारूपक।

कविताकाल—१७५५।

विवरण—ये ग्रंथ इन्होंने अपने भाई बागीराम के साथ बनाये हैं।

नाम—(५६९) बागीराम।

ग्रंथ—(१) यशभूषण, (२) यशरूपक।

कविताकाल—१७५५।

विवरण—ये ग्रन्थ इन्होंने अपने भाई गोधूराम के साथ बनाये हैं।

नाम—(६००) ब्रजदास प्राचीन।

कविताकाल—१७५५।

विवरण—साधारण श्रेणी। इनके छन्द हज़ारा में हैं।

नाम—(६०१) रत्नसागर।

ग्रन्थ—रत्नपत्रिका।

कविताकाल—१७५५।

नाम—(६०२) लालबिहारी।

जन्मकाल—१७३०।

कविताकाल—१७५५।

नाम—(६०३) जैसिंह सवाई महाराजा आमेर।

ग्रन्थ—जैसिंह कल्पद्रुम।

कविताकाल—१७५६ से १८०० तक।

विवरण—ये महाराज आमेर के राजा बड़े विद्वान और कविकोविदों के आश्रयदाता हुए हैं।

नाम—(६०४) दिग्गज।

ग्रन्थ—भारतविलास।

कविताकाल—१७५६।

विवरण—दीवान पृथ्वीसिंह के यहां थे।

नाम—(६०५) भगवानदास।

ग्रन्थ—भाषामृत।

जन्मकाल—१७२५।

कविताकाल—१७५६।

नाम—(६०६) गोपाल।

ग्रन्थ—(१) प्रह्लादचरित्र, (२) ध्रुवचरित्र, (३) राजा भारथचरित्र।

कविताकाल—१७५७।

विवरण—दादूदास के सम्प्रदाय में थे।

नाम—(६०७) धनराम कायस्थ उरछा।

ग्रन्थ—लीलावती।

कविताकाल—१७५७।

विवरण—राजा उदोतसिंह के यहाँ थे।

नाम—(६०८) जीवनमस्ताने।

ग्रन्थ—पचकदहाई।

कविताकाल—१७५७।

विवरण—प्राणनाथ के शिष्य। हीन श्रेणी।

नाम—(६०९) जैदेव कम्पिलावासी।

कविताकाल—१७५६।

विवरण—ये सुखदेव मिश्र के शिष्य थे और फाजिल अली के यहाँ थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(६१०) नाथ।

कविताकाल—१७५७ से १८१७ तक।

विवरण—राजा भगवन्त राय खीची तथा फ़ाज़िल अलीख़ाँ मन्त्री औरंगज़ेब के यहाँ थे। तोष की श्रेणी के कवि हैं। इनका अस्तित्व सन्दिग्ध है। २७ वें अध्याय के नाथ देखिए।

नाम—(६११) मनोहर।

कविताकाल—१७५७।

ग्रन्थ—(१) राधारमण सागर, (२) नाम-लीला (पृष्ठ ३८), (३) धर्मपत्रिका।

नाम—(६१२) राजाराम।

ग्रन्थ—षटपंचाशिका।

कविताकाल—१७५७।

नाम—(६१३) शारदा पुत्र।

ग्रन्थ—कोकसार।

कविताकाल—१७५७।

नाम—(६१४) शिवदास, अकबरपुर।

ग्रन्थ—शालिहोत्र।

कविताकाल—१७५७।

विवरण—आश्रयदाता इनके राजा दलपतिराय दतिया के थे।

नाम—(६१५) कुवँर गोपालसिंह बुँदेलखंडी।

ग्रन्थ—रागरत्नावली।

कविताकाल—१७५८।

विवरण—बुँदेला ठाकुर तिलोकसिंह के पुत्र।

नाम—(६१६) रूपाराम गूदड़।

ग्रन्थ—भागवत दशम स्कंध भाषा।

कविताकाल—१७५८।

विवरण—चित्रकूट का महंत।

नाम—(६१७) ईश्वर कवि।

जन्मकाल—१७३०।

कविताकाल—१७६०।

विवरण—ये औरंगज़ेब के यहाँ थे। इनकी रचना तोष कवि की श्रेणी की है।

नाम—(६१८) दामोदर।

ग्रन्थ—स्फुट पद।

कविताकाल—१७६०।

विवरण—हित सम्प्रदाय के।

नाम—(६१९) भावन बुँदेल खंडी।

कविताकाल—१७६०।

नाम—(६२०) मुहम्मद शाह।

ग्रन्थ—(१) बारहमासा, (२) स्फुट।

जन्मकाल—१७३५।

कविताकाल—१७६०।
विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६२१) रसलाल बुँदेलखंडी।
जन्मकाल—१७३३।
कविताकाल—१७६०।
विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६२२) रामराय भगवान जू।
ग्रन्थ—स्फुट पद।
कविताकाल—१७६०।
विवरण—ये महाशय कहीं के राजा थे।

नाम—(६२३) जनमोला।
ग्रन्थ—भगवत गीता का हिन्दी अनुवाद।
कविताकाल—१७६२ के पूर्व।

नाम—(६२४) अब्दुल्जलील बिलगराम।
ग्रन्थ—स्फुट।
जन्मकाल—१७३८।
कविताकाल—१७६५।
विवरण—औरंगजेब के दरबार में थे।

नाम—(६२५) कनक।
जन्मकाल—१७४०।
कविताकाल—१७६५।

नाम—(६२६) प्राणनाथ त्रिवेदी।

ग्रन्थ—कल्किचरित्र।

कविताकाल—१७६५।

नाम—(६२७) धारण भूपाल वाले।

ग्रन्थ—रसिकविलास।

जन्मकाल—१७४०।

कविताकाल—१७६५।

विवरण—ये सुजाउलशाह राजगढ़ के यहाँ थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(६२८) वंसीधर कायस्थ।

ग्रन्थ—दस्तूर मालिका। (३४ पृष्ठ)

कविताकाल—१७६५।

विवरण—हिसाब की रीति।

नाम—(६२९) रतन।

ग्रन्थ—(१) रसमंजरी, (२) बुद्धिचातुरीविचार, (३) चूकविवेक, (४) दोहे, (५) विष्णुपद, (६) अलंकारदर्पण।

जन्मकाल—१७३८।

कविताकाल—१७६५।

विवरण—साधारण श्रेणी। सभाशाह पन्ना-नरेश के यहाँ थे। खोज से विदित होता है कि उड़छा के दीवान हिन्दूसिंह इनके आश्रयदाता थे।

नाम—(६३०) चन्द्रलाल गोस्वामी राधावल्लभी ।

ग्रन्थ—(१) वृन्दावन प्रकाशमाला, (२) उत्कंठा माधुरी, (३) भगवतसारपचीसी, (४) वृन्दावनमहिमा, (५) भावनाप्रबोधिनी, (६) अभिलाषबत्तीसी, (७) समयपचीसी, (८) स्फुट कविता, (९) समयप्रबोध, (१०) भावनापचीसी ।

कविताकाल—१७६७ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(६३१) हरिसेवक केशवदास के भाई कल्यानदास के प्रपौत्र ।

ग्रन्थ—(१) कामरूप की कथा, (२) हनुमान जी की स्तुति ।

कविताकाल—१७६७ ।

विवरण—कुमार पृथ्वीसिंह महाराज उदयसिंह उड़छा-नरेश के यहाँ थे ।

नाम—(६३२) जगन्नाथदास ।

ग्रन्थ—(१) मनबत्तीसी व गुरुमहिमा, (२) गुरुचरित्र ।

कविताकाल—१७६८ ।

विवरण—तुलसीदास की शिष्य-परंपरा में थे ।

नाम—(६३३) मदनकिशोर ।

कविताकाल—१७६८ ।

विवरण—साधारण कवि । बहादुर शाह के यहाँ थे ।

नाम—(६३४) प्रिया सखी बखत कुँवरि महारानी ।

ग्रन्थ—(१)बानी, (२) प्रिया सखी जी की गारी।

कविताकाल—१७६९।

विवरण—राधावल्लभी सम्प्रदाय।

नाम—(६३५) चैनराय।

ग्रन्थ—भक्तिसुमिरनी।

कविताकाल—१७६९।

विवरण—प्रियादास के चेले थे।

नाम—(६३६) गड्डू राजपूताने के।

कविताकाल—१७७०।

विवरण—कूट काव्य व छप्पै इत्यादि अच्छे हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(६३७) मनसुख।

जन्मकाल—१७४०।

कविताकाल—१७७०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६३८) मिश्र।

जन्मकाल—१७४०।

कविताकाल—१७७०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६३९) मुरलीधर उपनाम मुरली।

ग्रन्थ—(१) कवि विनोद, (२) रसविनोद, (३) श्री साहब जी की कविता।

जन्मकाल—१७४०।

कविताकाल—१७७०।

विवरण—साधारण श्रेणी। इन्होंने श्रीधर के साथ रस-
विनोद बनाया।

नाम—(६४०) रविदत्त।

जन्मकाल—१७४२।

कविताकाल—१७७०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

चौबीसवाँ अध्याय।

माध्यमिक देवकाल (१७७१ से १७९० तक)।

(६४१) घनआनन्द।

ये महाशय जाति के कायस्थ दिल्ली वासी थे। नादिरशाह द्वारा मथुरा विजय के समय संवत् १७९६ में ये मारे गये। इनका कविताकाल संवत् १७७१ से १७९६ तक समझना चाहिए। इन्होंने सुजानसागर, कोकसार, घनानन्द कवित्त, रसकेलिबल्ली और कृपाकाड निबन्ध नामक ग्रन्थ बनाये, जो खोज में मिले हैं। सरदार कवि ने अपने संग्रह में इनके प्रायः डेढ़ सौ छन्द लिखे हैं और इनके ४२५ छन्दों का एक स्फुट संग्रह और हमने देखा है। इनके अतिरिक्त हमको इनका ५४२ बड़े पृष्ठों का एक भारी ग्रंथ

संवत् १८८२ का लिखा हुआ दरबार छतरपूर के पुस्तकालय में देखने को मिला, जिसमें १८११ विविध छन्दों तथा १०४४ पदों द्वारा निम्न लिखित विषय वर्णित हैं: — प्रियाप्रसाद, ब्रजव्योहार, वियोगबेली, कृपाकंदनिबंध, गिरिगाथा, भावनाप्रकाश, गोकुलविनोद, ब्रजप्रसाद, धामचमत्कार, कृष्णकौमुदी, नाममाधुरी, वृंदावन-मुद्रा, प्रेमपत्रिका, ब्रजवर्णन, रसबसंत, अनुभवचंद्रिका, रंग-बधाई, परमहंसवंशावली और पद। इनमें पदों की रचना साधारण है और उनमें भक्ति तथा ब्रजलीलाओं का वर्णन किया किया है। दूसरे वर्णन विविध छन्दों में किये गये हैं जिनमें कवित्त तथा सवैयाओं की अधिकता है। इनमें कथित विषयों का ज्ञान उनके नामों ही से प्रकट होता है। इनमें ब्रजव्योहार, वियोगबेली, भावनाप्रकाश, धामचमत्कार, कृष्णकौमुदी, वृंदावनमुद्रा, मुरलिकामोद, प्रेमपत्रिका, आदि पर कविता है। यह साहित्य सरस और प्रशंसनीय है। इनकी भाषा एवं कविता बहुतही शुद्ध तथा रसीली होती थी। इस भारी ग्रंथ में हर स्थान पर भक्ति का चमत्कार देख पड़ता है। घनआनन्द को लोग वेसिक समझते हैं। यह विचार इनकी स्फुट रचना देखने से उठता है, परन्तु जान पड़ता है कि उमर ढलने पर इनके चित्त में ग्लानि होकर निर्वेद उत्पन्न हुआ, जिससे यह श्री जाकर निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित होकर ब्रजवास करने लगे। वृंदावन धाम यह भाव इनकी इस रचना से दृढ होता है।

गुरनिबनायो राधामोहन हू गायो
सदा सुखद सुहायो वृंदावन गाढे गहिरे।

अद्‌भुत अभूत महि मंडन परेते परे
　　जीवन को लाहु हा हा क्यों न ताहि लहिरे ।
आनँद को घन छायो रहत निरंतर ही
　　सरस सुदेयसों पपीहा पन बहिरे ।
यमुना के तीर केलि कोलाहल भीर ऐसी
　　पावन पुलिन पै पतित परि रहिरे ॥ १ ॥

ऊधौ विधि ईरित भई है भागकीरति
　　लही रति जसोदा सुत पायनि परसकी ।
गुलम लना ह्वै सीस धरयौ चाहे धूरि जाकी
　　कहिए कहां निकाई महिमा सरस की ॥
झूम्योई रहत सदा आनँद को घन जहां
　　चातकी भई है मति माधुरी बरस की ।
आंखिन लगी है प्रीति पूरन पगी है
　　अति आरति जगी है ब्रज भूमिके दरस की ॥ २ ॥

इन के इस ग्रंथ से दो एक उदाहरण नीचे देते हैं ।

सरस सुगंध भांति भांति भाव फूल बिछे
　　समरस रीति जामैं कसरि की झोलना ।
बिसद सुबासना बसन सौं सुधारि सज्यो
　　चौकस गुननि गस्यौ गूढ गास खोलना ॥
राधा ब्रजमोहन, विरास के सुवासक है
　　दोऊ एक बानक सलोने मिठबोलना ।

तनक हू क्यौं न बसौ बसन तनक मेरो मन
ब्रजमंडल को उड़न खटोलना ॥ ३ ॥

जात नए नए नेह के भार बिधे उर ओर घनी बरुनी के।
आनँद मैं मुसकानि उदोत मैं होत दै बोलन सोत अमीं के॥
भोर की आवनि प्रान अकोर किए नितही चलि आए जहीं के
ह्यारिए जू तिन तोरि कै लालन भोर दिनान तैं लागत नीके ॥४॥

बिरह बिसूरे पोर पूरे मन सबन के
राति द्यौस भयो जिन्हैं पलकौ कलन को।
बैंध आस बोसनि सहारैं हाय कैसे करि
जिनको दुसह दीसै परिबो पलन को॥
या बिधि बियोग बावरो भयो है ब्रज सब
बाढ़त उदेग महा अँनर दलन को।
आनँद पयोद के पपीहनि पै छायो अब
दीरघ दुसह घाम स्याम के चलन को ॥ ५ ॥

आँखिन को जो सुख निहारे जमुना के तीर
सो सुख बखाने न बनत देखिबेई है।
गौर स्याम रूप आदरस है दरस जाको
गुपित प्रगट भावना बिसेखिबेई है।
जुगकूल सरस सलाका दीठि परस ही
अंजन सिँगार रूप अचरेखिबेई है।
आनँद के घन माधुरी को भार लागि रही
तरल तरंगिनि की गति लेखिबेई है ॥ ६ ॥

धुनि पूरि रहै नित काननि मैं ब्रज को उपराजियोईसी करै ।
मन मोहन गोहन जोहन के अभिलाख समाजियोई सी करै ॥
घन आनँद तीखिये ताननि सों सर से सुर साजियोई सी करै ।
कित ते यह योखिनि बाँसुरिया बिन बाजेई बाजियोई सी करै ॥ ७ ॥
तब तो छवि पीवत जीवत है अब सोचन लोचन जात जरे ।
हित पोष के तोष सुप्रान पले बिललात महा दुख दोष भरे ॥
घन आनँद मीत सुजान बिना सब ही सुख साज समाज टरे ।
तब हार पहार से लागत है अब आनि के बीच पहार परे ॥ ८ ॥
पहिले अपनाय सुजान सनेह सों क्यों फिरि नेह को तोरिये जू ।
निरधार अधार दै धार मँझार दई गहि बाँह न बोरियें जू ॥
घन आनँद आपने चातिक को गुन बाँधि कै मोहन छोरिये जू ।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यों बिस घोरिये जू ॥ ९ ॥

घनानन्द जी निम्बार्क सम्प्रदाय के वैष्णव थे ।

नाम—(६४२) रामश्याम कायस्थ (पंचोली) मेडता मारवाड़ ।
ग्रन्थ—ब्रह्माण्डवर्णन ।
कविताकाल—१७७७ ।
विवरण—श्लोक-संख्या २७०० । आश्रयदाता अजीतसिंह ।

(६४३) श्रीपति कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।

ये महाशय भाषा-साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं । इन्हों ने संवत् १७७७ में काव्यसरोज नामक ग्रन्थ बनाया, जिसे श्रीपति-सरोज भी कहते हैं । इस ग्रन्थ से एवं अन्य प्रकार से इनके कई

ग्रन्थों के नाम ज्ञात हुए हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं। काव्यसरोज (श्रीपति सरोज), विक्रमविलास, कविकल्पद्रुम, सरोजकलिका, कल्पद्रुम, रससागर, अनुप्रास विनोदय, और अलंकार गंगा इनके ग्रन्थों के नाम हैं। इन महाशय ने दशांग काव्य पर रीति ग्रन्थ बनाये हैं और सब अंगों का भली भाँति वर्णन किया है। दूषणों के उदाहरणों में इन्होंने केशवदास की कविता के छन्द भी रक्खे हैं। काव्य रीति जानने वालों में दासजी एक प्रधान कवि हैं। उन्होंने काव्यरीति परम गम्भीरतापूर्वक कही है। पर उन्होंने भी श्रीपति महाराज वाले अनेकानेक भाव बहुतायत से अपनी कविता में जैसे के तैसे चुरा कर रख लिये हैं और रक्खे भी हैं अपने प्रधान ग्रन्थ काव्यनिर्णय में। इससे श्रीपति महोदय का महत्त्व प्रकट होता है। इनकी कविता अत्यन्त गम्भीर, निर्दोष एवं मनोहर है। इन्होंने अनुप्रास और यमक को बहुत आदर नहीं दिया और उचित रीति से इनका प्रयोग किया। आपने अपनी रचना में काव्य प्रणाली को ऐसा साफ किया है कि चित्त प्रसन्न हो जाता है। हम को इनके ग्रन्थों में केवल श्रीपतिसरोज के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, पर इसी एक ग्रन्थ से इनकी आचार्यता भलीभाँति झलकती है। हम इन्हें दास कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

घूंघुट उदय गिरिवर ते निकसि रूप-
सुधा सो कलित छबि कीरति बगारो है।
हरिन डिठौना स्याम सुख सील बरषत
करषत सोक अति तिमिर बिदारो है॥

श्रीपति बिलोकि सौति बारिज मलिन होति
हरषि कुमुद फूलै नन्द को दुलारो है॥
रंजन मदन मन गंजन बिरह बिबि
खंजन सहित चन्द बदन तिहारो है॥१॥
भौंरन की भीर लैके दच्छिन समीर धीर
डोलति है मन्द अब तुम धौं किते रहे॥
कहै कवि श्रीपति हो प्रबल बसन्त मति-
मन्त मेरे कन्त के सहायक जिते रहे॥
आगहि बिरह ज्वर जोर तै पवन ह्वै कै
पर धूम भूमि पै सम्हारत निते रहे॥
रति को बिलाप देखि करुना अगार कछू
लोचन को मूंदि कै तिलोचन चितै रहे॥२॥

श्रीपति महाराज ने रूपक और उपमायें बहुत सुन्दर कही हैं और जो विषय उठाया है उसी पर पीयूष-वर्षा की है। इनका निवास-स्थान कालपी था। इनके विषय में उपर्युक्त बातें इनके ग्रन्थ से ही ज्ञात हुई हैं।

(६४४) महाराजा विश्वनाथसिंह।

आप महाराजा जयसिंह के पुत्र और महाराजा रघुराजसिंह के पिता थे। अपने पिता के पीछे आप संवत् १७७८ (सन् १८३५) में बांधव (रीवाँ) नरेश हुए और संवत् १७८७ (सन् १८५४) तक राज करते रहे। ये महाराज अच्छे कवि थे और कवियों एवं विद्वानों का इन्होंने अच्छा सम्मान किया। इनकी भाषा ब्रजभाषा

और कविता प्रशंसनीय है। इन्होंने अनेक ग्रन्थ बनाये जिनके नाम नीचे लिखे जाते हैं:—

(१) अष्टयाम का आह्निक, (२) आनन्द रघुनन्दन नाटक, (३) उत्तम काव्यप्रकाश, (४) गीतारघुनन्दनशतिका, (५) रामायण, (६) गीतारघुनन्दनप्रमाणिक, (७) सर्वसंग्रह, (८) कबीर के बीजक की टीका, (९) विनयपत्रिका की टीका, (१०) रामचन्द्र की सवारी, (११) भजन, (१२) पदार्थ, (१३) धनुर्विद्या, (१४) परानीयतत्त्वप्रकाश, (१५) आनन्द रामायण, (१६) परमधर्मनिर्णय, (१७) शांतिशतक, (१८) वेदान्तपंचकशतिका, (१९) गीतावली पूर्वार्ध, (२०) ध्रुवाष्टक, (२१) उत्तम नीतिचन्द्रिका, (२२) अबोधनीति, (२३) पाखंडखंडिनी, (२४) आदिमंगल, (२५) वसन्त, (२६) चौंतीसी, (२७) चौरासी रमैनी, (२८) कहरा, (२९) शब्द, (३०) विश्वभोजनप्रसाद।

आपका केवल एक कवित्त दिया जाता है, जिससे कविता-चमत्कार प्रकट है।

उदाहरण।

बाजी गज सोर रथ सुतुर कतारे जेते
 प्यादे ऐंडवारे जे सबीह सरदार के।
कुँवर छबीले जे रसीले राज बंश वारे
 शूर अनियारे अति प्यारे सरकार के॥
केते जाति वारे केते केते देश वारे
 जीव श्वान सिंह आदि सैल वारे जे शिकार के।

डंका की धुकार ह्वै सवार सबै एक बार
राजैं वार पार कार कोशल कुमार के ॥

(६४५) वीर।

ये महाशय श्रीवास्तव कायस्थ दिल्ली-निवासी थे। इन्होंने कृष्ण-चन्द्रिका नामक नायिका-भेद का ग्रंथ संवत् १७७९ में बनाया जिस में ४२१ दोहा, सवैया, घनाक्षरी इत्यादि द्वारा नायिका भेद एवं रस-भेद कहा गया है। भाषा इनकी ब्रज भाषा है ग्रैर यह सराहनीय है। हम इनको साधारण श्रेणी का कवि समझते हैं। उदाहरणों पर निगाह कीजिए।

अरुन बदन ग्रैर फरकैं बिसाल बाहु
कैान को हियो है करै सामुहे जु रुख को।
प्रबल प्रचंड निसिचर फिरैं धाए
धूरि चाहत मिलाये दसकंध अंधमुख को ॥
चमकैं समर भूमि बरछी सहस फन
कहत पुकारे लंक अंक दीह दुख को।
बलकि बलकि बोलैं बीर रघुबीर धीर
महि पर मीडि मारैां आजु दसमुख को ॥

कंज कली मुख खोलति भान सों देखो प्रतच्छ नहीं कछु जोलो।
दामिनि हू घन सैाह से देखी तै राखति नाहिनै लाज को मोलो ॥
हौसें रहैं मन भावन के मन मैं तुम नेकु नहीं मुख खोलो।
नाहीं बलाय ल्यों ऐसो न कीजिए नीकेई कान्हर सों हँसि बोलो ॥

(६४६) सीतल।

ये महाशय स्वामी हरिदास वाली टट्टी सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध महन्त थे। इनका समय १७८० के लग भग इनके सम्प्रदाय के महन्त बतलाते हैं + पंडित नन्दकिशोर जी मिश्र (लेखराज) गँधौली वाले हमारे भाई होते थे। उनका जन्म सं० १८८७ में हुआ था। वे कहते थे कि उन्होंने सीतल की कविता सुनी थी और यह भी सुना था कि ये प्राचीन कवि हैं। इससे भी जान पड़ता है कि इनका कविता-काल प्राचीन है।

इनके विषय में यह किंवदंती कहीं कहीं सुन पड़ती है कि ये ज़िला हरदोई शाहाबाद के समीप किसी ग्राम के निवासी ब्राह्मण थे और लालबिहारी नामक किसी लड़के पर आसक्त थे। हमारे पास इनका तीन हिस्सा "गुलज़ार चमन" छपा हुआ प्रस्तुत है, जिसमें २५७ छन्द हैं और इनके कुछ स्फुट छन्द भी हमारे पास हैं। सुन पड़ता था कि सीतल ने इसी प्रकार के चार चमन बनाये थे। गुलज़ार चमन के पढ़ने से विदित होता है कि सीतल का लालबिहारी नामक बालक पर आसक्त होना भ्रममूलक है, क्योंकि इन्होंने लालबिहारी के नाम से ईश्वर का वर्णन किया है, जैसा कि निम्न लिखित छन्दों से प्रकट होता है:—

मेरे उर बीच समाय रहे वे चिन्ह अहिल्या तारी के।
दुख हरन कलुष के नास करन बारिज पद लालबिहारी के॥

शिव विष्णु ईश बहु रूप तुही नभ तारा चारु सुधाकर है।
अंबा धारानल शक्ति स्वधा स्वाहा जल पवन दिवाकर है॥
हम अंशाअंश समझते हैं सब ख़ाक जाल से पाक रहें।
सुन लालबिहारी ललित ललन हम ते तेरेई चाकर हैं॥

कारन कारज ले न्याय कहे जोतिस मत रवि गुरु ससी कहा।
ज़ाहिद ने इश्क़ हसन यूसुफ़ अरहंत जैन छवि बसी कहा॥
रत राज रूप रस प्रेम इश्क़ जानी छबि शोभा लसी कहा।
लाला हम तुम को वह जाना जो ब्रह्म तत्त्वत्वमअसी कहा॥

उपरोक्त छन्दों को देख कर कोई भी विचारवान् पुरुष यह नहीं कह सकता कि सीतल का चालचलन ख़राब था। उपरोक्त आक्षेप किसी ने सीतल के दो चार स्फुट छन्दों को देख कर भ्रम-वश कर दिया है, क्योंकि इनके कुछ छन्दों का भाव दूसरी तरफ़ भी लगाया जा सकता है। इनके ग्रन्थ को आज कल के महन्त ने बड़े आदर से छपवाया है। इसमें गुलज़ारचमन, आनन्दचमन और बिहारचमन नामक तीन भाग हैं, जिनमें १२१, ११२ और २४ छन्द हैं। तीनों चमनों में प्रधानतया नख-शिख का विषय है, यद्यपि और और विषयों के भी छन्द हैं।

सीतल के चमन वास्तव में भाषा-साहित्य के अपूर्व रत्न हैं। इसके सब छन्द प्रेम से परिपूर्ण हैं। इसमें मुख्यतया नख-शिख कहा गया है और पोशाकों एवं पगड़ियों का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इनकी पूरी रचना में एक छन्द भी शिथिल या नीरस नहीं है और यह बड़ी ही ज़ोरदार एवं चित्ताकर्षिणी है। इनके सब छन्द

खड़ी बोली में हैं। खड़ी बोली के कवियों में सीतल का आसन प्रथम ज्ञात पड़ता है, क्योंकि इनके पहले का और कोई खड़ी बोली का पद्य ग्रन्थ अब तक दृष्टिगोचर नहीं हुआ, केवल किसी किसी कवि के दो एक ऐसे छन्द मिलते हैं। खड़ी बोली में यद्यपि जितने कवियों ने रचनायें की हैं, वे इनकी रचना के सामने आदरणीय नहीं हैं। जो लोग खड़ी बोली पर यह दोष आरोपित करते हैं कि इसमें उत्तम कविता नहीं हो सकती उनको सीतल की रचना देख कर अपना दुराग्रह अवश्यमेव छोड़ देना चाहिए। बात यह है कि उत्तम कवि किसी भी भाषा में मनमोहनी कविता कर सकता है, उसके वास्ते किसी भाषा एवं किसी विषय का अवलंबन आवश्यक नहीं।

सीतल की कविता में शब्द-वैचित्र्य का भी बल है। इन महाशय की रचना देखने से ज्ञात पड़ता है कि ये भाषा के विद्वान् होने के अतिरिक्त फ़ारसी तथा संस्कृत के भी पूर्णज्ञाता थे और ज्योतिष का भी अभ्यास रखते थे। इन्होंने बड़ी ही उछलती हुई भाषा में रचना की है और उर्दू के कवियों की भाँति बड़े बड़े तलाज़िमे बाँधे हैं। इनकी रचना में हर स्थान पर लालबिहारी में ईश्वरीय भाव स्थापन से ईश्वर में कुछ लघुता आ सकती है, परन्तु कष्ट-कल्पना से हक़ीक़ी अर्थ हो अवश्य सकता है। इनकी रचना में स्वच्छन्द उमंग, उपमा, रूपक और अनूठेपन की ख़ूब बहार है और ख़यालात की बलन्द परवाज़ी तथा बारीकियाँ अच्छी हैं। इनकी गणना हम पद्माकर की श्रेणी में करते हैं। कुछ छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं :—

मुख सरद चन्द्र पर ठहर गया जानो के बुंद पसीने का।
या कुंदन कमल कली ऊपर भमकाहट रक्खा मीने का ॥
देखे से होश कहाँ रहवे जो पिदर बूअली सीने का।
या लालपदश्शाँ पर खाँचा चौका इल्मास नगीने का ॥

हम खूब तरह से जान गए जैसा आनँद का कंद किया।
सब रूप सील गुन तेज पुंज तेरे ही तन में बंद किया ॥
तुभ हुस्न प्रभा की बाकी ले फिर विधि ने यह फरफद किया।
चंपकदल सोनजुही नरगिस चामीकर चपला चंद किया ॥

मुख सरद चन्द्र पर स्रम सीकर जगमगैं नखत गन जोती से।
कै दल गुलाब पर शबनम के हैं कनके रूप उदोती से ॥
हीरे की कनियाँ मंद लगैं हैं सुधा किरन के गोती से।
आया है मदन आरती को धर कनक थार में मोती से ॥

बरनन करने को क्या बरनूँ बरनूँगा जेती बानी है।
ग्रह तीन उच्च के पड़े हुए जानी यह यूसुफ़ सानी है ॥
ससि भवन जीव सफरी में गुर कन्या बुध जोतिप शानी है।
इस लालविहारी की सीतल क्या अर्ध चन्द्र पेशानी है ॥

चन्दन की चौकी चारु पड़ी सोता था सब गुन जटा हुआ।
चौके की चमक अधर बिहँसन मानों यक दाड़िम फटा हुआ ॥
ऐसे में ग्रहन समै सीतल यक ख्याल बड़ा अटपटा हुआ।
भूतल ते नभ नभते अवनी अग उछलै नट का बटा हुआ ॥

सीतल का शुद्ध समय हमें हाल ही में ज्ञात हुआ है।

खड़ी बोली में है। खड़ी बोली के कवियों में सीतल का नम्बर प्रथम जान पड़ता है, क्योंकि इनके पहले का कोई खड़ी बोली का पद्य ग्रन्थ अब तक दृष्टिगोचर नहीं हुआ, केवल किसी किसी कवि के दो एक ऐसे छन्द मिलते हैं। इस बोली में अद्यावधि जितने कवियों ने रचनायें की हैं, वे इनकी रचना के सामने आदरणीय नहीं हैं। जो लोग खड़ी बोली पर यह दोष आरोपित करते हैं कि इसमें उत्तम कविता नहीं हो सकती उनको सीतल की रचना देख कर अपना दुराग्रह अवश्यमेव छोड़ देना चाहिए। बात यह है कि उत्तम कवि किसी भी भाषा में मनमोहनी कविता कर सकता है, उसके वास्ते किसी भाषा एवं किसी विषय का अवलंबन आवश्यक नहीं।

सीतल की कविता में शब्द-वैचित्र्य का भी बल है। इन महाशय की रचना देखने से जान पड़ता है कि ये भाषा के विद्वान् होने के अतिरिक्त फ़ारसी तथा संस्कृत के भी पूर्णज्ञाता थे और ज्योतिष का भी अभ्यास रखते थे। इन्होंने बड़ी ही उड़ती हुई भाषा में रचना की है और उर्दू के कवियों की भाँति बड़े बड़े तलाज़िमे बाँधे हैं। इनकी रचना में हर स्थान पर लालनिदारी में ईश्वरीय भाव स्थापन से ईश्वर में कुछ लघुता आ सकती है, परन्तु कष्ट-कल्पना से इश्क़ी अर्थ हो अवश्य सकता है। इनकी रचना में स्वच्छन्द उमंग, उपमा, रूपक और अनूठेपन की ख़ूब बहार है और ख़यालात की बलन्द परवाज़ी तथा बारीकियाँ अच्छी हैं। इनकी गणना हम पद्माकर की श्रेणी में करते हैं। कुछ छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं :—

हीतल को सीतल करत घनसार है
महीतल को पावन करत गंग धार है ॥

(६४८) घाघ कवि-कन्नौज निवासी।

ये महाशय १७५३ में उत्पन्न हुए और १७८० में इन्हों ने कविता की। मोटिया नीति आपने बड़ी जोरदार ग्रामीण भाषा में कही है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

मुए चाम ते चाम कटावैं सकरी भुँइ मा स्वावैं।
घाघ कहैं ई तीनिउ भकुहा उढरि गये पर ख्वावैं।
चला पहिरे हर ज्वातैं औ बोझु धरे अँठिलायँ।
घाघ कहैं ई तीनिउ भकुहा पीसत पान चबायँ॥
उधार काढ़ि बेउहार चलावैं छप्पर डारैं तारो।
सारे के सँग बहिनी पठवैं तीनिउ का मुँह कारो॥

कुचकट पनही बतकट जोय। जो पहिलौठी बिटिया होय॥
पातरि कृपी बोरहा भाय। घाघ कहैं दुख कहाँ समाय॥

(६४९) महात्मा श्रीनागरीदास जी महाराजा।

इस नाम के चार पांच कवि ब्रज-मण्डल में हुए हैं। इनमें से एक श्री वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के, एक स्वामी हरिदास जी की सम्प्रदाय के, एक गोस्वामी हित हरिवंशजी की सम्प्रदाय के और एक हमारे चरित्र नायक महाराजा नागरीदासजी वल्लभीय सम्प्रदाय के थे। इन कविवर का वर्णन सरोजकार ने किया है, परन्तु

(६४७) ऋषिनाथ।

ये महाशय असनी के बन्दीजन प्रसिद्ध कवि ठाकुर के पिता और सेवक के प्रपितामह थे। ये स्वयं भी प्रसिद्ध कवि थे और इनके स्फुट छन्द बहुत विशद मिलते हैं। काशिराज के दीवान सदानन्द तथा रघुवर कायस्थ के आश्रय में संवत् १८३१ में इन्हों ने अलंकार मणि मंजरी नामक एक उत्तम ग्रन्थ भी बनाया। इस के ४८३ छन्दों में दोहे विशेष हैं, पर कहीं कहीं घनाक्षरी, छप्पय आदि भी हैं। इनकी कविता ब्रजभाषा में है। इनकी भाषा स्वच्छ और गम्भीर है और दोहों में इनके भावों में अनोखापन देख पड़ता है। इनका कविता-काल १७८० से प्रारम्भ होना अनुमान-सिद्ध है, क्योंकि ठाकुर का कविता-काल १८०० के लगभग समझ पड़ता है (ठाकुर का हाल देखिए)। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

श्री नँदलाल तमाल सो, स्यामल तन दरसाय।
ता तन सुबरन बेलि सी राधा रही समाय॥

छाया छत्र ह्वै करि करत महिपालन को
पालन को पूरो फैलो रजत अपार ह्वै।
मुकुत उदार ह्वै लगत सुख श्रौनन में
जगत जगत हंस हाँसी हीसहार ह्वै॥
ऋषिनाथ सदा नन्द सुजस बिलन्द तम
वृन्द को हरैया चन्द चन्द्रिका सहार है।

इनका जन्मसवत् १७५६ पौष कृ० १२ को और व्याह १७७७ में भावनगर के राजावत् यशवन्तसिंह की कन्या से हुआ । आपका प्रथम पुत्र मरगया और द्वितीय पुत्र सरदारसिंहजी आपके उत्तराधिकारी हुए। ये महाराज संस्कृत, फ़ारसी, हिन्दी और डिंगल भाषाओं के अच्छे पण्डित थे। और भी कई प्रांत की भाषायें, यथा गुजराती, पजाबी, गढ़वाली इत्यादि का भी अभ्यास इन्हें था, जैसा कि इनकी रचना से प्रकट होता है । सभव है कि आपने स० १७८० से पहले काव्य करना प्रारम्भ कर दिया हो, क्योंकि आपका पहला ग्रथ "मनोरथमंजरी" स० १७८० में समाप्त हुआ।

कवि होने के साथ ही साथ ये महाशय वीर भी थे। इन्हों ने केवल दस वर्ष की बाल्यावस्था में एक उन्मत्त हाथी का सामना करके एक ही वार में उसे विचलित कर दिया था। १३ वर्ष की अवस्था में इन्हों ने बूँदी के राजा जैतसिंह का समर में वध किया। स० १७७४ में आपने थूण के उस सरदार को पराजित किया, कि जो जयपुर तथा कोटा के महाराजाओ से जीता न जासका था। बीस वर्ष की अवस्था में आपने अकेले ही एक सिंह को मारा। मलारराव से भी इनसे युद्ध हुआ था और घोर सग्राम होने पर भी इन्होने उन्हें कर नहीं दिया । और भी अनेक युद्ध इन्होने किये जिनका वर्णन यहाँ अप्रासगिक है।

ये महाराज वल्लभीय सम्प्रदाय के श्रीगोस्वामी रणछोरदासजी के शिष्य और व्रज तथा व्रजवासी कृष्ण के पूर्ण भक्त थे।

सं० १६४८ दिया है। उसी के अनुसार डाक्टर ग्रियर्सन साहब ने भी सन् १५९१ लिख दिया, परन्तु शिवसिंहजी तथा डाक्टर साहब का मत भ्रममूलक है। इन लोगों ने बिना किसी आधार के यह संवत् मान लिया है, जो कि नागरीदास जी के स्वरचित ग्रन्थों ही के समय से अशुद्ध ठहरता है। नागरीदास जी की सर्व प्रथम रचना मनोरथम जरी है जो संवत् १७८० में बनी।

सम्वत सत्रह सै असी, चौदसि मंगल वार।
प्रगट मनोरथ मंजरी यदि आसु अवतार॥

नागरीदास के जीवन-चरित्र में इनका जन्म काल सं० १७५६ पौष कृ० १२ दिया हुआ है, जो वर्तमान महाराज कृष्णगढ़ की आज्ञा से लिखा गया और संवत् १९५५ में मुद्रित हुआ।

इसके विषय में किसी तरह का सन्देह नहीं किया जा सकता।

हमारे चरित्र नायक का नाम महाराज सावतसिंहजी था और ये कविता में अपना नाम नागर, नागरि, नागरिया और नागरीदास रखते थे। आपके पिता महाराजा राजसिंह, पितामह महाराजा मानसिंह और प्रपितामह महाराजा रूपसिंह जी थे। इनकी राजधानी कृष्णगढ़ राजपूताना के अंतर्गत है। नागरीदासजी का जन्म राठौर कुल के क्षत्रियों में हुआ था। पहले कृष्णगढ़ राजधानी नहीं थी, वरन् इसकी जगह राजधानी रूपनगर में थी, जो अबतक इनके वंशधरों के राज्य में है। महाराजा नागरीदासजी का जन्म स्थान और राजधानी यही रूपनगर था, परन्तु अब राजधानी कृष्णगढ़ में है, इसी कारण ये कृष्णगढ़ के महाराजा कहे गये हैं, जिसमें स्थान जानने में किसी को भ्रम न पड़े।

ब्रज में है है कहत दिन किते दिये लै खोय।
अबके अबके कहत ही वह अबके कब होय॥

पाठक महाशय! देखिए इस कविता से कैसा निर्वेद टपकता है? ब्रज में पहुँचने पर ये कैसे प्रसन्न हुए थे सो निम्न पद से झलकता है :—

हमारी सबही बात सुधारी।
कृपा करी श्री कुंज बिहारिनि अरु श्री कुंज बिहारी॥
राख्यो अपने वृन्दावन में जिहि को रूप उँज्यारी।
नित्त केलि आनन्द अखंडित रसिक संग सुख कारी॥
कलह कलेस न व्यापै यहि ठां ठौर विश्व ते न्यारी।
नागरि दासहि जनम जिवायो बलिहारी बलिहारी॥ १॥
गौर सांवरे रसिक दोउ यह दीजै सुखरास।
कबहुँ नागरी दास अब तजै न ब्रज को वास॥ २॥

और भी इनकी कविता में स्थान स्थान पर ब्रज की प्रशंसा मिलती है। यहीं भाद्र शु० ३ सं० १८२१ को ये ६४ वर्ष ८ महीने की अवस्था में इस असार संसार को छोड़ गोलोकवासी हुए।

महात्मा नागरीदासजी ने सं० १७८० से लेकर सं० १८१९ पर्यंत अखंड साहित्य स्रोत बहाया। इनकी कविता की ख्याति इनके जीवन-काल ही में विशेष रूप से हो गई थी और उसे वृन्दावनवासी गृहस्थ तथा संसारत्यागी साधु महात्मा सभी पसंद करते थे। एक बार ये श्री वृन्दावन में गये। जब लोगों ने जाना कि राजा कृष्णगढ़ आये हैं, तो कोई साधु महात्मा इनके पास न गया,

सं० १८०४ में ये दिल्ली के बादशाही दरबार में थे। उस समय अकस्मात् इनके पिता का स्वर्गवास हुआ। अहमद शाह ने बैसाख शु० ५ को इन्हें कृष्णगढ़ का राजा बनाया। ये अपनी राजधानी को जाया चाहते थे कि इन्हें ख़बर मिली कि इनके भाई बहादुर-सिंह ने राज्य पर कब्ज़ा कर लिया है, अतः ये बादशाही दल सहायक लेकर कृष्णगढ़ गये, परन्तु अपने भाई से न जीत सके। उधर बहादुरसिंह ने महाराजा जोधपूर से मेल कर लिया था, सो इन्हें दुबारा मदद देने से बादशाह ने इन्कार कर दिया। ये वहाँ से ब्रज के चले गये ग्रोर वहाँ रह कर इन्होंने मरहटों से संधि करके बहादुरसिंह के परास्त किया ग्रोर अपना राज पाया। उपर्युक्त घराऊ झगड़ों से इनके चित्त में राज्य से इतनी घृणा हो गई कि ये स्वयम् राज्य न लेकर स० १८१४ में आश्विन शु० १० के दिन अपने पुत्र को राज्य पर प्रतिष्ठित करके आप राज पाट, घर द्वार छोड श्री वृन्दावन जाकर भगवद्भक्ति में निमग्न हुए, जैसा कि इनकी कविता से भी जान पडता है।

जहां कलह तहँ सुख नहीं कलह सुखन को सूल।
सबहि कलह यक राज में राज कलह को मूल॥
मैं नित या मन मूढ तैं डरत रहत हैां हाय।
वृन्दावन की ग्रोर तैं मति कबहूँ फिरि जाय॥
लेत न सुख हरि भगत कैा सकल सुखनि कैा सार।
कहा भयो नृपहू भए ढोवत जग बेगार॥
ग्रोर भैान देखैां न अब देखैां वृन्दा भैान।
हरि सों सुधरी चाहिये सबही बिगरै क्यों न॥

गढ़ की आज्ञानुसार मुद्रित करके प्रकाशित किया है। छापा व कागज़ अच्छा है और विषयसूची, पदसूची और जीवनचरित्र इत्यादि लगा कर उत्तम रीति से ग्रंथ छापा गया है। आदि में छप्पन भोग-चन्द्रिका नामक ५२ पृष्ठ का एक ग्रंथ जयकवि रचित भी है। अन्त में महाराज नागरीदासजी की उपपत्नी बनी ठनी उपनाम रसिक बिहारी के भी ६१ पद संग्रहीत हैं। नागरीदासजी के विनय-विलास तथा गुप्तरसप्रकाश नहीं मिलते।

वैराग्यसागर' १५३ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इसमें नागरी-दास जी कृत वैराग्य और भक्ति-सम्बन्धी छोटे छोटे ग्रंथों का संग्रह है।

सिंगारसागर २२१ पृष्ठों का ग्रन्थ है जिसमें श्रीकृष्ण और राधाजी के शृङ्गार-संबन्धी बहुत से ग्रन्थ सम्मिलित हैं।

"पदसागर" में २२० पृष्ठ हैं और इस में विशेषतया पदों के ग्रन्थ संग्रहीत हैं परन्तु कहीं कहीं दोहा या और छन्द भी हैं। नागरी दास जी की भाषा विशेषतया व्रजभाषा है और कहीं कहीं इन्होंने संस्कृत मिश्रित तथा फ़ारसी मिश्रित भाषा का भी प्रयोग किया है। खड़ी बोली की भी कविता इन्होंने कहीं कहीं की है। इश्कचमन में फ़ारसी मिश्रित दोहे बहुत ही उत्तम हैं। गद्य काव्य भी कहीं कहीं आपने किया है। "पदप्रसंगमाला" में वार्तिक वर्णन कई जगह हैं। गुजराती, मारवाड़ी तथा पंजाबी भाषा मिश्रित कविता भी इन्होंने यत्र तत्र की है। व्रज की महिमा वर्णन करने में ये महाराज बहुत विमल जाते थे और जहां जहां व्रज या वृन्दावन के वर्णन इनकी

परन्तु जब उन लोगों को यह विदित हुआ कि ये सुकवि नागरीदासजी हैं, तब क्या पूँछना था, सब बड़ी प्रसन्नता और प्रेम से इनके समीप दौड़ कर जाने लगे और आग्रहपूर्वक इनके पद तथा अन्य कविता सुन कर आनन्द उठाने लगे, जिसका लोमहर्षण वर्णन स्वयम् नागरीदासजी ने यों किया है :—

सुनि व्यवहारिक नाम मो ठाढ़े दूरि उदास।
दौरि मिले भरि नैन सुनि नाम नागरी दास॥

यक मिलत भुजन भरि दौरि दौरि। यक टेरि बुलावत और ओरि॥
केउ चले जात सहजै सुभाय। पद गाय उठन ओगहि सुनाय॥
जे परे धूरि मधि मत्त चित्त। तेउ दौरि मिलन तजि रीति नित्त॥
अतिसय विरक्त जिनके सुभाव। जे गनत न राजा रंक राव॥
ते सिमिटि सिमिटि फिरि आय आय। फिरि छाँड़त पद पढवाय गाय॥

ऊपर की कविता से विदित होता है कि इनके काव्य पर लोगों का कितना प्रेम था? फ़ारसी में शायरों का मत है कि क़द्र मर्दुम बाद मर्दुम

या "जितने शायर हैं फ़ना के बाद है उनकी नमूद।
पल्क से मालूम जब उन्का हुआ शोहरत हुई॥

इन कहावतों को नागरीदास की कविता ने ग़लत साबित कर दिया। महाराज नागरीदासजी के रचित छोटे बड़े ७५ ग्रंथ हैं, जिनमें से ७३ को छोटी सांची के तीन भागों में विभक्त करके वैराग्यसागर, सिंगारसागर और पदसागर के नाम से ज्ञानसागर यंत्रालय के मालिक श्रीधर शिवलालजी ने महाराजा साहब कृष्ण-

गढ़ की आज्ञानुसार मुद्रित करके प्रकाशित किया है। छापा व कागज़ अच्छा है और विषयसूची, पदसूची और जीवनचरित्र इत्यादि लगा कर उत्तम रीति से ग्रंथ छापा गया है। आदि में छप्पन भोग-चन्द्रिका नामक ५२ पृष्ठ का एक ग्रंथ जयकवि रचित भी है। अन्त में महाराज नागरीदासजी की उपपत्नी बनी ठनी उपनाम रसिक बिहारी के भी ६१ पद संग्रहीत हैं। नागरीदासजी के विनय-विलास तथा गुप्तरत्नप्रकाश नहीं मिलते।

वैराग्यसागर' १५३ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इसमें नागरी-दास जी कृत वैराग्य और भक्ति-सबन्धी छोटे छोटे ग्रंथों का संग्रह है।

सिंगारसागर २२१ पृष्ठों का ग्रन्थ है जिसमें श्रीकृष्ण और राधाजी के श्रृङ्गार-सबन्धी बहुत से ग्रन्थ सम्मिलित हैं।

"पदसागर" में २२० पृष्ठ हैं और इस में विशेषतया पदों के ग्रन्थ संग्रहीत हैं परन्तु कहीं कहीं दोहा या और छन्द भी हैं। नागरी दास जी की भाषा विशेषतया ब्रजभाषा है और कहीं कहीं इन्होंने संस्कृत मिश्रित तथा फ़ारसी मिश्रित भाषा का भी प्रयोग किया है। खड़ी बोली की भी कविता इन्होंने कहीं कहीं की है। इश्क़चमन में फ़ारसी मिश्रित दोहे बहुत ही उत्तम हैं। गद्य काव्य भी कहीं कहीं आपने किया है। "पदप्रसंगमाला" में वार्तिक वर्णन कई जगह हैं। गुजराती, मारवाड़ी तथा पंजाबी भाषा मिश्रित कविता भी इन्होंने यत्र तत्र की है। ब्रज की महिमा वर्णन करने में ये महाराज बहुत विमल जाते थे और जहाँ जहाँ ब्रज या वृन्दावन के वर्णन इनकी

कविता में आये हैं ये बहुत ही प्रेमपूर्ण हैं। वृन्दावन से इनको इतना अधिक प्रेम था कि एक दफ़ा ये कहीं से श्रीवृन्दावन आ रहे थे, परन्तु यमुनाजी के किनारे पहुँचते पहुँचते रात हो गई। उस जगह नाव इत्यादि का कोई साधन पार उतरने का न था और न इनको यमुना जी के किनारे श्री वृन्दावन से अलग रात भर पड़ा रहना सह्य हुआ, अतः ये जान पर खेल कर यमुना जी में कूद पड़े और पार होकर श्री वृन्दावन पहुँचे जैसा इन्होंने स्वयम् लिखा है :—

देख्यो श्री वृन्दा विपिन पार। बिच बहत यहाँ गँभीर धार॥
नहिँ नाव नहीं कछु और दाव। हे दई कहा कीजै उपाव॥
रहे वार लगनि को लगी लाज। गए पारहि पूरैं सकल काज॥

प्रेम पथ को पीठि दै यह जीवो न सुहाय।
मङ्गल दिन है आजु को प्रिय सनमुख जिय जाय॥
यह चित्त माँझ करि कै विचार।
परे कूदि कूदि जल मध्य धार॥
वार रहे रहे वार ते पार भए भय पार।
दरसे वृंदा विपिन बिच राधा नन्द कुमार॥

रासलीला का वर्णन इन्होंने बड़े विस्तार और उत्तमता से किया है। आपने रामायण की कथा भी कही है, तथा होली के वर्णन कई स्थानों में बड़े ही मनोहर किये हैं। होली को ये बहुत ही पसंद करते थे। इन्होंने एक जगह कहा है कि —

स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाहिँ तौ कोरी कहा लै करैं ठकुराई।

इनकी कविता बड़ी ही सरस, हृदयग्राहिणी और श्री राधा कृ

की भक्ति से पूर्ण तल्लीनता युक्त है। ये महाशय सुकवि श्रौर ब्रजवासी कृष्ण के अखंड भक्त थे। हम इनकी कविता का अनुभव पाठकों को इनके छंद उदाहरण स्वरूप देकर नहीं करा सकते, न इस लेख में इतना स्थान ही है। हम पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि वे इनकी मन-मोहिनी कविता को अवश्यमेव देखें श्रौर अपने हृदय तथा जिह्वा को पावन करें। श्रब हम इनके दो चार उदाहरण देकर इस लेख को समाप्त करते हैं। इनकी गणना सेनापति की श्रेणी में की जाती है।

उदाहरण।

उज्वल पछ की रैन चैन उज्वल रस दैनी।
उदित भयो उडराज अरुन दुति मन हरि लैनी॥
महा कुपित ह्वै काम ब्रह्म अस्त्रहि छों,ड्यो मनु।
प्राची दिसि तें प्रज्वलित आवत अगिनि उठी जनु॥
दहन मानपुर भये मिलन को मन हुलसावत।
छावत छपा अमंद चंद ज्यों त्यों नभ आवत॥
जगमगाति वन जोति सोत अमृत धारा से।
नव द्रुम किसलय दलनि चारु चमकत तारा से॥
सेत रजन की रैन चैन चित मैन उमहनी।
तैसी मंद सुगंध पौन दिन मनि दुख दहनी॥
मधि नायक गिरिराज पदिक वृन्दावन भूषन।
फटिक सिला मनि शृंग जगमगत दुति निर्दूषन॥
सिला सिला प्रति चंद चमकि किरननि छबि छाई।
बिच बिच अंब कदंब अंब झुकि पायनि आई॥

ठौर ठौर चहुँ फेर ढेर फूलन के सोहत।
करत सुगंधित पवन सहज मन मोहत जोहत॥
बिमल नीर निरझरन कहुँ झरना सुख करना।
महा सुगन्धित सहज घास कुम कुम मद हरना॥
कहुँ कहुँ हीरन खचित रचित मण्डल सुरास के।
जटित नगन कहुँ जुगुल खंभ झूलनि बिलास के॥
ठौर ठौर लखि ठौर रहत मनमथ सो भारी।
बिहरत बिबिध बिहार तहाँ गिरि पर गिरिधारी॥
भुव धनु कच धुरवा छुटे दसन दामिनी वृन्द।
रूप घटा राधे अटा गान गरज धुनि मन्द॥
उमगि मिली इत उत दुहुँ दिसि तें गौर घटा अरु स्याम।
गरजनि मधुर किंकिनी नूपुर चातक बचन रचन मुख बाम॥
श्रम जल बरषत फुही सुही फबि हसन दसन दामिनि अभिराम।
उड़ि उड़ि चलत मनो बक पंगति बिलुलित मुकता दाम॥
कुसुम सेज अवनी विचलित भइ अति आनन्द हिए नृप काम।
नागरिया यहि विधि नित पावस वृन्दावन सुख धाम॥
उस हुस्न के मुकाबिल करना बयान क्या है।
फिर बहम बिन बिचारी शायर ज़बान क्या है॥
कञ्जन हू ते डहडहे बिन अंजन छबि ऐन।
खंजन गति गंजन महा पिय मन रंजन नैन॥
कीनी मृग मद आड़ रचि गोरे बदन मयंक।
मनु पिय मोहन मंत्र की राजत अवली अंक॥

इश्क उसी की झलक है ज्यों सूरज की धूप।
जहाँ इश्क तहँ आप है कादर नादर रूप॥

आया इश्क लपेट में लाई चश्म चपेट।
सोई आया खलक में और भरैं सब पेट॥

रस उरझी निसि श्याम सों आरस उरझे चैन।
तेरी उरझी अलक में मेरे उरझे नैन।

नींद भरे तन लटपटे छके दृगन की हेर।
नागरिया के उर बसौ कुंज भुरहरी बेर॥

किते दिन बिन वृन्दावन खोए।
योंहीं वृथा गए ते अबलौं राजस रंग समोए॥

छाँडि पुलिन फूलन की सज्या सूल सरन पर सोए।
भीजे रसिक अनन्य न दरसे बिमुखन के मुख जोये॥
हरि बिहार की ठौर रहे नहिं अति अभाग्य बलबोए।
कलह सराय बसाय भिठारी माया राँड बिगोए॥

इकसर ह्याँ के सुख तजि कै ह्याँ कबहुँ हँसे कहुँ रोए।
कियो न अपनो काज पराए भार सीस पर ढोए॥
पायो नहीं अनंद लेस मैं सबै देस टकटोए।
नागरिदास बसे कुंजनि में जब सब बिधि सुख भोए॥

भादौं की कारी अँध्यारी निसा झुकि बादर मंद फुही बरसावै।
स्यामाजु आपनी ऊँची अटा पै छकी रस रीति मलारहिं गावै॥
ता समै मोहन के दृग दूरि ते आतुर रूप की भीख यों पावै।
पौन मया करि घूँघुट टारै दया करि दामिनि दीप दिखावै॥

हम ब्रज सुखी ब्रज के जीव।
प्रान तन मन नैन सरबसु राधिका के पीव॥
कहाँ आनँद मुक्ति मैं यह कहाँ मृदु मुसकान।
कहाँ ललित निकुंज लीला मुरलिका कल गान॥

कहाँ पूरन सरद रजनी जोन्ह जग मग जोत।
कहाँ नूपुर बीन धुनि मिलि रास मंडल होत॥
कहाँ पाँति कदंब की झुकि रही जमुना बीच।
कहाँ रंग बिहार फागुन मचत केसरि कीच॥

कहाँ श्रवनन की रतन जगमगनि दसधा रंग।
कंठ गद गद रोम हरखन प्रेम पुलकित अंग॥
दास नागर चहत नहिँ सुख मुक्ति आदि अपार।
सुनहुँ ब्रज बसि श्रवन मैं ब्रज बासनन की गार॥

हमारैँ मुरली वारो स्याम।
बिन मुरली बन माल चंद्रिका नहिँ पहिँचानत नाम॥
गोप रूप बृन्दाबन चारी ब्रज जन पूरन काम।
याही सौं हित चित्त बढ़ो नित दिन दिन पल छिन जाम॥
नंदगाँव गोबरधन गोकुल बरसानो बिसराम।
नागरिदास द्वारिका मथुरा इनसों कैसो काम॥

इन महाराज ने अपनी कविता में कहीं कहीं अन्य कवियों के छन्द भी रख दिये हैं परन्तु वहां पर लिख दिया है कि अन्य कवि के पद।

इनके रचित ग्रन्थों की सूची नीचे दीजाती है :—

१ सिंगारसार
२ गोपीप्रेमप्रकाश (१८००)
३ पदप्रसंगमाला
४ ब्रजवैकुंठतुला (१८०१)
५ ब्रजसार (१७९९)
६ भोरलीला
७ प्रातरसमंजरी
८ बिहारचंद्रिका (१७८८)
९ भोजनानंदाष्टक
१० जुगुलरसमाधुरी
११ फूलविलास
१२ गोधनआगमन
१३ दोहनआनंद
१४ लग्नाष्टक
१५ फागविलास
१६ ग्रीष्मबिहार
१७ पावसपचीसी
१८ गोपीबैनबिलास
१९ रासरसलता
२० रैनरूपरस
२१ शीतसार
२२ इश्कचमन
२३ मजलिसमंडन
२४ अरिल्लाष्टक
२५ सदा की माँझ
२६ वर्षा ऋतु की माँझ
२७ होरी की माँझ
२८ कृष्णजन्मोत्सव कवित्त
२९ प्रियाजन्मोत्सव कवित्त
३० साँझी के कवित्त
३१ रास के कवित्त
३२ चाँदनी के कवित्त
३३ दिवारी के कवित्त
३४ गोवर्धनधारन के कवित्त
३५ होरी के कवित्त
३६ फाग गोकुलाष्टक
३७ हिंडोरा के कवित्त
३८ वर्षा के कवित्त
३९ भक्तिदीपिका (१८०२)
४० तीर्थानद (१८१०)
४१ फागबिहार (१८०८)
४२ बालबिनोद (१८०९)
४३ सुजनानद (१८१०)
४४ बनबिनोद (१८०९)

४५ भक्तिसार (१७९९)
४६ देहदशा
४७ वैरागवल्ली
४८ रसिकरत्नावली (१७८२)
४९ कलि वैराग वल्लरी (१७९५)
५० अरिल्लपचीसी
५१ छूटकविधि
५२ पारायणविधिप्रकाश (१७९९)
५३ शिखनख
५४ नखशिख
५५ छूटक कवित्त
५६ चरचरियाँ
५७ रेखता
५८ मनोरथमंजरी (१७८०)
५९ रामचरितमाला
६० पदप्रबोधमाला
६१ जुगुल भक्ति विनोद (१८०८
६२ रसानुक्रम के दोहे
६३ शरद की माँझ
६४ साँझी फुल बीनन समेत संवाद
६५ बसंतवर्णन
६६ फाग खेलन समेतानुक्रम कवित्त
६७ रसानुक्रम के कवित्त
६८ निकुंजविलास (१७९४)
६९ गोविंदपरचई
७० वनजनप्रशंसा (१८१९)
७१ छूटक दोहा
७२ उत्सवमाला
७३ पदमुक्तावली
७४ वैनविलास
७५ गुप्तरसप्रकाश

ये दोनो अन्तिम ग्रंथ अब कृष्णगढ़ में नहीं मिलते, केवल सूची में लिखे हैं।

इनका एक ग्रन्थ 'धन्य धन्य' खोज में लिखा है।

नाम—(६५०) रसरंग जी
ग्रन्थ—बानी।
कविता-काल—१७८०।

ब्रज भाषा तथा खड़ी बोली में है। इनकी
ओ में की जाती है । यह पुस्तक हमने दरबार
छतर- है। रस रंग जी मुसलमान थे। ये पहले धामियों के चेले हुए और पीछे टट्टिन वाली सम्प्रदाय में आकर भगवत रसिक के शिष्य हो गये। इनका स्थान झाँसी था। इनके समय आदि जाँच से जान पड़े हैं।

उदाहरण।

तेरे महबूब बाँके ने चसम की चोट मारी है।
खड़ा है सामने ही में जरा नहिँ पलक टारी है॥
जिलाया उनोने मुझको जिनें यह गाँस मारी है।
तड़पता कधी ना जीता विछोहा दर्द भारी है॥

(६५१) भूधरदास जी जैन।

इन्हों ने जैन-शतक नामक एक ग्रन्थ में अपने विषय एक कवित्त लिखा है, जिस से विदित होता है कि ये महाशय आगरे के रहने वाले खंडेलवाल जैन थे। इन्होंने महाराजा जयसिंह सवाई के कर्मचारी हरीसिंह के कहने से जैन-शतक ग्रन्थ १७८१ संवत् में बनाया। इस में १०७ मनोहर छन्द हैं। इन्होंने १७८९ में पार्श्व पुराण नामक प्रायः १६० पृष्ठों का बहुत करके दोहा चैापाइयों में द्वितीय उत्तम जैन ग्रन्थ लिखा, जिसकी जैन धर्म्म में पुराणों की भाँति पूजा होती है। ये दोनों ग्रन्थ हमारे पास वर्तमान हैं। इनके तृतीय ग्रन्थ भूधर-विलास का एक अंश जैन-पद-संग्रह तृतीय भाग हमारे पास है, जिसमें ६८ पृष्ठ हैं। इन्होंने ब्रज भाषा में कविता की

है और कहीं कहीं खड़ी बोली भी कह दी है। इनके 'पार्श्वपुराण' की भाषा में अवधी भाषा का भी बहुत मेल है। इनका काव्य उत्कृष्ट और सरल है। इन्होंने उपदेशों और जैन-कथाओं का विशेष वर्णन किया है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

जोगी तो जंगम से बड़ा बहु लाल कपड़े पहिरता।
उस रंग से महरम नहीं कपड़े रँगे से क्या हुआ॥
पोथी के पत्रा बाँचना घर घर कथा कहता फिरै।
निज ब्रह्म को चीन्हा नहीं ब्राह्मण हुआ तो क्या हुआ॥
तुम जिन जोति स्वरूप दुरित अँधियार निवारी।
सो गनेस गुरु कहैं तत्व विद्या धन धारी॥
मेरे चित घर माहिँ बसो तेजोमय यावत।
पाप तिमिर अवकास तहाँ सो क्यों कर पावत॥

आगे जैन ग्रन्थन के करता कवीन्द्र भये
करी देव भाषा महा बुद्धि फल लीनो है।
अच्छर मिताई तथा अरथ गँभीरताई
पद ललिताई जहाँ आई रीति तीनो है॥
काल के प्रभाव तिन ग्रन्थन क पाठी अब
दीसत अलप वेसो आयो दिन हीनो है।
तातें यहि समै जोग पढ़ैं बाल बुद्धि लोग
पारस पुरान पाठ भाषा बद्ध कीनो है॥

बीर हिमाचल ते निकसी गुरु गौतम के मुख कुंड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली जग की जड़तातप दूरि करी है॥

ज्ञान पयोनिधि माहिँ रली बहु भंग तरंगनि सों उछरी है ।
ता सुचि सारद गंग नदी प्रति मैं अँगुली निज सीस धरी है ॥

कैसे कर केतकी कनेर एक कहे जायँ
आक दूध गाय दूध अन्तर घनेर है ।
पीरी होत रीरी पै न रीस करै कंचन की
कहाँ काग बानी कहाँ कोयल की टेर है ॥
कहाँ भान भारो कहाँ आँगिया बिचारो
कहाँ पूनो को उजारो कहाँ मावस अँधेर है ।
पच्छ छोर पारखी निहारो नेक नीके करि
जैन वैन ग्रौर वेन इतनोही फेर है ॥

(६५२) कृष्ण ।

ये महाशय ककोर कुलोत्पन्न मथुरावासी माथुर ब्राह्मण थे। कहते हैं कि आप प्रसिद्ध कवि बिहारी के पुत्र थे। आप महाराजा सवाई जैसिहं जैपुर-नरेश के मन्त्री राजा आया मल्ल के आश्रय में रहते थे ग्रौर उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने कविवर बिहारीलाल की सतसई पर प्रति दोहे एक एक सवैया या घनाक्षरी कही तथा सूक्ष्मतया गद्य ब्रज भाषा में प्रति दोहे के कुछ गुण दोष ग्रौर अर्थ भी कहे हैं। कृष्ण कवि ने अपने विषय में उपर्युक्त बातों का कहना अलं समझा ग्रौर अपनी रचना का समय तक नहीं लिखा। बिहारी सतसई संवत् १७१९ में बनी थी ग्रौर सवाई जैसिहं ने संवत् १७५५ से सं० १७९९ तक राज्य किया था। ये महाशय इन महाराजा साहब के विषय वर्तमानकाल की क्रिया का प्रयोग

करते हैं ग्रोर उन्हीं के मन्त्री की आज्ञानुसार यह ग्रन्थ बनना कहते हैं, अतः निश्चय है कि यह ग्रन्थ इन्हीं महाराज के राजत्व-काल में बना। बिहारीलाल ने अपने आश्रयदाता मिरज़ा राजा जयसिंह की प्रशंसा के दोहे लिखे हैं, उन पर छन्द लिखने में कृष्ण कवि ने सवाई जयसिंह की प्रशंसा की है। उन में इन्होंने जयसिंह द्वारा जजीया के छुटने तक का हाल लिखा है। यह घटना संवत् १७८० के लग भग की है। फिर संवत् १७८७-८८ की बड़ी बड़ी घटनाग्रों तक का इन्हों ने वर्णन नहीं किया, यद्यपि प्रथम की छोटी छोटी घटनायें भी लिखी हैं। इस से अनुमान होता है कि यह टीका संवत् १७८५ के लग भग बनी। कृष्ण की वार्त्तिक टीका से विदित होता है कि ये महाशय काव्यांगों के भलीभांति समझते थे, क्योंकि इन्हों ने बिहारी की टीका में काव्यांगों को ही दिखाया है। इन का काव्य बड़ा ही सन्तोष-दायक ग्रोर भाषा बहुत मधुर है। दोहों पर छन्द कहने में इन्होंने मूल का आशय तो रक्खा ही है, किन्तु अपनी ग्रोर से भी बहुत कुछ मिलाकर टीका को अत्यन्त मनोहर कर दिया है। इन के छन्द उलथा से नहीं देख पड़ते हैं ग्रोर उन में स्वतन्त्र कविता का पूरा स्वाद मिलता है। इन्होंने व्रज भाषा में रचना की ग्रोर अनुप्रास यमकादि का बहुत आदर नहीं किया। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

छवि सों कवि सीस किरीट बन्यो रुचि साल हिये बनमाल लसै।
कर कंजहि मंजु रली मुरली कछनी कटि चारु प्रभा बरसै॥
कवि कृष्ण कहै लखि सुन्दरि मूरति यों अभिलाष हिये सरसै।

वह नन्द किसोर बिहारी सदा यहि बानिक मो हिय मांझ बसै ॥
है अति आरत मैं बिनती बहुबार करी करुना रस भीनी ।
कृष्ण कृपानिधि दीन के बन्धु सुनी असुनी तुम काहेक कीनी ॥
रीझते रंचकहीं गुन सों वह बानि बिसारि मनो अब दीनी ।
जानि परी तुम हू हरि जू कलि काल के दानिन की गति लीनी ॥

नाम— (६५३) चरणदास धूसर ब्राह्मण अलवर ।

ग्रन्थ—१ अष्टाङ्गयोग २ नर सकेन ३ संदेहसागर ४ भक्तिसार ५ हरिप्रकाश टीका (१८३४) ६ अमरलोक खंड धाम ७ भक्तिपदारथ ८ शब्द ९ दानलीला १० मनविरक्तकरन गुटका ११ राममाला ।

उत्पत्ति-काल—१७६० ।

मरण-काल—१८३८ ।

विवरण—साधारण श्रेणी । ये अलवर में पैदा हुए और देहली में मरे। ये व्यास पुत्र शुकदेव जी के शिष्य माने गये थे। सरोज ने इनका समय १५३७ दिया है और केवल ज्ञान-स्वरोदय इनका रचित लिखा है। यहाँ खोज का संवत् दिया गया है।

उदाहरण ।

नमो नमो सुकदेव जी करूँ प्रनाम अनंत ।
तव प्रसाद स्वर भेद को चरन दास बरनंत ॥
चरण दास सो सुक कहत थिरकत स्वर पहिँचान ।
थिर कारज को चन्द्रमा चर को भानु सुजान ॥

खोज में कुरुक्षेत्र लीला नामक इनका एक ग्रन्थ और मिला है।

(६५४) जोधराज।

इस कविवर ने हम्मीर रासा नामक एक २१० पृष्ठों का मनोहर ग्रन्थ नीवागढ़ के राजा चन्द्रभान चहुवान के कहने से बनाया। इसके निर्माण काल के विषय में थोड़ा सा सन्देह पड़ गया है। सरोज में इनका नाम नहीं है। ग्रियर्सन साहब ने इनका समय संवत् १४२० लिख कर इसकी शुद्धता पर सन्देह भी प्रकट किया है। बाबू श्यामसुन्दरदास ने इसका संवत् १७८५ माना है। उक्त बाबू साहब को खवा (जयपुर) के महाराज कुमार ने एक पत्र में लिखा कि नीमराणा (नीवा गढ़) के वर्तमान महाराज श्री १०८ जनकसिंह राजा चन्द्रभान की दसवीं या ग्यारहवीं पीढ़ी में हैं। एक पीढ़ी लग भग बीस वर्ष की पड़ती है, सो इस हिसाब से भी १७८५ संवत् ग्रन्थ निर्माण का ठीक जान पड़ता है। स्वयं जोधराज ने ग्रन्थ-समाप्ति का समय यों लिखा है।

चन्द नाग बसु पंच गिनि संवत माधव मास।
शुक्ल सु त्रितिया जीव जुत ता दिन ग्रन्थ प्रकास॥
भूपति नीवागढ़ प्रगट चन्द भान चहुवान।
साम दाम अरु भेद जुत दंडहि करत बखान॥

यहाँ नाग की गिनती से सात का अर्थ लेने से संवत् १७८५ आता है, पर नागों की संख्या साधारणतया आठ की है, यथा,

अनन्तो वासुकिः पद्मो महा पद्मश्च तक्षकः।
कुलीर कर्कटः शङ्खश्चाष्टौ नागाः प्रकीर्तिताः॥

नागों के अर्थ आठ के लेने से संवत् १८८५ हुआ जाता है, जो उपर्युक्त महाराज कुमार के लेख के प्रतिकूल पड़ता है । जान पड़ता है कि अनन्त को ईश्वर समझ कर उनको नागों की गणना से निकाल कर जोधराज ने नाग से सात का बोध कराया है । जो हो, यथार्थ संवत् १७८५ ही जँचता है ।

जोधराज ने ग्रन्थ के आदि में अपने को गौड़ ब्राह्मण बालकृष्ण का पुत्र लिखा है ।

इन्होंने हम्मीर रासो बड़े समारोह के साथ कहा है और प्रत्येक घटना का बहुत सच्चा और विस्तारपूर्वक वर्णन किया है । आपने चन्द बरदाई का ढंग कुछ कुछ लिये हुए कविता की है। आपकी रचना बहुत सराहनीय है । महर्षि वाल्मीकि की भांति जोधराज ने भी प्रत्येक घटना विस्तारपूर्वक याथातथ्य प्रकार से कही है । इस कवि की रचना से जान पड़ता है कि इसने राज-दर्बार देखे हैं और नज़र भेट आदि का हाल यह भलीभांति जानता है । महिमा मंगोल का हम्मीर देव से मिलना इस कथन का प्रमाण है । इन्होंने अपना कथन दो एक स्थानों को छोड़ कर इतिहास के प्रतिकूल भी नहीं किया है। समस्त वर्णन तो जोधराज ने पद्य में किया है, पर यत्र तत्र गद्य में भी इन्होंने बचनिकायें कही हैं, जो ब्रजभाषा में हैं । हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में समझते हैं ।

उदाहरण ।

पुंडरीक सुत सुता तासु पद कमल मनाऊँ ।
बिसद बरन बर बसन बिसद भूषन हिय ध्याऊँ ॥

बिसद जंत्र सुर सुद्ध तंत्र तुम्बर जुत सोहै।
बिसद ताल इक भुजा दुतिय पुस्तक मन मोहै॥
गति राज हंस हंसह चढ़ी रटी सुरन कीरति बिमल।
जै मातु सदा बरदायिनी देहु सदा बरदान बल॥

(६५५) रसिकसुमति।

ये महाशय ईश्वरदास के पुत्र संवत् १७८५ में हो गये हैं। इन्होंने दोहों में अलंकारचन्द्रोदय नामक ग्रन्थ कुवलयानन्द के आधार पर बनाया।

इनकी कविता साधारण है और ये साधारण श्रेणी के कवि हैं।

उदाहरण।

सोहत जुगुल किसोर के मधुर सुधा से बैन।
बदन चन्द सम करत है निरखत सीतल नैन॥
प्रत्यनीक अरि सों न बस अरि हितूहि दुख देय।
रवि सों चले न कंज की दीपति ससि हरि लेय॥

(६५६) गंजन।

गंजन कवि काशी के रहने वाले थे। इन्हों ने संवत् १७८६ में कमरुद्दीन खाँ हुलास नामक ग्रन्थ बनाया। इनका नाम शिवसिंह-सरोज में नहीं लिखा है। इन्होंने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि इनके वृद्ध प्रपितामह महाराज मुकुट राय भी अच्छे कवि थे, यहाँ तक कि स्वयं अकबर बादशाह ने उनका बड़ा आदर किया था। मुकुट राय का कोई छन्द इन्हों ने नहीं लिखा और न हमीं ने उनका कोई छन्द देखा है। शिवसिंहसरोज में भी उनका नाम

नहीं है । मुकुट राय के मानसिंह, उनके गिरिधर, उनके मुरलीधर और मुरलीधर के गंजन राय पुत्र उत्पन्न हुए । ये महाशय गौरा गुरजर ब्राह्मण थे । ये सब बातें इन्हों ने अपने ग्रन्थ में लिखी हैं । ये महाराज कहते हैं कि क़मरुद्दीं खाँ ने इनका बड़ा आदर किया और इनको बहुत सा धन देकर यह ग्रन्थ पान देकर इनसे बनवाया । इसमें ३२७ छन्द हैं । इस ग्रन्थ में क़मरुद्दीं खाँ की प्रशंसा के बहुत से छन्द हैं । ये महाशय दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के वज़ीर थे । मुसलमान होने पर भी इन्हें हिन्दी-साहित्य से इतना प्रेम था कि एक ब्राह्मण कवि को हज़ारों रुपये देकर भाषा का ग्रन्थ इन्हों ने बनवाया । जिस प्रकार से गंजन ने इनकी प्रशंसा की है, उससे विदित होता है कि कवि इनसे बहुत प्रसन्न था । इस से जान पड़ता है कि उसे इनसे बहुत धन मिलता था, और गंजन ने ऐसा लिखा भी है । इस बात से क़मरुद्दीं खाँ की गुणग्राहकता प्रकट होती है, क्योंकि एक तो उन्हों ने भाषा कवि का सत्कार किया और दूसरे सत्कार भी किया तो ऐसे वैसे का न कर के एक वास्तविक सुकवि का किया ।

इस ग्रन्थ के चतुर्थांश में एतमादद्दौला, वज़ीर क़मरुद्दीं खाँ का यश वर्णित है और शेष में भावभेद एवं रसभेद कहा गया है । गंजन ने छवों ऋतुओं का रूपकमय अच्छा वर्णन किया है और इन्हों ने सामान अच्छा दिखाया है जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि यह कवि अमीर आदमियों में रहा है । इसकी भाषा मधुर है । अन्य सुकवियों की भाँति उसमें मिलित वर्ण बहुत कम लाये गये हैं । इनको अनुप्रास का इष्ट न था, परन्तु इनकी कविता में

जहाँ तहाँ अनुप्रास का कुछ कुछ प्रयोग हो भी गया है। इस कविता में उत्कृष्ट छन्द बहुत देख पड़ते हैं। इनको हम पद्माकर की कक्षा में रक्खेंगे। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे लिखते हैं:—

मीना के महल जरबाफ़ दर पर्दा हैं
हलबी फनूसन में रोसनी चिराग की।
गुल गुली गिलम गरक आब पग होत
जहाँ बिछी मसनद लालन के दाग की॥
केती महताब मुखी खचित जवाहिरन
गंजन सुकवि कहैं बोरी अनुराग की।
एत माद दौला कमरुद्दीं खाँ की मजलिस
सिसिर में ग्रीषम बनाई बड़ भाग की॥

पैल परी अलका में खलभल खलका में
पतौ चल चालैं जे रहत निज थान हैं।
गंजन सुकवि कहै माल मुलकनि तजि
रज रजपूती तजि तजत गुमान हैं॥
रानी तजि पानी तजि कर किरवानी तजि
अति बिह्वल मन आनन न आन हैं।
ह्वै करि किसान भूप भाजत दिसान जब
कमरुद्दीं खान जू के बाजत निसान हैं॥

काजर से कारे मेघ दनारे भारे मतवारे
ऊँचे अति बिन्ध हू ते सोहत सुकद हैं।
नवल नवाब मति कमरुद्दीं खान सुनि
आपने वलन करैं ऐरावत रद हैं॥

गजन सुकवि कहे चलत डुलत मही
सुंडन सो अलका का करत गरद हैं।
जाके मद जलही से नदी नद उमडन
भादों के जलद सम रावरे दुरद हैं॥

नाम—(६५७) कुंवर मेदिनी मल्लजू म० छत्रसाल के पौत्र पन्ना।
ग्रन्थ—श्रीकृष्णप्रकाश (हरिवंश की भाषा)।
कविता-काल—१७८७।
विवरण—साधारण श्रेणी। इनकी कविता बड़ी मधुर और सरस है।

उदाहरण।

वेद श्री पुरान कहैं शंभु शेष ध्यान लहैं
जाकी दुति नख आगे कहा दुति हंस की।
पंडित समुझि लीजो चूके सो सुधारि दीजो
हरि रस सुधा पीजो कीजो कवि बस की॥
मल्ल महाराज ब्रजराज के बिसद गुन
गावे का रिझावे कामैं बुद्धि अवतंस की।
इच्छा ग्रन्थ रचन की सिच्छा ब्यास बचन की
भाषा करि भाखी त्याय साखी हरिबंस की॥ १॥

(६५८) महबूब।

खोज में इनका जन्म-काल संवत् १७६१ दिया हुआ है। इनका कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आया पर छन्द बहुत देखे गये हैं। इनकी कविता अनुप्रास के लिये हुए जोरदार होती थी और यह पूर्णतया प्रशंसनीय है। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

मृग मदगन्ध मिलि चन्दन सुगन्ध बहै केसरि कपूर धूरि पूरत अनन्त है। और मद गलित गुलाबन बलित और मनै महबूब तीर और दरमन्त है॥ रच्यो परपंच सरपंचपंचसर जू नै करलै कमान तानि बिरही हनन्त है। छोनि छिति लई ऋतु राजन समाज नई उनई फिरत भई सिसिर बसन्त है॥

(६५६) रसिकविहारी (बनी ठनी जी)।

ये महाशया महाराज नागरीदासजी की उपपत्नी थीं और उनके साथ श्री वृन्दावन में वास करती थीं। इनकी कविता सरस और भक्तिभाव से पूर्ण है। वह ब्रज भाषा और राजपूतानी मिश्रित भाषा में है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में की जाती है। इनके पद नागर समुच्चय के अंत में सग्रहीत हैं। किसी किसी ने रसिकविहारी नाम होने से इन्हें भ्रम से पुरुष माना है। इनका कविता-काल संवत् १७८७ समझना चाहिए क्योंकि ये नागरीदासजी के साथ थीं।

उदाहरण।

फागुणियारो घुमडि रह्यो छेत्याल।
कुंज भूमि सों लाल हुइ हुआ लाल तमाल॥
उडि गुलाल की लाल धुँधरि मैं झलकै बेणा भाल।
सखी लाल अरु लाल बिहारिनि रसिक बिहारी लाल॥
फूलन के सिर सेहरा फाग रगम गे बेस।
भांय रही में चलत दोउ लै गति सुलय सुदेस॥

बाघन पै गयो देखि बनन मैं रहे छिपि
साँपन पै गयो तौ पताल ठौर पाई है।
गजन पै गयो धूलि डारत हैं सीस पर
बैदन पै गयो काहू दारू न बताई है॥
जब हहराय हम हरी के निकट गये
हरि मों सों कहो तेरी मति भूल छाई है।
कोऊ न उपाय भटकत जिन डोलै सुनै
खाट के नगर खटमल की दुहाई है॥

(६६१) हरिकेश कवि सेहुँडा बुँदेलखण्ड वासी का रचना-काल १७८८ के लगभग है। इनका कोई ग्रन्थ हमें नहीं मिला, परन्तु इन्हों ने वीर रस की रचना बड़ी उत्तम और जोरदार की है। आप महाराज छत्रसाल बुँदेलखण्ड वाले के यहाँ थे। इनको हम सेनापति की श्रेणी का कवि समझते हैं।

उदाहरण।

डहडहे डङ्कन को सबद निसङ्क होत
बहबहीं सत्रुन की सेना आनि सरकी।
हाथिन का झुंड मारू राग को उमड इतै
चपति को नद बढ्यो उमडि समर की॥
कहैं हरिकेस काली ताली दै नचत ज्यों ज्यों
लाली परसत छत्रसाल मुख वर की।
फरकि फरकि उठैं बाहु अस्त्र वाहिबे को
करकि करकि उठैं कडी बखतर की॥

दौरे काल किंकर कराल करतारी देत
दौरीं काली किलकत छुधा की तरंग ते।
कहै हरिकेस दाँत पीसत खबीस दौरे
दौरे मंडलीक गीध गीदर उमंग ते॥
चंपति के नंद छत्रसाल आजु कौन पर
फरकाई भुज औ चढ़ाई भौंह भंग ते।
भंग डारि मुख ते भुजान ते भुजंग डारि
दौरे हर कूदि डारि गौरी अरधंग ते॥ २॥

खोज में ब्रजलीला, और महाराज जगतसिंह दिग्विजय नामक इनके दो ग्रन्थ लिखे हैं। हरिकेश की कविता में अनुप्रास का परमोत्तम प्रयोग हुआ है। ऐसी उमंगोत्पादिनी रचना करने में दो तीन कवियों को छोड़कर कोई भी समर्थ नहीं हुआ है। इनकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

(६६२) बख्शी हंसराज श्रीवास्तव कायस्थ सं० १७८९ में पन्ना में हुए। इनका ३०८ पृष्ठों का सनेहसागर ग्रन्थ हमने छत्रपूर में देखा, जिसमें राधाकृष्ण की लीला का वर्णन है। इस ग्रन्थ-रत्न में ९ अध्याय हैं, और इसकी कविता बड़ी ही सरस और लुभावनी है। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण।

लोचन ललित प्रीति रस पागे पुतरिन स्याम निहारे।
मानौ कमल दलन पर बैठे उड़त न अलि मनवारे॥

घुमति चारु चंचल नैननि की चितवनि अति अनियारी।
अति सनेह मय प्रेम सरस लखि को न होत मतवारी॥
दमकति दिपति देह दामिनि सी चमकत चंचल नैना।
घूँघट बिच खंजन से खेलत उड़ि उड़ि डीठि लगै ना॥
लचकति ललित पीठि पर बेनी बिच बिच सुमन सँवारी।
देखे ताहि मैर सो आवति मनौ भुजंगिनि कारी॥

खोज में इनके श्रीकृष्ण जू की पाती, श्री जुगुलस्वरूप विरह-पत्रिका, फागतरंगिनी और चुरिहारिनलीला नामक और ग्रन्थ मिले हैं। आप सखी सम्प्रदाय के वैष्णव विजय सखी के शिष्य थे। आप पन्नानरेश हृदयशाह, सभासिंह और अमानसिंह नामक महाराजाओं के यहाँ थे, जिन्हों ने सं० १७८९ से १८१५ तक राज्य किया।

नाम—(६६३) नागरीदास जी भगवत रसिक जी के शिष्य वृन्दावनवासी।

ग्रन्थ—बानी।

समय—१७९०।

विवरण—इसमें कुल १६१ पद हैं। यह ग्रन्थ हमने दरबार छतरपूर में देखा है। इनकी कविता साधारण श्रेणी की है। समय जाँच से मिला है।

इस समय के अन्य कविगण।

नाम—(६६४) तीखो।

कविता-काल—१७५४ के पूर्व।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६६५) तेही।

कविता-काल—१७७४ के पूर्व।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६६६) हिम्मतसिंह कायस्थ पन्ना।

ग्रन्थ—दफ़्तरनामा।

कविता-काल—१७७४।

विवरण—कायस्थ बुन्देलखंडी। ग्रन्थ फ़ारसी का उल्था।

नाम—(६६७) दिलाराम।

कविता-काल—१७७५ के प्रथम।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(६६८) रामरूप।

कविता-काल—१७७५ के पूर्व।

नाम—(६६९) कृष्ण सनाढ्य ब्राह्मण ओड़छा।

ग्रन्थ—(१) धर्मसमाधि, (२) विदुरप्रजागर।

कविता-काल—१७७५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६७०) गोपालशरण राजा।

ग्रन्थ—(१) प्रबन्धघटना, (२) सतसई की टीका, (३) पद।

जन्म-काल—१७४८।

कविता-काल—१७७५ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(६७१) वैषी बंदीजन ।

ग्रन्थ—सूमसागर ।

जन्म-काल—१७५० ।

कविता-काल—१७५५ ।

विवरण—सूमसागर भँड़ौआ का ग्रंथ बनाया है जिसमें सूमों के लक्षण और उनके भेदान्तर वर्णन किये हैं । साधारण श्रेणी ।

नाम—(६७२) मूक जी बन्दीजन राजपूताना ।

ग्रन्थ—खीची वंशावली सजीवन-चरित्र ।

जन्म-काल—१७५० ।

कविता-काल—१७७५ ।

नाम—(६७३) याकूबखाँ ।

ग्रन्थ—(१) टीका रसिकप्रिया, (२) रसभूषण (१७७५) (अलंकार ग्रंथ)।

कविता-काल—१७७५ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(६७४) श्यामराम ।

ग्रन्थ—ब्रह्मांड-वर्णन ।

कविता-काल—१७७५ ।

नाम—(६७५) गंगापति।

ग्रन्थ—विज्ञानविलास।

कविता-काल—१७३६।

विवरण—वेदान्त ग्रन्थ।

नाम—(६७६) जगन्नाथ प्राचीन।

ग्रन्थ—मोहमदराज की कथा।

कविता काल—१७७६।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६७७) कृपाराम उज्जैन वा जैपूर वाले।

ग्रन्थ—समयबोध।

कविता-काल—१७७७।

विवरण—ये महाशय जयसिंह के यहाँ ज्योतिषी थे। ग्रन्थ भी इनका ज्योतिष का है।

नाम—(६७८) जयकृष्ण भवानीदास के पुत्र।

ग्रन्थ—(१) छन्दसार पिंगल, (२) नामरूप पिंगल (१७७७), (३) जयकृष्ण कृत कविता (१८१७), (४) शिवमाहात्म्य भाषा (१८२५), (५) शिवगीता भाषार्थ (१८१७), (६) रूपदीप-पिंगल।

कविता-काल—१७७७ से १८२५ तक।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६७९) भोज मिश्र प्राचीन।

ग्रन्थ—मिश्रशृंगार।

जन्म-काल—१७५० ।

कविता काल—१७७७।

विवरण—राजा युद्ध राय के यहां थे।

नाम—(६८०) दयाराम ब्राह्मण दिदमी वाले, लछिराम पुत्र।

ग्रन्थ—दयाविलास पृ० २२० पद्य।

कविता काल—१७७९।

विवरण—वैद्य। एक दयाराम तेवारी सं० १७९५ में भी हैं। सम्भव है कि ये दोनों महाशय एक ही हों।

नाम—(६८१) वेनीराम।

ग्रन्थ—जैनरस।

कविता काल—१७७९।

नाम—(६८२) रहीम।

कविता-काल—१७८० के पूर्व।

विवरण—इनकी कविता के उदाहरण में सरोज में कवि अनीस का छन्द लिखा है। ये रहीमखाँ खानखाना से पृथक् हैं।

नाम—(६८३) गुणदेव बुँदेलखण्डी।

जन्म काल—१७५२।

कविता-काल—१७८०।

विवरण—साधारण श्रेणि।

नाम—(६८४) जुगुल।

जन्मकाल—१७५५।

कविताकाल—१७८०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६८५) देवीराम।

जन्मकाल—१७५०।

कविताकाल—१७८०।

नाम—(६८६) द्विजचन्द।

जन्मकाल—१७५५।

कविताकाल—१७८०।

विवरण—निम्नश्रेणी।

नाम—(६८७) येचू कवि।

जन्मकाल—१७५०।

कविताकाल—१७८०।

विवरण—भक्ति पक्ष की कविता की है। निम्नश्रेणी।

नाम—(६८८) वंसी।

कविताकाल—१७८०।

नाम—(६८९) श्यामदास।

ग्रन्थ—शालग्राम माहात्म्य।

जन्मकाल—१७५५।

कविताकाल—१७८०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६६०) दयामशरण।

ग्रन्थ—स्वरोदय।

जन्मकाल—१७५३।

कविताकाल—१७८०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६६१) दलसिंह राजा बुँदेलखण्डी।

ग्रन्थ—प्रेमपयोनिधि।

कविताकाल—१७८१।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६६२) आतम मारवाड़।

ग्रन्थ—हरिरस (भक्ति)।

कविताकाल—१७८२।

नाम—(६६३) खण्डन कायस्थ दतिया।

ग्रन्थ—(१) सुदामासमाज, (२) राजा मोहमर्दन की कथा, (३) भूषणदाम, (४) नामप्रकाश, (५) जैमिनि अश्वमेध।

कविताकाल—१७८२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६६४) ज़ुल्फ़िकार खाँ।

ग्रन्थ—ज़ुलफ़िकार सतसई।

कविताकाल—१७८२।

विवरण—बुँदेलखण्ड के शासक अलीबहादुर के पुत्र हैं।

नाम—(६६५) पंचमसिंह।

ग्रन्थ—कवित्त।

कविताकाल—१७८२।

विवरण—महाराजा छत्रसाल पन्ना-नरेश के भतीजे।

नाम—(६६६) मीनराज कायस्थ।

ग्रन्थ—हरितालिका-कथा।

कविताकाल—१७८३ के पूर्व।

नाम—(६६७) विश्वनाथ अताई बघेलखण्डी।

कविताकाल—१७८४।

विवरण—इनके छन्द सत्कविगिराविलास में हैं। निम्नश्रेणी।

नाम—(६६८) अनवरख़ाँ।

ग्रन्थ—अनवरचंद्रिका।

कविताकाल—१७८५।

विवरण—कहा जाता है कि ये पठान सुलतान के भाई थे।

नाम—(६६६) आदिल।

जन्मकाल—१७६०।

कविताकाल—१७८५।

विवरण—स्फुट काव्य तोष कवि की श्रेणी।

नाम—(७००) किशोरसूर।

जन्मकाल—१७६१।

कविताकाल—१७८५।

विवरण—हीनश्रेणी।

नाम—(७०१) निरञ्जनदास अनन्दपुर।

ग्रन्थ—हरिनाममाला।

कविताकाल—१७८५।

विवरण—पिता का नाम वसन्त, गुरु का पीताम्बर।

नाम—(७०२) ब्रजचंद।

जन्मकाल—१७६०।

कविताकाल—१७८५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७०३) आज़मख़ां मुसलमान दिल्ली।

ग्रन्थ—शृङ्गारदर्पण पृष्ठ ५४ (पद्य)।

कविताकाल—अ० सं० १७८६।

विवरण—नायिकाभेद। साधारण श्रेणी। दिल्लीश्वर मुहम्मद शाह की आज्ञा से पुस्तक बनाई।

नाम—(७०४) करनी दान चारन जोधपुर।

ग्रन्थ—(१) सूर्यप्रकाश (राठूरों का इतिहास), (२) विरदसीनसागर।

कविना-काल—१७८७।

विवरण—महाराजा अभयसिंह जोधपुर के दरबार में थे।

नाम—(७०५) माधवराम।

ग्रन्थ—(१) शाक्तभक्तिप्रकाश, (२) शङ्करपच्चीसी, (३) माधवराम कुंडली।

कविताकाल—१७८७।

विवरण—मारवाड़ के महाराजा अभयसिंह के समय में थे।

नाम—(७०६) रसपुञ्जदास।

ग्रन्थ—(१) प्रस्तारप्रभाकर, (२) वृत्तविनोद, (३) कवित्त श्री माता जीरा।

कविता-काल—१७८७।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७०७) शिवराम वैष्णव।

ग्रन्थ—भक्तिजयमाल पृष्ठ ४६०।

कविता-काल—१७८७।

नाम—(७०८) सुखदेव कायस्थ मैनपुरी।

ग्रन्थ—मानसहंस रामायण पृष्ठ ३९०।

कविता काल—१७८८।

विवरण—गद्य पद्य में।

नाम—(७०९) गोसाईं।

ग्रन्थ—अरिल्ल।

कविता-काल—१७८९ के पूर्व।

नाम—(७१०) हंसराज कायस्थ राठ ज़ि० हमीरपुर।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा (१७८९)।

कविता-काल—१७८९।

विवरण—सम्भव है कि ये और पहली हंसराज पन्ना वाले एक ही हों।

नाम—(७११) आनंदराम।

ग्रन्थ—भगवद्गीता।

कविता-काल—१७९०।

विवरण—रिपोर्ट से इनका समय १७२१ निकलता है।

नाम—(७१२) द्यानतिराय अग्रवाल जैनी।

ग्रन्थ—(१) धरमविलास, (२) एकीभाव भाषा, (३) एकीभव भाषा।

कविता-काल—१७८०।

उत्तरालंकृत प्रकरण।

(१७९१ से १८८९ तक)

पच्चीसवाँ अध्याय।

उत्तरालंकृत हिन्दी।

सूर, तुलसी, भूषण और देव का समय हिन्दी-साहित्य के लिए जैसी प्रतिष्ठा और गौरव का हुआ वैसा फिर देखने को हिन्दी के भाग्य में अब तक नहीं बदा था। इस दास और पद्माकर वाले काल में उस समय के देखते संख्या में कविगण अधिक हुए, और उत्कृष्ट कवि भी विशेषता से पाये जाते हैं, पर वह उत्तमता इस काल के कवियों में नहीं है, जो उस समय दृष्टि-पथ में आती है। इस काल का एक भी कवि नवरत्न में नहीं पहुँचा। परन्तु प्रथम को छोड़ अन्य श्रेणियों में इस समय पहले से बहुत अधिक उत्कृष्ट कवि हुए। महाराजाओं में इस काल महाराजा रघुराजसिंह रीवाँ-नरेश तथा महाराजा बलवानसिंह काशी-नरेश ने कविता की। ताल्लुकदारों में राजा गुरुदत्तसिंह अमेठी वाले इस समय बहुत अच्छे कवि हो गये और तेरवा वाले राजा जसवन्तसिंह ने भी सराहनीय कविता की।

ठाकुर और बोधा कवि इस काल में परम प्रेमी हो गुज़रे हैं। इस समय के अनेकानेक कवि आचार्य्य कहे जा सकते हैं, क्योंकि बहुतों ने नायिका-भेद पर कविता की है, परन्तु मुख्यतया दास, सोमनाथ, रघुनाथ, मनीराम मिश्र, और बैरी साल आचार्य्य हैं। दलपतिराय बंसीधर ने भाषाभूषण की एक प्रशंसनीय टीका बनाई। गाने वालों में संवत् १८०० के लगभग बिलग्राम निवासी मीरा मद नायक प्रसिद्ध हुए। गायक गण अब भी इन के मज़ार पर नियत दिनों पर गाने जाते हैं। महाराजा रघुराजसिंह, दास, सूदन, गोकुलनाथ, गोपीनाथ, मणिदेव, पद्माकर, मधुसूदनदास, ब्रजवासीदास, और ललकदास ने इस काल में कथा प्रासंगिक आदरणीय कविता की है। इन सब में गोकुलनाथ, गोपीनाथ, और मणिदेव का श्रम परम सराहनीय है कि इन्हों ने मिल कर महाभारत ऐसे उत्तम और भारी ग्रन्थ का विशद पद्यानुवाद किया। सम्मन ने नीति के चटकीले दोहे कहे हैं।

सौर काल में श्री कृष्णचन्द्र के भक्त कवियों ने शृंगार सम्बन्धी कविता केवल भक्तिभाव से ही बनाई, पर उस के पीछे से अभक्त लोगों ने भी कृष्ण के सहारे शृंगार कविता का द्वन्द मचाया। इस प्रथा ने भूषण और देव के समय में विशेष उन्नति पाई और इस दास पद्माकर वाले समय में इसकी इतनी भरमार हुई कि प्रत्येक कवि नायिका भेद, षटऋतु, और नखशिख के ग्रन्थों का बनाना अपना कर्त्तव्य सा समझने लगा। षटऋतु में भी नैसर्गिक पदार्थों को छोड़ कर केवल नायिका नायकों हीं पर विशेषतया हमारे कवियों का झुकाव रहा। समय पाकर स्त्री कवियों ने

भी इस प्रकार निर्लज्जतापूर्ण श्रृंगाररस की कविता की, मानों वह स्वयं पुरुष हों। इस बात से प्राचीन प्रथा का बल देख पड़ता है।

श्रृंगारी कवियों में दत्त, दास, पद्माकर, प्रताप, सेवक, ठाकुर, रघुनाथ, बोधा, गुरुदत्तसिंह, थान, देवकीनन्दन, बेनी-प्रवीन, ग्वाल, तोष, पजनेस आदि बहुत से परमोत्कृष्ट कवि इस समय में हुए, जिनके नाम सुन कर चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि क्या ऐसे उत्कृष्ट कवियों के होते हुए भी कोई इस काल में किसी प्रकार की न्यूनता बतला सकता है! वास्तव में हिन्दी काव्य अत्यन्त प्रशस्त और गरिमा-सम्पन्न है। जिन कवियों के नाम यहाँ लिखे गये हैं वैसे सरस्वती के लाल दूसरी भाषाओं में कठिनता से खोजे जा सकते हैं। सौर काल की हिन्दी में अनुप्रास का बहुत अधिक आदर न था, पर बिहारी और देव ने इसका अच्छा सम्मान किया। इसी समय से हिन्दी के कवियों में इसका बड़ा प्रकांड आदर होने लगा। पद्माकर ने सब से अधिक अनु-प्रास को अपनाया। प्रताप की भाषा परम प्रशंसनीय है।

वर्तमान खड़ी बोली वाले गद्य का मानो जन्म ही इसी समय में हुआ। संवत् १८६० में लल्लू लाल ने ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली में प्रेमसागर नामक एक भारी ग्रन्थ रचा। उसी साल सदल मिश्र ने शुद्धतर खड़ी बोली में नासकेतोपाख्यान नामक एक अपूर्व कहानी कही। भक्त कवियों का इस समय प्रायः पूर्ण अभाव रहा। दास जी ने कहा भी है कि 'आगे के सुकवि रीझि हैं तो कविताई न तौ राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है'। इसमें 'रपट पड़े तो हर गंगा' की पूरी झलक मिलती है। भक्तों का साम्राज्य सूर

तथा तुलसी वाले समय में बहुत अच्छा रहा। परिशिष्ट की भांति थोड़े से भक्त भूषण और देव वाले काल में भी हुए, पर इस काल में उन्होंने ऐसा अलोप अंजन सा लगाया कि प्रायः कहीं दर्शन ही न दिये। वीर कविता का भी इस समय अभाव ही सा रहा। केवल सूदन कवि ने राजा सूरजमल के सहारे सुजानचरित्र नामक एक उत्तम ग्रन्थ वीर कविता का रचा। कवि पद्माकर ने भी हिम्मत बहादुर विरदावली की रचना की है, पर यह सराहनीय ग्रन्थ होने पर भी तादृश आनन्द नहीं देता।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, हिन्दी ने प्रौढ़ माध्यमिक काल में बहुत अच्छी उन्नति कर ली थी और उस में किसी प्रकार का कचापन नहीं रह गया था। फिर भी भूषण देव काल में, जो पूर्वालंकृत काल कहा गया है, कवियों ने उसे श्रेष्ठतर बनाने का यथासाध्य प्रयत्न किया। इस प्रयत्न ने भाषा-सम्बन्धी अलंकारों की वृद्धि के स्वरूप में प्रकाश पाया। पूर्वालंकृत काल में इस श्रम से लाभ अवश्य हुआ और भाषा श्रेष्ठतर हो गई, परन्तु इस उत्तरालंकृत काल में बहुत से कवियों ने भाव चमत्कार पर विशेष ध्यान न देकर कविता कामिनि को अलंकारों से ही लाद दिया। इस प्रकार इस समय में भाषा की उन्नति के साथ भाव-शैथिल्य भी साहित्य में आने लगा। कवियों ने शृंगार-रस की ओर भी बहुत अधिक ध्यान दिया, जिससे नायिका भेद पर ग्रन्थ लिखने की प्रथा दृढ़तर हुई। इस प्रणाली के साथ रीति ग्रन्थों का भी प्रचार बढ़ा और आचार्य्यता की वृद्धि हुई।

सभी भाषाओं में थोड़े से आचार्यों का होना उपयोगी एवं आवश्यक है, पर विशेषतर क्या प्रायः सभी कवियों को विविध विषयों ही की ओर ध्यान रखना चाहिए । आचार्य लोग तो कविता करने की रीति सिखलाते हैं, मानो वह संसार से यह कहते हैं कि अमुकामुक विषयों के वर्णनों में अमुक प्रकार के कथन उपयोगी हैं और अमुक प्रकार के अनुपयोगी । ऐसे ग्रन्थों से प्रत्यक्ष प्रकट है कि वह विविध वर्णनों वाले ग्रन्थों के सहायक मात्र हैं, न कि उन के स्थानापन्न । फिर जब अधिकांश कविगण ऐसे ही सहायक ग्रन्थ लिखने लगें, तब वास्तविक ग्रन्थ-लेखक कहाँ से आवें ? इन सहायक ग्रन्थों के अस्तित्व का मुख्य फल विविध विषयों पर ग्रन्थों का बनना है, परन्तु यदि वैसे ग्रन्थ ही न बनें और केवल सहायक ग्रन्थ ही रह जावें, तो उनका भी होना मुख्य फल के लिए न होने के बराबर है । खम्भे तो छत थाँभने के लिए होते हैं, सो यदि कोई व्यक्ति छत न बना कर केवल खम्भे बना डाले, तो उसका परिश्रम अवश्यमेव उपहासास्पद ठहरेगा । इस कारण आचार्यता की भारी वृद्धि से हिन्दी को विशेष लाभ नहीं हुआ ।

शृंगार रस की रचना बहुत लोगों को रुचिकर होती है, परन्तु फिर भी जैसे शृंगारी कथन सभ्य समाज में विशेष आदर नहीं पा सकते, वैसे ही इस प्रकार के ग्रन्थों का हाल है । कविगण बुद्धिबल का पूर्ण व्यय कर के बड़ी योग्यता के साथ मन-मुग्ध-कारिणी रचनायें करते हैं, जो अनुचित एवं अनुपयोगी विषयों से सम्बन्ध रखने पर भी हृदयग्राहिणी होती हैं । ऐसी दशा में रच-

यिताओं को विषय के उपकारी होने पर अवश्यमेव ध्यान रखना चाहिए, पर शोक के साथ कहना पड़ता है कि उत्तरालंकृत काल के कविगण का ध्यान विशेषरूप से इधर नहीं रहा। इस कारण यदि उपयोगी ग्रन्थों का परता अन्य ग्रन्थों से लगाया जावे तो वह सन्तोष-दायक नहीं ठहरेगा। कवियों को उचित है कि वे उत्कृष्ट वर्णनों के साथ उचित विषयों का भी सदैव ध्यान रक्खें। इस समय कवियों ने काव्योत्कर्ष को बढ़ाने पर ध्यान अवश्य रक्खा, परन्तु विषय-शैथिल्य से उनके ग्रन्थ तादृश लाभदायक नहीं हुए। फिर भी यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि काव्योत्कर्ष अनेकानेक कारणों से होता है, जिन में विषय की उत्तमता एक है। अतः अनुपयोगी विषयों का भी प्रकृष्ट काव्य तिरस्करणीय नहीं है।

इस अवगुण का पूरा बोझा कवियों ही के सर पर रक्खा भी नहीं जा सकता। यह भी स्मरण रखने योग्य बात है कि कवियों के भी विचार साधारण जन समुदाय की उन्नति के अनुसार चलते हैं। हमारे यहाँ अँगरेजी राज्य से प्रथम साधारण मनुष्यों के विचारों ने बहुत अच्छी उन्नति नहीं की थी। पाश्चात्य प्रकार की उस सभ्यता का प्रादुर्भाव हमारे यहाँ नहीं हुआ था, जो जीवन-होड़ के प्राबल्य से उत्पन्न होती है। यहाँ सदैव से वह राज्य-प्रणाली एवं देशदशा अच्छी समझी जाती रही, कि जिस में बरकत अच्छी हो और एक कार्य्यकर्ता इतना पैदा कर सके कि जिससे दस मनुष्य छकें। इन कारणों से यहाँ अँगरेजों के पूर्व आलस्य का बड़ा साम्राज्य था। हमने अपने बाल-काल में ऐसे

कई वृद्ध महाशय देखे थे, जिन्होंने दरिद्र दशा में रहते हुए भी धनोपार्जन के लिए यावज्जीवन कोई समुचित काम नहीं किया ग्रैार दूसरों हीं के सहारे अपना कालक्षेप किया। अब ऐसे मनुष्यों की संख्या बहुत घट गई है ग्रैार दिनों दिन घटती जाती है। अधिकांश देसी रियासतों में आज तक यही दशा है। वहाँ सैकड़ों हज़ारों मनुष्य बिना कुछ किये ही राजाग्रों की उदारता से कालक्षेप करते हैं।

जीवन-होड़ (struggle for existence) प्राबल्य के अभाव से हमारे यहाँ परिश्रम की महिमा पाश्चात्य देशों के समान कभी नहीं हुई। इसी कारण से हमारे यहाँ, विद्वान् मनुष्यों तक का ध्यान व्यापार-सम्बन्धी उपयोगी विषयों की ओर नहीं गया ग्रैार हम अपनी कविता में रोज़ाना लाभदायक बातों का यथोचित विवरण नहीं पाते हैं। पाश्चात्य देशों में कई शताब्दियों से जीवन-होड़ की प्रबलता स्थिर है, जो दिनों दिन चढ़ती चली आई है। इस हेतु वहाँ साहित्य ने साधारण घटनाग्रों से सदैव सम्पर्क रक्खा है ग्रैार वह अनुपयोगी विषयों से प्रगाढ़ मित्रता नहीं करने पाई।

कई कारणों से वहाँ देशहितैषिता पर लोगों का बहुत दिनों से भारी अनुराग रहा है। इस वासना ने भी उन्हें देशहित-साधक विषयों की ओर ख़ूब झुकाया। हमारे यहाँ अँगरेज़ी राज्य से प्रथम समस्त भारत की एकता पर अधिकता से विचार कभी नहीं किया गया। यहाँ ईश्वरभक्ति की प्रचुरता के होते हुए भी देशभक्ति का गैारव प्राचीन काल में नहीं बढ़ा। भारत में

किसी समय सैकड़ों वर्षों तक सार्वभौम राज्य स्थापित नहीं हुआ। इस हेतु समस्त भारत की एकता का भाव हिन्दू राज्य-काल में उत्पन्न नहीं हुआ। मुसल्मान-काल में हिन्दू मुसल्मानों के झगड़ों से हिन्दूपन का भाव तो उठा और इस विषय पर ग्रन्थ भी बने, परन्तु समाज का ध्यान फिर भी देशभक्ति की ओर नहीं गया। अतः जीवन-होड़-प्राबल्य एवं देश-भक्ति के अभाव ने हमारे समाज एवं कविगण को लोकोपकारी विषयों से वंचित रक्खा।

उर्दू-कविता भी इस समय देश में ज़ोर पकड़ रही थी। इन्हीं बातों के प्रभाव से उसके कविगण भी लोकोपकारी विषयों की ओर न झुके। उर्दू-कवियों में ईश्वर-सम्बन्धी प्रेम का भी अभाव सा था, सो उन्होंने कथा-प्रासंगिक एवं भक्ति ग्रन्थों की ओर भी ध्यान न देकर अपना पूर्ण बल शृंगार कविता में लगाया। इस बात का भी प्रभाव हिन्दी में शृंगारवर्द्धक हुआ।

हमारे यहाँ राजयशकीर्त्तनों से हिन्दी-कविता की उत्पत्ति हुई थी, परन्तु पीछे से धार्मिक विषयों ने कोरी कथा प्रासंगिक चाल को कुछ मन्द कर दिया। समय पर धर्मकविता ने बढ़ते बढ़ते शृंगार-कविता का रूप ग्रहण किया और तब कथा-प्रासंगिक रीति का प्राचीन धर्मप्रथा से सम्मेलन हुआ। इस हेतु इस उत्तरालंकृत काल में ऐसे ग्रन्थों का विशेषतया प्रादुर्भाव हुआ और महाराजा रघुराजसिंह, दास, मधुसूदनदास, ब्रजवासीदास, ललकदास आदि ने धर्म विषय लिये हुए कथाप्रासंगिक कविता की। भाषाभारतरचयिताओं ने अनुवाद द्वारा इसी प्रणाली को पुष्ट किया, और लल्लूलाल एवं सदल मिश्र ने खड़ी बोली गद्य में

भी इसी को आदर दिया। सूदन, पद्माकर आदि कविवरों ने धर्म्म से सम्बन्ध न रखने वाली कथा-प्रासंगिक रचनायें कीं।

सारांश यह है कि उत्तरालंकृत काल में भाषा भूषणों से लद गई, शृंगार-कविता ख़ूब बनी, आचार्य्यता बढ़ी, कथा-प्रासंगिक प्रथा ने धर्म्म से सम्बन्ध करके बल पाया, साधारण कथा-प्रासंगिक ग्रन्थ भी रचे गये और खड़ी बोली ने गद्य में भी जड़ पकड़ी। परमोत्कृष्ट कवियों का इस समय अभाव सा रहा, परन्तु उत्कृष्ट कवियों की मात्रा अन्य सभी समयों से विशेष रही, भाषामाधुर्य्य के सम्मुख भावसंकुचन हुआ, एवं महाराजाओं में काव्य-प्रेम स्थिर रहा।

छब्बीसवाँ अध्याय।

दासकाल (१७९१ से १८१० तक)।

(७१३) भिखारीदास उपनाम दास।

दासजी के विषय में ठाकुर शिवसिंह ने लिखा है कि ये बुन्देलखंड के रहने वाले थे, परन्तु स्वयं दासजी ने ग्रन्थों में अपने को अरवर देश प्रतापगढ़ का रहने वाला लिखा था, सो हमें सन्देह हुआ कि कहीं यह अवध का ज़िला प्रतापगढ़ न हो; अतः हमने राजा प्रतापबहादुरसिंह सी० आई० ई० को पत्रद्वारा इस विषय में अपनी शंका सूचित की, तो उन्होंने कृपा कर के दास कृत 'विष्णुपुराण' और 'नामप्रकाश' नामक दो ग्रन्थ भी हमारे पास भेजे और उनके कुटुम्बियों से पूछ कर उनका हाल भी लिख भेजा।

राजा साहब के लेखानुसार दासजी श्रीवास्तव कायस्थ थे। ये पर्गना प्रतापगढ़ उपनाम अरवर के ट्योंगा ग्राम में रहते थे। यह स्थान प्रतापगढ़ के दुर्ग से एक मील पर है। दासजी के पिता कृपालदास, पितामह वीरभानु, प्रपितामह राय रामदास और वृद्ध प्रपितामह राय नरोत्तमदास थे। नरोत्तमदास के पिता राय चीनमदास थे। दास जी के पुत्र अवधेशलाल और पौत्र गौरीशंकर थे, जो अपुत्र मर गये और दास जी का वंश समाप्त हो गया। उनकी बिरादरी के लोग अब तक ट्योंगा में रहते हैं। इस वंशावली में राजा साहब ने वीरभानु का नाम न लिख कर राय रामदास को दासजी का पितामह माना है, परन्तु स्वयं दासजी ने वीरभानु को अपना पितामह और राय रामदास को प्रपितामह लिखा है। अत: हम ने राजा साहब के कथन में इतना अन्तर कर दिया। राजा साहब ने इन बातों के कहने में दासजी के कुटुम्बियों से भी हाल पूछ लिया है। ठाकुर शिवसिंहजी ने दास के पाँच ग्रन्थ माने हैं, अर्थात् रस सारांश, छन्दोर्णव पिंगल, काव्यनिर्णय, शृंगारनिर्णय और बाग बहार। परन्तु राजा साहब ने विष्णुपुराण और नामप्रकाश नामक उनके दो और ग्रन्थ भेजे, किन्तु वे कहते हैं कि बागबहार नामक कोई ग्रन्थ दासजी ने नहीं बनाया। उनका मत है कि शायद लोग नाम प्रकाश को बागबहार कहते हों। हम ने भी बागबहार कहीं नहीं देखा और जान पड़ता है कि राजा साहब का अनुमान यथार्थ है। इनके सब ग्रन्थ अब हमारे पास वर्त्तमान हैं।

दासजी ने काव्यनिर्णय में लिखा है कि सोमवंशी राजा पृथ्वी-

पति के भाई बाबू हिन्दूपतिसिंह उनके आश्रयदाता थे। दासजी ने इन्हीं हिन्दूपतिसिंह के नाम पर अपने सब ग्रन्थ बनाये हैं, केवल विष्णुपुराण में किसी आश्रयदाता का नाम नहीं दिया है। पूर्वोक्त राजा साहब ने सोमवंशियों का इतिहास भेजने की भी कृपा की है, जिससे विदित होता है कि राजा छत्रधारीसिंह के पुत्रों में पृथ्वीपतिसिंह और हिन्दूपतिसिंह भी थे। इन दोनों की माता रीवाँ-नरेश की पुत्री रानी सुजान कुवँरि थीं। राजा पृथ्वीपतिसिंह संवत् १७९१ में गद्दी पर बैठे और संवत् १८०७ में अहमद ख़ाँ बंगश का पक्ष लेकर युद्ध करने के कारण दिल्ली के वज़ीर सफ़दरजंग ने छल से इनका वध किया और प्रतापगढ़ का राज्य कुछ दिनों के वास्ते ज़ब्त होगया। उस समय इस राज्य में बड़ा विप्लव रहा और न जाने क्यों इस संवत् के पीछे दासजी ने कोई ग्रन्थ नहीं बनाया। शायद इसी गड़बड़ में ये भी मार डाले गये हों।

दासजी ने छन्दोर्णव पिंगल में अपना परिचय निम्न लिखित छन्द द्वारा दिया है:—

अभिलाषा करी सदा ऐसनि का होय मित्य
　　सब ठौर दिन सब याही सेवा घरचानि।
लोमा नई नीचे ज्ञान हलाहल ही को मंसुमंत है
　　कृपा पताल निंदा रसही को खानि॥
सेनापति देवी कर शोभा गनती को भूप
　　पन्ना मोती हीरा हेम सौदा दास ही को जानि।
ही अपर देव पर बड़े यश रटे नाउँ
　　खगासन नगधर सीतानाथ कोलापानि॥

या कवित्त अन्तर बरन लै तुकान्त ह्वै छंदि।
दास नाम कुल ग्राम कहि नाम भगति रस मदि ॥

इस रीति से पढ़ने पर निम्नलिखित पता ज्ञात होता हैः—
भिखारीदास कायस्थ, बरन बहीवार, भाई चेनलाल को, सुत कृपाल दास को, नाती वीरभानु को, पनाती रामदास को, अरवर देश, टेउँगा नगर ताथला। श्रीवास्तव कायस्थों में एक शाखा बहीवार है।

छन्दोर्णव पिंगल के अतिरिक्त इनके सब ग्रन्थ सबसे प्रथम प्रतापगढ़ के राजा अजीतसिंह ग्रैार प्रतापबहादुरसिंहजी ने ही छपवाये।

दास जी ने केवल विष्णुपुराण हिन्दूपतिसिंह को अर्पित नहीं की है ग्रैार केवल इसी के बनने का सवत् भी नहीं दिया है। इसकी कविता इनके सब ग्रन्थों से शिथिल है, ग्रतः जान पड़ता है कि यह इनका प्रथम ग्रन्थ है ग्रैार ऐसे समय बना था जब तक कि ये हिन्दूपति के यहाँ नहीं गये थे। यह ग्रन्थ सस्कृत विष्णुपुराण का अनुवाद है। इन्हों ने ग्रमरकोश का भी उल्था किया है। ग्रतएव जान पड़ता है कि ये महाशय सस्कृत के भी ग्रच्छे पण्डित थे। तब इनकी ग्रवस्था विष्णुपुराण बनाते समय तीस वर्ष से कम न होगी। अनुमान से जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ सवत् १७८५ के लगभग बना होगा, सो इस हिसाब से दास जी का जन्म काल सवत् १७५५ के इधर उधर होगा। विष्णुपुराण रायल ग्रठपेजी के ३४५ पृष्ठों का एक बृहत् ग्रन्थ है। इसके बनाने में दो तीन साल से कम न लगे होंगे। यह विशेषतया दोहा चैापाइयों में बना है,

परन्तु कहीं कहीं इसमें कुछ अन्य छन्द भी आगये हैं। इसकी कविता साधारण परन्तु निर्दोष है और भाषा गोस्वामी तुलसीदास से मिलती जुलती है। गोस्वामी जी ने दोहा चौपाइयों में कथा वर्णन की प्रथा ऐसी कुछ स्थिर सी कर दी है कि सब कवि विना जाने भी उसी का अनुगमन कर बैठते हैं। इस ग्रन्थ की कथा रोचक और कविता सराहनीय है, परन्तु जान पड़ता है दास जी के अन्य ग्रन्थों की साहित्य-प्रौढता के कारण इसका प्रचार नहीं हुआ।

इन्हों ने अपना दूसरा ग्रन्थ रससारांश संवत् १७९१ में बनाया।

सत्रह सै यक्यानवे नभ सुदि छठि बुधवार।
अरवर देश प्रतापगढ भयो ग्रन्थ अघतार॥

जैसा कि इसके नाम से विदित होता है, इसमें सूक्ष्मतया रसों का वर्णन किया गया है। जैसे देव जी ने जाति वर्णन किया है, उसी प्रकार दासजी ने भी भिन्न भिन्न जाति की स्त्रियों का कथन किया है, परन्तु उनको नायिका के रूप में न दिखा कर दूतियों के रूप में लिखा है। इन्हों ने निम्न लिखित स्त्रियों का दूती करके वर्णन किया हैः—धाय, सखी, नायनि, नटिनी, सोनारिनि, पड़ोसिनि, चुरिहारिनि, पटइनि, बरइनि, रामजनी, संन्यासिनि, चितेरिनि, धोबिनि, कुम्हारिनि, अहिरिनि, वैदिनि, गन्धिनि और मालिनि। सब कवियों द्वारा कहे हुए दस हावों के अतिरिक्त दास जी ने और भी दस हाव कहे हैं, यथा, बोधक, तपन, चकित, हसित, कुतूहल, उद्दीपक, केलि, विक्षिप्त, मद और हेला। अन्य भावों के अतिरिक्त इन्होंने प्रीति को भी एक भाव माना है।

परकीयाओं के अतिरिक्त दास जी ने साध्या परकीयाओं का भी वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में दोहों की अधिकता है, जो दोहे बहुधा गद्यवत् हैं, परन्तु तो भी ग्रन्थ अच्छा बना है।

उदाहरणस्वरूप इसके दो छंद नीचे लिखे जाते हैं।

लाल चुरी तेरे भली लागत निपट मलीन।
हरियारी करि देउँगी हौं तो हुकुम अधीन॥

जो दुख सों प्रभु राजी रहौ तौ चहौ सुख सिन्धुन सिन्धु बहाऊँ।
वै यह नींद सुनी नहिँ थौन सों चैन सो हौं हिय मौन गहाऊँ॥
मैं यहि सोच बिसूरि बिसूरि करौं विनती प्रभु साझ पहाऊँ।
तीनिहुँ लोक के नाथ सनाथ हौ हौं हौं अकेलो अनाथ कहाऊँ॥

नामप्रकाश (अमरकोष भाषा) संवत् १७९५ में बना। इस ग्रन्थ के प्रकाशक ने प्रत्येक नाम को अलग अलग लिख कर बड़ा उपकार कर दिया है। अन्त में एक शब्दानुक्रमणिका भी लगी है, जिस से शब्दों के खोजने में सुविधा होती है। इस ग्रन्थ की रचना विविध छन्दों में हुई है और इसके छन्द निर्दोष एवं सराहनीय हैं। यह ४०० पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है।

"छन्दोर्णव पिंगल" इनका चौथा ग्रन्थ है। यह संवत् १७९९ में बना था। इस में दासजी ने पिंगल का वर्णन किया है, जिस में छन्दों के अतिरिक्त मेरु, मर्कटी, पताका, नष्ट, उद्दिष्ट, प्रस्तार इत्यादि भी कहे गये हैं। ग्रन्थ साधारणतया अच्छा है। इनका पंचम ग्रन्थ काव्यनिर्णय संवत् १८०३ आश्विन विजय दशमी के दिन समाप्त हुआ। यह एक बड़ा ग्रन्थ है और दासजी की आचार्यता इसी की

रचना से मान्य है। इस की कविता के विषय में इन्हों ने लिखा है कि, आगे के सुकवि रीझि हैं तौ कविताई नतौ राधिका कन्हाई सुमिरन को बहानो है।

कविता द्वारा शिक्षा की इन्हों ने अच्छी महिमा कही है।

प्रभु ज्यों सिखवै वेद मित्र मित्र ज्यों सत कथा।
काव्य रसनि को भेद सुखसिख दानि तियानि लौं॥

इनके मत में कविता बनाने के लिए शक्ति, निपुणता, और अभ्यास की आवश्यकता है। इन्हों ने कहा है कि—

रस कविता को अग भूखन हैं भूखन सकल।
गुन सरूप अरु रंग दूखन करै कुरूपता॥

भाषा लक्षण इन्हों ने यह दिया है :—

ब्रजभाषा भाषा रुचिर कहै सुमति सब कोय।
मिले ससकृत पारसिहु पै अति प्रकट जुहोय॥
मिले अमर ब्रज मागधी नाग यमन भाखानि।
सहज पारसी हु मिले खट विधि कवित बखानि॥

इन्होंने तुलसी और गग को इस कारण कवियो का सरदार माना है कि उनके काव्यों में विविध प्रकार की भाषायें मिलती हैं।

इस ग्रन्थ में पदार्थनिर्णय, रसांग, भाव, ध्वनि, अलंकार, गुण, चित्र, तुक, दोष, और दोषोद्धार के वर्णन हैं। इसमें दासजी ने पिंगल को छोड कर कविता के प्राय: सभी अगो के वर्णन किये हैं और यह रीति ग्रथों में परम प्रशसनीय ग्रन्थों में से एक माना जाता है। इसको आद्योपात ध्यानपूर्वक पढ जाने से मनुष्य

समस्त भाषाकाव्य को भलीभाँति समझ सकता है। काव्य की उत्तमता में यह सिवा शृंगार निर्णय के दास जी के ग्रैार सब ग्रंथों से श्रेष्ठतर है। इसके उदाहरणस्वरूप हम एक ऐसा छंद देते हैं, जिसमें पाँचों प्रतीपों के उदाहरण हैं ग्रैार एक छंद भाषा की उत्तमता का भी लिखते हैं।

चंद कहैं तिंय आनन सो जिनकी मति याके बखान सों है रली।
आनन एकता चंद लहै मुख के लखे चंद गुमान घटै अली॥
दास न आनन सो कहैं चंद दई सों भई यह बात न है भली।
ऐसो अनूप बनाय कै आनन राखिबे को ससि हू की कहा चली॥

ॲंखियाँ हमारी दई मारी सुधि बुधि हारीं
मोहू ते जुन्यारी दास रहैं सब काल मैं।
कैान गहै ज्ञानै काहि सैांपत सयानै
कैान लोक ग्रोक जानै ए नहीं हैं निज हाल मैं॥
प्रेम पगिरहीं महा मोह मैं उमगि रहीं
ठीक ठगि रहीं लगि रहीं बनमाल मैं।
लाज को ग्रॅंचै कै कुल धरम पचै कै
बृथा बंधन सँचै कै भईं मगन गुपाल मैं॥

"शृंगारनिर्णय" संवत् १८०७ बैसाख सुदी १३ को समाप्त हुग्रा। इसमें दासजी ने नायक, नायिका, उद्दीपन, ग्रनुभाव, सात्विक, एवं वियोग शृंगार का कथन किया हे। इन्होंने तपन हाव का भी वर्णन किया है। आप ने निम्नलिखित नायिकाग्रों को भी स्वकीया माना हैः—

श्रीमाननि के भौन में भोग्य भामिनी श्रौर।
तिनहू को सुकियादि में गनैं सुकबि सिरमौर॥

इस के उदाहरणस्वरूप राजा ययाति की दूसरी पत्नी शरमिष्ठा को समझना चाहिए। यह समस्त ग्रंथ और विशेपतया नखशिख बहुत ही उत्कृष्ट बना है। दास जी के सब ग्रन्थों में यह श्रेष्ठतम है। इसका उदाहरणस्वरूप एक छन्द यहाँ उद्धृत करते हैं।

कंजसकोच गड़े रहे कीच में मीनन बोरि दियो दह नीरन।
दास कहै मृगहू को उदास कै बास दियो है अरन्य गँभीरन॥
आपुस में उपमा उपमेय ह्वै नैन ए निंदत हैं कबिधीरन।
खंजन हू को उड़ाय दियो हलुके करि डारे अनंग के तीरन॥

दास की भाषा शुद्ध ब्रज-भाषा है। उसमें माधुर्य विशेप होता है और श्रुति कटु शब्द बहुत कम हैं। अन्य उत्तम कवियों की भाँति इनकी भाषा में भी मिलितवर्ण बहुत कम आने पाये हैं। इनको अनुप्रास का इष्ट न था परन्तु कहीं कहीं इन्होंने उसका व्यवहार भी किया है। इन कथनों का उदाहरणस्वरूप एक छन्द लिखा जाता है।

आनन में मुसुकानि सुहावनि बंकुरता अँखियानि छई है।
बैन सुने मुकले उर जात जकी बिथकी गति ठौनि ठई है॥
दास प्रभा उछलै सब अंग सुरंग सुबासता फैलि गई है।
चंदमुखी तनु पाय नवीनो भई तरुनाई अनंदमई है॥

बहुत स्थानों पर इन्होंने स्वाभाविक वर्णन अच्छे किये हैं, परन्तु इनकी कविता में प्राकृतिक वर्णनों का अभाव सा है। हृदय पर चोट लगाने वाले भाव भी इनकी कविता में यत्र तत्र पाये

जाते हैं और उसमें भावपूर्ण एवं गंभीर छन्दों का भी अभाव नहीं है। हम इसके उदाहरणार्थ एक छन्द भी नीचे लिखते हैं।

नैनन को तरसैये कहाँ लौं कहाँ लौं हियो बिरहागिमें तैये।
एक घरी न कहूँ कल पैये कहाँ लगि प्रानन को कलपैये॥
आवै यही अब जी मैं विचार सखी चलि सौतिहु के घर जैये।
मानघटे ते कहा घटि है जुपै प्रान पियारे के। देखन पैये॥

दासजी ने यत्र तत्र हास्य के वर्णन भी बहुत अच्छे किये हैं।

ऊधो तहाँई चलो लै हमें जहँ कूबरी कान्ह बसैं यकठोरी।
देखिए दास अघाय अघाय तिहारे प्रसाद मनोहर जोरी॥
कूबरी सों कछु पाइए मंत्र लगाइए कान्हसों प्रीति की डोरी।
कूबर भक्ति बढाइए बंदि चढ़ाइए चंदन बंदन रोरी॥

भाषा-साहित्य में यदि कोई प्राचीन कवि समालोचक हुआ है, तो वह यही महाकवि है। जैसे वह जाति के मुंशी थे, वैसे ही इन्होंने काव्य में भी मुंशीगीरी ख़तम की है। इस कथन की पुष्टि काव्यनिर्णय के प्रथम अध्याय एवं चौदहवें अध्याय के पन्द्रहवें छंद से होती है।

इन्होंने अपनी कविता में जहाँ तहाँ नीति के भी अच्छे वचन कहे हैं। देखिए काव्यनिर्णय का छन्द ७४ अध्याय आठवाँ। इन्हों ने भी अपने प्रत्येक ग्रन्थ के कवित्त अन्यान्य ग्रन्थों में रख दिये हैं, पर ऐसा बहुत नहीं हुआ है। इन सब गुणों के रहते हुए भी कहना पड़ता है कि इनकी रचना में तल्लीनता का अभाव सा है, अर्थात् सूर, तुलसी, देव और भूषण की भाँति साहित्यानंद में मग्न होकर दास आपे से बाहर कभी नहीं होते। इनमें एक यह भी

बहुत बड़ा दोष है ये कि अन्य कवियों की उक्तियों को अपनी कविता में बेधड़क रख लेते हैं। इस कथन के उदाहरणस्वरूप इनकी रचना में बहुत छन्द मैाजूद हैं। विचारे श्रीपति कवि पर यह अपना हक़ विशेष रूप से समझते थे यहाँ तक कि श्रीपतिसराज के अध्याय के अध्याय से भाव उठाकर आपने जैसे के तैसे अपने काव्यनिर्णय में रखलिये हे ग्रैार इस बात को स्वीकार करना ते दूर रहा अपनी कवियों की नामावली में श्रीपतिजी का नाम तक नहीं लिखा, माने ये उनको जानतेही न थे। सस्कृत के बहुतेरे श्लोकों के अनुवाद भी इनकी कविता में वर्तमान हैं।

इन दो दोषों के होते हुए भी इनकी आचार्यता माननीय है। दशांग काव्य बहुत ही उत्तम रीति से इन्हें ने समझाया है ग्रैार इनका बोलचाल भी बहुत श्लाघ्य हे। भाषा साहित्य के आचार्यों में आचार्यता की दृष्टि से इनका पद बहुतों से न्यून नहीं है। कविता की उत्तमता में ये महाशय दूसरे दर्जे के कवि हैं। इनका पांडित्य अवश्य सराहनीय हे। यदि ये महाशय काव्य न करके भाषा-साहित्य की समालोचना में अपने को लगाते, तो शायद भाषा का अधिक उपकार होता। इन के विषय में एक बात सर्व-प्रधान है कि इनका भाषा-माधुर्य्य एवं प्रसाद अत्यन्त सराहनीय है ग्रैार इनके बहुतेरे छन्द मतिराम एव देव तक की उत्तम रचनाओं से पूरी तुलना के योग्य हैं।

(७१४) राजा गुरुदत्तसिंह उपनाम भूपति।

ये महाशय बन्धल गोती ठाकुर एवं अमेठी के राजा थे। इन्हों ने संवत् १७९१ में सतसई नामक सात सैा दोहों का एक

बड़ा भावपूर्ण ग्रन्थ बनाया। ये महाराज कविकोविदों के कल्पवृक्ष थे। इनकी प्रशंसा में कवीन्द्र के बनाये हुए बहुत से छन्द मिलते हैं। कवीन्द्र जी इनकी सभा में थे, वरन् रस-चन्द्रोदय बनाने पर अमेठी के राजा हिम्मतसिंहजी ने ही उन्हें कवीन्द्र की उपाधि दी थी। राजा हिम्मतसिंह के पीछे कवीन्द्र बहुत दिन तक राजा गुरुदत्त सिंहजी के समय में भी अमेठी में रहते रहे। राजा गुरुदत्तसिंहजी से एक बार ग्रवध के नवाब सम्रादत ख़ाँ से युद्ध हुआ। नवाब सम्रादत ख़ां ने गढ़ अमेठी को चारों ग्रोर से घेर लिया। राजा गुरुदत्तसिंहजी जंगल को निकल जाने का विचार करके गढ के बाहर निकले, परन्तु ग्रौर किसी ग्रोर से न निकल कर जिधर स्वयं नवाब साहब थे उधर ही से चले ग्रौर लड़ते भिड़ते तथा बहुत से शत्रुग्रों को काटते हुए जंगल को निकले चले गये। इसी का वर्णन कवीन्द्र जी ने निम्न छन्द द्वारा किया:—

समर अमेठी के सरेस गुरुदत्त सिंह
सादत की सेना समसेरन सों भानी है।
भनत कवीन्द्र काली हुलसी असीसन को
सीसन को ईसकी जमाति सरसानी है॥
तहाँ एक जोगिनी सुभट खोपरी लै
उड़ी सोनित पियत ताकी उपमा बखानी है।
प्याली लै चिनी की छकी जोवन तरंग मानो
रंग हेत पीवत मजीठ मुगलानी है॥

कहते हैं कि राजा साहब ने कई वर्षों के पीछे अपना राज्य फिर पाया ।

राजा गुरुदत्तसिंह जी की सतसई की एक हस्त-लिखित प्रति हमारे पास वर्तमान है । इसके देखने से जान पड़ता है कि इन्होंने कंठाभरण और रसरत्नाकर नामक दो और दोहों के ग्रन्थ बनाये हैं। सतसई में इन दोनों ग्रन्थों के छन्द बहुतायत से उद्धृत किये गये हैं । खोज में भागवत भाषा और रसदीप नामक इनके दो ग्रन्थ और निकले हैं । अतः कुल मिलाकर इनके पाँच ग्रन्थ हुए ।

इनकी कविता बहुत सरस और भाषा अत्यन्त मधुर और सुहावनी होती थी। बिहारीलाल के अतिरिक्त और किसी भी दोहाकार की कविता उत्तमता और सरसता में इनकी कविता से नहीं बढ़ पाती। प्रत्येक विषय पर इन्हों ने बहुत ही मनोरञ्जक और सच्ची कविता की है। राजा साहब ने बिहारी की भाँति थोड़े शब्दों में बहुत सा भाव भर रक्खा है। इनकी रचना में संक्षिप्त गुण का बहुत अच्छा चमत्कार है। इन्हों ने भाषा का भी यथेष्ट प्रयोग किया है और उसमें शब्दालंकारों का ख़ूब समारोह रक्खा है। रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा आदि अलंकारों की भी छटा सतसई में प्रभा फैलाती है। इसका विषय शृंगार प्रधान है। दोहाओं के चमत्कार को राजा साहब ने ख़ूब ही दिखाया है।

सत्रह शतक इकानवे कातिक सुदि बुधवार।
ललित तृतीया को भयो सतसैया अवतार ॥
घूँघुट पट की आड़ दै हँसति जबै वह दार।
ससि मंडल ते तव कढ़ति जनु पियूष की धार ॥

अति सौरभ सद वास ते सहज मधुर सुख कन्द।
होत अधिक वो नलिन ढिग सरस सलिल मकरन्द॥
भये रसाल रसाल हैं भरे पुहुप मकरन्द।
मान सान तोरत तुरत भ्रमत भ्रमर मद मन्द॥

(७१५) तोषनिधि।

ये महाशय चतुर्भुज शुक्ल के पुत्र शृंगवेरपुर (सिंगरौर) जिला इलाहाबाद के रहने वाले थे। इन्होंने संवत् १७९१ में सुधानिधि नामक रस-भेद और भाव-भेद का १८३ पृष्ठों और ५६० छन्दों का एक बड़ाही बढ़िया ग्रन्थ बनाया। उसी में कवि ने अपने विषय में उपर्युक्त बातें लिखी हैं। विनयशतक और नखशिख नामक इनके दो और ग्रन्थ खोज में मिले हैं। तोषनिधि अपनी श्रेणी के अगुआ हैं। आपने अपने ग्रन्थ में आचार्यता भी प्रदर्शित की है और कई और काव्यांगों पर अच्छे विचार प्रकट किये हैं। कुछ लोगों का यहाँ तक मत है कि इनका रचना-चमत्कार दास जी के समान है। इन्हों ने अनुप्रास और यमक का प्रयोग किया है और भावपूर्ण गम्भीर छन्द आपकी रचना में बहुत पाये जाते हैं। सुधानिधि ऐसा विलक्षण बना है कि जिस एक ग्रन्थ से ही ये सुकवि कहे जा सकते हैं।

इक दीनो अधीनो करैं बतियाँ जिनकी कटि छीनो छला में करैं।
इक दोस धरैं अफसोस भरैं इक रोस के नैन लला में करैं॥
कहि तोष छुटी जुग जंघन सों उर दै भुज स्यामै सलामैं करैं।
निज अम्बर माँगैं कदम्ब तरे ब्रज बामैं कलामैं मुलामैं करैं॥

दौतन में रवि को प्रतिविम्ब परैं किरनैं सो घनी सरसाती ।
भीतर हूँ रहि जात नहीं अँखियाँ चकचौंध ह्वै जात हैं राती ॥
..ढि रहो बलि कोठरी में कहि तोप करौं विनती बहु भाँती ।
सारसी नैन लै आरसी सो अँग काम कहा कढ़ि धाम मैं जाती ॥

(७१६ व ७१७) दलपति राय तथा बंसीधर ।

इन दोनों कवियों ने मिल कर अलंकार रत्नाकर नामक ग्रन्थ संवत् १७९२ में बनाया। दलपति राय महाजन और बंसीधर ब्राह्मण थे। ये दोनों कवि अमदाबाद के रहने वाले थे। अमदाबाद से गुजरात के अहमदाबाद का प्रयोजन जान पड़ता है । इन्होंने "उदयापुर" वाले जगतेस के नाम पर यह ग्रन्थ बनाया है। शुद्ध शब्द उदयपूर और जगत्सिंह हैं। महाराणा जगत्सिंहजी संवत् १७९१ में सिंहासनारूढ़ हुए थे और संवत् १८०८ में परलोकगामी हुए। उनकी बड़ाई में यह छन्द लिखा गया है :—

सकल महीपन के राजैं सिरताज राज
पर उपकारी हारी भारी दुख दन्द के।
देव जगतेस धीर गुरुता गँभीर धरे
भंजन विपच्छ पच्छ दच्छ फौज फन्द के ॥
प्रभुता प्रकास अति रूप को निवास सोहैं
प्रगट प्रकास मेटैं जग दुख वृन्द के।
मेघ से समुन्दर से पारथ पुरन्दर से
रति पति सुन्दर समान सूर चन्द के ॥

अलंकार रत्नाकर में जोधपूर के महाराजा जसवन्तसिंह के

बनाए हुये भाषाभूषण की एक प्रकार से टीका की गई है। इस ग्रन्थ में कवियों ने अपनी साहित्य-छटा दिखाने का प्रयत्न न करके अलंकारों के विषय को समझाने का अधिक उद्योग किया है। इस कारण अलंकार-ग्रन्थों में जिज्ञासु के वास्ते यह ग्रन्थ परमोपकारी है। इसमें पूर्ण रूप से गद्य द्वारा प्रत्येक अलंकार का स्वरूप एवं उसके उदाहरण में अलंकार का निकलना समझा दिया गया है। इसमें कर्त्ताओं ने अपनी ही कविताओं से अलंकारों के उदाहरण न दे कर अन्य ४४ प्रसिद्ध प्रसिद्ध कवियों की रचानाओं से भी उदाहरण दिये हैं, जिस कारण से इस ग्रन्थ के प्रायः सब उदाहरण बड़े ही बढ़िया हैं। इन दोनों रचयिताओं की कविता बड़ी मनोहर बनती थी। इनकी भाषा बहुत मधुर और भाव बड़े गम्भीर होते थे।
इस ग्रन्थ के दोहे भी बड़े मनोहर हैं।

रहै सदा विकसित विमल धरे बास मृदु मंजु।
उपज्यो नहिँ पुनि पंक तै प्यारी वच मुख कंजु॥

इन कवियों ने अनुप्रास भी अच्छे रक्खे हैं। इन की कविता बहुत थोड़ी है, परन्तु है बड़ी उत्कृष्ट। इन दोनों कवियों के छन्द इस ग्रन्थ में अलग अलग हैं, परन्तु काव्य के गुणों में दोनों यकसां हैं, सो इनके विषय में सब बातें मिलाकर लिखी गई हैं। इन को हम पद्माकर कवि की कक्षा में समझते हैं। उदाहरणार्थ इन के कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

आली री निहारि वृषभानु की दुलारि जाहि
पेखि प्रान प्रीतम के प्रेम पास मैं परत।

भौंहन को फेरिवो औ हेरिवो विहँसि मन्द
    टेरिवो सखी को जब नाह अंक मैं भरत ॥
आजु लौ न जानी ही सो परी पहिँचानी अब
    जोबन निसानी ऐसी अंग अंग को धरत ।
विधना प्रवीन मानो तन मैं नवीन कियो चाहै
    कटि छीन याते पीन कुच को करत ॥
विकसित कंजन की रुचि को हरत हठि
    करत उदोत छिन छिन ही नवीनो है ।
लोचन चकोरन को सुख उपजावै अति
    धरत पियूख लखे मेटि दुख दीनो है ॥
छवि दरसाय सरसाय मीन केतन को
    तापै बुधि हीन विधि काहे विधु कीनो है ।
पहो नँदनन्द प्यारी तेरो मुख चन्द यह
    चन्द ते अधिक अंक पंक के विहीनो है ॥
(यह छन्द दोनों कवियों का बनाया हुआ है ।)
अरुन हरौल नभ मंडल मुलुक पर चढ़ो अक्क
    चक्कवे कि तारि दै किरनि कोर ।
आवत ही सावंत नछत्र जोय धाय धाय
    घोर घमसान करि काम आये ठौर ठौर ॥
ससिहर सेत भयो सटक्यो सहमि ससी आमिल
    उलूक जाय गिरे कन्दरन चोर ।
दुन्द देखि अरविन्द बन्दी खाने ते भगाने पायक
    पुलिन्द वै मलिन्द मकरन्द चोर ॥

इस ग्रन्थ में महाराणा जगतसिंह के अतिरिक्त निम्न लिखित महापुरुषों के भी नाम आये हैं:—उदोतचन्द, प्रतापसिंह, जाफ़र ख़ान, और ख़ान ख़ाना।

दलपति राय वंसीधर ने अपने छन्दों के अतिरिक्त निम्न-लिखित कवियों के भी छन्द उदाहरणों में रक्खे हैं:—

यशवन्त सिंह (स्फुट छन्द एवं भाषा भूषण से), सेनापति, केशवदास, बलभद्र, भगवन्त सिंह, गंग, बिहारी लाल, मुकुन्द लाल, मदन, शिरोमणि, सुखदेव, चातुर, सूरति मिश्र, नीलकंठ, मीरन, रामकृष्ण, आलम, देवी, दास, धीरी, कृष्ण दंडी, देव, कालिदास, दिनेश, बीठल राम, अनीस, काशीराम, चिन्तामणि, पुखी, शिव, गोप, रघुराय, नेही, मुबारक, रहीम, मतिराम, रस खानि, निरमल, निहाल, निपट निरंजन, नन्दन, महाकवि, राधाकृष्ण और ईश। इनमें से भगवन्त सिंह, धीरी, कृष्ण दंडी, गोप, निरमल और राधा कृष्ण के अतिरिक्त शेष सब कवियों के नाम शिव सिंह-सरोज में पाये जाते हैं। इस ग्रन्थ में इन कवियों के नाम आ जाने से इतना निश्चय हो गया कि इन लोगों ने सवत् १७९२ के पूर्व या तब तक कविता की थी। शिवसिंहसरोज में से कुछ कवियों के जन्मकाल संवत् १७९२ के पीछे लिखे गये हैं, सो इस ग्रन्थ में उनके नाम आ जाने से यह निश्चय हो गया कि उन के जन्मकाल इस समय से पूर्व के हैं। पुराने संग्रहों से इतना बहुत बड़ा उपकार हो जाता है कि एक तो पुराने कवियों के नाम स्थिर हो जाते हैं, दूसरे उन के समय निरूपण में कुछ सुभीता रहता है। सो इस प्रकार विचार करने से कालिदास का हजारा बड़ा ही प्रशंसनीय

ग्रन्थ है । यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी हज़ारों ही की भाँति उपकारी है ।

नाम—(७१८) शिवनारायण ग़ाज़ीपुर ।

ग्रन्थ—१ लालग्रन्थ, २ सन्तविलास, ३ भजनग्रन्थ, ४ सन्त-सुन्दर, ५ गुरुन्यास, ६ सन्त चारी, ७ सन्तोपदेश, ८ शब्दावली, ९ सन्त परवाना, १० सन्तमहिमा, ११ सन्तसागर, १२ सन्तविचार ।

रचना सं०—१७९२ ।

विवरण—ये महाशय शिवनारायणी पन्थ के चलाने वाले हैं । इनकी रचना साहित्य की दृष्टि से बिल्कुल साधारण है ।

नाम—(७१६) महाकवि ।

कविता-काल—१७९२ के लगभग ।

विवरण—इनकी रचना बड़ी मनोहारिणी होती थी, परंतु इनका कोई ग्रंथ नहीं मिलता है । इनका एक ही छंद हमें याद है श्रौर वही सुंदरीतिलक एवं शिवसिंहसरोज में है । इनकी गणना साधारण श्रेणी में है । इनका नाम दल-पति वंसीधर ने लिखा है ।

राधिका माधवे एकही सेज पै धाय लै सोई सुभाय सलोने ।
पाटे महाकवि कान्ह को मध्य मैं राधे कह्यो यह बात न होने ॥
सांवरी होउँगी सांवरे संग में बावरी तोहि सिखाई है कोने ।
सोने को रंग कसैाटी लगे पै कसैाटी को रंग लगै नहिँ सोने ॥

(७२०) सोमनाथ ।

ये महाशय माथुर ब्राह्मण थे। इन्हों ने अपना कुल इस प्रकार कहा है:—टिरौरा वंशी नरोत्तम मिश्र के देवकीनन्दन एवं श्रीकंठ, नामक दो पुत्र थे। देवकीनंदन ने नीलकंठ, मोहन, महामणि और राजाराम नामक चार पुत्र पाये, जिनमें से नीलकंठ के उजागर, गंगाधर और सोमनाथ आत्मज हुए। जैपूरनरेश महाराजा रामसिंह के नरोत्तम मंत्र-गुरु थे। ये महाराज संवत् १७२४ में राजगद्दी पर बैठे थे। नीलकंठ महाराज कविता एवं ज्योतिष में बड़े प्रवीण थे।

सोमनाथजी ने संवत् १७९४ की ज्येष्ठ बदी १० को "रस-पीयूषनिधि" नामक ग्रंथ समाप्त किया। इनका यही एक ग्रंथ पं० युगुलकिशोर जी मिश्र के पुस्तकालय में है। ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने इनके किसी ग्रंथ का नाम नहीं लिखा और इनके जन्म का संवत् १८८० बताया है, परंतु स्वयं इनके ग्रंथ से विदित होता है कि इन्हों ने सं० १७९४ में रसपीयूषनिधि ग्रंथ बनाया। इसकी काव्य-प्रौढ़ता से अनुमान होता है कि लगभग पचास वर्ष की अवस्था में सोमनाथ जी ने इसे समाप्त किया होगा। इनके मरण-काल के विषय में हम कुछ भी नहीं कह सकते। इन्हों ने अपने ग्रंथ में तत्कालीन इतिहास का बहुत थोड़ा उल्लेख किया है। कविता में इन्हों ने अपने नाम शशिनाथ, सोमनाथ और नाथ लिखे हैं। इन के और ग्रन्थ सुजानविलास और कृष्णलीलावली पंचाध्याई खोज से मिले हैं। ये महाशय भरतपुर के महाराज बदनसिंह के कनिष्ठ

पुत्र प्रतापसिंह के यहाँ रहते थे। बदनसिंह के बड़े पुत्र सूरजमल युवराज थे और प्रतापसिंह को वैरिगढ़ मिला था, जिसमें वे रहते थे। सूरजमल के विजयों के वर्णन सूदन कवि ने बहुत ही सोहावने काव्य द्वारा किये हैं। प्रतापसिंह का सन् १७७० ई० तक जीवित रहना अनुमान में आता है, क्योंकि वे सूरजमल के छोटे भाई थे और सूरजमल सन् १७६१ ई० वाली पानीपत की तीसरी लड़ाई के समय वर्त्तमान थे।

रसपीयूषनिधि रीति का बहुत ही सुन्दर ग्रंथ है। इसमें सोमनाथ ने पिंगल, कविता के लक्षण, प्रयोजन, कारण और भेद, पदार्थ-निर्णय, ध्वनि, भाव, रस, रसाभास, भावाभास, दूषण, गुण, अनुप्रास, यमक, चित्र काव्य और अलंकार कहे हैं। पदार्थ-निर्णय में देवजी की भाँति इन्हों ने भी वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य के अतिरिक्त तात्पर्य भी माना है। रस का निम्न लिखित लक्षण इन्होंने बहुत यथार्थ दिया है:—

सुनि कवित्त को चित्त मधि सुधि न रहै कछु और।
होय मगन वहि मोद मैं सो रस कहि सिरमौर॥

शृंगाररस के अंतर्गत नायिका भेद भी बहुत विस्तारपूर्वक कहा गया है। रसों के पीछे प्रतापसिंह के हाथी और घोड़ों का अच्छा वर्णन हुआ है। सोमनाथ जी ने दशांग कविता को इस एक ही ग्रंथ में बहुत उत्कृष्ट प्रकार से दिखा दिया है।

श्रीपति और दास जी के सिवा इनका रीति ग्रंथ प्रायः और सब आचार्यों के रीति-ग्रंथों से रीति के विषय में श्रेष्ठतर ।

प्रत्येक विषय को जैसी साफ़ श्रीर सुगम रीति से इन्होंने समझाया है, वैसा कोई भी कवि नहीं समझा सका है। कविता से अपरिचित पाठक भी इस ग्रंथ को पढ़ कर दशांग कविता समझ सकता है। हमारी समझ में आचार्यता की दृष्टि से देखने पर केवल चार सत्कवियों ने दशांग कविता का वर्णन साफ़ श्रीर सुंदर किया है, अर्थात् देव, श्रीपति, सोमनाथ श्रीर दास। इन सब में समझाने की रीति सोमनाथ जी की प्रशंसनीय है। केशवदास श्रीर कुलपति मिश्र भी आचार्य हैं, परंतु उन्होंने एक तो दशांग कविता नहीं कही, श्रीर दूसरे इन दोनों की कविता कठिन है। रसपीयूषनिधि कार्योत्कर्ष में भी प्रशंसनीय है। आकार में यह दास के काव्यनिर्णय से सवाया होगा।

सोमनाथ की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है। उसमें मिलित वर्ण बहुत कम आने पाये हैं श्रीर समस्त ग्रंथ बहुत ही मधुर भाषा में लिखा गया है। इनको यमक, अनुप्रास आदि का इष्ट न था श्रीर ये उचित रीति से अपनी कविता में उनका व्यवहार करते थे। शब्दों के स्वरूप में ये महाशय शुद्ध संस्कृत के स्थान पर हिन्दी की रीति अधिक पसंद करते थे। वृन्दावन की जगह ये बिंदावन लिखते थे। इनकी कविता में प्रकृष्ट छंदों की संख्या बहुत अधिक न मिलेगी, परन्तु इनकी रचना निर्दोष है श्रीर एकरस बनती चली गई है, ऐसा नहीं कि कहीं बहुत उत्तम हो श्रीर कहीं शिथिल पड़ गई हो। ये महाशय देव श्रीर मतिराम की भाँति चमत्कारिक छन्द नहीं लिख सकते थे, परन्तु इनकी भाषा बहुत ही संतोषजनक है। आप

दासजी के समकक्ष कवि हैं। इनकी कविता से दो छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

प्रीति नई नित कीजति है सबसों छलकी बतरानि परी है।
सीखी ढिठाइ कहा ससिनाथ हमैं दिन द्वैकते जानि परी है॥
ग्रैर कहा कहिए सजनी कठिनाई गरे अति ग्रानि परी है।
मानत है बरज्यो न कछू ग्रब पेसी सुजानहि बानि परी है॥

दिसि विदिसनि ते उमड़ि मढ़ि लीन्हों नभ
छेड़ि दीनें धुरवा जवासे जूथ जरिगे।
डहडहे भए द्रुम रंचक हवा के गुन
कहूँ कहूँ मुरवा पुकारि मोद भरिगे॥
रहि गये चातक जहाँ के तहाँ देखत ही
सोमनाथ कहै बूँदा बूँदैाहून करिगे।
सोर भयो घोर चहूँ ग्रोर महि मंडल मैं
ग्राए घन ग्राए घन ग्राइकै उघरिगे॥

(७२१) रसलीन।

सैयद गुलाम नबी बिलगरामी उपनाम रसलीन कवि ने अठारहवीं शताब्दी में कविता की थी। क़स्बा बिलगराम ज़िला हरदोई में है। यह मल्लायँ से पाँच कोस की दूरी पर स्थित है। बिलगराम में बहुत दिनों से बड़े बड़े विद्वान् मुसलमान होते रहे हैं ग्रोर ग्रब भी वर्त्तमान हैं। यह स्थान विद्या ग्रैार गुणों के लिए इतना प्रसिद्ध है कि लोग बिलगरामी होना एक महत्त्व-सूचक उपाधि समझते हैं। यह उपाधि रसलीन के समय में भी श्रद्धाभाजन

समझी जाती थी क्योंकि उन्हों ने अपने को बिलगरामी करके लिखा है। आप ने अपने को बाक़र पुत्र कहा है।

शिवसिंहसरोज में इनके विषय में निम्न बातें लिखी हैं:—

"ये कवि अरबी फ़ारसी के आलिम फ़ाज़िल और भाषा कविता में बड़े निपुण थे। रसप्रबोध नाम ग्रन्थ अलंकार में इनका बनाया हुआ बहुत प्रामाणिक है। इनके कुतुबख़ाने में पाँच सौ जिल्द भाषा-काव्य की थीं।"

इनका जन्म काल अनुमान से संवत् १७४६ के लगभग जान पड़ता है, क्योंकि इनके प्रथम ग्रन्थ अंगदर्पण में प्रौढ़ कविता है। इन्हों ने अपना पूरा नाम 'श्री हुसैनी बासती बिलगरामी सैयद बाकर सुत सैयद ग़ुलाम नबी रसलीन' लिखा है। हुसैनी बासती से मुसल्मानी बस्ती का प्रयोजन जान पड़ता है।

इनके दोनों ग्रन्थ, अर्थात् अंगदर्पण और 'रसप्रबोध' प्रकाशित हो चुके हैं और दोनों हमारे पास वर्त्तमान हैं।

अंगदर्पण संवत् १७९४ में बना था। इसमें १७७ दोहे हैं, जिनमें नायिका के नखशिख का वर्णन है। यह वर्णन बड़ाही भड़कीला है। इसमें उपमायें, रूपक और उत्प्रेक्षायें चमत्कारिक हैं। "रसप्रबोध" एक बड़ा ग्रन्थ है, जिसमें ११५५ दोहों द्वारा रसों का विषय बड़े विस्तारपूर्वक और प्रशंसनीय रीति से सांगोपांग वर्णित है। इसमें अलंकारों का विषय बिलकुल नहीं कहा गया है। रसों का वर्णन भावों के बिना अच्छा नहीं कहा जा सकता, इस कारण रसलीन महाशय ने भावभेद भी बहुत विस्तारपूर्वक कहा है। भावभेद में आलम्बन विभाव के अन्तर्गत नायक और नायिका-भेद

आ जाता है। इस विषय को भी इन्हों ने बड़े विस्तारपूर्वक और भली भाँति कहा है। उद्दीपन में षट् ऋतु का भी वर्णन आ जाता है और उसे भी इस कवि ने ख़ूब निभाया है। इसी ग्रन्थ में एक बारहमासा भी अच्छा है। रसलीन ने कहा है कि यदि कोई यह ग्रन्थ ध्यानपूर्वक पढ़े तो उसे रसों का विषय जानने के वास्ते किसी दूसरे ग्रन्थ के पढ़ने की आवश्यकता न रहे। यह कथन पूर्णरूप से यथार्थ है। यह ग्रन्थ संवत् १७९८ में समाप्त हुआ।

रसलीन ने मुसल्मान होने पर भी व्रज भाषा बहुत ही शुद्ध लिखी है। उसमें फ़ारसी के शब्द नहीं आये हैं। इनकी तथा किसी ब्राह्मण कवि की भाषाओं में कुछ भी अन्तर नहीं है। यह इन्हीं का काम था कि फ़ारसी के पारगामी होकर भी ये ऐसी ठेठ व्रजभाषा में कविता करने में समर्थ हुए। इनकी कविता सराहनीय है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

मुकुन भये घर खोय कै कानन बैठे जाय।
घर खोवत हैं और को कीजे कौन उपाय॥
कत देखाय कामिनि दई दामिनि को यह थांह।
थरथराति सी तन फिरै फरफराति घन मांह॥
कहुँ लावति विकसित कुसुम कहुँ डोलावति बाय।
कहुँ बिछावति चाँदनी मधु ऋतु दासी आय॥
कुमति चन्द प्रति द्यौस बढ़ि मास मास कढ़ि आय।
तुव मुख मधुराई लखै फीको परि घटि जाय॥
वृद्ध कामिनो काम ते सूल धाम में पाय।
नेवर झमकावति फिरै देवर के ढिग आय॥

तिय सैसव जोवन मिले भेद न जान्यो जात।
प्रात समै निसि द्यौस के दुवौ भाव दरसात॥

(७२२) रसिक प्रीतम ने नित्यलीला संवत् १७९५ में रची। यह ग्रन्थ हमने नहीं देखा, पर खोज में इसका हाल लिखा है। खोज में 'वृन्दावनसत' नामक इनका एक ग्रीर ग्रन्थ मिला है।

(७२३) रघुनाथ।

ये महाशय काशिराज महाराज बरिवंडसिंह के राजकवि थे ग्रीर काशी में ही रहते थे। इनके पुत्र गोकुलनाथ, पौत्र गोपीनाथ ग्रीर गोकुलनाथ के शिष्य मणिदेव ने महाभारत का भाषानुवाद बनाया। ये महाशय वन्दीजन थे। ठाकुर शिवसिंहजी ने इनके काव्य कलाधर, रसिक मोहन, जगत मोहन ग्रीर इश्क़ महोत्सव नामक चार ग्रन्थों के नाम लिख कर यह भी लिखा है कि इन्हों ने सतसई की टीका भी बनाई है। इनके प्रथम तीन ग्रन्थ हमारे पास हैं, जिन में से 'जगतमोहन' राजा इटौजा के पुस्तकालय से हमें प्राप्त हुग्रा है। काव्यकलाधर ग्रीर रसिकमोहन हमारे पास हस्त लिखित हैं। रघुनाथ ने अपने ग्रन्थ (जो हमारे पास हैं) संवत् १७९६ से १८०७ तक बनाये। काशीनरेश ने इन को चौरा ग्राम दिया, जिसमें इनका कुटुम्ब रहा। इन्हों ने महाराजा बरिवंडसिंह के पूर्व पुरुषों में मसाराम ग्रीर मीट्ठू मिश्र का वर्णन किया है ग्रीर यह भी लिखा है कि महाराजा बरिवंडसिंह ने चिलबिलिया का गढ़ जीता था।

रसिकमोहन संवत् १७९६ में बना था। यह अलंकारों का ग्रन्थ है, जिसमें १२१ पृष्ठ ग्रैार ३२३ छन्द हैं। इसमें शृंगार रस का विषय इतना अधिक नहीं है, जितना कि अन्य ग्रन्थों में हुआ करता है। इसमें अलंकारों के लक्षण ग्रैार उदाहरण बड़े ही साफ़ हैं। इस महाकवि ने यह ग्रन्थ ग्रैार इसके समस्त छन्द अलंकार समझाने ही के लिए बनाये, अतः जिस अलंकार का उदाहरण दिया गया है, उसमें प्रायः एक ही छन्द में बहुत बार वही अलंकार निकलता है। यथा :—

फूलि उठे कमल से अमल हितू के
नैन कहै रघुनाथ भरे चैन रस सियरे।
दैारि आये भैार से करत गुनी गुन गान
सिद्ध से सुजान सुख सागर सों नियरे॥
सुरभी सों खुलन सुकवि की सुमति लागी
चिरिया सी जागी चिन्ता जनक के हियरे।
धनुष पै ठाढे राम रवि से लसत आजु
भोर कैसे नखत नरिन्द भये पियरे॥

इस ग्रन्थ में बढ़िया छन्द बहुत से हैं ग्रोर कहीं कहीं इनके पद कहावत के रूप में परिणत हो गये हैं। यथा—

मैं मन बीच बिचारि लख्यो है
बनारस में न बिना रस कोऊ॥
छीर निधि जायो गायो निगम पुरान छायो
बपुष प्रभा सों लीन्हें तारन जगत है।

अनुज कहायो कमला को कहि रघुनाथ नातो
पायो विष्णु सो सो जानत जगतु है॥
माथे पै महेस राख्यो, मित्र कहि मित्र भाख्यो,
ऐसो जऊ तऊ तुलताई न लहतु है।
भूप बरिवंड जस रावरे कुलीन आगे
धाकर सो देखत सुधाकर लगतु है॥

उत्कृष्ट छन्दों के होते हुए भी रघुनाथ की कविता कहीं कहीं बिलकुल गद्यवत् हो जाती है।

काव्यकलाधर संवत् १८०२ में बना। यह भी १५० पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है। इसमें भाव-भेद और रस भेद के वर्णन हैं। रघुनाथ ने नायिका-भेद तो विस्तारपूर्वक कहा ही है, परन्तु नायक-भेद का भी बड़ा विस्तार किया है। यह भी रसिकमोहन की भाँति प्रशंसनीय है। इसका उदाहरणस्वरूप केवल एक छन्द यहाँ लिखा जाता है।

काछो कछे पट पीत को सुन्दर सीस धरे पगिया रँगराती।
हार गरे बिच गुंजन के अलकैं छिति छोरन लैां छहराती॥
खेलत ग्वालन सो रघुनाथ यों डोलैं गलीन मैं री उतपाती।
जो रँग साँवरो होतो न ईठि तो काहू की डीठि कहूँ लगि जाती॥

जगतमोहन संवत् १८०७ में बना। इसमें रघुनाथ ने लिखा है कि—

महाराज बरिवंड ने हे मो पर अनुकूल।
गाँव नाव सम्पति दियो कियो बड़ेन के तूल॥

यह ३२४ पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है, परन्तु इसमें श्रीकृष्णचन्द्र की केवल १२ घंटे की दिनचर्या वर्णित है। बन्दीजनों ने उन्हें गुणगान करके जगाया, उन्होंने उठ कर देवताओं का ध्यान करके प्रातकृत्य किया। इतने में पंडित लोगें ने आशीर्वाद देकर राजनीति कही, तथा नैयायिक, ज्योतिषी, सामुद्रिकज्ञ और वैद्य क्रमशः आये और उन्हों ने भी बड़े विस्तारपूर्वक अपने अपने विषयों के वर्णन किये। तब हरि ने भोजन करके दरबार किया। यहाँ दरबारी, मुसाहेब, साज-सामान, सेना, जवाहिरात, घोड़ों के गुण-दोष और औषध, हाथी, उनके भेद एवं दवा, और विविध भाँति के पक्षियों के सांगोपांग वर्णन हैं। इसके पीछे यादवपति मृगया को निकले। इस स्थान पर बाहन, सेना, नगर, बन, पक्षी मृगादि के अच्छे कथन हैं। मृगया में हाथी पकड़ने का वर्णन है। तदनन्तर मुनिगण यादवराय से मिले और उन्होंने आशीर्वाद देकर ब्रह्मज्ञान का कथन किया। इस स्थान पर ऋषियों के आश्रमों का भी वर्णन है। ब्रह्मज्ञान के साथ ग्रन्थ समाप्त हो गया है। इस ग्रन्थ में राजनीति अच्छी कही गई है। वर्णनों का बाहुल्य देखते यह ग्रन्थ बहुत प्रशंसनीय है, परन्तु कई स्थानों पर यह काव्य लक्षण के बाहर हो गया है। इस कथन के उदाहरणस्वरूप वैद्यक, ज्योतिष, न्याय आदि हैं, जो काव्य की दृष्टि से अरुचिकर हो गये हैं, यद्यपि उनसे कवि की बहुज्ञता प्रकट होती है। इस ग्रन्थ के उदाहरणस्वरूप दो छन्द नीचे लिखे जाते हैं:—

सुघरे सिलाह राखै, बायु बेगी बाह राखै,
रसद की राह राखै, राखे रहै बन को।

अनुज कहायो कमला को कहि रघुनाथ नातो
पायो विष्णु सों सो आनन जगतु है ॥
माथे पै महेस राख्यो, मित्र कहि मित्र भाख्यो,
ऐसो जऊ तऊ तुलताई न लहतु है ।
भूप बरिवंड जस रावरे कुलीन आगे
धाकर सो देखत सुधाकर लगतु है ॥

उत्कृष्ट छन्दों के होते हुए भी रघुनाथ की कविता कहीं कहीं बिलकुल गद्यवत् हो जाती है।

काव्यकलाधर संवत् १८०२ में बना। यह भी १५० पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है। इसमें भाव-भेद और रस-भेद के वर्णन हैं। रघुनाथ ने नायिका-भेद तो विस्तारपूर्वक कहा ही है, परन्तु नायक-भेद का भी बड़ा विस्तार किया है। यह भी रसिकमोहन की भाँति प्रशंसनीय है। इसका उदाहरणस्वरूप केवल एक छन्द यहाँ लिखा जाता है।

काछो कछे पट पीत को सुन्दर सीस धरे पगिया रँगराती।
हार गरे बिच गुंजन के अलकैं छिति छोरन लौं छहराती॥
खेलत ग्वालन सों रघुनाथ सो डोलै गलीन मैं री उतपाती।
जौ रँग साँवरो होतो न ईठि तौ काहू की डीठि कहूँ लगि जाती॥

जगतमोहन संवत् १८०७ में बना। इसमें रघुनाथ ने लिखा है कि—

महाराज बरिवंड ने है मो पर अनुकूल।
गाँव नाच सम्पति दियो कियो बड़ेन के तूल॥

यह ३२४ पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है, परन्तु इसमें श्रीकृष्णचन्द्र की केवल १२ घंटे की दिनचर्य्या वर्णित है। बन्दीजनों ने उन्हें गुणगान करके जगाया, उन्होंने उठ कर देवताओं का ध्यान करके प्रातकृत्य किया। इतने में पंडित लोगों ने आशीर्वाद देकर राजनीति कही, तथा नैयायिक, ज्योतिषी, सामुद्रिकज्ञ और वैद्य क्रमशः आये और उन्हों ने भी बड़े विस्तारपूर्वक अपने अपने विषयों के वर्णन किये। तब हरि ने भोजन करके दरबार किया। यहाँ दरबारी, मुसाहेब, साज-सामान, सेना, जवाहिरात, घोड़ों के गुण-दोष और औषध, हाथी, उनके भेद एवं दवा, और विविध भाँति के पक्षियों के सांगोपांग वर्णन हैं। इसके पीछे यादवपति मृगया को निकले। इस स्थान पर वाहन, सेना, नगर, वन, पक्षी मृगादि के अच्छे कथन हैं। मृगया में हाथी पकड़ने का वर्णन है। तदनन्तर मुनिगण यादवराय से मिले और उन्होंने आशीर्वाद देकर ब्रह्मज्ञान का कथन किया। इस स्थान पर ऋषियों के आश्रमों का भी वर्णन है। ब्रह्मज्ञान के साथ ग्रन्थ समाप्त हो गया है। इस ग्रन्थ में राजनीति अच्छी कही गई है। वर्णनों का बाहुल्य देखते यह ग्रन्थ बहुत प्रशंसनीय है, परन्तु कई स्थानों पर यह काव्य लक्षण के बाहर हो गया है। इस कथन के उदाहरणस्वरूप वैद्यक, ज्योतिष, न्याय आदि हैं, जो काव्य की दृष्टि से अरुचिकर हो गये हैं, यद्यपि उनसे कवि की बहुज्ञता प्रकट होती है। इस ग्रन्थ के उदाहरणस्वरूप दे छन्द नीचे लिखे जाते हैं:—

सुघरे सिलाह राखै, वायु वेगी वाह राखै,
रसद की राह राखै, राखे रहै वन को।

घोर को समाज गाजै, बाजा को मजेज गाजै,
ग्वरि के काज बहुरुपी दरफन को ॥
अगम भँगैया राजै, सकुन लेवैया राजै,
कहै रघुनाथ यों विचार बीच मन को।
बाजी हारै कबहूँ न ओसर के परे जौन
ताजी राजै प्रजन को, राजी सुभटन को ॥
कैधौं सेस देस तें निकसि पुहुमी पै आय
बदन उचाय बानी जस असपन्द की।
कैधौं छिति चवरी उसीर की दिखावति है
ऐसी सोहै उज्जल किरनि जैसे चन्द की ॥
जानि दिन पाल श्री नृपाल नँदलाल जू को
कहै रघुनाथ पाय सुघरी अनन्द की।
छूटत फुहारे कैधौं फूल्यो है कमल तासों
अमल अमन्द कढ़ै धार मकरन्द की ॥

ये महाशय ब्रजभाषा में कविता करते थे। इनकी भाषा साधारण और कविता अच्छी है। इनके भाव अच्छे होते थे, परन्तु भाषा प्रायः शिथिल रहती थी। इनकी कविता में टकसाली छन्दों का अभाव सा है। इनकी गणना साहित्य के आचार्यों में है और काव्यप्रौढ़ता की दृष्टि से हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। इन्होंने एकाध स्थान पर खड़ी बोली एवं प्राकृत मिश्रित भाषा में भी कविता की है।

दृढ़क महोत्सव को पं० युगुलकिशोरजी मिश्र (ब्रजराज) ने देखा है। यह ग्रन्थ खड़ी बोली में स्फुट विषयों पर लिखा गया है,

परन्तु इसमें भी शृंगार की प्रधानता है। आकार में यह कालिदास के वधूविनोद के बराबर है। उदाहरण देखिए :—

> आप दरियाव पास नदियों के जाना नहीं
> दरियाव पास नदी होयगी सो धावैगी।
> दरखत वेलि आसरे को कभौं राखत न
> दरखत ही के आसरे को वेलि पावैगी॥
> मेरे ही लायक जो था कहना सो कहा मैंने
> रघुनाथ मेरी मति न्याव ही को गावैगी।
> वह मोहताज आप की है आप उसके न
> आप कैसे चलौ वह आप पास आवैगी॥

नाम—(७२४) जनकराज किशोरीशरण अयोध्यावासी।

ग्रन्थ—१ आंदोलरहस्यदीपिका, २ तुलसीदासचरित्र, ३ विवेकसारचंद्रिका, ४ सिद्धांतचौंतीसी, ५ बारहखड़ी, ६ ललितशृंगारदीपक, ७ कवितावली, ८ जानकीकरणाभरण, ९ सीताराम सिद्धान्तमुक्तावली, १० अनन्यतरंगिनी, ११ सीताराम रासरसतरंगिनी, १२ आत्मसंबधदर्पण, १३ होलिकाविनोददीपिका, १४ वेदान्तसारश्रुतिदीपिका, १५ रसदीपिका, १६ दोहावली, १७ रघुवरकरनाभरन।

कविता-काल—१७९७।

विवरण—इन्होंने ब्रजभाषा तथा संस्कृत में भी कई ग्रंथ बनाये। ये शायद अयोध्याजी के विरागियों में हैं। इनकी पुस्तकें

हमने दरबार छतरपूर में देखी हैं। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

फूले कुसुम द्रुम विविध रंग सुगंध के चहुँ चाव।
गुंजत मधुप मधुमत्त नाना रंग रज्ज अंग फाव॥
सीरी सुगंध सुमंद बात विनोद फन्त बहंत।
परसत अनंग उदोत हिय अभिलाख कामिनि कंत॥

(७२५) महाराणी बांकावती जी उपनाम ब्रजदासी।

ये जयपुर राज्यान्तर्गत लिवाण में कछवाहा राजा आनन्दरामजी उदेरा मोत की पुत्री थीं और संवत् १७७६ में कृष्णगढ़ के महाराजा राजसिंह से इनका विवाह हुआ था। इन्हों ने श्रीमद्भागवत का छन्दोबद्ध उल्था किया जो ब्रजदासी भागवत के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें दोहा चौपाइयों का आधिक्य है और इसकी भाषा ब्रजभाषा पद्य बैसवाडी का मिश्रण है, जिसमें कहीं कहीं राजपूताना के शब्द मिल गये हैं। इनकी भाषा अच्छी और कविता निर्दोष है। ये भी मधुसूदनदास जी की श्रेणी में हैं।

नमो नमो श्री हंस नमो सनकादि रूप हरि।
नमो नमो श्री नारद देव ऋषि जग को समसरि॥
नमो नमो श्री व्यास नमो शुकदेव जु स्वामी।
नमो परिच्छित राज ऋषिन में मुख्य जु नामी॥
पुनि नमो नमो श्री सूत जू नमो नमो सैानक सकल।
अरु नमो नमो श्री भागवत कृष्ण रूप छिति में अकल॥

(७२६) भारथशाह बिजना के प्रथम जागीरदार दीवान सावन्तसिंह के पौत्र थे। आपने संवत् १७९९ में ऊषा अनिरुद्ध की कथा नामक एक उत्कृष्ट ग्रन्थ रचा। हनुमान बिरुदावली आप का दूसरा ग्रन्थ है। आपकी रचना तेजपूर्ण और सबल है, जिसमें माधुर्य गुण की विशेषता है। आपकी गणना साधारण श्रेणी में की जाती है।

गन नायक गज बदन गवरि सुत बिघन बिनासन।
एकदन्त गुनवन्त अन्त नहिं लहत सनातन॥
कर त्रिसूल सुख मूल मूल दारिद्र बिभंजन।
लपटे अंग भुजंग सदा त्रैपुर अनुरंजन॥

(७२७) व (७२८) स्वामी ललितकिशोरी व ललित-मोहिनी नामक दो महाशय गुरुशिष्य थे। ये संवत् १८०० के लग भग हुए। ये लोग निम्बार्क सम्प्रदाय में स्वामी हरिदास की शाखा के वैष्णव थे। इस शाखा के अनुयायी टट्टिन वाले कहलाते थे और अब भी कहलाते हैं। इन दोनो महाशयों ने श्री स्वामी महाराज जू की बचनिका नामक एक ४७ पृष्ठों का ब्रजभाषा में गद्य-ग्रन्थ रचा, जो हमने छतरपुर में देखा है। इनका समय जाँच से मिला है। ये साधारण श्रेणी के लेखक थे।

उदाहरण।

वस्तु को दृष्टान्त—मलय गिरि को समस्त बन वाकी पवन सों चन्दन ह्वै जाय। वाके कछू इच्छा नाहीं। बांस और अरंड सुगन्ध न होय। सत्संग कुपात्र को असर न करै।

(७२६) स्वामी श्रीहित वृन्दावन दासजी चाचा।

चाचा जी जाति के ब्राह्मण थे। आप पुष्कर जी के समीपस्थ श्रीस्वामी हितरूप जी के शिष्य थे। इनके आश्रयदाता महाराज बहादुरसिंह जी, महाराज नागरीदास राजा कृष्णगढ़ के छोटे भाई थे। आप तत्कालीन गद्दीधर गोस्वामी के पितृव्य होने के कारण चाचा कहलाने लगे। इनकी पहली रचना जो हमें मिली है, वह संवत् १८०० की है, सो अनुमान से इनका जन्म संवत् १७७० के लग भग माना जा सकता है। कहा जाता है कि इन्होंने एक लक्ष पदों तथा छन्दों की रचना की। हमने इनके जितने ग्रन्थ दरबार छतरपूर में देखे हैं, केवल उन्हीं में १८२४५ पद दोहा, चौपाई इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त इन महात्मा द्वारा रचित और भी ग्रन्थों का होना इन्हीं ग्रन्थों के देखने से जान पड़ता है। उपर्युक्त कविता पर निगाह करने से कहना पड़ता है कि आकार में इनके बराबर रचना शायद सूरदास जी के सिवा और किसी ने भी नहीं की है, परन्तु सूरदासजी के भी पद इस समय साढ़े चार सहस्र से अधिक उपलब्ध नहीं होते। काव्य-प्रौढ़ता के विषय में भी इनकी कविता महात्मा हित जी, सूरदास आदि के सिवा और प्रायः सभी पदरचयिता कवियों से श्रेष्ठतर है। चाचा जी ने अष्टयाम, समय प्रबन्धादि कई बार स्थान स्थान पर लिखे हैं। इन्होंने प्रायः सभी ग्रन्थों में कृष्ण भगवान के भोजन, शयन, रास आदि के वर्णन किये हैं और शृंगार रस पर विशेष ध्यान रक्खा है। शृंगारी कवि होने पर भी आप पूर्णतया निर्विकार थे। यह बात इनकी रचना से भी प्रकट है।

इनकी कविता जो हमने देखी है, वह संवत् १८०० से प्रारम्भ होकर सं० १८४४ तक की है। इसके बाद का पता नहीं कि इनका परलोकवास कैसे और किस समय हुआ। पहले ये पुष्कर के समीप कृष्णगढ़ में रहा करते थे; पर पीछे से श्रीवृन्दावन में निवास करने लगे। इनके पीछे वाले ग्रन्थ वृन्दावन में बने। इनकी भाषा व्रजभाषा है और वह परम मनोहर तथा ललित है। हम इनको दास की श्रेणी का कवि मानते हैं। इनके रचित ग्रन्थों के नाम ये हैं:—

समय-प्रबंध १ से १९ तक १९।
अष्टयाम। ८।
छोटे छोटे अष्टक, वेली, पचीसी, इत्यादि ४३।
कृष्णगिरि पूजन वेली ३३२ छन्द।
श्रीहित रूपचरित वेली ४६२ छन्द।
भक्तिप्रार्थनावली ३३४ छन्द।
चौबीस लीला १०३ सफ़ा।
हिँडोरा २४२ पृष्ठ रायल अठपेजी।
श्रीव्रज प्रेमानंदसागर ३४९ पृष्ठ बड़े साइज़।
कृष्णगिरिपूजन मंगल ३३२ छन्द।

यह छवि घाढ़ीरी रजनी खेलत रास रसिक मनिमाई।
कानन वर सौरभ की महकनि तैसिय सरद जुन्हाई॥
पुलिन प्रकास मध्य मनि मंडल तहँ राजत हरि राधा।
प्रतिबिंबत तन दुरनि मुरनि मैं तव छवि बढ़त अगाधा॥

गौरस्याम छवि सदन बदन पर फवि रहे श्रम कन ऐसे।
नील कनक अम्बुज अंतर धरे थापि जलज मनि जैसे॥
झलकत हार चलत चल कुंडल मुख मयंक ज्यों सोहैं।
थारी सरद निसा सनि खेलिक मैन कटाच्छनि मोहैं॥
थेइ थेइ बचन बदत पिय प्यारी प्रगटत नृत्य मई गति।
वृन्दावन हित तान गान रस अन्हिहित रूप कुशल अति॥१॥

हौं बलि जाउँ मुख सुख रास।
जहाँ त्रिभुवन रूप सोभा रीझि कियो निवास॥
प्रतिबिम्ब तरल कपोल चमनी युग तरौना कान।
सुधासागर मध्य बैठे मनौं रवि युगल्हान॥
छवि भरे नव कंज दल से नेह पूरित नैन।
पूतरी मनु मधुप छौना बैठि भूले गैन॥
कुटिल भृकुटी नमित सोभा कहा कहौं विसेख।
मनहुँ ससि पर स्याम बदरी युगुल किंचित रेख॥
हरत भाल विशाल ऊपर तिलक नगनि जराय।
मनहुँ चढ़े विमान ग्रह गन ससिहि भेटत जाय॥
मंद मुसुकनि दसन दमकनि दामिनी दुति हरी।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनि कौन विधि रचि करी॥२॥

सोभा केहि विधि बरनि सुनाऊँ।
यक रसना सोउ लोचन हीनी कहाँ पार क्यों पाऊँ॥
अंग अंग लावन्य माधुरी बुधि बल किती बताऊँ।
अतुलित सुमति कहि गये क्यों दृग पलटनि धरि जु उचाऊँ॥

नव वैसंधि दुहुनि नित उलहत जब देखो तव औरै ।
यहि कौतुक मेरो सुनि सजनी चित न रहत यक ठौरै ॥
लोक न सुनी द्दगन नहिँ देखी ऐसी रूप निकाई ।
मेरी तेरी कहा चली खग मृग मति प्रेम बिकाई ॥
कबहूँ गौर श्याम तन कबहूँ लोचन प्यासे धावैँ ।
कह घटि जात सिंधु को पंछी जो चोंचन भरि लावैं ॥
सुंदरता की हद मुरलीधर बेहद छवि श्रीराधा ।
गावै बपु अनंत धरि सारद तऊन पूजै साधा ॥
न्याइ काम करवट ह्वै निकसत पिय अरु रूप गुमानी ।
वृन्दावन हित रूप कियो बस सो कानन की रानी ॥३॥

नाम—(७३०) कमलनैन हित वृन्दावन वाले ।

ग्रन्थ—१ समय-प्रबंध, २ समय-प्रबंध ।

समय—१८०० ।

विवरण—पहले ग्रन्थ में पद और दूसरे में प्रथम पद व दोहा इत्यादि हैं और पीछे वार्तिक। उसमें आठ पहर की पूजा, उत्सव, उपासना इत्यादि के वर्णन हैं। कविता इनकी साधारण श्रेणी की है। हमने यह ग्रन्थ दरबार छतरपूर में देखा है। इसमें कुल १९४ पृष्ठ फ़ूल्सकैप साँची के हैं। समय जाँच से मिला है। ये स्वामी हरिवंश हित के अनुयायी थे।

दंपति सोभा आजु घनी ।
सुहै याँगे चालु डगमगी छवि नहिँ जात भनी ॥

दिये भरा भुज भार परनपर नय धन नयल धनी।
कमल नैन हिन संतत राजत सम्पति विपिन मनो ॥ १ ॥

(७३१) गिरिधर कविराय।

इस कवि ने केवल कुण्डलियाओं में कविता की है। इनका कोई ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आया, केवल एक ग्रन्थ में इनकी इक्यानवे कुण्डलियायें लिखी हुई हैं। यह ग्रन्थ हमारे पुस्तकालय में वर्त्तमान है। इस कवि का समय-सम्बन्धी हमें कोई प्रमाण नहीं मिला। शिवसिंहजी ने इनका जन्म काल संवत् १७७० माना है।

इस कवि की भाषा अवध की ग्रामीण भाषा है। तुकान्त ढूँढने के लिए इन्होंने कहीं कहीं भद्देसिल एवं निरर्थक शब्द रख दिये हैं। इनकी कविता में भाषा और भाव भी कभी कभी बहुत भद्देसिल हो गये हैं। इनकी भाषा से यह विचार होता है कि ये महाशय अवध के रहने वाले थे। इन्होंने कहीं कहीं स्त्रियों की निन्दा कर दी है।

इन दो एक त्रुटियों के होते हुए भी इस कवि की रचना इतनी यथार्थ है कि संसार ने इसकी कविता को बहुत अधिकता से ग्रहण किया है। संसार ऐसा गुणग्राही है कि बहुतेरे कवियों ने अपनी रचना को बहुत कुछ छिपाया और उनके ग्रन्थ मुद्रित भी नहीं हुए, परन्तु फिर भी उन भूले और छिपे हुए ग्रन्थों के भी उत्कृष्ट छन्दों को उसने ग्रहण करही लिया। उत्तम रचनाओं की यह भी एक बहुत बड़ी जाँच है कि संसार ने उन्हें पसन्द कर लिया हो। यह नहीं कहा जा सकता कि लोकमान्यता सदैव

अच्छे गुणों की कसौटी होती है, परन्तु विशेषतया ऐसा ही है। कभी कभी अनेकानेक कारणों से उत्कृष्ट रचनायें भी प्रचलित नहीं होतीं, पर ऐसा प्रायः नहीं होता। इस लोकमान्यता की आँच में गिरिधरराय का साहित्य बहुत ही सच्चा ठहरता है। इस कवि की रचनाओं में कितनेही ऐसे पद आये हैं कि आज वे हिन्दी बोलने वालों की भाषा के भाग होकर कहनावत के रूप में हर छोटे बड़े की ज़बान पर वर्त्तमान हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी को छोड़ कर और किसी कवि की रचना को गिरिधरराय की कविता के समान कहनावतों में आदर पाने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ होगा।

इस अद्वितीय लोकप्रियता के कारणों में एक यह भी है कि इस कवि ने सिवा नीति तथा अन्योक्ति के और किसी विषय पर काव्य नहीं किया है। नीति में भी बड़ी गूढ़ बातों को छोड़ कर गिरिधर ने रोज़ की काम-काज-सम्बन्धिनी सीधी सादी नीति कही है। इनकी कविता भी गूढ़ काव्यांगों को छोड़कर सर्व-साधारण को प्रसन्न करने वाली है और वह नायिकाओं के ताक झांक, तथा दूर की कौड़ी को छोड़ कर, नित्य के काम काज और यथार्थ एवं सर्वप्रकारेण सच्ची बात कहने वाली है। ऐसी हृदयग्राहिणी कविता रचने में बहुत कम कविजन समर्थ हुए हैं। इस कवि ने बड़ी ज़ोरदार रचना की है। यह कहता था कि यदि कोई काम करना,उचित हो तो एक मिनट की देर न करके उसे तुरन्त करना चाहिए। हर उचित बात के वास्ते यह कवि तुरन्त कार्य्यारम्भ होना चाहता है। इसकी कविता चाणक्य की भाँति

दिये अंश भुज भार परसपर नव घन नवल धनी।
कमल नैन हित संतत राजन सम्पति विपिन मनी ॥ १ ॥

(७३१) गिरिधर कविराय।

इस कवि ने केवल कुण्डलियाओं में कविता की है। इनका कोई ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आया, केवल एक ग्रन्थ में इनकी इक्यानबे कुण्डलियायें लिखी हुई हैं। यह ग्रन्थ हमारे पुस्तकालय में वर्त्तमान है। इस कवि का समय-सम्बन्धी हमें कोई प्रमाण नहीं मिला। शिवसिंहजी ने इनका जन्म-काल संवत् १७७० माना है।

इस कवि की भाषा अवध की ग्रामीण भाषा है। तुकान्त ढूँढने के लिए इन्होंने कहीं कहीं भदेसिल एवं निरर्थक शब्द रख दिये हैं। इनकी कविता में भाषा और भाव भी कभी कभी बहुत भदेसिल हो गये हैं। इनकी भाषा से यह विचार होता है कि ये महाशय अवध के रहने वाले थे। इन्होंने कहीं कहीं स्त्रियों की निन्दा कर दी है।

इन दो एक त्रुटियों के होते हुए भी इस कवि की रचना इतनी यथार्थ है कि संसार ने इसकी कविता को बहुत अधिकता से ग्रहण किया है। संसार ऐसा गुणग्राही है कि बहुतेरे कवियों ने अपनी रचना को बहुत कुछ छिपाया और उनके ग्रन्थ मुद्रित भी नहीं हुए, परन्तु फिर भी उन भूले और छिपे हुए ग्रन्थों के भी उत्कृष्ट छन्दों को उसने ग्रहण करही लिया। उत्तम रचनाओं की यह भी एक बहुत बड़ी जाँच है कि संसार ने उन्हें पसन्द कर लिया हो। यह नहीं कहा जा सकता कि लोकमान्यता सदैव

अच्छे गुणों की कसौटी होती है, परन्तु विशेषतया ऐसा ही है। कभी कभी अनेकानेक कारणों से उत्कृष्ट रचनायें भी प्रचलित नहीं होतीं, पर ऐसा प्रायः नहीं होता। इस लोकमान्यता की जाँच में गिरिधरराय का साहित्य बहुत ही सच्चा ठहरता है। इस कवि की रचनाओं में कितनेही ऐसे पद आये हैं कि आज वे हिन्दी बोलने वालों की भाषा के भाग होकर कहनावत के रूप में हर छोटे बडे की ज़बान पर वर्त्तमान हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी को छोड़ कर और किसी कवि की रचना को गिरिधरराय की कविता के समान कहनावतों में आदर पाने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ होगा।

इस अद्वितीय लोकप्रियता के कारणों में एक यह भी है कि इस कवि ने सिवा नीति तथा अन्योक्ति के और किसी विषय पर काव्य नहीं किया है। नीति में भी बड़ी गूढ बातों को छोड़ कर गिरिधर ने रोज़ की काम-काज-सम्बन्धिनी सीधी सादी नीति कही है। इनकी कविता भी गूढ काव्यांगों को छोड़कर सर्व-साधारण को प्रसन्न करने वाली है और यह नायिकाओं के ताक झांक, तथा दूर की कौड़ी को छोड़ कर, नित्य के काम काज और यथार्थ एवं सर्वप्रकारेण सच्ची बात कहने वाली है। ऐसी हृदयग्राहिणी कविता रचने में बहुत कम कविजन समर्थ हुए हैं। इस कवि ने बडी ज़ोरदार रचना की है। यह कहता था कि यदि कोई काम करना उचित हो तो एक मिनट की देर न करके उसे तुरन्त करना चाहिए। हर उचित बात के वास्ते यह कवि तुरन्त कार्य्यारम्भ होना चाहता है। इसकी कविता चाणक्य की भाँति

वास्तविक काम काज की हैं। हम इनको तोष की श्रेणी में रखते हैं। इन की कविता के उदाहरणार्थ कुछ छन्द नीचे लिखते हैं।

जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजै संग।
जो सँग राखे ही बनै तो करि राखु अपंग॥
तो करि राखु अपंग भूलि परतीति न कीजै।
सौ सौगन्धे खाय चित्त में एक न दीजै॥
कहि गिरिधर कविराय कबहुँ परतीति न वाकी।
सत्रु सरिस परिहरिय हरिय धन धरती जाकी॥ १

बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में ताही में चित देइ॥
ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै।
दुरजन हँसै न कोय चित्त मे खेद न पावै॥
कहि गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख होइ समुझु बीती सो बीती॥ २॥
साँई अपने चित्त की भूलि न कहिये कोय।
तब लगि मन मैं राखिये जब लगि काज न होय॥
जब लगि काज न होय भूलि कबहूँ नहिँ कहिये।
दुरजन हँसै ठठाय आपु सियरे ह्वै रहिये॥
कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं।
करतूती कहि देति आपु जनि कहिये साईं॥ ३॥

बहुत लोगों का मत है कि साईं वाले छन्द इनकी स्त्री के बनाये हुए हैं, परन्तु हम इस कथन को यथार्थ नहीं समझते,

क्योंकि यह ध्यान में नहीं आता कि इनकी स्त्री में भी सब प्रकार से वही सब गुण वर्तमान हों जो इनमें थे। गिरिधर के छन्दों में कहीं कहीं अन्य लोगों ने भी अपने छन्द मिला दिये हैं, इस कारण भी बहुत से भद्दे छन्द इनके नाम पर प्रचलित हो गये हैं। इन्हों ने पाश्चात्य नीति को न छू कर पूर्वीय देशों में समादर पाई हुई परिपाटी की नीति कही है।

(७३२) नूर मुहम्मद।

इस कविरत्न ने सवत् १८०० (११५७ हिजरी) के लग भग तीस वर्ष की अवस्था में दोहा चोपाइयो में जायसी कृत पद्मावती के ढँग पर इन्द्रावती नामक एक अच्छा प्रेम ग्रन्थ बनाया। इसका प्रथम भाग प्राय १५० पृष्ठों में नागरी प्रचारिणी-ग्रन्थ माला में निकला है। इन्होंने वावैला आदि फारसी शब्द, ग्रैार त्रिविष्टप, स्वान्त, वृन्दारक, स्तम्बेरम आदि सस्कृत शब्द भी अपनी भाषा में रक्खे हैं। आपने गँवारी अवधी भाषा में कविता की हे, परन्तु फिर भी उसकी छटा मनमोहिनी हे। इनकी रचना से विदित है कि ये महाशय काव्याग जानते थे। एकाध स्थान पर इन्हों ने कूट भी कहे हैं। इनका मन फुलवारी वाला वर्णन बड़ा ही विशद बना है ग्रैार योगी के अचेत होने एव' लट पर भी इनके भाव अच्छे बँधे हैं। इस कविवर ने स्वाभाविक वर्णन जायसी की भाँति ख़ूब विस्तार से किये हैं, ग्रैार भाषा, भाव तथा वर्णन बाहुल्य में अपनी कविता जायसी में मिला दी है। इन्होंने प्रीति का भी अच्छा चित्र दिखाया है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

अब रानी चलि देखहु जोगी। पैसो रावत भैप बियोगी॥
चन्द मयंक संग चाँप उठायेउ। जाइ चकोरहि दरस दिखायेउ॥
इन्द्रावति धौ मानी सयानी। जोगी रूप बिलोकि लुभानी॥

मन लोचन सों चन्द दिसि रहिगा चितै चकोर।
चन्द बिलोकत रहि गयउ निज चकोर की ओर॥

जब लगि नैन चारि रहु भारी। राज कुँवर कहँ टग अस मारी॥
दामिनि चमक चाह अधिकाई। कुँअर चितै रहे चित लाई॥
बढ़ेउ पवन लट पर अनुरागे। लट छितरानि पवन के लागे॥
परी बदन पर लट सटकारी। तपी दिवस भा निसि अँधियारी॥
मोहि परा दरसन कर घेरा। दुना घान धन आँखिन केरा॥
यह मुख यह तिल यह लट कारी। ये तौ कहि कै गिरा भिखारी॥
हा हा सखिन कहा पठिआई। काहे तपी परा मुरझाई॥
नहिँ मुरछा मुख देखि सयाना। लट परतहि मुख पर मुरझाना॥
एक कहा लट सों मुख सोभा। होति अधिक लखि मुरछा लोभा॥
एक कहा लट जामिनि होई। राति जानि जोगी गा सोई॥
एक कहा मुख तिल लट कारी। सम्पुल भँवर अहइ फुलवारी॥
एक कहा मुख ससिहि लजावा। लट जोगी को मन अरुझावा॥
एक कहा लट नागिनि कारी। डसा गरल सो गिरा भिखारी॥
सवन बखाना जो जस बूझा। इन्द्रावति कहँ आगम सूझा॥
कहा तपी अस कहते आगे। गरब न करु सुन्दरि डर त्यागे॥
यह मुख यह तिल यह लट कारी। अन्त होइ इक दिन सब छारी॥

(७३३) ठाकुर।

इस नाम के चार कवि हुए और ये सब उत्तम कविता करते थे। इनमें से सब से अधिक प्रसिद्ध असनी के ठाकुर थे, जो ऋषिनाथ के पुत्र और सेवक के पितामह थे। इसका हाल स्वयं सेवक ने एक छन्द में लिखा है, जो छन्द उनके वर्णन में दिया गया है। इनका ठाकुरशतक छोड़ कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ हमने नहीं देखा, परन्तु कदाचित् ऐसा कोई भी हिन्दी-कविता-रसिक न होगा, जिसे इनके दो चार स्फुट छन्द न याद हों। इनका ठाकुर-शतक भारतजीवन प्रेस में छपा है, जिसमें १०७ स्फुट छन्द हैं। इनका सतसैया एक दूसरा ग्रन्थ है जिसमें सतसई की टीका है। ये महाशय जाति के ब्रह्मभट्ट (भाट) थे। सेवकजी अभी हाल तक वर्त्तमान थे। अनुमान से ठाकुर जी का समय संवत् १८०० के लग भग होगा। शिवसिंहसरोज में लिखा है कि ठाकुर के बहुत से छन्द कालिदास कृत हज़ारा में मिलते हैं। यह ग्रन्थ संवत् १७७५ में समाप्त हुआ। इन ठाकुर का समय चाहे जितनी दूर ले जाइए, वह संवत्१७७५ में इनके कवि होने तक नहीं पहुँच सकता, क्योंकि इनके पौत्र सेवक का जन्म संवत् १८७२ में हुआ था, सो यदि उस समय सेवक के पिता ४० वर्ष के भी हों और उनके जन्म-समय ठाकुर भी ४० वर्ष के हों, तो भी ठाकुर का जन्म-काल दूर से दूर संवत् १७९२ में पड़ता है। सो हज़ारा के छन्द या तो ठाकुर राम के होंगे या किसी पंचम ठाकुर के। इनके वंश में पहले ही से कविता

होती थी और इनके पंथाध्वरों में कितने ही अच्छे कवि हो गये हैं, जिनका हाल यथास्थान लेख में दिया जाएगा।

ठाकुर के सवैया छन्द बहुत ही अनमोल बनते थे। इनकी कविता का सब से बड़ा गुण प्रेम है और वह इनके प्रायः सभी छन्दों में वर्तमान है। इनका मत है कि बिना स्नेह के देह धारण वृथा है। इन्होंने लिखा है कि स्नेह का करना सहल है, परन्तु उसका निभाना मुश्किल है। इन्होंने कितने ही स्थानों पर यह कहा है कि अब तो किसी न किसी प्रकार नेह को निभा रहे हैं। इनके छन्दों में उपेक्षा की मात्रा बहुत अधिक है। ये प्रायः ऐसी प्रेमोन्मत्ता नायिकाओं का वर्णन करते हैं कि जिन्हें समझा कर ठीक मार्ग पर लगाने का यत्न भी नहीं पैदा होता, वरन् वे स्वयं खुल्लम खुल्ला कहती हैं कि हम तो अब बिगड़ चुकीं, हमें क्या समझाती हो, जाओ अपना काम करो और ख़ुद ऐसे कुमार्गों से बचो। इनकी नायिकाओं को चौचँदहाइयों से बड़ी शिकायत रहती है। वे कहती हैं कि हम स्वतन्त्र हैं, अपने लिए चाहे जो कुछ करें, फिर किसी दूसरे को क्या पड़ी है कि हमें दिक करे? इन्होंने प्रेम के बड़े ही बढ़िया छन्द लिखे हैं।

उत्कृष्ट छन्दों की मात्रा इस कवि की रचना में बहुत अधिकता से है। इन्होंने अपने छन्दों में लोकोक्तियों को बहुत रक्खा है और इनके बहुतेरे पद स्वयं कहावत हो गये हैं। निर्मोहिनी एवं प्रेमोन्मत्ता नायिकाओं का इन्होंने बड़ा ही भड़कीला वर्णन किया है। प्रेम-विषयक ऐसे सच्चे और टकसाली छन्द प्रायः किसी भी कवि की रचना में नहीं पाये जाते। इन्होंने होली के भी बढ़िया

छन्द लिखे हैं। एक स्थान पर इन्होंने निर्धनता की निन्दा में सधनों का बहुत बड़ा उपहास व्यंजित किया है। यह एक बड़ा ही ज़िन्दः दिल कवि था। जिस विषय का इसने वर्णन किया है उसमें इसे पूर्ण तल्लीनता और सहृदयता थी, वरन् यह कवि बीती हुई सच्ची घटनायें सी कहता गया है।

ठाकुर, सेवक, बोधा, घन आनँद, आलम और विहारी आदि ने प्रेम का ऐसा सच्चा वर्णन किया है, जैसा कि अन्य बहुत कम कवि कर सके हैं। ये लोग सच्चे प्रेमी थे। ठाकुर की भाषा भी बहुत सराहनीय है। इसमें मिलित वर्ण बहुत कम हैं। इन्होंने ब्रजभाषा में कविता की है। इस महाकवि ने मानुषीय प्रकृति और हृदयंगम भावों एवं चित्तसागर की तरंगों को बड़ीही सफलतापूर्वक चित्रित किया है। ठाकुर का स्वभाव भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से बहुत कुछ मिलता है। यथा,

सेवक सिपाही हम उन राजपूतन के
दान युद्ध जुरिवे मैं नेकु जे न मुरके।
नीति दै निवारे हैं मही के महिपालन को
कवि उनही के जे सनेही साँचे उर के॥
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के
जालिम दमाद हैं अदेनिया ससुर के।
चोजन के चोर रस मौजन के पातसाहि
ठाकुर कहावत पै चाकर चतुर के॥

सेवक के भतीजे की लिखी हुई जीवनी से विदित होता है कि ठाकुर कवि काशी के बाबू देवकीनन्दन जी के आश्रय में रहते थे

श्रौर उनकी आज्ञानुसार इन्होंने सतसई की एक टीका भी बनाई, जिसका नाम सतसैया-वरणार्थ है। उदाहरणार्थ इनके कुछ छन्द नीचे लिखते हैं, श्रौर स्थानाभाव से कहीं कहीं पूरा छन्द न देकर केवल उनके कुछ श्रंश दिये हैं। इनको हम सेनापति की श्रेणी के कवि समझते हैं श्रौर उस श्रेणी में भी इनका पद बहुत श्रच्छा है। उदाहरण—

बहती नदी पावँ पखारि लेरी।

रूप सो रतन पाय जोबन सो धन पाय
नाहक गँवायबो गँवारन को काम है।

माया मिली नहिँ राम मिले दुबिधा मैं गये सजनो सुनो दोऊ।

जानि छुका छुकी बेष छपाय कै
गागरि लै घर ते निकरी ती।
जानें कहां ते कबै केहि घेर ते
श्राय जुरे जिते होरी धरी ती॥
ठाकुर दैारि परे मोहिँ देखत
भागि बची जु कहूं सुघरी ती।
बीर जु द्वार न देहुँ केवार
त मैं होरिहारन हाथ परी ती॥

रूप अनूप दई दियो तोहिँ त
मान किये न सयानि कहावै।
श्रौर सुनो यह रूप जवाहिर
भाग बड़े बिरलै कोउ पावै॥
ठाकुर सूम के जात न कोऊ
उदार सुने सबही उठि धावै।

दीजिये ताहि देखाय दया करि
जो चलि दूरि तें देखन आवै ॥

या निरमोहिनि रूप कि रासि न
ऊपर के मन आनति ह्वै है।
बारहि बार बिलोकि घरी
घरी सूरति तौ पहिँचानति ह्वै है ॥
ठाकुर या मन की परतीति है
जो पै सनेह न मानति ह्वै है।
आवत हैं नित मेरे लिये
इतनो तौ विशेषहू जानति ह्वै है ॥

अब का समुझावती को समुझै
बदनामी के बीज त बोचुकी री।
तब तौ इतनो न विचार कियो
अब जाल परे कहौ को चुकी री ॥
कवि ठाकुर या रस रीति रँगी
परतीति पतिव्रत खो चुकी री।
अरी नेकी बदी जो बदी हुती
भाल में होनी हुती सुतौ हो चुकी री ॥

कहिबे की कछू न कहा कहिये
मग जोवत जोवत ज्वै गयो री।
उन तोरत बार न लाई कछू
तन ते वृथा जोबन ग्वै गयो री ॥

कवि ठाकुर कूबरी के बस ह्वै
रस मैं बिसवासी बिसैं गयो री।
मनमोहन को हिलिबो मिलिबो
दिना चारि की चांदनी ह्वै गयो री॥

(७३४) शिव।

इस नाम के कई कवि हो गये हैं, एक पयागपूर ज़िला बहरायच या देउतहागोंड़ा के रहने वाले असेला बन्दीजन थे श्रोर दूसरे असनी के। पहले का समय संवत् १८०० के श्रास पास है श्रोर दूसरे का १९२१ के लगभग। प्रथम के बनाये हुए रसिकविलास, अलंकारभूषण तथा पिंगल खोज में मिले हैं।

रसिकविलास नामक नायिका-भेद का एक विशद ग्रंथ आकार में रसराज से कुछ बड़ा है। इसको पंडित युगुलकिशोरजी ने देखा है। इनके कुछ स्फुट छंद भी मिलते हैं। इन्होंने ब्रजभाषा में कविता की है श्रोर वह प्रशंसनीय है। हम इन्हें तोष जी की श्रेणी का कवि समझते हैं:—

सनि कै परागन सों रागन रचत
भैांर ह्वै रहे मदंध श्रोर श्रोरनि झुके परैं।
प्रगट पलासन हुतासन से सुलगत
बन श्रोर मन देत श्रंग श्रंग प्रजरैं॥
कहै शिव कवि आई विषम बसंत रितु
ऐसे में विदेस बातैं कोऊ हियरे धरैं।

देखै नए पल्लव पवन लागे डोलैं
मानौ चलत विदेसिन बिदेस को मने करैं ॥ १ ॥

गोरी की हथोरी शिव कवि मेहँदी के विन्दु
इन्द्रवधू को गन जाके आगे लगै फीको है ।
अँगुठा अनूप छाप मानो ससि आयो आप
कर कंज के मिलाप पात तजि ह्यीको है ॥
आगे और आँगुरी अँगूठी नीलामनि युत
बैठो मनो चाय भरो चेटुवा अली को है ।
दवि कै छला सों कोमलाई सों ललाई दौरि
जीतत घुनी को रँग छोर छिगुनी को है ॥ २ ॥

दौरत लंक दुनै दुनै जात उनै उनै भौंर की भीर सतावै ।
भारी अँध्यारी दुरी जहँ जाय तहाँ मुख चंद तुरंत बतावै ॥
चोर मिहीचनो खेलिए क्यों शिव तैं सजनी हठि सौंह दिवावै ।
दोस हमारेई अंगन को सखि हौस हिए की न पूजन पावै ॥३॥

(७३५) शिव कवि द्वितीय ।

ये असनी-निवासी बन्दीजन थे । इनका कोई ग्रंथ देखने में नहीं आया, केवल स्फुट छंद भँड़ोवा इत्यादि देखे गये हैं । ये साधारण श्रेणी में गिने जा सकते हैं ।

(७३६) गुमान मिश्र ।

इन्होंने पिहानी के महमदी महाराज अकबर अली खाँ के आश्रय में संवत् १८०१ में श्रीहर्षकृत नैषध काव्य का उल्था

मनोहर छन्दों में किया। इन्होंने अपने विषय में केवल इतना लिखा है कि आप मिश्र थे और सुखसुख मिश्र के शिष्य थे। इनका केवल यही एक ग्रन्थ हमारे देखने में आया है, जो १७८ पृष्ठों का है, परन्तु मिश्र युगुल किशोरजी ब्रजराज ने इनके रचित आठ सात ग्रन्थ अलंकार, नायिकाभेद, काव्यरीति इत्यादि विषयों के सेठ जैदयालजी तअल्लुक़दार के पास देखे, जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। इनकी कृष्णचंद्रिका खोज में मिली है। इन्होंने ब्रजभाषा में कविता की, परन्तु दे। एक स्थान पर प्राकृत मिश्रित और संस्कृत मिश्रित भाषा भी लिखी है। इन्होंने अनुप्रास साधारणतया अधिक लिखे हैं। इनकी भाषा प्रशंसनीय है। ये महाशय बहुत शीघ्र छन्द बदलते गये हैं। इनका अनुवाद ऐसा मनोहर बना है कि वह स्वतन्त्र ग्रन्थ के समान हो गया है। इनकी कविता में उत्कृष्ट छन्द बहुत हैं। ये महाशय केशवदास की रीति पर चले हैं और छन्दों की चाल में यह ग्रन्थ रामचन्द्रिका सा बना है। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में समझते हैं।

दिग्गज दबत दबकत दिगपाल भूरि
धूरि की धुँधेरी सों अँधेरी आभा भान की।
धाम औ धरा के। माल बाल अबला के। अरि
तजत परान राह चहत परान की॥
सैयद समथ्थ भूप अली अकबर दल
चलत बजाय मारू दुन्दुभी धुकान की।
फिरि फिरि फनतु फनीस उलटतु ऐसे
चाेली खोलि ढाेली ज्यों तमाेली पाके पान की॥

देस प्रवाहन की सरिता सब ओर बहैं बहुतै सरसानी ।
कानन कोठि अगोठि कुलाचल भार भरी धरनी अकुलानी ॥
सूछम छाँह सरूप भई चित चाह नई निहिचै नियरानी ।
सीतल आप पियें ससि मैं पर हीतल की तब ताप बुझानी ॥
त्रिभुवन भूषन भूमि भूरि बर नगर सिरोमनि ।
झल झलात छबि अच्छ अच्छ लखि भाषति धनि धनि ॥
सोहत विकट कपाट जटित पुर द्वार फटिक मय ।
मनो रच्यो कैलास शंभु निज वास भक्त दय ॥
जनु सजत सुमेरु प्रदच्छिना चहुँ सुबरन प्राकार पर ।
सर वरि जहान को करि सकै सब नर घर नव नगर कर ॥

(७३७) दूलह कवि ।

शिवसिंहसरोज में दूलह के जन्म का संवत् १८०३ वि० लिखा हुआ है, परन्तु इनके पिता का जन्म-काल संवत् १८०४ वि० का दिया हुआ है और यह पिता पुत्र का सम्बन्ध भी कथित है। इस से जान पड़ता है कि दूलह के कुटुम्ब का संवत् सरोज में बड़ी ही असावधानी से लिखा गया है। यदि संवत् १८०४ को दूलह का जन्म काल न मानें, तो यह भी किसी प्रामाणिक रीति से नहीं समझ पड़ता कि उनके जन्म का शुद्ध समय क्या है? कवीन्द्र और दूलह के ग्रन्थों में सन्-संवत् का कोई व्योरा नहीं दिया गया है। दूलह ने कंठाभरण के अन्त में केवल इतना लिखा है कि "इति श्री महाकवि कालिदासात्मज कवीन्द्र उदैनाथनन्द कवि दूलह राय विरचिते कविकुलकंठाभरणे अलंकारनिरूपणं समाप्तं"। कालि-

दास ने बीजापुर और गोलकुंडा की लड़ाइयों का एक ही छ
में वर्णन किया है। ये लड़ाइयाँ संवत् १७४५ में हुई थीं। इस
वर्णन को उन्होंने द्रष्टा की भाँति लिखा है। सरोज में भी
गोलकुंडा की लड़ाई में उपस्थित होना कहा गया है। फि
संवत् १७५० में उन्हों ने बारवधूविनोद बनाया। इन बातों
हमने अनुमान किया था कि उनका जन्म संवत् १७१० के ल
भग हुआ होगा, क्योंकि चालीस पैंतालीस वर्ष की अवस्था
प्रथम कोई कवि ऐसा राजमान्य मनुष्य मुश्किल से हो सक
है कि बादशाहों की लड़ाइयों में उनकी सेना के साथ हज़ार
मील पर ले जाया जावे। फिर कालिदास ऐसे बढ़िया कवि भी न
थे कि बहुत शीघ्र ऐसी कवित्व शक्ति सम्पादित कर लेते कि थोड़ी
अवस्था में उत्कृष्ट कविता करने लगते। कवीन्द्र ने बूंदी के राव राजा
बुद्धसिंह की प्रशंसा के छन्द कहे हैं। बुद्धसिंह ने संवत् १७६३ से
संवत् १७९२ तक राज्य किया था, सो इसी समय में उनकी प्रशंसा
के छन्द बने होंगे। यदि कवीन्द्र का जन्म-काल संवत् १७३७ मानें,
[illegible]ा कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि इन के जन्म-काल में इन के पिता
[illegible]की अवस्था २७ वर्ष की पड़ती है और राव बुद्धसिंह के कवित्त बनाने
[illegible] समय कवीन्द्र जी की अवस्था ४० वर्ष की निकलती है। इसी
[illegible]मय में दूलह का जन्म-काल मान सकते हैं। अतः अनुमान से
[illegible]लह का जन्म-काल संवत् १७७७ आता है। यह सब अनुमानही
[illegible]नुमान अवश्य है, परन्तु यह ऐसा अनुमान नहीं है कि जिस में
[illegible] वर्ष से अधिक की भूल हो। किसी उचित प्रमाण के अभाव में
[illegible] अनुमान करने ही पड़ते हैं।

दूलह कवि कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण थे। इन का स्थान बन-पुरा था। स्फुट छन्दों के अतिरिक्त 'कविकुलकंठाभरण' इनका एक मात्र ग्रन्थ है। इसमें कुल इक्यासी छन्द हैं। दूलह के स्फुट छन्द बहुतायत से नहीं मिलते। कुल मिलाकर इन के एक सौ से अधिक छन्द न मिलेंगे; परन्तु इन्हीं थोड़े से छन्दो में इस कवि ने ऐसी मोहनी सी डाल रक्खी है कि इसकी कविता पढ़ कर कोई नहीं कह सकता कि दूलह के छन्द न्यून हैं। क्या भाषा की उत्तमता, क्या कविता की प्रौढ़ता और क्या बहुतेरे अन्य गुण, सभी बातों में दूलह की कविता अत्यन्त सराहनीय है। कंठाभरण में दूलह ने अलंकारों का विषय कहा है, और कुल ८१ छन्दों में उसे ऐसा दिखा दिया है कि कुछ कहा नहीं जाता। रीति के अधिकांश ग्रन्थ कविता की प्रोढ़ता में कंठाभरण को नहीं पा सकते। दूलह ने लक्षण और उदाहरण एक ही छन्द में ऐसे मिला दिये हैं कि कंठाभरण कंठ करने में बहुत ही सुगम, और काव्य में बहुत ही सुहावना हो गया है। कंठाभरण का माहात्म्य दूलह ने निम्न दोहे में कहा है:—

जो या कंठाभरण को कंठ करै चित लाय।
सभा मध्य शोभा लहै अलंकृती ठहराय॥

यदि किसी ग्रन्थ का माहात्म्य सच्चा है, तो इस का सब से पहले है। वास्तव में कंठाभरण कंठाभरण ही है। यह ग्रन्थ कंठ करने योग्य अवश्य है, और ऐसा रोचक है कि दो चार बार पढ़ने से बिना परिश्रम कंठ हो सकता है। कविता के न जानने वाले को

चाहे दो चार स्थानों पर इसके अलंकार ध्यान में न आवें, परन्तु एक बार समझ लेने से इसके लक्षण और उदाहरण बहुत ही साफ़ हो जाते हैं। यह ग्रन्थ कुवलयानन्द और चन्द्रालोक के मत पर कहा गया है। दूलह कविता के आचार्य्य न हो कर केवल अलंकार-सम्बन्धी आचार्य्य हैं और ऐसे आचार्य्यों में इनका पद बहुत ऊँचा है। किसी कवि ने इनकी प्रशंसा में कहा है कि 'और बराती सकल कवि दूलह दूलह राय।' इस कवि के सब गुणों पर विचार कर हम इसे दास का समकक्ष कवि समझते हैं। इनकी भाषा और काव्य-प्रौढ़ता के उदाहरणार्थ हम केवल तीन छन्द नीचे लिखते हैं। इन में से प्रथम दो कंठाभरण के हैं और तृतीय स्फुट कविता का।

उपमान जहाँ उपमेयता लेय तहाँ पहिलोई प्रतीप गनो।
कुच से कमनीय बने करि कुम्भ कहैं कवि दूलह लोक घनो॥
उपमान जहाँ उपमेयता लै फिरि ताहि निरादरै दूजो भनो।
सखि नैनन को जनि जोम करो इनके सम सोहत कंज बनो॥

उरज उरज धसे बसे उर आड़े लसे बिन
गुन माल गरे धरे छबि छाये हौ।
नैन कवि दूलह सुराते तुतराते बैन
देखे सुने सुख के समूह सरसाये हौ॥
जावक सों लाल भाल पलकन पीक लीक
प्यारे ब्रज चन्द सुचि सूरज सोहाये हौ।
होत अरुनोत यहि कोत मति बसी आजु
कौन घर बसी घर बसी करि आये हौ॥

सारी की सरौटैं सब सारी मैं मिलाय दीन्हीं
भूषन की जेब जैसे जेब अहियत है।
कहै कवि दूलह छिपाये रद छद मुख नेह
देखे सौतिन की देह दहियत है॥
बाला चित्रसाला ते निकरि गुरु जन आगे
कीन्ही चतुराई सो लखाई लहियत है।
सारिका पुकारैं हम नाहीं हम नाहीं ए जू
राम राम कहैा नाहीं नाहीं कहियत है॥

(७३८) कुमारमणि भट्ट।

यह कवि हिन्दी-कविता में परम विज्ञ था। इसने संवत् १८०३ के लगभग रसिकरसाल नामक रीति का एक उत्कृष्ट ग्रंथ आकार में काव्यनिर्णय के प्रायः बराबर बनाया। यह ग्रन्थ हमने देखा है पर दुर्भाग्यवश हमारी प्रति के आदि और अन्त के दो चार पृष्ठ फट चुके थे, अतः कुमार के सन-संवत् आदि का विशेष निश्चय न हो सका। सरोजकार ने इन्हें गोकुलवासी माना है और इनका उपर्युक्त समय लिखा है। इनके ग्रन्थ से प्रकट है कि ये महाशय हरि वल्लभ के पुत्र थे। इनकी कविता श्रेष्ठता के बहुत अंगों को लिये हुए परम मनोहर है। इन्हों ने अनुप्रास भी अच्छे कहे हैं तथा भाव, मनोहरता की भी अच्छी छटा दिखाई है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रक्खेंगे। इनका ग्रन्थ छपवाने के योग्य है। सरोजकार ने भी इनके सात छन्द लिखे हैं।

गावैं बधू मधुरे सुर गीतनि प्रीतम संग न बाहर आई।
छाई कुमार नई छिति मैं छवि माना बिछाई नई दरियाई॥
ऊँचे अटा चढ़ि देखि चहूँ दिसि बोली यों बाल गरो भरि आई।
कैसी करौं हहरै हियरा हरि आये नहीं उलही हरियाई॥

(७३६) सरयूराम पंडित।

इस महात्मा का बनाया हुआ जैमिनि पुराण हस्तलिखित हमारे पुस्तकालय में है। इसमें पंडित जी ने अपना नाम श्रार ग्रन्थ-समय लिखा है। इसमें इन्हों ने प्रथम दो श्लोकों द्वारा वन्दना की है जिनमें द्वितीय में अपना नाम मात्र लिख दिया है श्रार फिर अपने विषय में कहीं कुछ भी नहीं कहा। आपने अन्त में एक दोहे द्वारा यह कह दिया है कि यह ग्रन्थ संवत् १८०५ में बनकर तैयार हुआ। हमारे पास जो प्रति है वह संवत् १८८५ में लिखी गई थी। इस ग्रन्थ के अक्षर जोड़ने से आकार में यह ७६०० अनुष्टुप् छन्दों वाले ग्रन्थ के बराबर आता है। इस हिसाब से श्रीमद्भागवत १८००० श्रार वाल्मीकीय रामायण २४००० है।

इसमें ३६ अध्याय हैं, जिनमें परम मनोहर एवं विस्तीर्ण कथा वर्णन की गई है। प्रथम चार अध्यायों में यज्ञ की तैयारी, घोड़ा लाया जाना श्रार सेना एकत्रित होना कहे गये हैं। पंचम अध्याय से घोड़ा छूटना श्रार उसकी रक्षा में युद्ध वर्णित हैं। इसमें क्रम से अनुशाल, नीलध्वज (इसमें अग्नि का युद्ध है।), हंसध्वज (इसमें सुरथ एवं सुधन्वा का प्रचंड युद्ध है।), स्त्री गण, सुवेग राक्षस (बकात्मज), अर्जुन पुत्र बभ्रुवाहन (इसमें कराल युद्ध, संक्षिप्त

रामायण, सीता-त्याग, लवकुश जन्म, रामाश्वमेध में लवकुश का शत्रुघ्न, लक्ष्मण और भरत से युद्ध, तथा राम के मोहित होने पर वाल्मीकि जी द्वारा दल चेतन और सीताराम मिलाप भी कहे गये हैं।), मयूरध्वज (इसमें इसके पुत्र ताम्रध्वज का घोर युद्ध वर्णित है।), परिशर्मा, चन्द्रहास और समुद्रस्थ मुनि की कथाये अच्छी रीति से वर्णित हैं और अन्तिम कथा को छोड़कर सबमें लोम-हर्षण युद्ध कहे गये हैं। अन्त में युद्धों का संक्षिप्त इतिहास कहकर कवि ने अर्जुन की स्वपुरयात्रा वर्णित की है। छत्तीसवें अध्याय में दो ब्राह्मणों का झगड़ा, कृष्ण द्वारिकागमन, सब राजाओं का अपने अपने नगर जाना और कथा माहात्म्य वर्णित हैं। इन सब विषयों के रुचिर वर्णन इस ग्रन्थ में हैं। ये महाशय महात्मा तुलसीदास की रीति पर चले हैं। इनकी भाषा भी वैसवारी है। इन्होंने विशेषतया दोहा चौपाइयों में रचना की है, परन्तु अन्य छन्दों की मात्रा इनकी कविता में बहुत है। उपमा, रूपक आदि इन्होंने अच्छे कहे हैं और सब विषयों को सफलता से लिखा है। हम इनको कथा-प्रासंगिक कवियों की छत्र श्रेणी में रखते हैं।

गुरुपद रज सम नहिँ कछु लाहा। चिन्तामनि पाइय चित चाहा ॥
कुरुपद पंकज पावन रेनू। कहा कलप तरु का सुर धेनू ॥
गुरुपदरज प्रिय पावन पाये। अगम सुगम सब विनहि उपाये ॥
गुरुपद रज अज हरि हर धामा। त्रिभुवन बिभव बिस्व बिसरामा।
गुरुपद रज मंजन दृग दीन्हें। परत सुतत्व चराचर चीन्हें ॥
तबलगि जगजड जीव भुलाना। परम तत्त्व गुरु जिय नहिँ जाना ॥
श्रीगुरु चरन सरन सब पाई। रह्यो न कछु करनीय उपाई ॥

श्रीगुरु पंकज पाउँ पसाऊ। श्रवन सुधा मय तीरथ राऊ॥
सुमिरत होत हृदय अलनाना। मिटत मोह मय मन मल नाना॥
व्यापक ब्रह्म चराचर अन्तर। ध्याइयपरमहंस सिर ऊपर॥

(७४०) शम्भुनाथ मिश्र (सं० १८०६ वाले)।

नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज से ज्ञान पड़ा कि इस नाम के कई कवि हुए हैं, जिनमें से तीन महाशय मिश्र भी थे। इनमें से एक संवत् १८०६, दूसरे १८६७, और तीसरे १९०१ में थे। संवत् १८०६ वाले शम्भुनाथ ने रस कल्लोल, रसतरंगिनी, और अलंकार दीपक नामक तीन ग्रन्थ बनाये। शेष दोनों कवियों के भी नाम यथा स्थान दर्ज हैं। संवत् १८०६ वाले शम्भुनाथ असोथर ज़िला फ़तेहपुर के राजा भगवन्तराय खीची के यहाँ रहते थे। इनके अलंकार दीपक में दोहा अधिक हैं और शेष छन्द कम। इस ग्रन्थ में खीची नृप का यश-गान बहुत है और वह बढ़िया भी है। इसमें कवि ने गद्य में टीका भी लिख दी है। इसका आकार रघुनाथ के रसिक मोहन का प्रायः आधा है। शेष दोनों ग्रन्थों के विषय में हमें विशेष हाल ज्ञात नहीं हुआ है। इनकी कविता अत्यन्त मधुर, सानुप्रास तथा सरस है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रक्खेंगे।

आजु चतुरंग महाराज सेन साजत ही
धौंसा की धुकार धूरि परी मुँह माही के।
भय के अजीरन ते जीरन उजीर भये
सूल उठी उर में अमीर जाही ताही के॥

बीर खेत बीच बरछो लै बिरुभानो इतै
धीरज न रह्यो सम्भु कौन हू सिपाही के।
भूप भगवन्त बीर ग्वाही के खलक सब
स्याही लाई बदन तमाम पात साही के॥

(७४१) तीर्थराज।

इस नाम के दो कवि हुए हैं। एकने तो संवत् १८०६ में समरसार भाषा किया और दूसरे ने १८३० में ६८ पृष्ठों का रसानुराग नामक ग्रन्थ बनाया। इन दोनों की कविता अनुप्रास-पूर्ण तथा सबल होती थी। हम इन को तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे। समरसारकार डौडिया खेरे के राजा अचलसिंह के यहाँ थे और बैसवाड़े के रहने वाले थे।

समरसार के कर्त्ता का उदाहरण।

बीर बलवान बालपन तै अरिन्दन को
पठयो पताल पाय तम को न लेस है।
जाको राज राजत सुमन सब साधु जन
सुमन सरोज फैले सरस सुमेस है॥
सुन्दर बिलन्द भाल पूरन प्रताप जाको
जाकी ओर देखे और सूझन न येस है।
फूल्यो चहुँ ओर देस देसनि मैं तेज पुञ्ज
अचल नरेस मानो दूसरो दिनेस है॥

(७४२) भगवंतराय खींची।

आप असोथर ज़िला फ़तेहपुर के एक प्रसिद्ध राजा एवं सुकवि थे। इनका कोई ग्रंथ हम ने नहीं देखा। सरोज में इनके विषय में लिखा है कि "सातो कांड रामायण कवित्तों में महा अद्भुत रचना मे। कविताई के साथ बनाया है।" हमें इनके रचित हनुमान जी के ५० स्फुट छंद मिले हैं। शायद ये उसी रामायण के हों। खोज में इन का समय १८०६ दिया है, और इनका एक ग्रंथ हनुमतपचीसी लिखा है, जिस का संवत् १८१७ कहा गया है। ये महाशय कवियों के कल्पवृक्ष थे। सैकड़ों कवियों ने इनकी प्रशंसा की है, जिन में एक ने इनके मृत्यु पर यह भी कहा है कि 'भूप भगवन्त सुर लोक को सिधारो आजु आजु कवि गन को कलप तरु टूरि गो।' इनकी कविता उत्कृष्ट, सानुप्रास और ज़ोरदार होती थी। हम इन को छत्र कवि की श्रेणी में समझते हैं।

सुख भरिपूरि करैं दुखन को दूरि करैं
जीवन समूरि सो सजीवन सुधार की।
चिंता हरिबे को चिंतामनि सी विराजै
कामना को कामधेनु सुधा सद्युत सुमार की॥
भनै भगवंत सुधी होत जेहि मोर वेत
साहिबी समृद्धि देखि परत उदार की।
जन मन रंजनी है गंजनी विथा की
भयभंजनी नज़रि अंजनी के पैं कुदार की॥

विदित बिसाल ढाल भालु कपि जाल की है
　　ओट सुरपाल की है तेज के तुमार की।
जाही सों चपेटि कै गिराए गिरि गढ जासों
　　कठिन कपाट तोरे लंकिनी सुमार की॥
भनै भगवंत जासों लागि लागि भेंटे प्रभु
　　जाके त्रास लखन को छुभिता खुमार की।
ओड़ै ब्रह्म अस्त्र की अवाती महाताती वंदौं
　　जुद्ध मद माती छाती पवन कुमार की॥

नाम—(७४३) मल्ल।

कविताकाल—१८०७।

विवरण—खीची भगवन्त राय असोथर वाले के यहाँ थे। ये महाशय तोष कवि की श्रेणी के कवि थे।

आजु महा दीनन को सूखि गो दया को सिन्धु
　　आजुही गरीबन को सब गथ लूटि गो।
आजु दुजराजन को सकल अकाज भयो
　　आजु महराजन को धीरजहु छूटि गो॥
मल्ल कहै आजु सब मंगन अनाथ भये
　　आजुही अनाथन को करम सो फूटि गो।
भूप भगवन्त सुरधाम को पयान कियो
　　आजु कवि गन को कलप तरु टूटि गो॥

नाम—(७४४) भूधर।

समय—१८०९।

विवरण—भगवतराय राजा असोथर वाले के यहाँ थे। ये तोष की श्रेणी के कवि थे। कोई ग्रंथ देखने में नहीं आया पर स्फुट छंद समहों में देखे गये हैं।

जोबन उजारी प्यारी बैठी रंग रावटी में
मुख की मरीची सो दरीची बीच झलकैं।
भूधर सुकवि भौहैं सोहैं मन मोहैं वरी
खंजन सी आखैं मन रंजन सी पलकैं॥
सीस फूल वेना वेंदी वीर अरु वदन की
चंदन की चरचा की चारु छवि छलकैं।
कोर वारी चूनरी चकोर वारी चितवनि
मोर वारी वेसरि मरोर वारी अलकैं॥ १॥

(७४५) शिवसहायदास ।

ये महाशय जैपुरनिवासी भट्ट कवि थे। इन्हों ने संवत् १८०९ में शिव-चौपाई और लोकोक्ति-रसकौमुदी नामक दो सुन्दर ग्रन्थ बनाये। द्वितीय ग्रन्थ में पखाने (उपाख्यान) हैं और उन्हीं को मिला कर कवि ने नायिका भेद वर्णन किया है। इन्हों ने ३०० लोकोक्तियों का ५९ पृष्ठों में वर्णन किया है। इनकी कविता लोकोक्तियों के कारण बड़ी मनमोहनी है। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

तिय तन झलक्यो जोबन भूप।
चल्यो चहत सिसुता को रूप॥

कहै पखानो जे बुधि धाम।
उतरयो सहना मरदक नाम ॥ १ ॥
करो रुखाई नाहिन बाम।
वेगिहि लै आऊं घन स्याम ॥
कहै पखानो युत अनुराग।
बाजी ताँत कि बूझयो राग ॥ २ ॥
बोलै निठुर पिया बिनु दोस।
आपुहि तिय बैठी गहि रोस ॥
कहै पखानो जेहि गहि मोन।
बैल न कूद्यो कूदी गोन ॥ ३ ॥

नाम—(७४६) रसिक अली।

ग्रन्थ—(१) मिथिलाविहार, (२) अष्ट-याम (७७ पद कवित्त आदि), (३) होरी।

समय—१८१०।

विवरण—मिथिला विहार में रामचन्द्रजी का जनकपुर में आगमन और उनकी शोभा का वर्णन विविध छन्दों में है। इसमें कुल ४२३ छन्द हैं। कविता प्रशंसनीय है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है। हमें प्रथम दोनों ग्रन्थ दरबार छतरपुर में देखने को मिले।

माई घन गरजन लगत सुहाई।
घन प्रमोद मोरन की सोरा चहुँ दिसि बन हरिआई।
रिमि भिमि बरसत दमकत दामिनि घन अँधियारी छाई ॥

झिल्ली रव चातक रट कोकिल टिनटिन कुहुक मचाई।
तरुद्रुम बकुल रसाल कदंबन सोभा रहि अधिकाई॥ १॥

सोहै शीस प्यारी जू के चन्द्रिका जटित नग
जगमग जोति भानु कोटि उजियारी है।
रतन किरीट राजैं राघव सुजान सीस
उदित विदित कोटि सघन तमारी है॥
दामिनी सघन घन बरन विराजैं दोऊ
नील पीत बसननि जटित किनारी है।
रसिक अली जू प्यारे राजत सिँगार कुंज
सुखमा अमित पुंज छवि मोदकारी है॥ २॥

नाम—(७४७) हित रामकृष्ण, कालिंजर-निवासी चौबे।

ग्रन्थ—१ विनयपचीसी, २ विनय-अष्टक, ३ विष्णु अवतार-चरित्र, ४ रासपंचाध्यायी, ५ वज्रनाभ की कथा, ६ रुक्मिणी-मंगल, ७ अष्टक, ८ अवतारचेतावनी, ९ वृषभान की कथा, १० दूसरा रुक्मिणी मंगल, ११ नायिकाभेद दोहा, १२ स्फुट कवित्त, १३ स्फुट पद, १४ श्रीकृष्णविलास, १५ ग्वालपहेलीलीला, १६ प्रतीतपरीक्षा।

समय—१८१०।

विवरण—इनके ये सब ग्रन्थ हमने दरबार छतरपूर में देखे हैं। इनमें काव्य गरिमा साधारण श्रेणी की है। समय जाँच से लिखा गया है। आप पन्ना-नरेश महाराजा हिरदे-

शाह के समय से राजा अमानसिंह के समय तक कालिंजर के क़िलेदार रहे।

पंकज बरन रबि छबि के हरन चारि
फल के फरन देवतरु सम गाइए।
बिधि के सरन मेटैं जिय की जरनि गावै
धरा के धरन सदा हिय मैं रमाइए॥
जन पै ढरन दुख दारिद हरन
असरन के सरन राम कृष्ण उर ध्याइए।
संकट हरन भवनिधि के तरन सब
सुख के करन गुरु चरन मनाइए॥ १॥

इस समय के अन्य कविगण।

नाम—(७४८) प्रेमदास।
ग्रन्थ—(१) अरिल्लन, (२) हरिवंस चैारासी।
रचना-काल—१७९१।
विवरण—हितहरिवंश के अनुयायी।

नाम—(७४९) श्रीकृष्ण भट्ट।
ग्रन्थ—(१) दुर्गाभक्तितरंगिनी, (२) साँभर जुद्ध।
रचनाकाल—१७९१।
विवरण—जैपुर दरबार में थे।

नाम—(७५०) कृपाराम।
ग्रन्थ—भाषाज्योतिषसार।

रचना-काल—१७९२।

विवरण—शाहजहाँपुर के कायस्थ।

नाम—(७५१) ज़ोरावरसिंह महाराजा।

ग्रन्थ—रसिकप्रिया टीका।

रचना-काल—१७९२ से १८०८ तक।

नाम—(७५२) दशरथ राय महापात्र।

ग्रन्थ—नवीनादर्य (नायिका-भेद)।

रचना-काल—१७९२।

विवरण—असनी के सुप्रसिद्ध नरहरि महापात्र के वंशज।

नाम—(७५३) हरि जू ब्राह्मण आज़मगढ़।

ग्रन्थ—अमरकोश भाषा पृष्ठ १३२।

रचना-काल—१७९२।

विवरण—आश्रयदाता आगढ़ाधीश आज़मख़ाँ।

नाम—(७५४) शाह जू पंडित, ओड़छा।

ग्रन्थ—(१) लक्ष्मणसिंहप्रकाश, (२) बुंदेलवंशावली।

रचना-काल—१७९४।

विवरण—टहरौली के जागीरदार लक्ष्मणसिंह इनके आश्रयदाता थे।

नाम—(७५५) जैतराम।

ग्रन्थ—सदाचारप्रकाश पृष्ठ २१२।

रचना-काल—१७९५।

नाम—(७५६) दयाराम त्रिपाठी।

ग्रन्थ—(१) अनेकार्थ, (२) सामुद्रिक ।
जन्म-संवत्—१७६९ ।
रचना-काल—१७९५ ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(७५७) देवीचन्द ।
ग्रन्थ—हितोपदेश भाषा ।
रचना-काल—१७९७ के पूर्व ।

नाम—(७५८) गोपाल भट्ट ब्राह्मण गोकुल वाले ।
ग्रन्थ—(१) रामअलंकार, (२) पिंगल-प्रकरण ।
रचना-काल—१७९७ ।
विवरण—उड़छा-नरेश राजा पृथ्वीसिंह के यहाँ थे ।

नाम—(७५९) देव कवि ।
ग्रन्थ—रागमाला ।
रचना-काल—१७९७ ।
विवरण—अमीर ख़ाँ को अपना आश्रयदाता बतलाते हैं ।

नाम—(७६०) विजयाभिनन्दन बुँदेलखंडी ।
रचना काल—१७९७ ।
विवरण—महाराज छत्रसाल बुँदेला के यहाँ थे ।

नाम—(७६१) धीरभानु ।
ग्रन्थ—राजरूपक ।
रचना-काल—१७९७ ।

नाम—(७६२) रुद्रमणि मिश्र ।

रचना-काल—१७९७।

विवरण—जुगुलकिशोर भट्ट के यहाँ थे।

नाम—(७६३) सुखलाल ब्राह्मण भटेर, भदावर।

ग्रन्थ—वैद्यकसार।

रचना-काल—१७९७।

विवरण—जुगुलकिशोर तथा गोंडा-नरेश के यहाँ रहे। साधारण श्रेणी।

नाम—(७६४) सत जीव।

रचना-काल—१७९७।

नाम—(७६५) गोविन्द।

ग्रन्थ—कर्णाभरण।

रचना-काल—१७९८।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७६६) नैने व्यास।

ग्रन्थ—धनुषविद्या।

रचनाकाल—१७९८।

विवरण—राजा दुर्जनसिंह जागीरदार बंधौरा के यहाँ थे।

नाम—(७६७) शिवनाथ पन्ना बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—रसरञ्जन।

रचनाकाल—१७९८।

विवरण—साधारण श्रेणी। छत्रसालात्मज महाराजा जगतराज के यहाँ थे।

नाम—(७६८) नंदव्यास ॥

ग्रन्थ—(१) मानलीला, (२) यज्ञलीला ।

रचनाकाल—१७९९ के पूर्व ।

नाम—(७६९) कवीन्द्र नरवर बुँदेलखंड वाले ।

ग्रन्थ—रसदीप ।

रचनाकाल—१७९९ ।

नाम—(७७०) पंचमसिंह कायस्थ, ओड़छा ।

ग्रन्थ—नीरता की कथा ।

रचनाकाल—१७९९ ।

विवरण—दोहा चौपाई । मधु सूदनदास से न्यून ।

एक ग्रन्थ स्वप्नाध्याय गद्य छत्रपूर में देखा । हित हरिवंश की गद्दी में किसी ने सं० १८०० में रचा ।

नाम—(७७१) अलाकुली ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

रचनाकाल—१८०० के लगभग ।

विवरण—एक बार भरतपूर के सूरजमल से लड़े थे ।

नाम—(७७२) कल्यान पुजारी ।

ग्रन्थ—चौल ।

रचनाकाल—१८०० (अन्दाजी) ।

विवरण—ग्रन्थ छत्रपूर में देखा । साधारण श्रेणी ।

नाम—(७७३) कुंजलाल ।

ग्रन्थ—स्फुट पद।
रचनाकाल—१८०० के लगभग।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७७४) तालिबशाह।
जन्मकाल—१७६८।
रचनाकाल—१८००।
विवरण—साधारण श्रेणी। इनकी कविता खड़ी बोली मिश्रित है।

नाम—(७७५) नन्दलाल।
जन्मकाल—१७७४।
रचनाकाल—१८००।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७७६) नवलदास वृन्दावन।
ग्रन्थ—बानी।
रचनाकाल—१८००।
विवरण—ये नागरीदास के शिष्य थे। इनकी बानी के ५ पृष्ठ हमने दरबार छत्रपूर में देखे। हीन श्रेणी।

नाम—(७७७) नारायण।
ग्रन्थ—हरिश्चन्द्र की कथा।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७७८) नित्यकिशोर।
ग्रन्थ—स्फुट पद।
रचनाकाल—१८०० (अन्दाजी)।

नाम—(७७६) पुंडरीक बुँदेलखंडी।

जन्मकाल—१७६९।

रचनाकाल—१८००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७८०) वल्लभ रसिक गदाधर भट्ट सम्प्रदाय के।

ग्रन्थ—(१) स्फुटपद, (२) बानी।

रचनाकाल—१८००।

विवरण—बानी छत्रपूर में देखी।

नाम—(७८१) ब्रजराज बुँदेलखंडी।

जन्मकाल—१७७५।

रचनाकाल—१८००।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७८२) फ़तेहसिंह कायस्थ, पन्ना।

ग्रन्थ—(१) दस्तूरमालिका, (२) मोहरम (ज्योतिष), (३) माताचन्द्र, (४) वृक्षचेतावनी, (५) दफ़्तरनामा।

रचनाकाल—१८०० के लगभग।

विवरण—क़ायदा हिसाब किताब रचा। हीन श्रेणी। कोंच ज़िला जालौन के निवासी थे। पन्नानरेश सभासिंह इनके आश्रयदाता थे।

नाम—(७८३) भीकचन्द मथेन जती।

ग्रन्थ—फुटकर काव्य।

रचनाकाल—१८००।

नाम—(७८४) महताब।

ग्रन्थ—नखशिख।

रचनाकाल—१८००।

विवरण—साधारण श्रेणी। इन्हों ने हिन्दूपति की प्रशंसा की है, जिनके यहाँ दास कवि थे। इन्होंने उन्हें राजा के स्थान पर बादशाह लिख दिया है।

नाम—(७८५) माईदास मुन्शी।

रचनाकाल—१८००।

नाम—(७८६) मीर अहमद बिलग्राम।

ग्रन्थ—स्फुट।

रचनाकाल—१८००।

नाम—(७८७) मूरतिसिंह लांजी बालाघाट।

ग्रन्थ—(१) दुर्गापाठ भाषा, (२) तीर्थों के कवित्त।

रचनाकाल—१८००।

नाम—(७८८) रतनवीर भानु।

रचनाकाल—१८००।

नाम—(७८९) रसचन्द्र।

ग्रन्थ—स्फुटकाव्य।

रचनाकाल—१८००।

विवरण—भक्त कवि थे।

नाम—(७९०) रसिकानन्दलाल।

ग्रन्थ—स्फुटपद।
रचनाकाल—१८०० के लगभग।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७६१) लालमुकुन्द बनारसी।
ग्रन्थ—लालमुकुन्दविलास।
जन्मकाल—१७७४।
रचनाकाल— १८००।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(७६२) लाल गिरिधर जी।
ग्रन्थ—स्फुट पद।
रचनाकाल—१८०० के लगभग।

नाम—(७६३) साधु पृथ्वीराज।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७६४) सावंतसिंह।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७६५) सेवक गुलालचन्द।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७६६) सेवकप्रेमचंद।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७६७) सेवक शिवचंद।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७९८) हम्मीरदान चारण।
ग्रन्थ—(१) गुणनाम माला, (२) स्फुट।
जन्मकाल—१७७६।
रचनाकाल—१८००।

नाम—(७९९) हितराम।
रचनाकाल—१८०० के लगभग।

नाम—(८००) हितलाल।
ग्रन्थ—स्फुट पद।
रचनाकाल—१८०० के लगभग।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८०१) पीतांबर।
ग्रन्थ—जैमिनि पुराण भाषा।
रचनाकाल—१८०१।
विवरण—मधुसूदनदास श्रेणी।

नाम—(८०२) विरजू बाई।
रचनाकाल—१८०१।
विवरण—चारणी स्त्री कवि।

नाम—(८०३) विष्णु गिरि।
ग्रन्थ—सुगमनिदान।
रचनाकाल—१८०१।

नाम—(८०४) वीरन कवि जोधपुर।

रचनाकाल—१८०१ ।

विवरण—सती हो गई थीं ।

नाम—(८०५) सुखसागर उपनाम सदासुख ।

ग्रन्थ—(१) भ्रमरगीत, (२) बारामासा, (३) विष्णुपुराण भाषा, (४) राधाविहार ।

रचनाकाल—१८०१ से १८८२ तक ।

विवरण—इनकी कविता देखने में नहीं आई ।

नाम—(८०६) जुगुलकिशोर भट्ट दिल्ली व कैथाल ज़िला करनाल ।

ग्रन्थ—(१) अलंकारनिधि, (२) किशोरसंग्रह ।

रचनाकाल—१८०३ ।

विवरण—साधारण श्रेणी । इन्हें मोहम्मदशाह ने राजा की पदवी दी ।

नाम—(८०७) तालिब अली (रस नायक) बिलग्राम ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

रचनाकाल—१८०३ ।

नाम—(८०८) ब्रह्मनाथ साँडी ज़िला हरदोई ।

रचनाकाल—१८०३ ।

नाम—(८०९) रामप्रसाद बन्दीजन बिलग्रामी ।

ग्रन्थ—(१) जैमिनपुराण भाषा, (२) जुगल पद ।

रचनाकाल—१८०३ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(८१०) हिम्मतबहादुर गोसाईं बाँदा।

ग्रन्थ—स्फुट।

रचनाकाल—१८०३ से १८५७ तक।

विवरण—ये बड़े बहादुर और कवियों के सहायक हुए हैं। इनके नाम पर हिम्मतबहादुर बिरदावली कवि पद्माकर ने बनाई।

नाम—(८११) दत्तप्राचीन गयावासी।

ग्रन्थ—सज्जनविलास।

रचनाकाल—१८०४।

विवरण—कुँवर फ़तेहसिंह गया वाले के यहाँ थे।

नाम—(८१२) धौंकलसिंह न्यावा जिला रायबरली।

ग्रन्थ—रमलप्रश्न भाषा।

जन्मकाल—१७६०।

रचनाकाल—१८०५।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(८१३) मधुनाथ।

जन्मकाल—१७८०।

रचनाकाल—१८०५।

नाम—(८१४) सरदारसिंह।

ग्रन्थ—सुरतिरंग।

रचनाकाल—१८०५।

नाम—(८९५) कृपाराम नरायनपुर ज़िला गोंडा वाले।

ग्रन्थ—(१) भागवत भाषा (दोहा चौपाई आदि में), (२) माधव सुलोचना चम्पू, (३) मुहम्मद ग़ज़ाली किताब, (४) भाष्य-प्रकाश, (५) चित्रकूट-माहात्म्य।

रचनाकाल—१८०६।

विवरण—इनकी भागवत हमने देखी है। यह बहुत बड़ा ग्रन्थ है पर उसकी कविता साधारण है।

नाम—(८९६) मंगल मिश्र।

ग्रन्थ—समरान्तसार पृष्ठ ३२०।

रचनाकाल—१८०६।

नाम—(८९७) राजाराम श्रीवास्तव खरे कायस्थ बुंदेलखंड।

ग्रन्थ—(१) शृंगारकाव्य, (२) यम द्वितीया की कथा।

जन्मकाल—१७७८।

रचनाकाल—१८०६।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(८९८) शुभकरण।

ग्रन्थ—अनवरचन्द्रिका।

रचनाकाल—१८०६।

विवरण—टीका बिहारी-सतसई की।

नाम—(८९९) रामानंद।

ग्रन्थ—(१) रसमंजरी।

रचनाकाल—१८०७ के पूर्व।

ग्रन्थ—शालिहोत्र।

रचनाकाल—१८०८।

विवरण—राजा अली अकबर खाँ के यहाँ थे।

नाम—(८३२) नेतसिंह।

ग्रन्थ—सारंगधर संहिता।

रचनाकाल—१८०८।

विवरण—पिता का नाम नाथन जी भाट था।

नाम—(८३३) बघता राठौर (बघनेस) (बख़्तसिंह महाराज जोधपुर)।

ग्रन्थ—फुटकर भजन।

रचनाकाल—१८०८।

विवरण—अहमदशाह बादशाह के कृपापात्र थे।

नाम—(८३४) बदन (बाँदा) गिरवाँ तहसील।

ग्रन्थ—रसदीपक।

रचनाकाल—१८०८।

विवरण—पृथ्वीसिंह गढ़ाकोटा के यहाँ थे। तोष कवि की श्रेणी।

नाम—(८३५) लालजी कायस्थ कांधला मुज़फ़्फ़रनगर।

ग्रन्थ—भक्त-उर्वशी (भक्तमाल)

रचनाकाल—१८०८।

नाम—(८३६) सोमनाथ सांडी हरदोई।

ग्रन्थ—माधवविनोद नाटक।

रचनाकाल—१८०९।

विवरण—कुँवर बहादुरसिंह के यहाँ थे।

नाम—(८३७) शिवदास जैपूर।

ग्रन्थ—(१) शिव चौपाई, (२) लोकोक्ति रस जगन, (३) अलंकार शृंगार (दोहा)।

रचनाकाल—१८१० के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८३८) सनेहीराम।

ग्रन्थ—रसमंजरी।

रचनाकाल—१८१० के पूर्व।

नाम—(८३९) सुमेरसिंह साहबज़ादे।

रचनाकाल—१८१० के पूर्व।

विवरण—एक सुमेरसिंह साहबज़ादे पटना के थे, जो अपना नाम सुमिरेसहरी रखते थे और वह संवत् १९४० तक वर्तमान थे। ये शायद कोई दूसरे हों।

नाम—(८४०) सूरज।

रचनाकाल—१८१० के पूर्व।

नाम—(८४१) कमलनैन।

ग्रन्थ—गुरुप्रसाद दस्तूर।

जन्मकाल—१७८४।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(८४२) गरवीलीदास या गरीबदास कलानी के मुसाहेब। टट्टीन की सम्प्रदाय के।

ग्रन्थ—(१) पद (५८), (२) बानी।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी। छत्रपूर में ग्रन्थ देखे। ये भगवत रसिकजी के शिष्य थे। इनके समय आदि जाँच से मिले हैं।

नाम—(८४३) जवाहिरसिंह कायस्थ जिगौरा।

ग्रन्थ—वैद्यप्रिया।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—पन्नानरेश अमानसिंह के दीवान थे, जिन्हों ने संवत् १८०९ से १३ तक राज किया।

नाम—(८४४) धनसिंह वंदीजन मौरावाँ जिला उन्नाव।

जन्मकाल—१७९१।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८४५) धीरजसिंह।

ग्रन्थ—चिकित्सासार।

रचनाकाल—१८१०।

नाम—(८४६) विजयसिंह महाराजा।

ग्रन्थ—विजयविलास।

रचनाकाल—१८१० से १८४१ तक।

नाम—(८४७) विहारी बुँदेलखंडी कायस्थ उड़छा।

ग्रन्थ—दम्पतिध्यानमंजरी।

जन्मकाल—१७८६।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८४८) व्रजनाथ।

ग्रन्थ—रागमाला।

जन्मकाल—१७८०।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—रागों के लक्षण इत्यादि लिखे हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(८४६) रसराज।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१८८५।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८५०) रसरूप।

ग्रन्थ—(१) उपालम्भशतक, (२) तुलसीभूषण (१८११), (३) शिखनख।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८५१) रसिकविहारी।

जन्मकाल—१७८० ।

रचनाकाल—१८१० ।

नाम—(८५२) रूपमणि चौहान ।

जन्मकाल—१७८० ।

रचनाकाल—१८१० ।

नाम—(८५३) हरि कवि ।

ग्रन्थ—(१) चमत्कारचन्द्रिका, (२) कविप्रियाभरण, (३) अमरकोष भाषा ।

रचनाकाल—१८१० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(८५४) हेम गोपाल ।

जन्मकाल—१७८० ।

रचनाकाल—१८१० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

सत्ताईसवाँ अध्याय ।

सूदन काल

(१८११ से १८३० तक)

(८५५) सूदन ।

ये महाशय माथुर ब्राह्मण, महाराज बसन्त के पुत्र मथुराजी के निवासी थे। भरतपूर के महाराजा बदनसिंह के पुत्र सुजानसिंह

उपनाम सूरजमल इनके आश्रयदाता थे। जान पड़ता है कि ये महाशय भरतपुर में बहुधा रहा करते थे और सूरजमल के साथ युद्धों में भी सम्मिलित रहते थे। इन्होंने लड़ाइयों का वर्णन आँखों देखा सा किया है। इन्हीं सूरजमल के भाई प्रतापसिंह के यहाँ सोमनाथ कवि रहते थे। सूदन कवि ने "सुजान-चरित्र" नामक एक बड़ा ग्रन्थ बनाया और वही नागरी-प्रचारिणी सभा ने "ग्रन्थ-माला" द्वारा प्रकाशित किया है। इसमें २३४ पृष्ठ छपे हैं, परन्तु यह जान पड़ता है कि ग्रन्थ अपूर्ण है। इसमें सूदनजी ने अध्याय-समाप्ति पर निम्न लिखित छन्द हर जगह लिखा है, जिस में तीन पद वही रहते हैं, परन्तु चतुर्थ पद अध्याय में वर्णित कथा के अनुसार बदलता रहता हैः—

> भुवपाल पालक भूमिपति बदनेश नंद सुजान है।
> जानै दिल्ली दल दक्खिनी कीन्हें महा कलिकान है॥
> ता को चरित्र कछूक सूदन कह्यो छन्द बनाय के।
> कहि देव ध्यान कवीश नृप कुल प्रथम अंक सुनाय कै॥

ग्रन्थारम्भ में सूदन ने छः छन्दों में १७५ कवियों के नाम लिख कर उन्हें प्रणाम किया। इससे यह ज्ञात होता है कि उसमें वर्णित कवि सूदनजी से प्रथम के या समकालीन हैं। कवियों के नाम ये हैं:—

केशव, किशोर, काशी, कुलपति, कालिदास, केहरि, कल्यान, करन, कुन्दन, कविन्द, कचन, कमच, कृष्ण, कनकसेन, केवल, करीम, कविराज, कुँवर, केदार, खानखाना, खगपति, खेम, गगा-पति, गंग, गिरिधरन, गयन्द, गोप, गदाधर, गोपीनाथ, गोवर्धन,

जन्मकाल—१७८०।

रचनाकाल—१८१०।

नाम—(८५२) रत्नमणि चौहान।

जन्मकाल—१७८०।

रचनाकाल—१८१०।

नाम—(८५३) हरि कवि।

ग्रन्थ—(१) चमत्कारचंद्रिका, (२) कविप्रियामरण, (३) अमर-
कोष भाषा।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(८५४) हेम गोपाल।

जन्मकाल—१७८०।

रचनाकाल—१८१०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

सूदन-काल

(१८११ से १८३० तक)

(८५५) सूदन।

ये महाशय माथुर ब्राह्मण, महाराज बसन्त के पुत्र मथुराजी के निवासी थे। भरतपुर के महाराजा बदनसिंह के पुत्र सुजानसिंह

संवत् १८१० के कुछ पीछे यह ग्रन्थ बना और इसी कारण प्रारम्भ से ही इसमें दिल्ली और दक्षिणी दलों की दुर्गति का वर्णन हर अध्याय में किया गया। इसमें लिखा है कि सूरजमल ने प्रथम मेवाड़ छीन लिया और फिर मालवा में माड़ौगढ़ जीता। संवत् १८०२ में बादशाह अहमदशाह के सैनिक असदख़ाँ ने फ़तेहअली पर धावा किया। सूरजमल ने फ़तेहअली की सहायता करके असदख़ाँ का ससैन्य संहार किया। इसी अध्याय में घोड़ों की जाति, सूरजमल से फ़तेह अली के वकील की बात-चीत और असदख़ाँ का व्याख्यान परम प्रशंसनीय हैं। सूदन जी हर अध्याय के लिए नई वंदना लिखते हैं। संवत् १८०४ में सूरजमल ने जयपुर के महाराजा ईश्वरीसिंह की सहायता करके मरहट्टों को पराजित किया। संवत् १८०५ में बख़्शी सलाबतख़ाँ बादशाह की तरफ़ से सूरजमल से लड़ कर पराजित हुआ। इस युद्ध का एक छन्द नीचे लिखते हैं :—

तीमतम छाए सुलतान दल आए तोतो
समर भजाए उन्हें छाई हे अचक सी।
काल कैसी रसना कराल करवाल तेरी
व्याल भाल काढ़ि कै करन लागी तकसी॥
सूदन सुजान मरदाने हरिनारायन
देव हरिदेव जंगजीत तोहिँ चकसी।
जूझत हकीमख़ाँ अमीरन के धकसों
भो बकसी के जिय में परी है धकपक सी॥

गोकुल, गुलाब, गोविन्द, घनश्याम, घासीराम, नरहरि, नैन, नायक, नवल, नन्द, निपट, नित्यानन्द, नन्दन, नरोत्तम, निहाल, नेही, नाहर, नेवाज, चन्दबरदाई, चन्द, चिन्तामनि, चेतन, चतुर, चिरंजीवि, छीन, छबीले, यदुनाथ, जगनाथ, जीव, जयकृष्ण, जसवन्त, जगन, टीकाराम, टोडर, तुरत, तारापति, तेज, तुलसी, तिलोक, देव, दूलह, दयादेव, देवीदास, दूनाराय, दामोदर, धीर धर, धीर, धुरन्धर, पुखी, पीत, पहलाद, पाती, प्रेम, परमानन्द, परम, पर्वत, प्रेमी, परसोत्तम, बिहारी, बान, बीरबली, बीर, बिजय, बालकृष्ण, बलभद्र, बल्लभ, बृन्द, बृन्दावन, बंशीधर, ब्रह्म, बसन्त, रावबुद्ध, भूषन, भूधर, मुकुन्द, मनिकंठ, माधव, मतिराम, मलूक दास, मोहन, मंडन, मुबारक, मुनीस, मकरन्द, मान, मुरली, मदन, मित्र, अक्षर अनन्य, अग्र, आलम, अमर, अहमद, आजमखाँ, इच्छाराम, ईसुर, उमापति, उदय, ऊधो, उधूत, उदयनाथ, राधाकृष्ण, रघुराय, रमापति, रामकृष्ण, राम, रहीम, रणछोरराय, लीलाधर, नीलकंठ, लोकनाथ, लीलापति, लोकपति, लोकमनि, लाल, लच्छ, लच्छी, सूरदास, सिरोमनि, सदानन्द, सुन्दर, सुखदेव, सोमनाथ, सूरज, सनेही, सेख, श्यामलाल, साहेब, सुमेर, शिवदास, शिवराम, सेनापति, सूरति, सबसुख, सुखलाल, श्रीधर, सबल सिंह, श्रीपति, हरिप्रसाद, हरिदास, हरिवंश, हरिहर, हरी, हीरा, हुसेनी और हितराम।

सुजानचरित्र में सूरजमल के युद्धों का वर्णन है और इसमें संवत् १८०२ से १८१० विक्रमीय तक की घटनायें कही गई हैं। ग्रन्थ निर्माण का समय नहीं दिया गया है। जान पड़ता है कि

संवत् १८१० के कुछ पीछे यह ग्रन्थ बना और इसी कारण प्रारम्भ से ही इसमें दिल्ली और दक्षिणी दलों की दुर्गति का वर्णन हर अध्याय में किया गया। इसमें लिखा है कि सूरजमल ने प्रथम मेवाड़ छीन लिया और फिर मालवा में माड़ोगढ़ जीता। संवत् १८०२ में बादशाह अहमदशाह के सैनिक असदखाँ ने फ़तेहअली पर धावा किया। सूरजमल ने फ़तेहअली की सहायता करके असदखाँ का ससैन्य संहार किया। इसी अध्याय में घोड़ों की जाति, सूरजमल से फ़तेह अली के वकील की बात-चीत और असदखाँ का व्याख्यान परम प्रशंसनीय हैं। सूदन जी हर अध्याय के लिए नई वंदना लिखते हैं। संवत् १८०४ में सूरजमल ने जयपुर के महाराजा ईश्वरीसिंह की सहायता करके मरहट्टों को पराजित किया। संवत् १८०५ में बख़शी सलाबतख़ाँ बादशाह की तरफ़ से सूरजमल से लड़ कर पराजित हुआ। इस युद्ध का एक छन्द नीचे लिखते हैं:—

तीमतम छाए सुलतान दल आए सौतौ
　　समर मजाए उन्हैं छाई है अचक सी।
काल कैसी रसना कराल करवाल तेरी
　　ब्याल भाल काटि कै करन लागी तकसी॥
सूदन सुजान मरदान हरिनारायन
　　देव हरिदेव जंगजीत तोहिं बकसी।
जूभत हकीमखाँ अमीरन के धकसौ
　　औ बकसी के जिय में परी है धकपक सी॥

संवत् १८०६ में बादशाही वज़ीर नवाब सफ़दर जंग मंसूर ने बंगश पठानों पर चढ़ाई की, जिसमें सूरजमल ने वज़ीर का साथ दिया। इससे जान पड़ता है कि उस समय यही मनुष्य बादशाह का बहुत जल्दी शत्रु और मित्र दोनों हो सकता था। पहले सूरजमल ने बादशाही अफसर असदख़ाँ को मार कर फतेह अली को सहायता दी और फिर दूसरे ही साल सरकारी बख़्शी जब उनसे लड़ने आया तब यही फ़तेहअली बख़्शी की तरफ से सूरजमल से लड़ा। इसी के दूसरे साल स्वयं सूरजमल बादशाह से मिल कर बंगश से लड़ने गये और उसके चार ही वर्ष पीछे बादशाह से लड़ कर उन्होंने दिल्ली लूटी। बंगश की लड़ाई का वर्णन सूदनजी ने बहुत अच्छा किया है। जब सूरजमल सेना समेत मंसूर के दल में पहुँचे, तब ये मंसूर से मिलने गये और उसके पीछे मंसूर भी सत्कारार्थ उनके डेरे पर मिलने गया। उधर अहमदख़ाँ पठान ने अपनी सेना एक उमंगोत्पादक व्याख्यान द्वारा युद्धार्थ प्रोत्साहित की, और

यों सुन अहमदख़ाँ का कहना सब पठान उठधाए।
जो पठान तिसको तो लड़ना ऐसे बचन सुनाए॥
बंगस की लाज मऊधेत की अवाज यह
सुने व्रजराज ते पठान बीर बकै।
भाई अहमदखान सरन निदान जानि
आयो मनसूर तौ रहैं न अब दबकै॥
चलना मुझे तौ उठ खड़ा होना देर क्या है
बार बार कहै ते दराज सीने सब के।

चंड भुज दंडवारे हयन उदंड वारे
कारे कारे डीलन सँवारे होत रव के ॥

इस अध्याय में कितने ही योद्धाओं के व्याख्यान बढ़िया हैं और अहमदख़ाँ ने जो संदेसा सूरजमल से कहला भेजा था वह भी प्रशंसनीय है।

संवत् १८०९ में सूरजमल ने घासहरे का दुर्ग वहाँ के राव को मार कर छीन लिया। राव के वीरत्व की भी सूदन ने अच्छी प्रशंसा की है:—

अड़ राखी पेंड राखी मैड़ रजपूती राखी
राव रज राखि राह लीन्ही सुरपुर की।.

संवत् १८१० में अहमद शाह ने मंसूर को बरख़ास्त कर दिया, जिस पर क्रोध करके मंसूर सूरजमल को दिल्ली पर चढ़ा ले गया और इन्होंने कई दिन तक दिल्ली को .ख़ूब लूटा। इस लूट का वर्णन सूदन ने बहुत उत्कृष्ट और विस्तारपूर्वक लिखा है और दिल्ली-वासियों की विकलता को भी कई छन्दों में कई बोलियों द्वारा दर्शित किया है। उसमें से खड़ी बोली का छन्द नीचे लिखा जाता है।

महल सराय से रवाने हुआ बूबू करो
मुझे अफ़सोस बड़ा बड़ी बीबी जानी का।
आलम में मालुम चकत्ता का घराना यारो
जिसका हवाल है तनैया जैसा तानी का॥
खाने पाने बीच से अमाने लोग जाने लगे
आफ़त ही जानो हुआ सोज देहकानी का।

रब की रजा है हमें सहना सजा है
यक़ हिन्दू का राजा है आया छोर तुरकानी का ॥

पूर्वी बोली का केवल एक पद नीचे लिखा जाता है:—

असफ़स फौन्द ख्वार दिल्ली का नवाब ग्वार
चीन्हत न सार मनसूर उड़ त्याया है।

अंत में जयपुर के महाराजा माधवसिंह ने आकर संधि कराई। फिर इसी संवत् में आपाजी और मल्हारराव ने सूरजमल से दो करोड़ रुपये का कर माँगा और न मिलने से चढ़ाई करने की धमकी दी। इन्होंने कर देने से इनकार किया और युद्ध के वास्ते तैयारी की। इस बार की तैयारी का वर्णन बहुत ही गम्भीर किया गया है। महाराष्ट्र दल के आजाने पर श्रीकृष्णचन्द्रजी और कालयमन का युद्ध वर्णन होने के पीछे बिना लड़ाई का कथन हुए ही ग्रन्थ समाप्त हो गया है। इसी कारण हमारा विचार है कि यह ग्रन्थ अपूर्ण रह गया है। यह अध्याय भी बहुत प्रशंसनीय है, परन्तु स्थानाभाव के कारण हम इस अध्याय के केवल तीन छन्द उद्धृत करते हैं।

उतते राव मल्हार जयपुर ते कूचहि कियो।
जैसे सलभ अपार उठे प्रजा संहारहित ॥

हारे देखि हाडा मनमारे कमधुज वंस
कूरम पसारे पाँय सुनत नगारे के।
केते पुर जारे केते नृपति सँहारे तेई
जोरि दल भारे व्रज भूमि पै हँकारे के ॥

तारे मधुसूदन सँवारे बदनेस प्यारे
　　ब्रज रखवारे निज वंस अवधारे के ।
होत ललकारे सूर सूरजप्रताप भारे
　　तारे से छिपैंगे सब सुभट सितारे के ॥
पेंठि बाँध्यो मुकुट समेटि घुँघुरारे बार
　　कुंडल चढ़ाए कान कलँगी सुघट की ।
जाँघिया जकरि कै अकरि अंगराग करि
　　कटि मैं लपेटी कसि पेटी पीत पट की ॥
भृगुपति अकढाल सकति श्रिया को चिह्न
　　सूदन सनाह वनमाल लाल टटकी ।
कोटिन सुभट की निहारि मति सटकी यों
　　सुन्दर गोपाल की धरनि भेष भट की ॥

सूदन कवि ने केशवदासजी की रीति का अनुसरण किया है और विविध छन्दों का प्रयोग करके सुजान-चरित्र को एक बहुत विशद और रोचक ग्रन्थ बना दिया है । रोचकता की मात्रा में यह ग्रन्थ रामचन्द्रिका से शायद ही कुछ कम हो। इसमें हर विषय का बहुत ही सजीव, सच्चा और वास्तविक घटनाओं से पूर्ण वृत्तान्त लिखा गया है । युद्ध-कर्ताओं के व्याख्यान और महाराजाओं से दूतों की वार्ता विशेषतया द्रष्टव्य हैं । युद्ध की तैयारी वर्णन करने में इसकी बराबरी बहुत कवि नहीं कर सकते, परन्तु इनका युद्ध वर्णन उतना उत्कृष्ट नहीं है । फिर भी प्रत्येक युद्ध के पीछे के छन्द बहुत ही प्रशंसनीय हैं । इन्होंने भूषण के मत पर न चलकर केवल सूरजमल का ही वर्णन नहीं किया है, वरन उनके अनु-

यायी एवम् अन्य सरदारों के अनुयायी छोटे छोटे युद्धकर्ताओं का भी अच्छा कथन किया है। शत्रुओं का ऐसा प्रभावपूर्ण वर्णन हमने प्रायः किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं देखा। सूदन ने अपने नायक का जैसा उचित वर्णन किया वैसाही उसके प्रतिद्वंदी का भी किया। इस विषय में असदख़ाँ, अहमदख़ाँ, अन्य अफ़ग़ान, घासेरे के राव एवम् काल-यमन का वर्णन दर्शनीय है। सूदन ने असदख़ाँ, अफ़ग़ानगण, मरहट्टों की चढ़ाई ग्रौर कृष्णचरित्र के बहुतही चित्ताकर्षक वर्णन किये हैं। उद्दण्डता में भी यह कवि प्रायः किसी से कम नहीं है ग्रौर हास्य की कविता भी इसने सुन्दर की है। कहीं कहीं इन्होंने रूपक भी अच्छे कहे हैं। एक स्थान पर व्यूह-रचना का भी अच्छा वर्णन है। सम्भवतः यह व्यूह सूरजमल को पसंद था।

सूदनजी की कविता में व्रज भाषा, खड़ी बोली, माड़वारी राजपूतानी पूरबी पंजाबी, आदि भाषाओं का प्रयोग हुआ है ग्रौर इनकी सब भाषाओं की कविता प्रशंसनीय है। कालयमन का युद्ध प्रायः पंजाबी बोली में लिखा गया है। ये महाशय यमक ग्रौर अनुप्रास का प्रयोग अधिक नहीं करते थे। युद्धवर्णन में इन्होंने मिलित वर्णों का प्रयोग अधिकता से किया है। इनको हम बहुतही बढ़िया कवि समझते हैं ग्रौर इनकी गणना दास की श्रेणी में करते हैं। युद्ध की तैयारी में सूदन, युद्ध-वर्णन में लाल ग्रौर आतंक एवं भागने के वर्णन में भूषण प्रायः सर्वश्रेष्ठ हैं। इन तीनों महाशयों की कविता युद्ध काव्य की शृंगार है। अपने पूर्वोक्त कथनों के उदाहरणार्थ हम कुछ छन्द सूदनजी के नीचे देते हैं।

पिल्ले ठहिल्ले सुभिल्ले करीपास । मिल्ल्यौ इसाखान भिल्ल्यो नहीं त्रास ॥
खेल्ले खरे खग्ग गिल्ले भए रत्त । छिल्ले घने गत्त चिल्ले नहीं मत्त ॥
ल्ले कुजाहस्त इसबक मंसूर । बुल्ल्यौ इसाखान मन खेत में पूर ॥
यों भाखतै राखतै ज्यों कढ़ी जाल । सब्बै रहेले किये नैन यों लाल ॥
कोई चढ़चौ दंति दै दंत पै पाउ । काहू गही पुच्छ की राह कै दाउ ॥
ती छनाछन्न बाजीं तहाँ तेग । मानौ महामेघ मैं चंचला वेग ॥
कीन्हौं इसाखान को मारि कै चूर । कट्टयो तऊ सीस हट्टयो नहीं सूर ।

नैननि लई सलाम सलाबत खान ने (यथार्थता) ।
तैं अपने मन में गना बूड़ा तुरकाना (यथार्थता) ।

बापु बिस चाखै भैया षटमुख राखै देखि
आसन मैं राखै बस बास जाको अचलै ।
भूतन के छैया आस पास के रखैया
श्रौर काली के नथैया हू के ध्यान हू ते न चलै ॥
बैल बाघ बाहन बसन कौ गयन्द खाल
भाँग कों धतूरे कों पसारि देत अचलै ।
घर को हवालु यहै संकर की बाल कहै
लाज रहै कैसे पूत मोदक को मचलै ॥ (हास्य)

पूत मजबूत बानो सुनिकै सुजान मानो
सोई बात जानो जासौं उर मैं छमा रहै ।
जुद्ध रीति जानो मत भारत को मानौ जैसी
होइ पुठवार ताते ऊन अगमा रहै ॥
बाम श्रौर दच्छिन समान बलवान जान
कहत पुरान लोक रीति यों रमा रहै ।

सूदन समर घर दोउन की एकै विधि
घर मैं जमा रहै तौ खातिर जमा रहै ॥ (व्यूह)

एकै एक सरस अनेक जे निहारे तन
मारे लाज भारे स्वामि काज प्रतिपाल के।
चंगलौ उड़ायौ जिन दिल्ली की वजीर मीर
पारी बहु मीरनु क्रिय है वे हवाल के ॥
सिंह बदनेस के सपूत श्री सुजानसिंह
सिंह लौं झपटि नख दीने करवाल के।
वेई पठनेटे सेल साँगन खखेरे भूरि
धूरि सौं लपेटे लेटे भेटे महाकाल के ॥ (युद्धान्त)

सेलनु धकेला तें पठान मुख मैला होत
केते भट मेला ह्वै भजाए भुव भंग मैं।
तंग के कसेते तुरकानो सब तंग कीनो
दंग कीनो दिल्ली औ दुहाई देत बंग मैं ॥
सूदन सराहत सुजान किरवान गहि
धायो धीर धारि वीरताई की उमंग मैं।
दक्खिनी पछेला करि खेला तें अजब खेल
हेला मारि गग मैं रुहेला मारे जंग मैं ॥ (युद्धान्त)

(८५६) देवीदत्त ।

इनका बनाया हुआ बैतालपचीसी नामक ३९८ पृष्ठों का सुन्दर ग्रन्थ हमने देखा है। इसकी कविता श्रुतिमधुर और मनोहर है।

संवत् १८१२ में यह ग्रन्थ बना था। इसमें विविध छन्दों में कविता हुई है। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

जै गन नायक बीर बिकट दुष्टन सहारन।
जे गन नायक बीर साधु जन विपति बिदारन ॥
जे गन नायक बीर धीर निरमल मति दायक।
जै गन नायक बीर बिघन बन दाहन लायक ॥
सुभ एक रदन गज बदन जै जै अखंड आनन्दमय।
कवि देवीदत्त दयालु जे गिरिस नन्द सुर बन्ध जय ॥

(८५७) हरनारायण।

इनके बनाये हुए माधवानल कामकन्दला और बेतालपचीसी नामक ५६ और १०३ पृष्ठों के दो उत्कृष्ट ग्रन्थ हमने देखे हैं। ये विविध छन्दों में हैं और इनकी रचनाशैली कुछ कुछ छत्र कवि से मिलती है। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रक्खेंगे। अनुप्रास का इन्हें भी ध्यान रहता था।

सोहे मुंड चन्द सो त्रिपुंड सो बिराजे भाल
तुंड राजै रदन उदंड के मिलन ते।
पाप रूप पानिप बिघन जल जीवन के
कुंड सोखि सुजन बचावै अखिल्न ते ॥
ऐसे गिरि नन्दिनी के नन्दन को ध्यान ही में
कीधे छोड़ि सकल अपानहि दिलन ते।
भुगति मुकति ताके तुंडते निकसि तापै
झुंड बाँधि कढती भुसुंड के बिलन ते ॥

माधवानल कामकन्दला का रचनाकाल कवि ने संवत् १८१२ दिया है।

(८५८) रूपसाहि।

ये श्रीवास्तव कायस्थ पन्ना के मोहल्ला बागमहल में रहते थे। इनके पिता का नाम कमलनैन, पितामह का शिवाराम और प्रपितामह का नरायनदास था। ये महाशय बुंदेला क्षत्री पन्ना के महाराजा हिन्दूसिंह के यहाँ थे। हिन्दूसिंह महाराजा के पिता सभासिंह, पितामह हिरदेश और प्रपितामह छत्रशाल थे। यह वर्णन इन्होंने अपने ग्रन्थ में किया है। इन्होंने महाराज हिन्दूपति के आश्रय में रूपविलास नामक ग्रंथ संवत् १८१३ में बनाया, जिसमें कुल ९०० दोहों में काव्यलक्षण, छन्द ज्ञान, नायिका नायक, नौ रस, अलङ्कार और षट् ऋतु के वर्णन हैं। इनकी कविता साधारण है। हम इनको साधारण श्रेणी में रखते हैं।

जगमगात सारी जरी झलमल भूषन जोति।
भरी दुपहरी तियाकी भेट पिया सों होति॥
लालन वेगि चलौ न क्यों बिना तिहारे बाल।
मार मरूरन सों मरति करिये परसि निहाल॥

(८५९) हरिचरणदास।

ये महाशय जाति के ब्राह्मण कृष्णगढ़ (माड़वार) के रहने वाले थे। इनके पूर्वज सूबा विहार परगना गोआ मौजे चैनपुर में रहते थे। इनका जन्म संवत् १७६६ में हुआ था और इन्होंने सं० १८३५ में केशवकृत प्रसिद्ध कविप्रिया की अच्छी टीका लिखी।

इसमें कविप्रिया की टीका बहुत ही विस्तारपूर्वक तथा पांडित्यपूर्ण की गई है। इसके अतिरिक्त इन्होंने रसिकप्रिया तथा सतसई की भी अनमोल टीकायें की हैं। सतसई की टीका १८३४ में बनी। ये महाशय कविता भी उत्कृष्ट करते थे। हमने कविप्रिया की टीका दरबार छतरपूर के पुस्तकालय में देखी, जिसका आकार रायल अठपेजी के ७४२ पृष्ठों का है। इनके सभाप्रकाश (१८१४) और कविवल्लभ नामक दो और ग्रन्थ भी मिले हैं। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में समझते हैं।

राधे के पायन के नख की सुखमा लखि होत है चंद मलीनो।
रूप अतोलिक की उपमा लहि कंज हिए में महामद भीनो॥
सो नहिँ नेक सह्यौ करतार विचार सों जानत है परवीनो।
देखौ बराटक के छल सों विधि मोल कै ताहि बराटक कीनो॥ १॥

इनके आश्रयदाता महाराज बहादुरसिंह नागरीदास के छोटे भाई थे।

(८६०) रामसखे ने श्रीनृत्यराघवमिलन (९१ पृष्ठ छोटे), दानलीला (४ पृष्ठ), बानी, दोहावली, मंगलशतक, पदावली, रागमाला (७४ पृष्ठ) और पद (६ पृष्ठ) नामक ग्रन्थ लिखे हैं जो छत्रपूर में हैं। इनका कविताकाल जाँच से १८१५ जान पड़ा। ये साधारण श्रेणी के कवि थे।

संभा आवनि पिय की लावनि देखौ भावनि अवध गली चलि।
मृगया भेष हरित चरना तन अरु बन कुसुम सजैं गुंजै अलि॥

लिये कर कुही तुरँग कुदावत ज़ुलफैं छूटी पैज हिए वलि।
रामसखे यह छवि पीजै अब नेह गेह कुल लाज आंज दलि॥

खोज से इनके गीत व "रासपद्धति" का पता और चला है।

(८६१) मोहनदास जी ने १०६ पदों की एक बानी कही, जो हम ने छत्रपूर में देखी। इनका कविता-काल जाँच से संवत् १८१५ जान पड़ा। ये साधारण श्रेणी के कवि थे। ये बीहट बुँदेलखंड के ब्राह्मण थे।

हरि करि हैं सो नीकी करि हैं।
अपनो दास जानि श्री रघुवर दुसह दोष सब हरिहैं॥
आसा फाँस छोड़ाय दया करि बिनु कारन निस्तरिहैं।
मोहनदास भयो सिय पिय को कहु काको भय डरिहैं॥

(८६२) सहजोबाई।

ये बाई जी चरणदास जी की चेली और हरिप्रसादजी दूसर की कन्या थीं। चरणदासजी का जन्म संवत् १७६० में हुआ था। अनुमान से इनका कविता-काल संवत् १८१५ जान पड़ता है। इन्हों ने अपने गुरु का संवत् एवं पता लिखा है।

सहजोबाई ने भगवद् भक्तिमयी कविता की और इसी रस में पड़ कर कई ग्रन्थ बनाये, जिन में से सहजोप्रकाश का वर्णन महिला-मृदु वाणी में हुआ है। इन की कविता में रहिमन की भाँति नीति का भी कथन है। इन की रचना बड़ी ही हृदयग्राहिणी एवं सब प्रकार से प्रशंसनीय है। इनकी भाषा में राजपूताना के भी शब्द मिल गये हैं सो वह ब्रजभाषा तथा राजपूतानी का मिश्रण है।

इन को हम छत्र कवि की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं।

सहजो तारे सब सुखी गहै चन्द औ सूर।
साधू चाहै दीनता चहै बडाई कूर॥
भली गरीबी नवनता सकै न कोई मारि।
सहजो रुई कपास की काटे ना तरवारि॥
साहन के तो भै घना सहजो निरभै रंक।
कुंजर के पग बेडिया चींटी फिरैं निसंक॥
प्रेम दिवाने जो भये मन भो चकना चूर॥
छके रहैं घूमत रहैं सहजो देखि हजूर॥

नाम—(८६३) महंत सखीसरन अयोध्या वाले।

ग्रन्थ—(१) गुरुप्रनालिका, (२) मजावली (सं० १८१६), (३) उत्कंठामाधुरी।

समय—१८१६।

विवरण—गुरुप्रनालिका में निम्बार्क सम्प्रदाय की गुरुप्रणाली का वर्णन एवं उत्सवों का कथन रोला तथा दोहों में किया गया है। ये ग्रंथ हमने दरबार छतरपूर में देखे। काव्य निम्न श्रेणी का है। इन का समय जाँच से मिला था और पीछे से कहीं मजावली में भी निकल आया।

(८६४) सुन्दरि कुँवरि बाई।

ये रूपनगर तथा कृष्णगढ़ के राठौरवंशी महाराजा राजसिंह की पुत्री थीं। इनका जन्म संवत् १७९१ में हुआ। राघवगढ़ के

खीची महाराज बलभद्रसिंह जी के कुँवर बलवन्तसिंह के साथ इनका विवाह संवत् १८२२ में हुआ। इनकी माता महाराणी बाँकावती जी थीं, जिन्होंने भागवत का छन्दोबद्ध उल्था किया जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। इनके पिता, पितामह मानसिंहजी, तथा प्रपितामह रूपसिंहजी सदैव से स्वयं सुकवि तथा कवियों के आश्रयदाता रहे। इनके भाई सुप्रसिद्ध नागरीदास जी और बहादुरसिंह जी तथा इनके भतीजे विरदसिंह जी भी कविता करते थे। इनके घर की एक लौंडी बनीठनी ने भी रसिकविहारी के नाम से कविता की है। इन बाई जी के पिता और पति के यहाँ शत्रुओं से सदैव लड़ाई झगड़े लगे रहे, परन्तु तोभी इन्होंने कविता से इतना प्रेम रक्खा कि ११ ग्रन्थों की रचना कर डाली, जैसा करने में प्रायः बड़े बड़े कवि भी समर्थ नहीं हुए हैं।

इनके ग्रन्थ ये हैं—

(१) नेहनिधि स० १८१७ रूपनगरमध्ये।
(२) वृन्दावनगोपीमाहात्म्य स० १८२३ रूपनगरमध्ये।
(३) सकेत युगल स० १८३० कृष्णगढमध्ये।
(४) रसपुञ्ज स० १८३४ राघोगढमध्ये।
(५) प्रेमसंपुट स० १८४५।
(६) सारसंग्रह स० १८४५।
(७) रगझर स० १८४५।
(८) गोपीमाहात्म्य स० १८४६।
(९) भावनाप्रकाश स० १८४९।

(१०) राम रहस्य स० १८५३।

(११) पद तथा फुटकर कवित्त।

इनके उपर्युक्त सब ग्रन्थ बूँदी महाराज की माता जी की कृपा से मुद्रित हो गये हैं।

इनकी गणना हम तोप कवि की श्रेणी में करते हैं। इनकी रचना बड़ी सरस तथा मनोहर है। यह सुकवियों की सी है और भक्ति रस से पूर्ण है। इनकी भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है और उसमें मिलित वर्ण बहुत कम आने पाये हैं। इन्होंने हर प्रकार के छन्द सफलतापूर्वक कहे हैं और अपने छन्दों द्वारा अपने पिता के कविकुल को और भी प्रशसित कर दिया है। कुछ छन्द नीचे उद्धृत करते हैं:—

आज्ञा लहि घनश्याम की चलीं सखी वहि कुंज।
जहाँ विराजत मानिनी श्री राधा सुख पुंज॥
कहरी जहरी श्याम की लहरैं उर सरसान।
कोटि सुधा सरितन सिंचत तेहि सुख गनै न आन॥
घूमत मन घूमत सुतन द्दग उनमील घुमार।
थकित बयन गति सिथिल चढ़ि अन उतरन मतवार॥

श्याम नैन सागर मैं नैन वार पार थके
नचत तरंग अंग अंग रंग मगी है।
गाजन गहर धुनि बाजन मधुर बैन
नागनि अलक जुग सोधै सगबगी है॥
भँवर त्रिभंगताई पानिप लुनाई तामैं
मोती मनि जालन की जोति जगमगी है।

काम पीन प्रबल धुकाय लोपी पाज तामें
आज राधे लाज की जहाज डगमगी है ॥

मेरी प्रान सजीवन राधा (टेक)।
कब तुव बदन सुधाधर दरसैं मों अँखियन हरै बाधा ॥
टमकि टमकि लरिकौंहौं चालनि आव सामुहे मेरे।
रस के बचन पियूष पोखिकै कर गहि बैठौं तेरे ॥
रंग महल संकेत सुगल करि टहलिनि करौं सहेली।
आहा लहौं रहौं तहँ ततपर बोलन प्रेम पहेली ॥
मन मंजरी जु कीन्हौं किंकर अपनावहु किन बेग।
सुंदर कुवँरि स्वामिनी राधा हिय को हरो उदेग ॥

नाम—(८६५) जगजीवनदास चंदेल, कोटवा ज़िला बारा-
बंकी।

ग्रन्थ—१ प्रथम ग्रन्थ, २ ज्ञानप्रकास, ३ महाप्रलय, ४ बानी
(३५३ पद)।

कविताकाल—१८१८।

विवरण—ये महाशय सत्यनामी पंथ के आचार्य थे। आपने काव्य
भी शांत रस का किया है। इनकी गद्दी में इनके चेले
दूलमदास, जलालीदास, देवीदास इत्यादि अच्छे महात्मा
और कवि हुए हैं। इनकी रचना साधारण श्रेणी की है।
इनका अन्तिम ग्रन्थ हमने छत्रपुर में देखा।

(८६६) गणेश कवि।

ये महाशय मल्लायें जिला हरदोई के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। शिवसिंहसरोज में इनका नाम नहीं है। इन्होंने संवत् १८११ में रसबल्ली नामक ग्रन्थ बनाया। इसकी एक हस्तलिखित प्रति हमारे पुस्तकालय में वर्तमान है। इसमें रस एवं भाव का वर्णन है। यह समस्त ग्रन्थ बरवै छन्द में कहा गया है। इसमें २२६ छन्द हैं। गणेश का और कोई ग्रन्थ या छन्द हमने नहीं देखा। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

सिरधरि मोर किरीट पिछोरी पीत।
मंगल कर निसि बासर श्यामल मीत॥
तन दुति जीतेसि घन दुति घनक सुभाय।
यह रस बरसो बरसो बरसो पाय॥

(८६७) मनबोध झा।

ये महाशय एक प्रसिद्ध नाटककार थे। इनका मृत्यु सवत् १८४५ में हुआ। इनका कविता-काल स० १८२० से समझना चाहिए। इन्होंने हरिवंश नाटक नामक एक भारी ग्रंथ मैथिल भाषा में लिखा, जिसमें श्री कृष्णचद्र जी का अच्छा वर्णन है। इस हरिवंश के अब दस अध्याय मात्र मिलते हैं। मैथिल लोग इन्हें बड़े चाव से पढ़ते हैं। इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में है।

कतौ यक दिवस जान बिति गेल। हरि पुनि हथ गर गोड़हर भेल॥
से चौन ठायँ जतै नहिँ जाथि। पै घेर अँगन हुँ सौं बहिराथि॥
द्वार उपर सौं धरि धरि आनि। हरषित हँसथि जसोमति रानि॥
कौसल्ल चलथि मारि कहुँ चाल। जसुमति का भेल जियक जँजाल॥

नाम—(८६८) सहचरिशरण, टट्टी सम्प्रदाय के वैष्णव।

ग्रन्थ—(१) ललितप्रकाश, (२) सरसमंजावली।

कविताकाल—१८२०।

विवरण—ललितप्रकाश में स्वामी हरिदासजी की बानी, माहात्म्य, उन से अन्य महात्माओं तथा महानुभावों के मुलाक़ात करने एवं उनके शिष्य होने आदि के वर्णन किये गये हैं। कविता-चमत्कार तोष की श्रेणी का है। इसमें कुल ७०९, पद व छंद हैं। यह ग्रंथ हमने दरबार छतरपुर में देखा है।

तरुन तमाल तरु मंदिर अनूप सोहैं
चित बिसराम जाको स्यामा स्याम थल मैं।
आय रही आभा रसिकाली गुन गाय रही
छाय रही सुरति सुधासी तन मन मैं॥
हरिदास बिनु रस की न आस पूजै
मन जाय पछिताय गो तू नासतीक गन मैं।
वृंदा अरबिंदन को तजि मकरंद चारु
मधुप सुगंध ज्यों न पावै मंजु बन मैं॥

नाम—(८६९) चन्द।

ग्रन्थ—भगवानसुबोधिनी।

समय—१८२०।

विवरण—इस ग्रंथ में कुल १५६ पृष्ठ हैं। इसमें विशेषतया सवैया एवं कवित्त हैं। अन्य छंद भी कहीं कहीं हैं। यह ग्रंथ हम ने दरबार छतरपूर में देखा है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

ब्रज की बनिता जिन को बहु रूप निहारत प्रीति सों नैन सिरावत।
जोगी बड़े मुनिहू मन ध्यान कियो ही करैं पै हिए नहिं आवत॥
सो मति यें निहचैा करि जानत प्रेम ही सों उनको यह पावत।
राधिका वल्लभ ही मन भावत याही ते चंद सदा जस गावत॥

नाम—(८७०) नागरीदास वृन्दावन वाले, स्वामी पीताम्बरदास जी के शिष्य।

ग्रन्थ—स्वामी जी के पदन की टीका।

समय—१८२०।

विवरण—इसमें स्वामी हरिदास, विहारिनिदास, विट्ठल विपुल, सरसदास, नरहरिदास तथा स्वयं इनके पदों की टीका विस्तृत रूप से की गई है। यह फूल्स कैप साँची के ३२४ पृष्ठों में है। इनकी कविता-गरिमा साधारण श्रेणी की है। यह पुस्तक हम ने दरबार छतरपूर में देखी है। इन का समय जाँच से मिला है।

(८७१) वैरीसाल।

वैरीसाल ने संवत् १८२५ में भाषाभरण बनाया। इन्हों ने अपने विषय में यहाँ तक मौन धारण किया कि अपने ग्रन्थ में साफ़ साफ़ अपना नाम तक नहीं दिया। एक स्थान पर बड़े एंच पेंच से आपने अपना नाम दिखा दिया, परन्तु अपने विषय में और कुछ नहीं लिखा। शिवसिंहसरोज में इन का नाम नहीं है। जाँच से जान पड़ा कि ये महाशय असनी-निवासी ब्रह्मभट्ट थे। इनकी पक्की हवेली अद्यावधि नई असनी में विद्यमान है। इनके वंशधरों में लाल जी अब तक हैं जो कविता भी करते हैं। इनका एक मात्र ग्रन्थ भाषाभरण पंडित युगलकिशोर के पुस्तकालय में हस्तलिखित वर्तमान है। इसमें ४७५ छन्द हैं, जिन में से प्रति सैकड़े प्रायः ९५ दोहे हैं। इन्होंने घनाक्षरी छन्द दो ही एक लिखे हैं। इस ग्रन्थ की प्रौढ़ता से जान पड़ता है कि वैरीसाल जी ने पचास वर्ष की अवस्था में इसे सम्पूर्ण किया होगा। इस हिसाब से इन का जन्म संवत् १७७६ का समझ पड़ता है।

भाषाभरण अलंकार-सम्बन्धी रीति-ग्रन्थ है। इसके देखने से जान पड़ता है कि वैरीसाल सुकवि थे। इस ग्रन्थ के पढ़ने से एक अनभिज्ञ भी अलंकारों को समझ सकता है। यह कुवलयानन्द के मत पर बनाया गया है। इस कवि के बहुतेरे दोहे बिहारी की रचना से मिल जाते हैं। यह कवि बड़ा ही प्रशंसनीय है और अलंकारों का आचार्य्य समझा जाता है। वैरीसाल को हम पद्माकर की कक्षा में रखते हैं।

नहिं कुरंग नहिं ससक यह नहिं कलंक नहिं पंक।
बीस बिसे बिरहा दही गडी दीठि ससि अंक॥
करत कोकनद मदहि रद तुव पद हद सुकुमार।
भये अरुन अति दबि मनो पायजेब के भार॥

(८७२) किशोर।

शिवसिंहसरोज में इनका जन्म संवत् १८०१ दिया है और यह भी लिखा है कि इन्होंने किशोरसंग्रह नामक ग्रन्थ बनाया है। इनका कविताकाल सं० १८२५ से मानना चाहिए। इनका कोई ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आया, परन्तु इनके ५० से अधिक स्फुट छन्द हमारे पास वर्त्तमान हैं और प्रायः २०० छन्दों का इनका एक संग्रह भी हमारे देखने में आया है। ये छन्द देखने से अनुमान होता है कि इन्होंने कोई षट ऋतु पर ग्रन्थ भी बनाया होगा, क्योंकि इनके षट ऋतु के बहुत से और उत्कृष्ट छन्द हैं। इनकी कविता लोकोक्तियुक्त स्वाभाविक एवं प्रशंसनीय है। इनकी भाषा व्रज भाषा है और उसमें मिलित वर्ण बहुत कम हैं। इन्होंने अनुप्रास का भी साधारणतया अधिक प्रयोग किया है। हम किशोर को पदुमाकर कवि की श्रेणी में रखते हैं। शिवसिंहजी ने इनका मोहम्मदशाह के यहाँ होना लिखा है।

फूलन दे अबै टेसू कदम्बन अम्बन बौरन छावन देरी।
री मधुमत्त मधुव्रत पुंजन कुंजन सोर मचावन देरी॥
क्यों सहि हैं सुकुमारि किसोर अली कल कोकिल गावन देरी।
आवतही बनि हैं घर कन्तहि बीर बसन्तहि आवन देरी॥

फैला भई चोयल कुरंग धार फारे विये
कुटि कुटि कोहरी कि लंक लंक हदली।
जरि जरि जम्बूनद मूंगा बदरंग होत
भंग फाट्यो दाड़िम तुचा भुजंग बदली॥
परी चन्द्रमुखी तू कलंकी कियो चन्दहू को
बोले ब्रजचन्द सो किसोर आपु अदली।
छार मुंड डारें गजराज ते पुकार करें
पुंडरीक डूब्यो री कपूर खायो कदली॥

(८७३) दत्त।

देवदत्त उपनाम दत्त ब्राह्मण माढि जिले कानपूर के रहनेवाले थे और चरखारी के महाराजा खुमानसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका कविताकाल संवत् १८२७ के लगभग है, क्योंकि महाराजा खुमानसिंह का राजत्वकाल १८१८ से १८३९ संवत् तक है। इन्हीं के समय में एक दूसरे दत्त (ब्रह्मदत्त) भी थे जिन्होंने दीपप्रकाश और विद्वद्विलास नामक ग्रन्थ रचे थे। स्वरोदयकार एक तीसरे भी दत्त मिले हैं, परन्तु उनका समय ज्ञात नहीं हुआ। सम्भव है कि इन्हीं दोनों दत्तों में से एक ने स्वरोदय भी रचा हो। देवदत्त का बनाया हुआ लालित्यलता नामक अलंकार-ग्रन्थ पंडित जुगुल-किशोर ने देखा है। यह आकार में मतिराम-कृत ललित ललाम के बराबर है और बहुत प्रशंसनीय भी है। इनकी कविता बड़ी ही मनोहर होती थी। पद्माकर, ग्वाल और इनकी कविता में नोक झोंक रहती थी। दत्त की रचना में अलंकारों की ख़ूब छटा है

श्रौर अनुप्रास एवं अर्थ दोनों का अच्छा चमत्कार देख पड़ता है। हम इन्हें पद्माकर की श्रेणी में रक्खेंगे।

लाल है भाल सिँदूर भरो मुख सुन्दर चारु जु बाहु बिसाल है।
साल है सत्रुन के उर को इतै सिद्धित सोम कला धरे भाल है॥
भा लहै दत्त जू सूरज कोटि की कोटिक काटत संकट जाल है।
जाल है बुद्धिविवेकनि को यह पारबती को लड़ाइतो लाल है॥
ग्रीपम में तपै भीखम भानु गई बनकुंज सखीन की भूल सों।
काम सों बाम लता मुरझानी बयारि करै घन स्याम दुकूल सों॥
कंपत यों प्रगट्यो तन स्वेद उरोजन दत्त जू ठोढ़ी के मूल सों।
द्वै अरविन्द कलीन पै मानो गिरैं मकरन्द गुलाब के फूल सों॥

(८७४) पुखी कवि।

सरोजकार का कथन है कि ये महाराज ब्राह्मण थे श्रौर मैनपुरी के समीप कहीं रहते थे। इनका कोई ग्रन्थ नहीं मिलता। ये संवत् १८०३ में उत्पन्न हुए थे। हमने इन महाशय की स्फुट कविता संग्रहों एवं ज़बानी देखी सुनी है जो आदरणीय है। हम इनको तोष कवि की श्रेणी का समझते हैं।

फूले अनारन किंसुक डारन देखत मोद महा उर माँचे।
माधुरे भौरन अम्ब के बौरन भौरन के गन मंत्र से बाँचे॥
लागि रहीं बिरही जनके कचनारन बीच अचानक आँचे।
साँचे हुँकारैं पुकारैं पुखी कहि नाचे यनैगो बसत की पाँचे॥ १॥

सिंध सरवर की सुधारी सरवर पारि
फूले तरवर सब बिपिन सो बारयो है।

ठाढ़ी तहाँ प्यारी संग रसिक बिहारी पुनि
रैनि उजियारी इत चाइन उन्यारयो है ॥
कान को तरयौना छुटि परसि पयोधर को
धरनी परत कनी झरि झनकारयो है।
रोष भरपूरि जिय जानि कै कलङ्की क्रूर
मानो चंदचूर चदचूर करि डारयो है ॥ २ ॥

पीनस वारो प्रवीन मिलै तौ कहाँ लौं सुगंध सुगंध सुँघावै।
कायर कोपि चढ़ै रन मैं तौ कहाँ लगि चारन चाउ बढ़ावै ॥
जो पै गुनी को मिलै निगुनी तौ पुनी कछु क्यों करि ताहि रिझावै।
जैसे नपुंसक नाह मिलै तो कहाँ लगि नारि सिंगार बनावै ॥ ३ ॥

(८७५) रतन कवि।

इन्होंने अपने ग्रन्थ में संवत् या अपना पता कुछ नहीं दिया। सिर्फ़ इतना ही लिखा है कि फतेहशाह श्रीनगरनरेश की आज्ञा से फतेहप्रकाश ग्रन्थ रचा। फतेहशाह के पिता का नाम ग्रन्थ में मेदिनी साहि दिया हुआ है। सरोजकार ने इनकी उत्पत्ति का संवत् १७९८ एवं श्रीनगरेश राजा फतेसाहि बुँदेला के यहाँ इनका होना लिखा है, और इनके दूसरे ग्रन्थ का नाम फतेहभूषण कहा है, परन्तु इन्होंने राजा फ़तेहशाह को गढ़वार का राजा लिखा है, अतः यह गढ़वाल का श्रीनगर समझ पड़ता है। इस ग्रन्थ में काव्य गुण, व्यंजना, लक्षणा, रस, ध्वनिभेद, गुणी भूतादि व्यङ्ग्य, दोष और अन्त में सविस्तार अलंकार का वर्णन है। उदाहरणों में प्रायः राजा की प्रशंसा के छन्द लिखे गये हैं जो उत्कृष्ट हैं। भाषा इसकी अति

ही मधुर शुद्ध ब्रज भाषा है। इसमें अलंकारों का वर्णन बहुत अच्छा किया गया है और बहुत ही मार्के के उदाहरण दिये गये हैं। यह भाषा-रीति विषयक एक प्रशंसनीय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कुल ४६९ छन्द हैं। हम इस कवि को दास जी की श्रेणी का समझते हैं।

वैरिन की बाहिनी को भीषम निदाघ रवि
　　कुवलय केलि को सरस सुधाकर है।
दान झरि सिंधुर है जग को बसुंधर है
　　विबुध कुलनि को फलित कामतरु है॥
पानिप मनिन को रतन रतनाकर
　　कुबेर पुन्य जननि को छमा महीधरु है।
अग को सनाह बनराह को रमा को नाह
　　महाबाह फतेशाह एकै नर बरु है॥

काजर की कोर वारे भारे अनियारे नेन
　　कारे सटकारे बार छहरे छवानि छ्वै।
स्याम सारी भीतर भरक गोरे गातन की
　　ओपवारी न्यारी रही बदन उज्यारी वे॥
मृग मद वेंदी भाल में दी याही आभरन
　　हरन हिये की तूहै रंभा रति ही कवै।
नीके नथुनी के तैसे सुंदर सुहात मोती
　　चंद पर च्वै रहे सु मानो सुधाबुंद द्वै॥

(८७९) नाथ।

इस नाम के कई कवि सुने गये हैं, एक भगवन्त राय खीची के आश्रित थे और एक बनारस निवासी, जो संवत् १८२६ के लगभग

हुए हैं। पहले नाथ का केवल एक कवित्त हमारे देखने में आया है जिसमें भगवन्तराय की प्रशंसा की गई है पर उसमें खीची-राज का और ओरंगज़ेब का समकालीन होना लिखा है, जो अशुद्ध है, क्योंकि ये तो १८१७ संवत् के आस पास हुए हैं और ओरंगज़ेब की मौत १७६७ में हुई। अतः जान पड़ता है कि यह छन्द किसी का मनगढन्त है और शायद खीची राज के आश्रय में कोई नाथ कवि न थे। बनारस वाले नाथ कवि के १०-१२ छन्द हमने देखे हैं। इनकी कविता साधारणतया अच्छी है और अधिकांश में शृंगार रस ही की है। कोई विशेष नूतन भाव इनमें हमने न पाए, पर इनकी कहनावत अच्छी है। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रखते हैं।

सोहत अंग सुभाय के भूषन औरं के भाय लसैं लट छूटी।
लोचन लोल अमोल विलोकत तीय तिहू पुर की छवि लूटी॥
नाथ लट्टू भए लालन जू लखि भामिनि भाल कि वन्दन वूटी।
चोप सों चारु सुधारस लोभ वि री विधु में मनो इन्द्र बधूटी॥

शायद इन्हीं नाथ ने भागवतपचीसी रची। सम्भव है कि मानिकचन्द के यहाँ वाले नाथ यही हों।

(८७७) हरिनाथ ब्राह्मण (नाथ)।

ये महाशय गुजराती ब्राह्मण काशी-निवासी थे। इन्होंने संवत् १८२६ में अलंकार दर्पण नामक अलकार का ग्रंथ बनाया। इसमें पहले ८६ दोहों में लक्षण, तत्पश्चात् ४० छन्दों द्वारा उनके उदाहरण, फिर १७ दोहों द्वारा अनुप्रास वर्णन किया गया है। इन्होंने एक एक छंद में कई कई उदाहरण रक्खे हैं। इनका दूसरा

ग्रंथ पृथीशाह मुहम्मदशाह इतिहास-सम्बन्धी है जो विलायत के अजायब घर में नं० ६६५७ पर रक्खा है। इनकी भाषा व्रजभाषा है और वह साधारणतया अच्छी है। हम इनको साधारण श्रेणी में रखते हैं।

रोवति रिसाति मुसुकाति अरु हाहा खाति
मद को करत धन जोबन समाज है।
आगमन पीतम को सुनत छबीली बाल
हरखि लजाति हिय होत सुख साज है॥
राम के जनम रहे दाम दफ़तर बीच चित्र-
सारी मध्य देखे घोरे गजराज है।
नाथ जू भनत दुख अंत करै प्यारो कितौ
अंतक करैगो परी जान्यो मन आज है॥

तरुनी लसति प्रकास ते मालति लसति सुबास।
गोरस गोरस देत नहिं गोरस चहति हुलास॥

(८७८) व्रजवासीदास।

ये महाराज वल्लभाचार्य्य के सम्प्रदाय में थे। आचार्य्यवंशोद्भव मोहन गोसाईं इनके गुरु थे। इन्होंने "प्रबोधचंद्रोदय" का भाषानुवाद विविध छन्दों में किया, जिस की भाषा खड़ी बोली मिश्रित व्रजभाषा है जो प्रशंसनीय है। यह ग्रंथ रायल अठपेजी के १३४ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। आपने संवत् १८२७ में 'व्रजविलास' नामक एक बढ़िया ग्रन्थ बनाया। इसी ग्रन्थ में उपर्युक्त बातें लिखी हुई हैं। आपने अपने विषय में और कुछ नहीं लिखा है। ठाकुर शिव-

सिंहजी ने इनको वृन्दावनवासी माना है ग्रीर अनुमान से यह ठीक भी जान पड़ता है, क्योंकि वल्लभाचार्य्य के सम्प्रदाय वाले वहाँ रहते हैं ग्रीर ये ग्राचार्य्यजी के एक वंशधर के शिष्य थे। यह भी अनुमान से जान पड़ता है कि ये महाशय माथुर ब्राह्मण थे।

व्रजविलास एक बड़ा ग्रन्थ है। रायल ग्रठपेजी से कुछ बड़े फ़रमों में यह ५४६ पृष्ठों में छपा है। इसके विस्तार के विषय में व्रज-वासीदास जी ने यह लिखा है कि—

सिगरे दोहा ग्राठ सै ग्रीर नवासी ग्राहिँ।
हैं इतनेही सोरठा व्रजविलास के माहिँ॥
दश सहस्र षट सों अधिक चैापाई विस्तारु।
छन्द एक शत षट अधिक मधुर मनोहर चारु॥
सब के अनुष्टुप छन्द करि दश सहस्र परिमान।
खंडित होन न पावहीं लिखियो जानि सुजान॥

इन्होंने सूरसागर के आधार पर यह ग्रन्थ बनाया ग्रीर यह साफ़ कह दिया है कि मैं काव्यानन्द के अर्थ इसे न बनाकर केवल भजनानन्द के लिए बनाता हूँ। अपनी रचना का संवत् भी इन्होंने लिखा है।

संवत् शुभ पुराण शत जानो। तापर ग्रीर नछत्रन ग्रानो॥
माघ सुमास पक्ष उजियारा। तिथि पचमी सुभग ससि बारा॥
श्री वसन्त उत्सवमन जानो। सकल विश्व मन ग्रानँद दानो॥
मन मैं करि आनन्द हुलासा। व्रजविलास को करो प्रकासा॥

भाषा की भाषा करौं छमियै सब अपराध ।
जेहि तेहि बिधि हरि गाइये कहत सकल श्रुति साध ॥

या में कछुक बुद्धि नहिं मेरी । उक्ति युक्ति सब सूरहि केरी ॥
मोते यह अति होत ढिठाई । करत विष्णुपद की चोपाई ॥
मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊँ । कृष्ण विलास प्रीति करि गाऊँ ॥
सो विचार के श्रवणन कीजै । काव्यदोष गुण मन नहिं दीजै ॥

इस बृहत् ग्रन्थ में इस कवि ने श्री कृष्णचन्द्र की लीलाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है, परन्तु उद्धव सवाद के पीछे सूर की भाँति इन्होंने श्री कृष्ण को छोड दिया है। सूरदासही की भाँति ब्रजवासीदास भी ब्रजवासी यशोदा नन्दन एव गोपिकावल्लभ कृष्ण के दास थे, अत. इन्होंने भी कृष्ण के इन्हीं चरित्रो के वर्णन किये हैं।

ये महाशय गोस्वामी तुलसीदास के मार्ग पर चले हैं और इन्होंने भी गोस्वामीजी की भाँति दोहा चोपाइयों, एवं कुछ अन्य छन्दों में अपना ग्रन्थ बनाया है। इन्होंने सूरदास से कथा एवं भाव और तुलसीदास से रीति एव भाषा लेकर ब्रजविलास में इन दोनो महात्माओ का सम्मेलन सा करा दिया है। ब्रजविलास में जितनी लीलाओ के वर्णन हुए हैं वे सब बडे विस्तार के हैं। इस कवि ने युद्ध और वियोग के स्पष्ट रूप खींचे हैं। गोवर्द्धन-धारण, कृष्ण का मथुरागमन और उनका कुवलयापीड हाथी एवं मल्लों से युद्ध आदि कितनोंही लीलाओं के इसमें अच्छे वर्णन हैं।

इस कवि की भाषा में भी तुलसीदासजी की भाँति बैसवाडी ा प्राधान्य और ब्रजभाषा का बहुत कम मेल है। गोस्वामी

तुलसीदासजी ने ब्रजभाषा का ऐसा कुछ तिरस्कार सा कर दिया कि उनके अनुयायी गण ब्रजवासी होने पर भी ब्रजभाषा का बहुत कम व्यवहार करने लगे। भाषा के अन्य सत्कवियों की भाँति इस कवि की भी भाषा प्रशंसनीय है। सब बातों पर ध्यान रखके हम इन्हें भी मधुसूदनदास की श्रेणी का कवि समझते हैं। इनकी कविता के उदाहरणस्वरूप हम कुछ छन्द नीचे लिखते हैं।

बार बार चपला चमकि झकझोरत चहुँ ओर।
घरर घरर आकास ते जल डारत घन घोर॥

सात दिवस बीते यहि भाँती। बरषत जल जलधर दिनराती॥
कोपि कोपि डारत जलधारा। मिटो न ब्रज की नेकु लगारा।
भये जलद जलते सब रीते। रहो एक गुन ह्वै गुन बीते॥
महा प्रलय जल बरषे आनी। ब्रज में बूँद न पहुँच्यो पानी॥१॥

जबहिं स्याम ऐसे कह्यो बिलखि उठीं सब नार।
देखो री मारन चहत मल्ल उभै सुकुमार॥

अतिहि निठुर उर जाति अहीरा। लोभ लागि पठये दोउ बीरा॥
.न चहत अवधौ विधि कैसी। कहत कंस रह जात अनैसी॥

गहन न पावत, घात छूटि जात लपटात पुनि।
शिव विधि पै न गहात तिन्हैं मल्ल चाहत गहन॥

स्याम सहज मल्लन सो खेलैं। पकरि पकरि भुजदंडन पेलैं॥
.ये प्रथम कोमल तन ताहीं। सिथिल रूप परिवत मन माहीं॥२॥
.र बार जसुदा यों भाखै। कोऊ चलत गोपालहि राखै॥
फलक सुत बैरी भो आई। हरे प्राण धन बाल कन्हाई॥

हरह कंस वह गोधन सारो । कै करि मोहिँ बन्ध मैं डारो ॥
ऐसेहू दुख स्याम सभागे । खेलहिँ मो नैनन के आगे ॥
लै गये मधु अक्रूर निकारी । माखी ज्यों सब दीन बिहारी ॥
देखत रहीं थकी टक लाई । जब लगि धूरि दृष्टि मैं आई ॥
भये ओट जब दृगन ते मूर्छि परीं बिलखाय ।
कहति गयो रथ दूरि अब धूरि न परति लखाय ॥
खग मृग बिकल जहाँ तहँ बोलैं । गाय वत्स रौंभत सब डोलैं ॥
तरु बेली पल्लव कुम्हिलानी । व्रज की दसा न परति बखानी ॥३॥
इन्द्री जीति करै बस अपने तजै जगत की आसा है ।
जोड़ै प्रेम नेह साँई सों रहै दरस रस प्यासा है ॥
आपा मेटि गरद करि डारे सिर दै लखै तमासा है ॥
यह बिधि गहै संत तब होवै यों क्या दूध बतासा है ॥ ४ ॥
फूलन ही के दुकूल महा छबि भूषन फूलन के अभिराम ते ।
फूलन को सिर गुच्छ लसै अरु कंदुक फूलन के कर बाम ते ॥
फूल सरासन सायक पानि भुजा रति ग्रीव रमै रस धाम ते ।
ऐसो सरूप मनोभव को उठि आयो है मानौ बसंत के धाम ते ॥

नाम—(८७६) जगतसिंह बिसेन ग्रोतहरी ज़िला गोंड़ा ।

ग्रन्थ—१ छन्द शृंगार (१८२७), २ साहित्यसुधानिधि (१८५८), ३ नखशिख (१८७७), ४ चित्रमीमांसा ।

कविताकाल—१८२७ ।

विवरण—इनकी कविता बहुत अच्छी है । ये भाषा-काव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं । इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है ।

सीस लसैं ससि सी नख रेख धरी उपटी उर पै नगमालैं।
पेंच खुले पगरी के घने जनु गंग तरंग बनी छबि जालैं॥
जागत रैनिहुके अलसाय कियो विषपान रहे दृग लालैं।
देखहु रूप सखी हरि को हर को धरि आवत रूप रसालैं॥

(८८०) गोकुलनाथ।

(८८१) गोपीनाथ, (८८२) मणिदेव।

महाराजा काशीनरेश के यहाँ बन्दीजन रघुनाथ कवीश्वर बड़े मान से रहते थे। उनको महाराजा ने चौरा ग्राम दिया, जहाँ उनका कुटुम्ब रहने लगा। उन्हीं के पुत्र गोकुलनाथ थे, जिनके पुत्र गोपीनाथ हुए। ये दोनों महाशय अच्छे कवि थे। कविवर मणिदेवजी गोकुलनाथ के शिष्य थे। रघुनाथ कवि ने संवत् १७९६ से १८०७ तक कविता की। उनके पुत्र गोकुलनाथ के विषय में शिवसिंहसरोज में लिखा है कि उन्हों ने चेतचन्द्रिका और गोविन्दसुखदविहार नामक दो ग्रन्थ बनाये हैं। इनका बनाया हुआ तीसरा ग्रंथ राधाकृष्णविलास है, जो विषय और आकार दोनों में जगतविनोद के बराबर है। इसको पं० युगुलकिशोरजी (व्रजराज) ने देखा है। इनकी रचना में चेतचन्द्रिका व महाभारत हमारे पास प्रस्तुत हैं। राधाजी का नखशिख, नाम रत्नमाला कोष, सीताराम गुणार्णव, अमर कोष भाषा और कविमुखमंडन नामक इनके और ग्रंथ खोज में लिखे हैं। प्रथम ग्रन्थ में ५६८ छन्द हैं जिनके द्वारा काशीनरेश महाराजा चेतसिंह की वंशावली एवं अलंकारादि का विषय पूर्णतया कहा गया है।

गोपीनाथ का बनाया हुआ भाषाभारत से इतर कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आया, परन्तु इनके स्फुट छन्द भी इधर उधर पाये जाते है। मणिदेवजी का भी कोई अन्य ग्रंथ हमने नहीं देखा परन्तु रामचन्द्र की प्रशंसा में इनके बहुत से छन्द देखे हैं। इन तीनों कवियों ने मिल कर काशीनरेश महाराजा उदितनारायणसिंह की आज्ञा से संस्कृत महाभारत ग्रैार हरिवंश का भाषा छन्दों में बड़ा ही विलक्षण ग्रैार प्रशंसनीय अनुवाद किया। इसके द्वारा इन तीनों कवियों का कथा प्रासंगिक भाषासाहित्य पर बहुत बडा उपकार हुआ है। कथा प्रसंग का इतना बडा ग्रन्थ ग्रैार कोई भी नहीं है। इसमें कुल मिलाकर १८६६ पृष्ठ है ग्रैार इन पृष्ठों का आकार रायल अठपेजी का दुगुना है। फिर भी ये छोटे टाइप में छपे हुए हैं। इनके समय तक कथा प्रसंग की कविता में छन्दों के विषय में तुलसीदास ग्रैार केशवदास वाली दो प्रणालियां थीं। प्रथम में दोहा चैापाइयों तथा द्वितीय में विविध छन्दों ग्रैार विशेषतया सवैया एवं घनाक्षरियों में रचना करने की परिपाटी स्थिर हो गई थी। द्वितीय में एक प्रकार के छन्द एक साथ बहुत नहीं लिखे जाते थे ग्रैार छन्द शीघ्र बदले जाते थे। इसके उदाहरण केशवदास, गुमान मिश्र, सूदन आदि हैं। इन कवियों ने देखा होगा कि केवल दोहा चैापाइयों में रचना करने से यदि वे छन्द बहुत ही उत्तम न बने तो इतना बड़ा ग्रंथ बिलकुल फीका हो जायगा जैसे कि बहुत से ग्रंथ हो गये। इन्होंने यह भी सोचा होगा कि जल्द छन्द बदलने से इतने बड़े ग्रन्थ बनाने में कृतकार्य्यता मिलनी कठिन है। शायद इन्हीं विचारों से इन्होंने एक तीसरी प्रथा

निकाली। केवल दोहा चौपाई न लिख कर इन्हों ने विविध में रचना की, सवैया, घनाक्षरी, छप्पय, कुंडलिया आ प्राधान्य नहीं रक्खा, और जो छन्द उठाया उसको कु तक चलाया।

इनकी कवितारीली और शक्ति बहुत सराहनीय है। बहुत बड़ा काम करना था, परन्तु इनकी ऐसी सु गई थी कि इन्होंने उस महा कार्य को सफलता-पूर्व निभा दिया और रचना किसी स्थान पर शिथिल न कथा कहने का इन्होंने ऐसा कुछ अनोखा ढँग निका कि यह प्रायः सब कवियों से पृथक् है। कथा में ये ऐसी मिलती जुलती रचना करते थे कि यदि अध्यायों के अपना नाम न लिखते तो समस्त कविता एकही कि की सम- झने में किसी को लेश मात्र सन्देह न होता। का रचना शैली इन तीनों कवियों की बिलकुल एक है।

प्रत्येक अध्याय के पीछे इन्होंने रचयिता का लिख दिया है। गोकुलनाथ ने आदि, सभा, बन, विराट, पर्वो का अनुवाद किया, जिनमें से बन-पर्व के केवल इनके नहीं हैं। इन्होंने भीष्म पर्व के पाँच, द्रोण पर्व के और शान्ति पर्व के नौ अध्यायों का भी अनुवाद किया। गोपी ने भीष्म और द्रोण पर्वों के शेष भाग, तथा अश्वमेध, आश्रम वासिक, मुशल और स्वर्गारोहण, पर्वों एवं हरिवंश पुराण का अनुवाद किया। शान्ति पर्व के इन्होंने केवल ३० अध्याय लिखे। मणिदेव ने कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, विशोक, स्त्री और

प्रस्थान पर्वों तथा शान्ति-पर्व के शेष प्रायः २२५ अध्यायों
रचना की। वन-पर्व के शेष चार अध्यायों में से गोपीनाथ
र मणिदेव ने दो दो अध्याय बनाये। इस हिसाब से महाभारत
इन तीनों महाशयों ने आकार में भी बराबर कविता की।
ा पड़ता है कि इन तीनों कवियों ने महाभारत और हरिवंश
मिलाकर तीन बराबर भागों में विभक्त करके एक एक भाग
अनुवाद कर डाला।

व्यासजी ने इतनी बृहत् पुस्तक बनाने में भी इसे ऐसी युक्ति
से बनाया कि वह प्रत्येक स्थान पर रोचक है। उनको इस बड़े
ग्रन्थ में विवश होकर कुछ ऐसे विषय भी लाने पड़े, जो रुचिकर
नहीं हैं, परन्तु वे इस बात को पहले ही से जानते थे, अतः उन्होंने
बहुत से रोचक वर्णनों के बीच कहीं कहीं थोड़ा सा अरोचक
विषय ऐसा हिला मिला दिया है कि उसकी अरोचकता अखरती
नहीं है। हमने इन कवियों के इस बृहत् ग्रन्थ को आद्योपान्त क्रम
से पढ़ा है, परन्तु यह किसी स्थान पर भी अरुचिकर नहीं हुआ।
यदि कोई बालक इस ग्रन्थ को पढ़े तो उसे भी कवित्व शक्ति प्राप्त
हो सकती है। हमको बाल्यावस्था में इस ग्रन्थ के पढ़ने की बड़ी
रुचि थी, क्योंकि इस में अत्यन्त रोचक कथायें हैं। हमारे सम्बन्धी
विशाल कवि भी इसे बहुत पढ़ा करते थे। विशालजी को एवं
हमें कविता करने की रुचि और कवित्व-शक्ति पहले पहल इसी
ग्रन्थ से प्राप्त हुई थी। हम लोगों के प्रथम ग्रन्थों की रचनाशैली
भी इसी ग्रन्थ से मिलती थी, यद्यपि पीछे से यह शैली छूट गई।

यह ग्रन्थ बड़ाही प्रशंसनीय और उपकारी है। भाषा कथा-प्रेमियों को महाराजा उदितनारायणसिंह जू देव का बहुत कृतज्ञ होना चाहिए, कि उन्होंने विपुल धन व्यय करके भाषारसिकों के लिए यह रत्न सुलभ कर दिया। सुना जाता है कि उन्होंने पहले इन कवियों के पास इन्हें मदद देने को पंडित नियत कर दिये थे और फिर ग्रन्थ समाप्त होने पर उन्हें एक लक्ष मुद्रा पुरस्कार में दिये। पहले यह ग्रन्थ कलकत्ते में छपा था और फिर अमेठी के राजा माधवसिंह जी की इच्छानुसार यह लखनऊ में मुंशी नवलकिशोर सी० आई० ई० के यन्त्रालय में संवत् १९३० में प्रकाशित हुआ। अब इसका तीसरा संस्करण भी निकला है।

इन कवियों ने अपने ग्रन्थ का समय नहीं लिखा है। हमने इस विषय में महाराजा बनारस के यहाँ से हाल पूछा था, सो मणिदेव के पौत्र कवि सीतलाप्रसाद जी ने लिखा कि महाभारत संवत् १८८४ में समाप्त हुआ। सुना जाता है कि इसकी रचना बहुत काल तक होती रही थी। गोकुलनाथ का कविता-काल अनुमान से लगभग संवत् १८२८ से प्रारम्भ होता है। यही समय इस अनुवाद के आरम्भ का समझना चाहिए। उनके लेख से यह भी विदित हुआ कि मणिदेव बन्दीजन भरतपूर रियासत .. जिहानपूर नामक ग्राम के रहने वाले थे। इनकी माता के मरने पर इनके पिता ने द्वितीय विवाह किया। अपनी विमाता के व्यवहार से रुष्ट होकर ये बनारस चले गये और गोकुलनाथजी .. यहाँ रहने लगे। अन्य स्थानों पर भी इनकी कविता का मान हुआ और इन्हें गज, तुरग, ग्रामादि मिले। अपनी अन्तिम अवस्था

में ये कभी कभी पागल भी हो जाते थे । इनका शरीरपात संवत् १९२० में हुआ । काव्यप्रणाली में इनमें गोकुलनाथ दास कवि की श्रेणी के और गोपीनाथ व मणिदेव तोष की कक्षा में हैं और कथा प्रासंगिक कवियों में इनकी गणना छत्र कवि की श्रेणी में है । इन्होंने काव्यप्रणाली में व्रजभाषा को प्रधान रक्खा, परन्तु कथा-वर्णन में इनकी कविता में व्रजभाषा और तुलसीदास की भाषाओं का मिश्रण हो गया है । इन्होंने अनुप्रास जमकादि का आदर न करके सीधी भाषा को प्रधान रक्खा ; फिर भी इनकी कविता बड़ी ज़ोरदार है । इन कवियों ने बड़ा भारी कथा-प्रासंगिक ग्रन्थ बनाया , अतः यदि इनके उदाहरण कुछ बढ़ जायँ तो पाठक हमको क्षमा करेंगे ।

गोकुलनाथ ।

राधाकृष्णविलास ।

सखिन के श्रुति में उकुति कल कोकिल की
गुरुजन हू के पुनि लाज के कथान की ।
गोकुल अरुन चरनांबुज पै गुंज पुंज
धुनि सी चढति चंचरीक चरचान की ॥
पीतम के श्रवन समीप ही जुगुति होति
मैन मंत्र तंत्र के बरन गुन गान की ।
सौतिन के काननि में हालाहल ह्वै हलति
एरी सुखदानि तो बजनि बिछुवानि की ॥

चैतचंद्रिका।

पेंच खुले पगरी के उड़ैं फिरैं कुंडल की प्रतिमा मुख दौरी।
हैसिये टोल लसैं जुलफैं रहैं पहो न मानति धावति धोरी॥
गोकुलनाथ चिप गति आतुर चातुर की छबि देखिन थोरी।
ग्वालनि ते कढि जात चल्यो फहरात कँधा पर पीत पिछौरी॥

महाभारत भाषा—

हतो हम शिशुपाल को सुनि शाल्व नृप करि क्रोध।
सहित सेना आय कीन्हो द्वारिका का राध॥
सुदृढ़ नाना भाँति रक्षित पुरी सो अति मान।
बसत जामैं वृष्णि जादव बीर वर बलवान॥
शस्त्र नाना भाँति के अति उग्र जत्र उदार।
सहित पुर के ओर चारों वज्र सार प्रकार॥
ओर चारों महत परिखा भरी सलिल अखर्व।
धरी बुर्जन पै भुसुंडी महत आयत सर्व॥
दुर्ग अतिही महत रक्षित भटन सों चहुँ ओर।
तैान घेरो शाल्व भूपति सेन लै अति घोर॥
एक मानुस निकसिबे की रही कितहुँ न राह।
परी सेना शाल्व नृप की भरी जुद्ध उछाह॥

शाल्व नृपति कहँ अति बल मानि। कपित पुरी विषम रण जानि॥
तब प्रद्युम्न निकसि बल पेन। यो सुभटन सों बोले बैन॥
समाधान सों तुम सब बीर। ठाढे इहाँ रहो धरि धीर॥
लखो हमारो युद्ध महान। शाल्व निवारन करत सुजान॥
निसित सरन सो सेना मारि। देन शाल्व की महि पै डारि॥

यदु बंसिन पै कढ़ि इमि चैन । चढ़ो परम रथ पै बल ऐन ॥
मकर केतु यों लसो विसाल । मुख पसारि जनु धावत काल ॥
चपल तुरँग इमि लसे अमान । मनौ गगन महँ चहत उड़ान ॥
विद्युत सरिस चाप अति घोर । फिरत दुहू कर मैं दुहु ओर ॥
काढ़ि प्रद्युम्न सैन ते तूर्ण । चलो शाल्व पै अमरख पूर्ण ॥१॥

लहि सुदेष्णा की सुआज्ञा नीच कीचक जौन ।
जाय सिंहिनि पास जंबुक तथा कीन्ह्यो गौन ॥
लगो कृष्णा सों कहन यहि भाँति सस्मित बैन ।
इहाँ आई कहाँ ते तुम कैान हैा छवि ऐन ॥
चंद्र बदनी कहहु हमसों सत्य सो अभिराम ।
भरी परमा कांति सों सुकुमारता की धाम ॥
कमल नयने अंग तो सब वसीकर के यंत्र ।
चारु हासिनि सुधा से तव बचन मोहन मंत्र ॥
नहीं तुम सी लखी भूपर भरी सुखमा बाम ।
देवि यक्षी किन्नरी कै श्री सची अभिराम ॥
कांति सों अति भरो तुमरो लसत बदन अनूप ।
करैगो नहिँ स्ववश काको महा मनमथ भूप ॥
हार योग्य सुलच्य उन्नत कनक कुम्भ समान ।
करत उरसिज रावरे अति व्यथित कठिन महान ॥
लसति त्रिबली भंग सी दवि धरे उरसिज भार ।
उदर छाम गँभीर नाभी लंक तनु सुकुमार ॥
सरित पुलिन समान जंघा सघन पीन अलोम ।
मदन रोग अमोघ कारन अंग तो छवि तोम ॥

करहु मेरे संग सुन्दरि सौख्य को अभिराम।
खान पान विधान भूषन बसन सों छवि धाम ॥२॥

द्रोणाचार्य्य कोपि तेहि पल मैं। पारयो प्रलय पांडवी दल मैं॥
बाण वृष्टि करि ब्यूह विदारयो। मर्दत भटन भूरि भय भारयो॥
मंडल सम कोदंडहि कीन्हें। फिरत चक्र सम गुरुता लीन्हें॥
पुरुषसिंह द्विज घर की दपटैं। दावानल सम सर की लपटैं॥
सहि न सके उतके भट एकौ। थिरि न सके धरि धीरज नेकौ॥
प्रलैकाल के रुद्र समाना। लसत भयो तहँ द्रोण अमाना।
हय गज रथ भट अगणित काटे। रुंड मुंड सों रण महि पाटे।
वर्धित कियो रुधिर की सरिता। निज विक्रम गिरिवर की चरिता॥
निज विक्रम की गुरुता लीन्हें। सब थर पर भट मर्दित कीन्हें॥
यहि विधि निज भट मर्दित देखी। सदल सबंधु धर्म नृप देखी॥
घन समूह सम बढ़ि अति बल सों। भिरयो आय द्विजराज सदल सों॥
उड़ैं वायु वश ह्वै तृण जैसे। भये पराजित पर भट तैसे॥
द्विज के सरि झरि सों तेहि पल मैं। हाहाकार मच्यो पर दल मैं॥
अगिनि अलात असंख्यन देखी। भगैं करिनि जिमि भय सों भेखी॥
तिमि लखि बाणजाल द्विजवर के। थिरि न सकत अब योधा पर के॥
जिमि सिंहहि लखि मृग गण भागत। भगे जात तिमि भय सों पागत॥३॥

गोपीनाथ।

प्रबल अरि को दाप लहि युग शत्रु मिलि ह्वै मित्र।
करत बांचने की जुगुति निष्कपट ह्वै निह चित्र॥

मिटे अरि के दाप तिनको उचित नहिँ विश्वास ।
　　सुनौ कहियत भूमिपति इत पूर्व को इतिहास ॥
रहो कानन बीच कहुँ बट वृक्ष अति कमनीय ।
　　चहूँ दिशि ते लतन छादित निबिड़ अति रमनीय ॥

बिहँग अगनित भाँति के तहँ रमत बोलत बैन ।
　　मृगा आवत तासुतर ते लहत अतिसय चैन ॥
पलित नामक मूप शत मुख बिबर करि तरतासु ।
　　भयो निवसत अति बिचच्छन चपल लच्छन जासु ॥
बसत हो बट वृक्ष पै मार्जार लोमस नाम ।
　　गहि अनुच्छिन खात पच्छिन कृत अदच्छिन काम ॥
जात जालपसारि व्याधा तहाँ साँझहि जाय ।
　　रहो अमरख करम जाको सरम नाहिँ सरसाय ॥

एक दिन मार्जार लोमस बझो तामधि पापि ।
　　परो व्याकुल कलपनो करि मरन अपनो थापि ॥
चह्यो लखि अखुभुकहि अखु कढ़ि लगो चरन निशंक ।
　　परे आपद प्रबल खल पै होत मोदित रंक ॥
जाल बंधन दंड पै चढ़ि लगो आमिख खान ।
　　प्रबल शत्रुहि बझो लखि कै हिए अति हरखान ॥
आय कै बट साख पै तेहि समय ढूक उलूक ।
　　भरत भय मनु धरत निरखत करत भीषम कूक ॥

आइ उत मग रोकि बैठो नकुल गहिबे ताहि ।
　　ताहि छन हिय दाहि अखु रहि गयो यहि वहि चाहि ॥

ब्याध दारुन देखि काहु छिन होय नो रहि ग्रस्त ।
अयो मन मैं गुनत फेरि होय आपद ग्रस्त ॥
जीय रहे हौ जियन को करियो उचित उपाय ।
बुद्धिमान लहि आपदा लहत पार सुखदाय ॥
है स्वछन्द न होय अरि तीजो जो मार्जार ।
है लागहूँ आपद परो प्रानघात उपचार ॥
बंधन काटि छोड़ायवे की विधि याहि बताय ।
जो यासों मैत्री करौं तो संताप मिटिजाय ॥ ४ ॥

तहाँ भीषम किए कार्मुक मंडला कृत वेष ।
तजे बाण विशाल अगणित अतुल अकथ्य अलेप ॥
कुपित अहि से सरन सों सब दिशा दीन्ही छाय ।
हने अगणित द्विरद हय अरु रथिन के समुदाय ॥
सर्वदिशि मैं फिरत भीषम को सुरथ मन मान ।
लखे सब कोउ तहाँ भूप अलात चक्र समान ॥
सबै थर सब रथिन सों तेहि समय नृप सब ओर ।
एक भीषम सहस सम रन जुरो हो तहँ जोर ॥
लखे जे जेहि ओर भीष्महिँ लखे ते तेहि ओर ।
जानि यह सब गुने भीषम करत माया घोर ॥
एक एक इषुनसों एक एक मैगल मारि ।
भीष्म क्षण मैं दिए अगणित द्विरद महि मैं डारि ॥
मारतंड सम भीषमहिँ लखि न सक्यो कोइ तत्र ।
आतप सम छादित दुसह सर देखे सर्वत्र ॥

तब रथ रोकि कृष्ण अनुमानी । कहे धनंजय सों यह बानी ॥
पूर्व सभामधि तुम हे पारथ । प्रण कीन्हे सो करहु यथारथ ॥
कहे कृष्ण सो सुनि हित बानी । कहत भयो पारथ अभिमानी ॥
तात शीघ्र परदल मधि हलिए । भीषम के सन्मुख ले चलिए ॥
बूढहिँ एक बान सो मारी । रथ ते देहुँ भूमि पर डारी ॥
सो सुनि कृष्ण हांकि बर घोरे । रथ ले गये भीष्म के धोरे ॥
तहँ भीषम बहु शर तेहि छन मे । हने पार्थ अरु प्रभु के तन मैं ॥
फिरि बहु सहस बाण परि हरि के । सरथ पारथहि छादित करि के ॥
पांडव के जे भट फिरि आए । रहे तिन्हें फिरि मारि भगाये ॥
बाण असरव्य मारि नभ पथ पै । देहिँ छाय पारथ के रथ पै ॥
जौ लगि पारथ बान बिदारैं । तौ लगि भीषम बहु भट मारैं ॥
भीषम की गुरुता लखि ऐसी । पारथ की मृदुता लखि तेसी ॥
मन में गुनत भये यदुनायक । नहिँ कोउ भीष्महि जीतन लायक ॥
आजुहि भीष्म बीर जग जेना । हतिहि सर्व पाडव की सेना ॥
भीष्म द्रोण आदिक जे रन मैं । तिन्हें बधब अब हम यहि छन मैं ॥
इमि कहि चक्र पानि मैं लीन्हे । करि भ्रामित ऊरध भुज कीन्हें ॥
रथ ते कूदि सिंह सम परखत । चले भीष्म पै धीरन धरखत ॥
प्रभु को पाणि नाल बपु सरसो । लसो चक्र तहँ बारिज बरसो ॥
रिसरबि सों बिकसित रण दिन मैं । निरखि रह्यो तहँ धीरज किन मैं ॥
जानि कुरुन को क्षय सब राजा । भये प्रकंपित सहित समाजा ॥
पुरुषसिंह अनुपम छबि छावत । कृष्णचन्द्र कहँ निज दिसि आवत ॥
लखि भीषम करि अचल सरासन । करत भए हरि सों सभासन ॥५॥

मणिदेव।

बचन यह सुनि कहत भो मर्माग हंस उदार।
उड़ागे मम सग किमि सो कहहु तुम उपचार॥
काय जूंठो पुष्ट गर्वित काग सुनि पर्धन।
कहो जानत उड़न की शत रीति हम बल पेन॥
उड्डीन अरु अवडीन अरु प्रडीन अरु नीडीन।
सडीन तिर्यगडीन अरु वीडीन अरु परिडीन॥
पराडीन सुडीन अरु अति डीन अरु व्याडीन।
डीन अरु सडीन डीनक महाडीन अडीन॥

इन्हैं आदि प्रकार शत हैं उडन के ते सर्व।
भली विधि हम सिखे ताते गहत इतनो गर्व॥
तीन गति की किय हाहु अभ्यास तुम गति तीन।
ग्रहण करिके उडो मो सँग सकौ जा करि गौन॥
काग के ये बचन सुनिकै कह्यो हंस सुजान।
एक गति सब विहँग की तुम काक शत गति वान॥
एक गति सों उडब हम तुम यथा रुचित सुयस।
बाँधि यहि विधि बहस लागे उडन बायस हंस॥

बैठि वृच्छन उडत तच्छन चल्यो काग सडौर।
उडत बोलत फिरत इत उत गहे गुरुता गौर॥
देखि ताकी इविधि गति भे मुदित सिगरे काग।
हंस सिगरे लगे बिहँसन जानि तासु अभाग॥

इविधि एक मुहूर्त उडि भो कहत हंसहि टेरि ।
प्रगट करिए कला निज मम कला इतनी हेरि ॥
हंस सुनि हँसि चलो पश्चिम ग्रोर सागर यत्र ।
चलो ताके संग वायस चपल कीन्हें पत्र ॥
उदधि पै कछु दूरि लो बढि जाय थाको काग ।
वृक्ष टापू लखे बिन तजि धीर डरपन लाग ॥
शिथिल ह्वै गे पक्ष तब गिरि परो सागर माहँ ।
देखि सो हँसि खरो ह्वै भो कहत हंसजनाहँ ॥
पालियन करि शीघ्र मज्जन चलहु वायस कत ।
एक शत योजन इहाँ ते उदधि को है अंत ॥
कहो शत मैं उडन की यह चारु विधि है कौन ।
वारि में परि तुंड बोरत कढत हो गहि मीन ॥
वचन यह सुनि नीच वायस कह्यो आरत बैन ।
देखि निज दिसि क्षमा करि अब मोहिँ दीजे चैन ॥
सुनै। सूतज काग के सुनि बचन हंस अमंद ।
पकरि पग सो ल्याय थल पै दियो डारि स्वछन्द ॥ ६॥

इमि सुभटन सों टेरि, भीम पराक्रम भीम भट ।
दुस्सासन तन हेरि कहत भयो अमरख भरो ॥
तब ते सोनिन पान करन कह्यौ हम मधि सभा ।
सो अब करत सुजान सकत त्रान करि कौन भट ॥
नृप यह सुनि ते सुत रनधीरा । कहत भयो इमि बचन गँभीरा ॥
ये मम कर करि कुंभ विदारन । देनहार गो बाजि हजारन ॥
इनके बल तुम सरबस हारे । वर्ष त्रयोदश बिपिन विहारे ॥

सर पंजर विरचन धल मारे। पीन पयोधर मर्दन द्वारे॥
अति सुकुमार सुगधन मींजे। राजसूय के जल सों भीजे॥
केश द्रौपदी के तेहि कर्षण। करनहार मम भुज अरि धर्षण॥
तुम सब लखत रहे तेहि छन में। तब न रह्यो कछु विक्रम तन में॥
छात्र धर्म पालन करि रण में। अब हम परे मरे भट गण में॥
काग शृँगाल पियैं मम श्रोनित। कै तुम पियो करन करि द्रोनित॥७॥

भीम दुर्योधन का गदा-युद्ध।

भए तहँ अति करत विक्रम उभय योधा धीर।
सहि परसपर गदा गहई गनत नेकु न पीर॥
गंर्जि गर्जि अखंड गति गहि उभय बीर उदंड।
करत चालन दोरदंडनि चपल अतिशय चंड॥
सव्य कोउ अपसव्य फिरि जो सव्य सो अपसव्य।
फिरत वाहत गदा गहई सुभट भा भरि भव्य॥
शब्द सो भरि दियो अब्दहिँ स्तब्ध भेनहिँ नेक।
टूटि टूटि अचूक वाहत गहे जय की टेक॥८॥

कृपाचारज के वचन सुनि द्रोण सुत अनखाय।
कह्यो निज मत श्रेष्ठ सब कहँ परत जानि सचाय॥
कारनांतर योग में मति बुद्धि पलटति तात।
है विचित्र मनुष्य को चित ठीक नहिँ ठहरात॥
भिषज भैषज देत जीवन हेत समुझि निदान।
काल बस वह मरत तौ सब कहत तेहि अग्यान॥
पुरुषसिंह प्रवीण भूपति कियो राजस धर्म।
गयो काज नसाय अब सब कहत कुत्सित कर्म॥

कहाँ निद्रा आतुरहिँ अरु भरो अमरख ताहि ।
कहाँ निद्रा ताहि घेरे महा चिंता जाहि ॥
सकल ए मम हिए निवसत कहाँ निद्रा मोहिँ ।
पिता के बध ते अधिक दुख कौन बूझत तोहिँ ॥
विप्र हम निज धर्म तजि कै गह्यो क्षत्री धर्म ।
कर्म क्षत्रिन के करब अब उचित तजि कै भर्म ॥
झूठ कहि तजि धर्म्म उन मम पितहिँ डार्‌यो मारि ।
तथा अब हम बधब उन कहँ नीति धर्म बिसारि ॥
न्याय सहित लरि शत्रु सों हारे सरबस जात ।
करि अधर्म जीते रहत सबल जीति कहात ॥
समित कार्य तत्पर भजत निजन निरायुध पाय ।
सोवत निशि मैं लहि समय शत्रुहि मारब न्याय ॥ ९ ॥

(८८३) शिवनाथ द्विवेदी ।

ये महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण मौज़ा कुरसी ज़िला बाराबंकी अवध प्रदेश के रहने वाले थे। इनका नाम शिवसिंहसरोज में नहीं है। ये महाशय पँवाँयें के ठाकुर कुशलसिंह बैस के यहाँ रहते थे। यह स्थान ज़िला हरदोई अवध देश में है। शिवनाथ जी ने 'रसवृष्टि' नामक एक ग्रन्थ बनाया है, जिसमें उपर्युक्त बातें लिखी हुई हैं। इन्होंने अपने ग्रन्थ का संवत् नहीं लिखा। पता लगाने से जान पड़ा कि पँवाँयें के ठाकुर कुशलसिंह संवत् १८३१ में स्वर्गवासी हुए थे, और इनका ग्रन्थ संवत् १८२८ में बना। यह बात कुशलसिंह के वंशधर ठाकुर सर्वजीतसिंह वर्त्तमान ताल्लुकदार पँवाँयाँ ने कृपा

कर के हमें लिख भेजी। शिवनाथ ने ७५ पृष्ठों का यह बड़ा ग्रन्थ बनाया है, जिसमें रस भेद, भाव भेद ग्रौर नख शिख के वर्णन हुए हैं। इनका काव्य सानुप्रास ग्रौर सुन्दर है ग्रौर यह ब्रजभाषा में लिखा गया है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

चम्प चमेली कली चुनि कै ग्रलबेली सी फूलनि सेज सँवारी।
कुंज कि देहरी बैठि रही मग जोवत श्यामहि गोप कुमारी॥
ज्यों ज्यों गई रजनो सरसाइ कै ग्रावै न ग्रावै इतै गिरिधारी।
खोलत मूंदि रहै पट घूंघट कानन कानन सुन्दर वारी॥
नामहि तै गनिका गनि साधनि बाधन काटि गई हरि धामहि।
धामहि बैाल सुदामहि दै पठयो प्रभु पास कोहाइ कै बामहि॥
बामहि गैातम की गति पाय भई शिवनाथ सपूरन कामहि।
कामहि माम गये दिन बीति ग्ररे मन मूढ भजो हरि नामहि॥

ठाकुर कुशलसिंह के स्वर्गवासी होने के विषय में ठाकुर सर्व-जीतसिंह जी ने राम कवि कृत निम्न कुंडलिया भेजी है:—

धायो फागुन सुकुल कहँ दसमी भो सनिवार।
इन्दु राम वसु चन्द को सम्वत है सुभ सार॥
सम्वत है सुभ सार जाम दिन बासर बीते।
ग्रमर नदी के तीर समर कीन्हें मन चीते॥
राम कहहि ग्रसि बात ग्राजु सुर वृन्दहि पायो।
कुसल सिंह सिरमैार तबहि बैकुंठ सिधायो॥

(८८४) मनीराम मिश्र।

ये महाशय कन्नौज निवासी इच्छाराम मिश्र के पुत्र कान्य-

कुल ब्राह्मण कात्यायन गोत्री अनिरुद्ध के मिश्र थे। इन्होंने संवत् १८२१ में छन्दछप्पनी नामक पिंगल का अद्वितीय ग्रन्थ निर्माण किया। उसीसे एवम् कन्नौज से जाँचकर इनका यह हाल हमने यहाँ लिखा। इस ग्रन्थ की एक बहुत प्राचीन हस्त-लिखित प्रति हमको पं० युगुलकिशोर मिश्र गँधौली निवासी के पुस्तकालय से प्राप्त हुई है। शिवसिंह जी ने इनका सं० १८३९ दिया है। खोज में इनका आनंदमंगल नामक ग्रन्थ सं० १८२९ का लिखा हुआ है।

छप्पनी ग्रन्थ में मनीराम जी ने केवल छप्पन छन्दों द्वारा ऐसी विलक्षण रीति से पिंगल का वर्णन किया है कि पाठक थोड़े ही परिश्रम से छन्द का विषय समझ सकता है। यह ग्रन्थ परम प्रशंसनीय है। जैसे अलंकार दूलह ने सिर्फ़ ८० छन्दों द्वारा स्पष्टतया समझा दिये हैं, उसी तरह इस ग्रन्थ से इन्होंने पिंगल के विषय को पाठकों के हस्तामलक कर दिया। इनका यह ग्रन्थ सूत्रों के समान कंठस्थ करने योग्य है। केवल इसी एक ग्रन्थ को ध्यानपूर्वक समझ लेने से जिज्ञासु को पिंगल के बड़े बड़े और जटिल ग्रन्थ पढ़ने से छुटकारा मिल सकता है। इस ग्रन्थ की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। भाषा के दुर्भाग्य से यह ग्रन्थ भी अब तक अमुद्रित पड़ा है। इसकी भाषा व्रजभाषा है, परन्तु विषय विशेष एवं गम्भीर तथा वर्णन सूक्ष्म होने के कारण कानों में कुछ खटकती है। इस ग्रन्थ में गण विचार, उनके देवता और फल का एकही छंद द्वारा कैसा उत्कृष्ट वर्णन किया गया है, कि इस एक ही छंद को कंठस्थ करने से वह गण विचार पूर्ण रीति से समझ में आ जाता तथा

याद हो जाता है, जिसको कि अन्य आचार्यों ने अध्यायों में कहा है।

तीनि गो मो धरा श्री मनोराम ला आदि यौं अंबु दै वृद्धि को मानिये।
बीच लारो सुनो बन्हि है मीच को अंत गो सो बयारी भ्रमै जानिये॥
अंत लो तो सु आकास सून्यै फलै मध्य गा जो रवी रोग को दानिये।
आदि गो भो शशी कीर्ति को देइ ला तीनि नो नाग आनंद को ठानिए॥

इसके समझने को नीचे चक्र दिया गया है।

नाम गण	मगन	यगन	रगन	सगन	तगन	जगन	भगन	नगन
गण का रूप	ऽऽऽ	।ऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ।।	।।।
गण देवता	धरा	अम्बु	अग्नि	पौन	आकाश	सूर्य	शशि	नाग
गण का फल	श्री	वृद्धि	मीचु	भ्रम	शून्य	रोग	कीर्ति	आनंद

इस छंद में गणों के नामों एवं देवताओं के नामों के प्रथम अंक दिये गये हैं और उस पर छंद पूर्ण होने के विचार से जो मात्रायें लगा दी गई हैं, उन्हें अर्थ समझते समय निकाल देना चाहिए, जैसे ती नि गो मो धरा श्री का अर्थ समझना चाहिए कि तीनि गुरु होने से मगन होता है, उसकी देवी पृथ्वी है और उसका फल लक्ष्मी है। इसी भाँति अन्य स्थानों पर भी समझना उचित है। सूत्र ग्रन्थ ...ने के कारण ये दूषण नहीं कहे जा सकते। इसी भाँति प्रायः

संस्कृत-सूत्र ग्रन्थों में वर्णन किया जाता है। यह ग्रन्थ बहुत ही प्रशंसनीय बना है, ग्रैार छंद प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। इसकी रचना पिंगल सूत्रों के आधार पर की गई है। हम मनीरामजी को दास कवि की श्रेणी में समझते हैं। इस ग्रन्थ की यदि टीका हो जावे तो बहुत ही उचित हो ग्रैार छंद के जिज्ञासुग्रों को बड़ी मदद मिले।

(८८५) मनभावन ब्राह्मण मुड़िया जिला शाहजहाँपुर वाले।

सरोज में इनका सं० १८३० दिया हुआ है ग्रैार लिखा है कि ये चंदनराय के १२ शिष्यों में प्रथम हैं। इनका बनाया हुआ शृंगार-रत्नावली ग्रंथ है। जो उदाहरण इनका सरोज में दिया है वह बहुत ही सरस ग्रैार प्रशंसनीय है। हम इनकी गणना तोष की श्रेणी में करते हैं।

फूली मंजु मालतीन पै मलिंद वृंदवर
सुरभि लपेट्यो मंद मधुर बहै समीर।
ललित लवंगन की बल्लरी तमाल जाल
लतिका कदंबन को देखे दूरि होत पीर॥
बाँडी गुंज पुंज अति भौंडो झुकि झाँप्यो बन
केकी कुल कलित कपोती पिक बोलैं कीर।
भरे प्रेम श्यामा श्याम गरे भुज धरे
दोऊ हरे हरे डोलत हैं तरनितनूजा तीर॥१॥

(८८६) तीर्थराज।

इनका नाम परागी लाल था और ये चरखारी के निवासी थे। सं० १८३० में इन्हों ने रसानुराग नामक शृंगार रस का सुन्दर ग्रंथ बनाया। इनकी कविता ललित और अनुप्रासपूर्ण होती थी। हम इन्हें तोष की श्रेणी का कवि समझते हैं।

> छपि छपि जात चित चपि चपि जात
> बहु सुन्दरता देखि बहु सुन्दरता ती की है।
> गिरिजा कहा है सुरी सिरिजा कहा है
> जोति जलजा कहा है कहा काम कामिनी की है॥
> कहै तीर्थराज सुचि सुन्दर बरन सोल
> उपमा धरन मन हरन दुनी की है।
> नख सिख नीकी गति नीकी, मति नीकी ती की
> ऐसी छवि नीकी वृषभानु नन्दनी की है॥

(८८७) बोधा फ़ीरोज़ाबादी।

पंडित नकछेदी तेवारी ने भाषा के कवियों की जाँच पड़ताल में प्रशंसनीय श्रम किया है। उन्हों महाशय ने बुन्देलखंडी कवियों से पूछ पाछ कर बोधा का भी जीवन-चरित्र लिखा है। उनके अनुसार बोधा कवि सरवरिया ब्राह्मण राजापुर प्रयाग के रहने वाले थे। शिवसिंह जी ने भूल से गोस्वामी तुलसीदास के जन्मस्थान राजापुर को प्रयाग के ज़िले में लिखा है, यद्यपि वह बाँदा में है। जान पड़ता है कि उसी भूल से तेवारी जी ने भी राजापुर को प्रयाग में बतलाया

है। किसी सम्बन्ध के कारण ये महाशय बाल्यावस्था में ही पन्ना राजधानी को चले गये। इनके सम्बन्धियों की प्रतिष्ठा पन्ना दरबार में अच्छी थी। ये महाशय भी कवि होने के अतिरिक्त भाषा, फ़ारसी और संस्कृत के अच्छे पंडित थे। अतः महाराज इनका मान करने लगे, यहाँ तक कि वह प्यार के कारण इन्हें बुद्धिसेन से बोधा कहने लगे और इसी कारण इनका नाम बोधा पड़ गया। उनके दरबार में सुभान नामक एक वेश्या थी, जिससे बोधा का भी सम्पर्क हो गया। इस बात से अप्रसन्न हो कर महाराज ने इन्हें छः महीने के लिए देश-निकाले का दंड दिया। इस अवसर में इन्होंने उस वेश्या के विरह में 'विरहबारीश' नामक एक उत्तम ग्रन्थ बनाया जो हम ने देखा है। जब छः महीने के पीछे ये महाशय दरबार में फिर गये और वहाँ इन्होंने विरहबारीश के छन्द पढ़े, तब महाराज ने प्रसन्न हो कर इन्हें बर माँगने को कहा; इस पर ये बोले कि 'सुभान अल्लाह।' महाराज ने प्रसन्न हो कर इन्हें इनकी माशेहरी सुभान यवनी दे दी। उस समय से ये अपनी "मुराद को पहुँच कर" प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। अपने इश्कनामा में इन्होंने सुभान की प्रशंसा के बहुत से छन्द कहे हैं। इनका शरीरपात पन्ना में हुआ। इनके जन्म और मरण के विषय में कोई ठीक प्रमाण अब तक नहीं मिला है। ठाकुर शिवसिंहजी ने इनका जन्म संवत् १८०४ लिखा है, जो अनुमान से ठीक जान पड़ता है। बोधा एक बड़े ही प्रशंसनीय और जगद्विख्यात कवि थे; अतः यदि ये संवत् १७७५ के पहले के होते, तो कालिदास जी इनके छंद हजारा में अवश्य लिखते। इधर सूदन कवि ने संवत् १८१५ के लगभग सुजानचरित्र बनाया, जिसमें उन्होंने १७५ कवियों के नाम

लिखे हैं। इस नामावली से प्रायः कोई भी तत्कालीन वर्तमान अथवा पुराना आदरणीय कवि छूट नहीं रहा है, परन्तु इसमें भी बोधा का नाम नहीं है। इससे विदित होता है कि संवत् १८१५ तक ये महाशय प्रसिद्ध नहीं हुए थे। फिर पद्माकर आदि की भाँति बोधा का अर्वाचीन कवि होना भी प्रसिद्ध नहीं है, अतः शिवसिंहजी का संवत् प्रामाणिक जान पड़ता है। जान पड़ता है कि बोधा ने लगभग सं० १८३० से १८६० तक कविता की। आगरा के पं० लक्ष्मीदत्त ने हमें लिख भेजा कि बोधा के लिखे एक पत्र में १८४१ सं० दिया हुआ है। आपने साँईंराम और माँजीराम को बोधा के भाई, बलदेव, मनसाराम और डालचन्द को पुत्र, टीकाराम को पौत्र और गोपीलाल को प्रपौत्र लिखा है, जिनका अभी जीवित होना आप बतलाते हैं। आप कहते हैं कि बोधा कवि फ़ीरोज़ाबाद ज़ि० आगरा के रहने वाले थे। ये कथन यथार्थ जान पड़ते हैं।

बोधाकृत केवल 'इश्क़नामा' हमारे पास है, जिसमें २५ पृष्ठ और १०९ स्फुट छन्द हैं। इसमें थोड़े से दोहा बरवै आदि को छोड़ कर शेष सब घनाक्षरी अथवा सवैया छन्द हैं। इस ग्रन्थ में बोधा ने कोई संवत् नहीं दिया है। इस समस्त ग्रन्थ में प्रेम के चोज़ और तत्त्व भरे पड़े हैं। जैसे गोस्वामी तुलसीदासजी प्रत्येक स्थान पर राम को देखते थे, वैसे ही बोधा को हर जगह प्रेम देख पड़ता था। दो एक स्थान को छोड़ कर इनका प्रेम ईश्वरसम्बन्धी न हो कर वनितासम्बन्धी था, परन्तु फिर भी यह कवि सच्चा प्रेमोपासक था। प्रेम का ऐसा उत्कृष्ट और सच्चा वर्णन करने में बहुत कम कवि समर्थ हुए हैं। बोधा की रचना हर जगह अत्यन्त सजीव और इन

की आत्मीयता से भरी हुई है। सब स्थानों पर इनका अनूठापन झलकता है। यह बड़ा ही सच्चा कवि था और इसने प्रेम की बड़ी सच्ची और सुघर मूर्ति पाठकों के सामने खड़ी कर दी है। इन्होंने ठाकुर की भांति लिखा है कि प्रेम करना सहल है, परन्तु उसका निबाहना कठिन है। प्रेम के विषय में इनका यह मत था ।

अति खीन मृनाल के तारहु ते तेहि ऊपर पाँव दै आवनो है ।
सुई बेह ते द्वारसकी न तहाँ परतीति को टांड़ो लदावनो है ॥
कवि बोधा अनी घनी नेजहु ते चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है ।
यह प्रेम को पन्थ कराल महा तरवारि की धार पै धावनो है ॥
विष खाय मरै कै गिरै गिरि ते दगादार ते यारी कभी न करै ।
पहलाद की ऐसी प्रतीति करै तब क्यों न कहूँ प्रभु पाहन तैं ॥

बोधा के बनाये हुए बहुत से स्फुट छन्द और भी मिलते हैं। इन्होंने व्रजभाषा में कविता की है, परन्तु कहीं कहीं खड़ी बोली मिश्रित भाषा भी लिखी है। बोधा की कविता सब मिला कर बहुत ही प्रशंसनीय है। साहित्य-प्रौढता में बोधा को हम दास की श्रेणी में रक्खेंगे।

तैं अब मेरी कही नहिं मानति राखति है उर जोम कछूरी ।
सो सब को छुटि जात भटू जब दूसरो मारि निकारत छूरी ॥
बोधा गुमान भरी तब लौं फिरिबो करी जौलैं लगी नहीं पूरी ।
पूरी लगे लघु सूरन की चकचूर है जात सबै मगरूरी ॥
एक सुभान के आनन पै कुरबान जहाँ लगि रूप जहाँ को ।
कैयो सतक्रतु की पदवी लुटिये लखि कै मुसुकाहट ताको ॥

सोक जरा गुजरा न जहाँ कवि बोधा जहाँ उजरान तहाँ को।
जान मिलै तौ जहान मिलै नहिँ जान मिलै तौ जहान कहाँ को॥
काँपन गात सघात घनात है साँकरी खोरि निसा अँधियारी।
पातहु के खरके छरकै धरकै उर लाय रहै सुकुमारी॥
बीच में बोधा रचै रस रीति मनो जग जीति धुक्यो तेहि घारी।
यों दुरि केलि करैं जग मैं नर धन्य वहै धनि है वह नारी॥

इस अंतिम छन्द से अधिक शोहदापन मिलना कठिन है। इनके विरहवारीश में विविध छन्दों द्वारा एक प्रेम-कहानी प्रायः ५०० पृष्ठों में कही गई है। उदाहरण लीजिए।

हिलि मिलि जानै तासों मिलि कै जनावै हेत
हित को न जानै ताको हितू न निसाहिये।
होय मगरूर तापै दूनी मगरूरी कीजै
लघु ह्वै चले जो तासों लघुता निबाहिये॥
बोधा कवि नीति को निबेरो यही भाँति अहै
आप को सराहै ताहि आपहू सराहिये।
दाता कहा सूर कहा सुन्दर सुजान कहा
आप को न चाहै ताके बाप को न चाहिये॥

नाम—(८८८) ललित किशोरी जी टट्टी सम्प्रदाय के महात्म
ने बानी रची।
विवरण—इसमें ३५५ पद हैं। छतरपूर दरबार में हमने इसे देखा
कविता साधारण श्रेणी की है। समय जाँच से मिला।

इस समय के अन्य कविगण ।

नाम—(८८६) रसनिधि ।

ग्रन्थ—१ दोहरा, २ हिंडोरा, ३ कवित्त, ४ अरिल्लैं श्रोर मांझ, ५ बानी विष्णुपद (१८४७ के पूर्व), ६ की कविता, ७ रसनिधिसागर (१८११ से पूर्व), ८ रतहजारा (दोहे), ९ दोहरा का संग्रह ।

कविता-काल—१८११ के पूर्व ।

विवरण—इनके प्रायः ३००० दोहे हमने छत्रपूर में देखे । कविता बहुत अच्छी है । तोष श्रेणी ।

नाम—(८९०) हरिदास ब्राह्मण बाँदा ।

ग्रन्थ—१ भाषा भागवत समूल एकादश स्कंध (१८१३), २ ज्ञान (१८११), ३ भगवद्गीता भाषा, ४ भाषाभूषण की टीका (१८३४) ।

कविता-काल—१८११ ।

विवरण—राजा अरिमर्दनसिंह इनके आश्रयदाता थे ।

नाम—(८९१) जयसिंह राय रायां कायस्थ अयोध्या।

ग्रन्थ—सतसई पृष्ठ ५८ ।

कविता-काल—१८१२ ।

नाम—(८९२) रामदास जी ।

ग्रन्थ—१ वाणी, २ अर्थतत्वसार, ३ गर्भचित्रवनी ।

कविता-काल—१८१२ से १८५५ तक ।

विवरण—साधु कवि निम्न श्रेणी।

नाम—(८६३) फतेहसिंह कायस्थ, कोंच।

ग्रन्थ—१ मतचन्द्रिका पृष्ठ १० पद्य, २ गुणप्रकाश, ३ गुर्त भाषानुवाद।

कविताकाल—१८१३।

विवरण—ज्योतिष गुर्त एक फ़ारसी ग्रन्थ है, जिस में पहली मोहर्रम से लेकर साल भर का शुभाशुभ वर्णन है।

नाम—(८६४) बालकृष्ण।

ग्रन्थ—ग्वाल पहेली।

कविता-काल—१८१४ के पूर्व।

नाम—(८६५) करनीदान।

ग्रन्थ—पान चीरमर्दन की बात।

कविता-काल—१८१४।

विवरण—स्त्री थीं।

नाम—(८६६) जसराम।

ग्रन्थ—१ राजनीतिविस्तार।

कविता-काल—१८१४।

नाम—(८६७) वैष्णवदास साधु वृन्दावन।

ग्रन्थ—गीतगोविंद भाषा पृष्ठ २६।

कविताकाल—१८१४।

विवरण—अनुवाद।

नाम—(८६८) सन्तदास जी कबीरपंथी फ़क़ीर।

ग्रन्थ—१ स्वामी सन्तदास की मनभै वाणी, २ शब्दमाला, ३ स्वास-
विलास।
कविता-काल—१८१४ तक।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(८६६) बिहारीलाल।
ग्रन्थ—हरदौल चरित्र।
कविताकाल—१८१५।
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(९००) यशोदानंददास
ग्रन्थ—रागमाल पृ० १४०।
कविताकाल—१८१५।
नाम—(९०१) रघुराय बुँदेलखंडी।
ग्रन्थ—यमुनाशतक।
जन्मकाल—१७९०।
कविताकाल—१८१५।
विवरण—तोषश्रेणी।
नाम—(९०२) श्रीधर।
जन्मकाल—१७८९
कविताकाल—१८१५
विवरण—साधारण श्रेणी।
नाम—(९०३) गोपालजी चारण।
ग्रन्थ—दिपर वंसात पति पीढ़ी वर्तिका।

कविताकाल—१८१६।

नाम—(६०४) गोपाल।

ग्रन्थ—भगवंतराय की विरदावली।

कविताकाल—१८१६ के लगभग।

नाम—(६०५) बेनी।

ग्रन्थ—(१) रसमय, (२) शृंगार, (३) कविता।

जन्मकाल—१७९०।

कविताकाल—१८१७।

नाम—(६०६) वृन्दावनदास।

ग्रन्थ—(१) यमुनाप्रताप बेलि (२) श्री हरिनामबेलि (३) विवाह प्रकरण (४) माखन चोर लहरी (५) हरिनाम महिमावली (६) हित हरिवंसजू की सहस्ररसधरी (७) राधा सुधानिधि की टीका (८) सेवक बानी।

कविताकाल—१८१७।

विवरण—गोस्वामी हरिवंशात्मज गो० हरिलाल की शिष्य परम्परा में थे।

नाम—(६०७) कविराय।

कविताकाल—१८१८।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६०८) भामदास ब्राह्मणसाधु।

ग्रन्थ—(१) श्रीरामायण, (२) रामार्णव।

कविताकाल—१८१८।

नाम—(६०९) टोडर मल ।

ग्रन्थ—आत्मानुशासन ।

कविताकाल—१८१८ ।

विवरण—महाराजा टोडरमल नहीं ।

नाम—(६१०) देवदत्त ।

ग्रन्थ—द्रोणपर्व ।

कविताकाल—१८१८ ।

विवरण—काश्मीर के महाराज कुमार ब्रजराज के कहने से द्रोण पर्व बनाया ।

नाम—(६११) मान ब्राह्मण बैसवारे के ।

ग्रन्थ—कृष्ण कल्लोल (कृष्ण खंड भाषा) ।

कविताकाल—१८१८ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(६१२) कृष्णकलानिधि ।

ग्रन्थ—वृत्तचन्द्रिका ।

कविता-काल—१८२० के पूर्व ।

नाम—(६१३) जगदेव ।

जन्मकाल—१७९२ ।

कविता-काल—१८२० ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(६१४) जोरावरमल कायस्थ नागपूर ।

ग्रन्थ—शांतिकथा।

जन्मकाल—१७९२।

कविता-काल—१८२०।

नाम—(९१५) तारापति।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१७९०।

कविताकाल—१८२०।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(९१६) नरेन्द्र।

जन्मकाल—१७८८।

कविता-काल—१८२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(९१७) नवधान बुँदेलखंडी।

जन्मकाल—१७९२।

कविताकाल—१८२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(९१८) बिहारिनिदास (बनी ठनी जी) कृष्णगढ़।

ग्रन्थ—१ सवैया प्रबंध २ भजन।

कविता-काल—१८२०।

विवरण—इनकी रचना मधुर एवं सरस है। ये नागरीदासजी की उपपत्नी थीं। साधारण श्रेणी में इनकी गणना की जाती है।

नाम—(६१६) बिहारी।
ग्रन्थ—नखशिख रामचंद्रजी।
जन्मकाल—१७९६।
कविता-काल—१८२०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६२०) यूसुफ़ख़ाँ।
ग्रन्थ—१ रसिकप्रिया टीका, २ सतसई टीका।
जन्मकाल—१७९१।
कविता-काल—१८२०।

नाम—(६२१) रविनाथ बुँदेलखंडी।
जन्मकाल—१७९१।
कविता-काल—१८२०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६२२) राजाराम।
जन्मकाल—१७८८।
कविता-काल—१८२०।
विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(६२३) शत्रुजीतसिंह बुँदेला महाराजा दतियानरेश।
ग्रन्थ—रसराज की टीका।
कविता-काल—१८२०।

नाम—(६२४) शिव बिलग्रामी।

ग्रन्थ—रसनिधि।

जन्मकाल—१७९६।

कविता-काल—१८२०।

नाम—(९२५) शिवसिंह।

जन्मकाल—१७८८।

कविता-काल—१८२०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(९२६) हरीहर।

जन्मकाल—१७९४।

कविता-काल—१८२०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(९२७) हुक्मीचन्द चारण जैपूर।

ग्रन्थ—स्फुट गीत।

कविता-काल—१८२०।

विवरण—जयपुरनरेश महाराजा माधोसिंह के यहाँ थे।

नाम—(९२८) जसवंतसिंह बुंदेला।

ग्रन्थ—१ जसवंतविलास, २ धनुर्वेद।

कविता-काल—१८२१।

विवरण—महाराज हिन्दुपति के चचेरे भाई।

नाम—(९२९) आनंद ब्राह्मण, बनारसी।

ग्रन्थ—१ आनंदानुभव, २ भगवद्गीता, ३ प्रबोधचंद्रोदय नाटक (४५० पृष्ठ), ४ दानलीला।

कविता काल—१८२२।

नाम—(६३०) इच्छाराम।

ग्रन्थ—प्रपन्न प्रेमावली पृ० ४३८।

कविता-काल—१८२२।

नाम—(६३१) जोगराम संन्यासी बुंदेलखंड।

ग्रन्थ—जोग रामायण।

कविता-काल—१८२२।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६३२) घघतेश

ग्रन्थ—रसराज टीका।

कविता-काल—१८२२।

विवरण—ये शाह आलम शाह देहेली के यहाँ थे। कविता बड़ी मनोहर की है। तोष श्रेणी।

नाम—(६३३) घघतेश।

ग्रन्थ—रसराज टीका।

कविता काल—१८२२।

विवरण—राजा रत्नेश के भाई शत्रुजीत के यहाँ थे।

नाम—(६३४) बाजूराय।

ग्रन्थ—भागवत दशमस्कन्ध की संक्षिप्त कथा।

कविता-काल—१८२२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६३५) हरिवंश राय ब्राह्मण।

ग्रन्थ—१ वैद्यविनोद, २ गणपति कृष्ण चतुर्थी व्रत कथा।

कविता-काल—१८२२।

नाम—(६३६) नवलदास ठाकुर गुरगावँ बाराबंकी।

ग्रन्थ—१ ज्ञानसरोवर, २ भागवत दशमस्कंध भाषा, ३ भागवत पुराण भाषा जन्म कांड।

कविता-काल—१८२३ के पूर्व।

विवरण—सम्भव है कि १८०७ वाले भी नवलदास यही हों।

नाम—(६३७) चंद्रदास।

ग्रन्थ—१ नेहतरंग, २ रामायण भाषा।

कविता काल—१८२३ के पूर्व।

नाम—(६३८) नेवल (निर्मल) दास मु० धनेशा साधु।

ग्रन्थ—भागवत पुराण भाषा जन्मकांड पृ० २९८।

कविता-काल—१८२३।

नाम—(६३९) करन भट्ट पन्ना।

ग्रन्थ—साहित्यचन्द्रिका (सतसई की टीका)।

जन्मकाल—१७९४।

कविता-काल—१८२४।

विवरण—महाराजा सभासिंह, अमानसिंह, एवं हिन्दू पति के यहाँ थे।

नाम—(६४०) मलूकदास खत्री साधु कालपी।

ग्रन्थ—१ भक्तवत्सल, २ भक्त विरदावली, ३ गुरुमताप, ४ पुहुप-विलास, ५ रतनखानि, ६ अलखवानी।
कविता काल—१८२४ के लगभग।
विवरण—बाबू कृष्णबलदेव खत्री कालपी-निवासी के मातामह के बाबा थे।

नाम—(९४१) चन्द्रदास (लालजी) कायस्थ।
ग्रन्थ—भक्त उरबसी (नाभादास कृत भक्तमाल की टीका)।
जन्मकाल—१८००।
कविता-काल—१८२५।

नाम—(९४२) बदन।
कविता काल—१८२५ लगभग।
विवरण—सूरजमल के पितामह।

नाम—(९४३) कल्यानसिंह (कल्यान) जैसलमेर।
ग्रन्थ—स्फुट।
कविता-काल—१८२६।
विवरण—साधारण श्रेणी, महाराजा मूल राज जैसलमेर-नरेश के आश्रित थे।

नाम—(९४४) कुसाल मिश्र ज्योधार आगरा वाले।
ग्रन्थ—गंगा नाटक।
कविताकाल—१८२६।

२ नाम—(९४५) जीवन।
जन्मकाल—१८०३।

कविताकाल—१८२६।

विवरण—मोहम्मद अलीशाह के यहाँ थे। निम्न श्रेणी।

नाम—(६४६) श्रीनाथजी गोस्वामी (नाथ)।

ग्रन्थ—(१) मूलराजविलास, (२) अन्योक्तिमंजूषा, (३) लोलिम्ब-राज भाषा।

कविताकाल—१८२६।

विवरण—महाराज मूलराज जैसलमेर-नरेश के सभासद थे। आप संस्कृत के महा विद्वान तथा भाषा के सत्कवि थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(६४७) तेजसिंह कायस्थ बुँदेलखंडी।

ग्रन्थ—दफ़्तरनामा।

कविताकाल—१८२७।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६४८) दरिया साहब।

ग्रन्थ—(१) अमरसार (२) ब्रह्मविवेक (३) भक्तिहेतु (४) बीजक दरिया साहब (५) दरियासागर (६) ज्ञानस्वरोदय दरिया साहब (७) गुर्ष्य दरिया साहब (८) ज्ञानरत्न (९) ज्ञान-दीपिका (१०) रेख़ता दरिया साः (११) शब्ददरिया साः (१२) सतसैया दरिया साः।

कविताकाल—१८२७ के लगभग।

विवरण—ये साधु थे। बिहार प्रान्त के धर कंधा सूबा में रहते थे। अपने को कबीर साहब का अवतार बताते थे। संवत् १८२७ में थे।

नाम—(६४६) प्रेमनाथ कलुवा चौरी ।

ग्रन्थ—प्रश्नोत्तर सद ।

कविताकाल—१८२७ ।

विवरण—ब्राह्मण ।

नाम—(६५०) रसरासि रामनारायण जैपूर ।

ग्रन्थ—(१) कवित्त रत्नमालिका संग्रह, (२) फुटकर भाषा ।

कविताकाल—१८२७ ।

विवरण—यह संग्रह ग्रन्थ इन्होंने महाराजा सवाई प्रतापसिंह जी के दीवान सिंगी जीवराज के आश्रय में बनाया, जिसमें प्राचीन कवियों के ८०१ छंद और स्वयम् इनके १०८ छंद हैं। कविता इनकी साधारण श्रेणी की है ।

नाम—(६५१) चन्द्र कवि सनाढ्य चौबे ।

ग्रन्थ—चन्द्रप्रकाश ।

कविताकाल—१८२८ ।

विवरण—पिता का नाम हीरानंद था ।

नाम—(६५२) हरीसिंह ।

ग्रन्थ—प्रश्नावली ।

कविताकाल—१८२८ ।

नाम—(६५३) नारायणदास । कुछ दिन चित्रकूट में रहे ।

ग्रन्थ—(१) छंदसार (१८२९) (२) भाषाभूषण की टीका (३) पिंगल मात्रा ।

कविताकाल—१८२९ ।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(९५४) मानसिंह।

ग्रन्थ—(१) हनुमान नखशिख, (२) हनुमानपचीसी, (३) हनुमान पंचक, (४) लछिमनशतक, (५) महावीरपचीसी, (६) नरसिंह चरित्र, (७) नरसिंहपचीसी, (८) नीतिनिधान।

कविताकाल—१८२९।

नाम—(९५५) अनूपदास।

जन्मकाल—१८०१।

कविताकाल—१८३०।

विवरण—शांतरस के उत्तम छंद बनाये हैं। साधारण श्रेणी। सरोजकार ने संवत् १७९८ के एक और अनूप का नाम लिखा है, परन्तु जान पड़ता है कि ये दोनों एक ही हैं।

नाम—(९५६) केसरीसिंह।

ग्रन्थ—केसरीसिंहजी की कुंडलिया।

कविताकाल—१८३०।

नाम—(९५७) जीवनाथ भाट नवाबगंज उन्नाव।

ग्रन्थ—बसंतपचीसी।

जन्मकाल—१८०३।

कविताकाल—१८३०।

विवरण—बालकृष्णराय दीवान अवध के कवि हैं। साधारण श्रेणी।

नाम—(९५८) नाथ।

जन्मकाल—१८०३ ।

कविताकाल—१८३० ।

विवरण—मानिकचन्द के यहाँ थे ।

नाम—(९५९) नेवाज जोलाहा बिलग्रामी ।

जन्मकाल—१८०४ ।

कविताकाल—१८३० ।

विवरण—तोष श्रेणी ।

नाम—(९६०) पद्मेश ।

जन्मकाल—१८०३ ।

कविताकाल—१८३० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(९६१) मुकुन्दलाल बनारसी ।

जन्मकाल—१८०३ ।

कविताकाल—१८३० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(९६२) रामभट्ट फ़र्रुखाबादी ।

ग्रन्थ—(१) श्रृंगारसोरभ, (२) बरवै नायिकाभेद ।

जन्मकाल—१८०३ ।

कविताकाल—१८३० ।

विवरण—नवाब कायमख़ाँ के यहाँ थे । एक रामजी सरोज में हैं, जिनका श्रृंगारसोरभ हमारे पास है, परन्तु उसमें संवत् व नवाब कायमख़ाँ का वर्णन नहीं है, और इनके उनके समय में बहुत अन्तर है । इसी लिए दोनों नाम दिये हैं ।

नाम—(६६३) शिवप्रसाद कायस्थ दतिया।

ग्रन्थ—(१) रसभूषण (१८६९), (२) अद्भुत रामायण (१८३०)। पृष्ठ १९६।

कविताकाल—१८३० से १८६९ तक।

विवरण—चकील राजा परीक्षित।

नाम—(६६४) सवितादत्त।

जन्मकाल—१८०३।

कविताकाल—१८३०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(६६५) सीताराम वैश्य सीतापूर बाराबंकी।

कविताकाल—१८३०।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(६६६) सुखानन्द चाचरी वाले।

जन्मकाल—१८०३।

कविताकाल—१८३०।

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

रामचन्द्र-काल।

(१८३१-५५)

(६६७) रामचन्द्र।

इस महाकवि की रचना अनमोल है, परन्तु यह ऐसा कुछ

छिपा हुआ है कि शिवसिंहसरोज में इसका नाम तक नहीं दिया हुआ है। इस कवि के समय, वंश आदि के विषय में हम केवल इतना जानते हैं कि यह ब्राह्मणकुलभूषण था और इसका चरणचन्द्रिका नामक ग्रन्थ पहले पहल संवत् १९२३ में छपा था, अतः यह महाकवि उस समय के प्रथम हुआ होगा। अपना विप्र होना इन्हों ने अपने ग्रन्थ में ही लिख दिया है। हम इनका समय संवत् १८४० के लगभग मानते हैं, क्योंकि मनियारसिंह अपने को लिखते हैं कि "चाकर अखंडित श्रीरामचन्द्र पण्डित को"। इससे विदित होता है कि ये बलियानिवासी थे और महिम्न-भाषा रचना के समय सं० १८४१ में वर्तमान थे।

इन का चरणचन्द्रिका नामक केवल ६२ घनाक्षरियों का एक ग्रन्थ हमारे पास है, परन्तु इस छोटे से एक ही ग्रन्थ द्वारा इस कविरत्न ने वह मोहनी डाल रक्खी है कि इस विषय का इसके जोड़ का दूसरा ग्रंथ खोज निकालना कठिन बात है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। इस में पार्वती जी के चरणों का वर्णन है और विनयविलास, अभयविलास, विभवविलास, विरदविलास, और विजयविलास नामक पाँच अध्याय हैं। रामचन्द्र पंडित ने संस्कृतमिश्रित भाषा लिखी है, अतः उसमें मिलित वर्ण कुछ विशेषता से आ गये हैं। इन्हों ने व्रजभाषा में कविता की, और अनुप्रास का कुछ सूक्ष्म रीति से प्रयोग किया। आप को रूपकों से बड़ा प्रेम था और आप ने बहुत से परमोत्तम रूपक कहे हैं। उद्दंडता भी इन की कविता का एक प्रधान अंग है। इस ग्रन्थ में एक भी छन्द शिथिल नहीं है और उत्कृष्ट छन्दों

की मात्रा बहुत विशेष है। हम इस महा कवि की गणना सेनापति की श्रेणी में करते हैं। जब इस ने केवल चरणों पर ऐसी उत्तम कविता की है, तब अन्य ग्रन्थ भी अवश्य बनाये होंगे, परन्तु शोक का विषय है कि इस कवि के अन्य ग्रन्थ अथवा छन्द नहीं मिलते खोज में इनके एक ग्रन्थ अखिलयन का पता लगा है।

नूपुर बजत मानि मृग से अधीन होत
मीन होत जानि चरणामृत झरनि को।
खंजन से नचैं देखि सुषमा सरद की सी
सचैं मधुकर से पराग केसरनि को॥
रीझि रीझि तेरे पद छवि पै तिलोचन के
लोचन ये अम्ब धारैं केतिक धरनि को।
फूलत कुमुद से मयंक से निरखि नख
पंकज से खिलैं लखि तरवा तरनि को॥ १॥
जारे ताप दाहन के मारे पाप पाहन के
निपट निरासई ये आस काकी धरते।
छूटे सतसंग के अनग बटपार लूटे
कूटे कलि काल के कहाँ ते जाय अरते॥
अति अकुलाय कै डेराय घबराय धाय
त्राहि त्राहि कहि आगे काके धाय परते।
होते जो न अम्ब तेरे चरन सरन तौ
ये अरज गरजवन्द कापै जाय करते॥ २॥
मानिये करीन्द्र जो हरीन्द्र को सरोस हरै
मानिये तिमिर घेरै भानु किरनन को॥

मानिये चटक बाज जुर्रा को पटकि मारै
मानिये झटकि डारै भेक भुजगन को ।
मानिये कहै जो बारि धार पै दवारि औ
अँगार बरसाइबो बतावै बारिदन को ।
मानिये अनेक विपरीति की प्रतीति पै
न भीति आई मानिये भवानीसेवकन को ॥ ३ ॥

(६६८) चन्दन ।

चन्दन वन्दीजन नाहिल पुवायाँ जिला शाहजहाँपूर के रहने वाले थे और गौर राजा केशरीसिंह के यहाँ ये रहते थे। संवत् १८३० के लगभग ये वर्तमान थे। सरोजकार ने केशरीप्रकाश, शृंगारसार, कल्लोलतरंगिनी, काव्याभरण (सं० १८४५), चन्दन सतसई और पथिकबोध नामक इन के छः ग्रन्थों के नाम लिखे हैं, परन्तु गँधोली में इनके नखशिख और नाममाला नामक दो ग्रन्थ और वर्तमान हैं । खोज में पत्रिकाबोध और तत्त्व-संग्रह नामक इन के दो और ग्रन्थ लिखे हैं। इनकी कविता सरस और मनोहर होती थी। हम इन्हें दास की श्रेणी में रखते हैं।

ब्रज वारी गँवारी दै जानैं कहा यह चातुरता न लुगायन में।
पुनि बारिनी जानि अनारिनी है रुचि एती न चन्दन नायन में ॥
छवि रंग सुरंग के बिन्दु बने लगैं इन्द्रबधू लघुतायन में।
चित जो चहैंदी चकि सो रहैंदी केहि दी मेहँदी इन पायन में ॥

ठाकुर जगन्मोहन वर्म्मा ने इनके निम्न लिखित ५ अन्य ग्रन्थों के नाम लिखे हैं:—

शीतवसन्त, कृष्णकाव्य (१८१० सं०), केशरीप्रकाश (सं० १८१७), माघविलास (सं० १८२५) और रसकल्लोलिनी (सं० १८४६)।

ये महाशय फ़ारसी के भी अच्छे कवि थे। इस भाषा में ये अपना नाम सन्दल रखते थे। आप ने दीवानेसन्दल नामक एक फ़ारसी ग्रन्थ भी रचा। एक बार अवध के बादशाह ने इनकी साहित्यपटुतासम्बन्धिनी ख्याति सुन कर इन्हें अपने यहाँ बुलवा भेजा, परन्तु इन्होंने वहाँ जाना पसन्द न कर के यह दोहा लिख भेजा:—

> खरी टूक घर घर धुआ खारी नोन सँजोग।
> येतो जो घर ही मिलै चन्दन छप्पन भोग॥

सरोजकार ने यही कथा "किसी बुँदेलखंडी रईस" के विषय में लिखी है। कहते हैं कि बादशाह का अधिक दबाव पड़ा और तब ये अवध न जाकर काशी जी को चले गये।

(६६६) कलानिधि।

इन महाशय का एक नखशिख हमने ठाकुर शिवसिंह के पुस्तकालय में देखा है, परंतु उसमें संवत् या पता कुछ नहीं दिया है। सरोज में इनका जन्म संवत् १८०७ दिया हुआ है। यह नखशिख उत्कृष्ट बना है। इसमें हर अंग का एक दोहा एवं उसी आशय का

एक कवित्त लिखा गया है । इसमें कुल २८ दोहा व २८ श्रोर छंद हैं । भाषा इसकी प्रशसनीय है । हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं ।

दुति दामिनी मयक छवि सुधा सील उन्मानि ।
रदन पाति वरनत सुकवि रतन काति सम जानि ॥
भुज भूषन मधि लाल दुति स्याम सेति अवरेखि ।
अरुन किरनि मडल सहित राहु च द ढिग देखि ॥
हरी सारी घूँघुट घटा की छवि गहि श्रोट
अनमित छवि छटा दामिनी की जगी है ।
कलानिधि कालिँदी के हरित प्रवाह परि
परिणत चद की किरनि छवि लगी है ॥
कैधैा सोभा सुधा की अलक उरगनि बीच
विमल विलोकि मुनि मनन मैं लगी है ।
सु दरी के बदन बतीसी में रदन पाँति
सीसा में रतन काँति मानैा जगमगी है ॥

(६७०) जन गोपाल ।

ये महाशय मऊ रानीपुर जिला झाँसी के रहने वाले महाकवि हो गये हं । इनकी भाषा एव भावों में जो गम्भीरता पाई जाती है वह सिवा उत्कृष्ट कवियो की रचनाश्रो के श्रैार कहीं भी नहीं मिलती । इन्हों ने सवत् १८३३ में समरसार नामक एक आदरणीय ग्रन्थ वनाया । इनकी रचना बहुतही भव्य श्रोर भावपूर्ण है । हम इनको पद्माकर की श्रेणी में रक्खेंगे ।

थोयि धुरकीली दुरकीली विधु कला भाल
सरसीली भौंहनि समाधि सरसति है।
प्रानायाम सासन कलित कमलासन कै
विघन विनासन की वासना बसति है॥
सिंदुर भुसंड गंड मंडल समीप गज
बदन के रदन की दुति यों लसति है।
साँझ समै छीरनिधि नीर के निकट मानो
दूैज के कलाधर की कला विलसति है॥

एक जन गोपाल महात्मा दादू के शिष्य संवत् १६५७ में भी हो गये हैं। उन्होंने ध्रुवचरित्र रचा।

(८७१) प्रेमी यमन।

इनका बनाया अनेकार्थनाममाला ग्रंथ हमने देखा है। इस में कुल १०३ छंद हैं, जिनमें दोहे विशेषता से हैं एवं कुछ और भी छन्द हैं। इसमें शब्दों के अनेकार्थ कहे गये हैं। भाषा इसकी साधारण और सरल है। इसको पढ़ने से बहुत से शब्दों के अनेकार्थ जाने जाते हैं। यदि इस तरह का बड़ा ग्रंथ हो तो विशेष लाभदायक हो सकता है। इसमें संवत् का कुछ पता नहीं है, परंतु सरोज में इनका जन्म संवत् १७९८ दिया है और ये दिल्ली-निवासी लिखे हैं। इनका कविताकाल १८३५ के लगभग है। हम इनको साधारण श्रेणी में समझते हैं।

चंद्र शब्दार्थ।

चन्द्र मन हंस तार तारिका औ कसतूरी
चंदन औ पृथ्वी गगा ग्रंथन गदत हैं।

वानर श्रौ कुश लता गजनाथ श्रौधपुरी
लंका साँप कामदेव जग मैं चहत हैं॥
खग्ग रिपु ग्रह जन रवि मंडलो प्रमान
मेघ इते शब्द चंद्रमाहु के लहत हैं।
चन्द्रमा सुनर जानि भजो राम रहिमान
नाहीं तो तवा समान ताही को कहत हैं॥

(९७२) मंचित द्विज बुंदेलखंड मऊ महेवा के रहने वाले संवत् १८३६ में वर्तमान थे। इन्होंने सुरभीदानलीला नामक एक बड़ा ग्रन्थ बनाया, जो छतरपूर में हमने देखा है। यह ग्रन्थ हमने अपूर्ण पाया। उस प्रति में (जो हमने देखी) १९२ पृष्ठ हैं और २१ अध्याय पूर्ण हैं तथा बाईसवें अध्याय के ४ छन्द लिखे हैं। यह पूरा ग्रन्थ एक ही छन्द में है, केवल प्रति अध्याय के अन्त में कुछ दोहे या सोरठे हैं। इन्होंने बाललीला तथा यमलार्जुनपतन कहकर दानलीला का वर्णन किया है। श्रीकृष्ण का शिखनख इस कवि ने अच्छा कहा है। इनका एक ग्रन्थ कृष्णायन नामक भी हमने छतरपूर में देखा, जो अपूर्ण है। इसमें कृष्णचरित्र कृष्णखंड के आधार पर विस्तृत रूप से दोहा चौपाइयों में कहा गया है, जो परम प्रशंसनीय है। इनकी कविता परम मनोहर है। हम इन्हें सेनापति की श्रेणी में रक्खेंगे।

उदाहरण

जुलफैं झुलफ व्याल बाला सी घासी दुलती आवैं।
घुँघुरारी कारी सटकारी देखत मन ललचावैं॥

कुंडल लोल अमोल कान के छुवत कपोलन आवैं।
छुटे आपुते खुले जोर छबि बरबस मनहि चुरावैं॥
गोरि बिसाल भाल पर सोभित केसरि की चिन भावै।
ताके बीच बिन्दु रोरी को ऐसो बेस बनावै॥
भृकुटी बंक नैन खजन से कंजन गंजन वारे।
मदभंजन खग मीन सदा जे मनरंजन अनियारे॥

मंचित जी ने कृष्णायन में गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस के ढँग पर कविता की है। गोस्वामी जी का ढँग उतारने में यह कवि बहुत करके सफलमनोरथ हुआ है, और इसकी कविता कुछ कुछ उनमें मिल जाती है। मंचित इस सफलता में बहुत प्रशंसनीय हैं। कथाप्रासंगिक कवियों में इनका पद ऊँचा है।

बाम ओर राजै बर बानी। सुकल सरीर सुकल सुचिसानी॥
बदन सरद ससि बिहँसि बिराजैं। अधर सधर बिम्बा लखि लाजैं॥
कुलिस कनीसी बनी बतीसी। सरद सरोरुह दृग दुति दीसी॥
नखते शिख लगि बनि मनि गहने। झलकन झलक ललकि मन रहने॥
पीत पटम्बर पावक पूरे। स्वर्न समान सुगन्धित रूरे॥

यक कर बर पुस्तक लिये यक कर बीना बैन।
ज्ञानरूप सोभित सदा भगत अनुग्रह देन॥

यहि बिधि गए असुर हम गिरजा। पहुँचे जाय तुरत तट बिरजा॥
अचरज अमित भयो लखि सरिता। दुतियनउपमाकहिसम चरिता॥
कृष्ण देव कहँ प्रिय जमुनासी। जिमि गोकुल गोलोक प्रकासी।
अति बिस्तार पार पय पावन। उभय करा सुघाट मन भावन।

वनचर वनज विपुल बहु पच्छी। अलिअवलीधुनिसुनिअति अच्छी॥
नाना जिनिसि जीव सरि सेवैं। हिंसा हीन असन सुचि जेवैं॥
रतन रचे राजै सोपाना। लसिमनि पुलपुलि लसिमनि जाना॥
सरि समता को कहि सकै सुनिये मुनि सनकादि।
चौरी लामी गहिरता कही कही जय आदि॥

(६७३) मधुसूदनदास।

ये महाराज माथुर चौबे थे। इनका निवासस्थान इटावा था। इन्होंने गोविन्ददास नामक एक विभवसम्पन्न भद्र पुरुष के कहने से संवत् १८३९ आषाढ़ सुदी २ बृहस्पतिवार को रामाश्वमेध नामक एक वृहत् ग्रन्थ रामानुज कूट में बनाना आरम्भ किया। यह ग्रन्थ पद्मपुराण में वर्णित रामाश्वमेध के आधार पर बना है। इसमें रायल अठपेजी साँची के ४४८ पृष्ठ हैं। रामचन्द्र जी ने रावण ब्राह्मण के मारने का पातक समझ कर उसके मोक्ष के लिए अश्वमेध यज्ञ किया था। यज्ञ हय के रक्षणार्थ शत्रुघ्न, पुष्कल (भरत के पुत्र), हनुमान् एवं रामचन्द्र की शेष सेना गई थी और इन लोगों के क्रमशः सुबाहु तथा दमन, विद्युन्माली राक्षस, वीर मणि तथा महादेव जी, सुरथ, और अन्ततोगत्वा रामचन्द्र के पुत्र लव तथा कुश से युद्ध हुए थे। इन्हीं का सविस्तर वर्णन इस बड़े ग्रन्थ में किया गया है। प्रथम दो लड़ाइयों में राम की सेना ने साधारण ही में जय प्राप्त कर ली, परन्तु तृतीय युद्ध में स्वयं शंकर जी से सामना हो गया, अतः यह सेना विजय प्राप्त न कर सकी। तब रामचन्द्र जी ने वहां स्वयं जाकर युद्ध निवारण किया और राजा

वीरमणि युद्ध छोड़ कर सेना के संग अश्वरक्षण में प्रवृत्त हुआ। चतुर्थ युद्ध में राजा सुरथ रामचन्द्र का भक्त था, परन्तु क्षत्रिय-धर्म पालन करने के। यह युद्ध में प्रवृत्त हुआ था। उसका प्रण था कि समस्त सेना जीत कर सब सरदारों को बन्दी कर दूँगा और जब स्वयं रामचन्द्र जी आवेंगे, तब सब सरदारों को छोड़ कर मगहय को भी छोड़ दूँगा। नितान्त उसने अपने प्रण को पूरा किया। पंचम युद्ध में लव ने पहले सब सेना को पराजित किया और शत्रुघ्न तक को मूर्च्छित कर दिया, परन्तु अन्त में शत्रुघ्न और सुरथ ने मिल कर लव को बाँध लिया। इसके पीछे कुश ने आकर सब सेना को पराजित करके लव को छुड़ाया और फिर सीता जी के मिल जाने से विरोध नष्ट हो गया और घोड़ा दे दिया गया। जब घोड़ा लौट कर अयोध्या गया और रामचन्द्र ने सुमन्त से सब युद्धों का हाल पूछा, तब लव कुश का हाल सुन कर उन्होंने लक्ष्मण द्वारा अपने दोनों पुत्रों और सीता को अयोध्या बुला लिया। इसके पीछे भली भाँति यज्ञ समाप्त किया गया। अनन्तर मधुसूदनदास जी ने अपने ग्रन्थ का माहात्म्य कह कर ग्रन्थ समाप्त किया है।

इस कवि ने कथाप्रासंगिक प्रणाली का पूर्ण रूप से अनुसरण किया है। प्रायः चार चौपाइयों के पीछे एक दोहा कहा गया है और इधर उधर अन्य छन्द भी आ गये हैं। कहीं कहीं कई दोहे भी एक साथ कहे गये हैं। चार पदों को मिलाकर एक चौपाई होती है।

मधुसूदनदास जी पूर्ण रूप से गोस्वामी तुलसीदासजी की रीति पर चले हैं। नायकों के शील गुण भी उन्होंने गोस्वामीजी के समानही रखने पर पूरा ध्यान रक्खा है। रामाश्वमेध को दूसरी रामायण बनाने में पूरा श्रम किया गया है।

मधुसूदनदास जी गोस्वामी जी की भांति पूरे भक्त थे। उन्हें कथाओं को विस्तारपूर्वक कहने की अच्छी शक्ति थी। उनकी भाषा प्रशंसनीय है। गोस्वामी जी का अनुकरण होने के कारण इसमें विशेषतया अवधी भाषा का व्यवहार हुआ है। कहीं कहीं व्रजभाषा के भी शब्द ग्रन्थ में मिलते हैं।

इन महाराज की कविता में कितने ही महापुरुषों के वर्णन हुए हैं और इन्होंने उनका आद्योपान्त ठीक ठीक निर्वाह कर दिया है। ऋषियों और राजाओं की बातचीत में भी इन्होंने ऋषियों के महत्त्व का सदैव विचार रक्खा है। ऋषियों और ऋषिपत्नियों का महत्त्व, ब्राह्मणों का पद और राज्यवर्णन एवं पुर, ग्रामादि का स्वरूपदर्शन इत्यादि इनकी कविता में अच्छे पाये जाते हैं। इन्होंने हर एक स्थान पर गोस्वामी जी की भांति वर्णन करने का ध्यान रक्खा है। इनकी कविता के कुछ छन्द उदाहरणस्वरूप नीचे लिखे जाते हैं।

सम्वत बसु दस सत सुनहु पुनि नव तीस मिलाय।
विदित मास आषाढ ऋतु पावस सुखद बनाय॥

शुक्ल पक्ष तिथि द्वैज सुहाई। जीव बार शुभ मंगलदाई॥
हर्षन योग पुनर्वसु रिच्छा। प्रगटी प्रभु जस बरनन इच्छा॥
श्री रामानुज कूट मँझारी। कीन्ह कथा आरम्भ विचारी॥

जेहि विधि व्यास सुन गन गाया। श्री अनन्त मुनिवरहि सुनावा॥
सिय रघुपति पदकंज पुनीता। प्रथमहि बन्दन करौं सप्रीता॥
मृदु मंजुल सुन्दर सब भाँती। ससि कर सरस सुभग नख पाँती॥
प्रणत कल्पतरु तर सब धोरा। दहन अघ तम जन चित चोरा॥
सुविधि कलुष कुंजर घन घोरा। जग प्रसिद्ध केहरि बरजोरा॥
चिन्तामणि पारस सुरधेनू। अधिक कोटि गुण अभिमत देनू॥
जन मन मानस रसिक मराला। सुमिरत भजत विपति विसाला॥१॥
निरखि काल जित कोपि अपारा। विदित होय करि गदा प्रहारा॥
महा वेग युत आवै सोई। अष्टधातु मय जाय न जोई॥
अयुत भार भरि भार प्रमाना। देखिय जमपति दंड समाना॥
देखि ताहि लव हनि इषु चंडा। कीन्ही तुरत गदा श्रौ खंडा॥२॥
जिमि नभ भास मेघ समुदाई। बरषहिं बारि महा भरि लाई॥
तिमि प्रचंड शायक जनु व्याला। हने कीश तन लव तेहि काला॥
भये विकल अति पवनकुमारा। लगे करन तब हृदय विचारा॥
यह अजीत बालक बरजोरा। अब न चले कछु विक्रम मोरा॥
मैं सब भांति भयों बेहाला। केहि विधि उबरहुँ रण विकराला॥
भाजि जाहुँ जो समर बिहाई। तौ प्रभु अग्र लाज अधिकाई॥
कहहिं सकलजन करि उपहासा। भजे मरुत सुत बालक त्रासा॥
पुनि कपीस मन कीन्ह विचारा। कपट मूरछा विनु न उबारा॥३॥

नाम—(६७४) वैष्णवदास बगाल के।

ग्रन्थ—१ गौरगुणगीत।

रचना-काल—१८४०।

विवरण—श्री चैतन्य महाप्रभु का अष्टयाम तथा उनका यशवर्णन ६१ सफ़ा रायल १२ पेजी आकार का छपा हुआ है। कविता साधारण श्रेणी की है। चैतन्य सम्प्रदाय में विशेषतया बंगाली लोग हैं जिन्होंने संस्कृत या बँगला में ग्रन्थ-रचना की है। ये महाशय चैतन्य वाली गौरिया सम्प्रदाय के थे।

(९७५) नील सखी जी ने संवत् १८४० के लगभग बानी नामक एक ग्रन्थ रचा, जिसमें ११० पद हैं। यह ग्रन्थ हमने छतरपूर में देखा। ये महाशय गौर सम्प्रदाय के थे, जो महाप्रभु चैतन्य की चलाई हुई है। ये आदि में ओड़छे के वासी थे, पर पीछे से श्री वृन्दावन में रहने लगे। इनकी कविता बड़ी ही मनोहर होती थी। हम इनको तोष कवि की श्रेणी में रक्खेंगे।

जै जै विसद व्यास की वानी।
मूलाधार इष्ट रस में उतकरष भगति रस सानी॥
लोक वेद भेदन ते न्यारी प्यारी मधुर कहानी॥
स्वादिल सुचि रुचि उपजै गावत मृदु मन मान अघानी॥
कलि के कलुष विदारन कारन तीछन तरल कृपानी।
रस सिंगार सरित जमुना सम बर धारा घहरानी॥
विधि निषेध गिरि वर तरु तोरत हरि जस जलधि समानी।
हरि लीला सागर ते रस भरि बरसै सदा सोहानी॥

(९७६) देवकीनन्दन।

कन्नौज के निकट उससे एक मील की दूरी पर मकरन्द नगर

नामक एक ग्राम है, जिसे हमने कई बार देखा है। इसमें कान्यकुब्ज ब्राह्मण बहुतायत से रहते हैं। इसी ग्राम में शुक्ल हरिदास रहते थे। उनके पुत्र नाथ, उनके मधुराम, और उनके सबली उत्पन्न हुए। इन्हीं सबली शुक्ल के शिवनाथ, गुरुदत्त और देवकीनन्दन नामक तीन पुत्ररत्न हुए। देवकीनन्दन का जन्मकाल ठाकुर शिवसिंहजी ने संवत् १८०१ माना है, और यह यथार्थ भी जँचता है, क्योंकि इन्होंने शृंगारचरित नामक ग्रन्थ संवत् १८४१ में और अवधूत-भूषन संवत् १८५७ में बनाया।

देवकीनन्दन जी अवधूतसिंह के यहाँ रहते थे। बैकवार वंशी पूरणमल के पुत्र नथमलसिंह और सूरतिसिंह हुए। नथमल-सिंह के अमरसिंह, तेजबलीसिंह और धीरजसिंह नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। इन्हीं तेजबलीसिंह के अवधूतसिंह पुत्र हुए थे। ये महाराज रुद्दामऊ जिला हरदोई में रहते थे। रुद्दामऊ मल्लावें के समीप है। संवत् १८४१ तक देवकीनन्दन अवधूतसिंह के यहाँ नहीं गये थे, क्योंकि शृंगारचरित्र इन्होंने किसी राजा या आश्रय-दाता को समर्पित नहीं किया है। सरोज में शिवसिंह जी ने कहा है कि उन्होंने देवकीनन्दन का सिवा नखशिख के कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं देखा, परन्तु उन्होंने लिखा है कि उनके "दो तीन सौ स्फुट कवित्त हमारे पास हैं।" हमारे पास इनका नखशिख अथवा स्फुट काव्य नहीं हैं, परन्तु शृंगारचरित्र और अवधूतभूषण नामक इनके दो ग्रन्थ हमारे पुस्तकालय में वर्तमान हैं। खोज में सरफ़राजचन्द्रिका ग्रन्थ भी इनका बनाया निकला है।

शृंगारचरित्र संवत् १८४१ में बनाया गया था। इसमें नायक तथा नायिकाभेद, भावादि, हाव, गुण, अनुप्रास और अर्थालंकार का वर्णन है। यह ग्रन्थ अच्छा और इसकी भाषा ललित है। अलंकार विभाग प्रायः दोहों में कहा गया है। देवकीनन्दन का पांडित्य बहुत सराहनीय है। इनकी कविता में दो चार जगह कूट भी पाये जाते हैं।

अवधूतभूषण संवत् १८५७ में समाप्त हुआ। इसमें कवि एवं राजवंश का पूरा वर्णन किया गया है। तदनन्तर अर्थालंकार एवं शब्दालंकार का ब्योरा है। मुख्य भाग अवधूतभूषण एवं शृंगारचरित्र का प्रायः एक ही है, अवधूतभूषण में केवल आदि का कुछ वर्णन नया है। वस्तुतः इन दोनों ग्रन्थों को एक ही समझना चाहिए। देवकीनन्दन की कविता सराहनीय है। उसमें ऊँचे भाव बहुतायत से आये हैं और कहीं कहीं कुछ क्लिष्टता भी पाई जाती है। काव्यांगों का चमत्कार इस कवि ने अच्छा दिखाया है और पाठकों की विचारशक्ति भी पैनी करने का मसाला छन्दों में रक्खा है। इनको हम पद्माकर की कक्षा में रखते हैं।

बैठी रंग रावटी में हेरत पिया की बाट
आये न बिहारी भई निपट अधीर मैं।
देवकीनँदन कहै स्याम घटा घिरि आई जानि
गति प्रलै की डरानी बहु बीर मैं॥
सेज पै सदा सिव की मूरति बनाय पूजी
तीनि डर तीनहू की करी ततबीर मैं।
पाखन में सामरे सुलाखन में अखैबट
ताखन में लाखन की लिखी तसबीर मैं॥

मोतिन की माल तोरि चीर सब चीरि डारे
फेरि कै न जैहौं आली दुख बिकरारे हैं।
देवकीनँदन कहै धोखे नाग छौनन के
अलकैं प्रसून नोचि नोचि निरवारे हैं॥
मानि मुख चन्द भाव चोंच दई अधरन
तीनो ये निकुंजन मैं एके तार तारे हैं॥
ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे तैसे
मोर मतवारे त्यों चकोर मतवारे हैं॥

(९७७) मनियारसिंह।

ये महाशय काशी-निवासी क्षत्रिय थे। इन का संवत् शिवसिंह-सरोज में १८६१ लिखा है, परंतु इन्होंने महिम्न में अपना संवत् यों दिया हैः—

संवत के अक रंध्र वेद वसु चन्द पूरो
चन्द्रमा सरद को वरद धर्म घन को।
चाकर अखंडित श्री रामचन्द पंडित को
मुख्य सिष्य कवि कृष्णलाल के चरन को॥
मनियार नाम स्याम सिंह को तनय भो
उदय छत्रि बस कासी पुरी निवसन को।
पारवती कंत जस जग मैं दिगत कियो
भाषा अर्थवंत पुष्पदंत महीमन को॥

इससे विदित होता है कि ये स्यामसिंह के पुत्र रामचन्द पंडित के सेवक और कृष्णलाल के शिष्य काशीवासी क्षत्रि

थे और इन्होंने सं० १८४१ में महिम्न का अनुवाद किया । अतः इनका जन्म सं० १८०० के लगभग माना जाता है । इनकी रचना से हमने सौंदर्यलहरी, जिसमें १०३ छंद हैं, हनुमत् छब्बीसी (२६ छंद), भाषामहिम्न (३५ छंद) और सुंदरकांड (६३ छंद) देखे हैं और वे हमारे पुस्तकालय में प्रस्तुत हैं । ये अपना उपनाम मनियार और यार रखते थे । इन्होंने अपनी सम्पूर्ण रचना देवपक्ष में की है । इनकी कविता में से सौंदर्यलहरी एवं सुंदरकांड रामायण के आधार पर लिखे गये हैं, और हनुमानछब्बीसी स्वतंत्र रचना है । इन ग्रंथों की कविता प्रशंसनीय और भाषा संस्कृतमिश्रित ब्रजभाषा है । संस्कृत मिश्रित होने के कारण इनकी भाषा कुछ तीक्ष्ण परंतु ज़ोरदार होती थी । हम इनको तोष की श्रेणी का कवि समझते हैं । खोज में भावार्थचन्द्रिका नामक इनका एक और ग्रन्थ मिला है । उदाहरणः—

सौंदर्यलहरी से ।

किंकिनी क्वनित पद नूपुर रनित
　　अगनित सुबरन आभरन झनकार की ।
दिव्य पट भव्य भाल कुंकुम विपंक मुख
　　मंडल मयंक शोभा सरद सुधार की ॥
मनियार बान धनु धारिनि सहित स्रणि
　　पास त्रास हारिनि सुप्रभा भुज च्यारि की ।
दामिनि सों देहद्युति सर्वजग स्वामिनि सो
　　नैनपथगामिनि है भामिनि पुरारि की ॥

तेरे पदपङ्कज पराग राजै राजेश्वरी
बेद बंदनीय बिरदावलि बढ़ी रहै।
ताकी त्रिनुताई पाय धाता ने धरित्री रची
जापै लोक लोकन की रचना कढ़ी रहै॥
मनियार आदि विष्णु सेवें सबै पोषत सौं
सेस ह्वैके सदा सीस सहस मढ़ी रहै।
सोई सुरासुर के सिरोमनि सदाशिव के
भसम के रूप ह्वै सरीर पै चढ़ी रहै॥

हनुमतछब्बीसी से।

श्रमय कठोर बानी सुनि लछिमन जू की
मारिबे को चाहि जो सुधारी खल तरवारि।
बार हनुमंत तेहि गरजि सहास करि
झपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि॥
पुच्छते लपेटि फेरि दतन दरदराइ
नयन बकोटि चोथि दत महि डारि डारि।
उदर विदारि मारि लुत्थन को टारि बीर
जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि॥

छत्री वर मनियार वासी बासी जानिए।
जापै पवनकुमार दयावत सुखप्रद सदा॥
मृगपद मञ्जुल पास सरयू तट सुरसरि निकट।
बलिया नगर निवास भयो कछुक दिनते सुमति॥

सुंदरकाण्ड से ।

देख्यो जाय गढ़ महादुर्गम अटूट जाको
नाम सुने पुरहूत पाय थहरात हैं ।
कंचन दिवारैं दीह बुरज बलंद चहुँ ओर
घोर खदक समुद्र घहरात हैं ॥
यार कहै अति उच्च द्वार दुरापार जरे कुलिस
किँवार छबि पुंज छहरात हैं ॰
छत्र मेघ डंबर दिगंबर निलय मानों
अँबर लैा अरुन पताके फहरात हैं ॥
प्रलै काली रौद्र अट्टहास किलकारे
ललकारै हांक मानो काल घटा घहरात है ।
लंक जारि ठाढ़े सिंधु तट के निकट कोटि
कोटि विज्जु छटा की सी छटा छहरात है ॥
यार कहै प्रातकाल बाल रवि मंडल
विसाल मुख मंडल ठवनि ठहरात है ।
तामे जोति ज्वाल जाल माल की लपट भरी
काल कैसी जीभ पूँछ लाल लहरात है ॥

महिम्न से ।

मेरो चित्त कहाँ दीनता ते अति दूबरो है
अधरम धूमरो न सुधि के सँभारे पै ।
कहाँ तेरी रिद्धि कवि बुद्धि धारा ध्वनि तैं
त्रिगुण ते परे है दरसात निरधारे पै ॥

मनियार याते मति थकित जकित ह्वै कै
भक्ति बस धरि उर धीरज विचारे पै।
विरची कृपाल वाक्यमाल या पुहुपदंत
पूजन करन काज चरन तिहारे पै॥

नाम—(९७८) कृपानिवास।

ग्रन्थ—१ लगनपचीसी, २ बसन्तविहार (१८५ पद), ३ रामरसामृतसिन्धु (५०० बड़े पृष्ठ), ४ प्रार्थनाशत (दोहों में ११२), ५ अनन्यचिन्तामणि (भक्तिवर्णन), ६ मतमतान्तरनिर्णय, ७ जन्ममरणव्यवस्था (दोहा चौपाइयों में), ८ श्री रामचन्द्र जू का अष्टयाम (२६८ पृष्ठ), ९ समयपद्धति (१०१ पद), १० वर्षमहोत्सव (८३ पृष्ठ), ११ विवाहसमय (१८ पृ०), १२ सिद्धान्तपदावली, (२९ पृ०), १३ सम्प्रदायनिर्णय, १४ माधुरीप्रकाश, १५ भावनासत, १६ अष्टयाम, १७ सीतारामरहस्य, १८ प्रीतिप्रार्थना, १९ रासपद्धति।

रचनाकाल—१८४३।

विवरण—छत्रपूर राज्य के पुस्तकालय में। कविता में साधारण श्रेणी।

लगन निवाहे ही बनि आवे।
भाव कुभाव बचाव जान दे नेही तबै कहावै॥
दृग अटके मन सौंपि दियो तब प्रीतम हाथ बिकावै।
अपनो मन न रह्यो भयो परबस कैसे न्याव चुकावै॥

(९७९) छत्रकुँवरि बाई।

ये बाई जी रूपनगर के राजा सरदारसिंह की बेटी और

सुप्रसिद्ध नागरीदास की पोती थीं। इनका विवाह संवत् १८३१ में कोटडे के खीची गोपालसिंह के साथ हुआ था। इन्होंने संवत् १८४५ में प्रेमविनोद नामक एक ग्रन्थ बनाया। इनकी कविता सरस है।

> स्याम सखी हँसि कुँवरि दिसि बोली मधुरे बैन।
> सुमन लेन चलिए अबै यह बिरियाँ सुखदैन ॥
> यह बिरियाँ सुखदैनि जानि मुसुकाय चलीं जब।
> नवल सखी करि कुँवरि सग सहचरि बिथुरीं सब ॥
> प्रेमभरी सब सुमन चुनत जित तित साँभी हित।
> ए दुहुँ बेबस अंग फिरत निज गति मति मिश्रित ॥

स्त्री होने के कारण इनका प्रयत्न बहुत सराहनीय है, परन्तु काव्य की दृष्टि से इनकी गणना साधारण श्रेणी में हो सकती है।

(६८०) महाराज रामसिंह।

ये महाराज छत्रसिंह के पुत्र नरवल गढ के राजा थे। इनका कविताकाल संवत् १८४५ था। इन्होंने अलंकारदर्पण नामक दोहों में अलंकारों का तथा रसनिवास व रसविनोद रस भेद के अच्छे ग्रन्थ बनाये हैं। हम इनको तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

> सोहत सुन्दर स्याम सिर मुकुट मनोहर जोर।
> मनो नील मनि सैल पर नाचत राजत मोर ॥
> दमकन लागीं दामिनी करन लगे घन रोर।
> बोलत माती कोइलैं बोलत माते मोर ॥

(९८१) भान कवि।

इन महाशय का पूरा पता इनके काव्य से नहीं चलता, सिर्फ़ इतना विदित होता है कि ये राजा ज़ोरावरसिंहजी के पुत्र थे और राजा रनजोरसिंह के यहाँ रहते थे। ये रनजोरसिंह महाराजबुँदेला ठाकुर सम्भवतः महाराज छत्रसालजी के वंशधर थे, क्योंकि इन्होंने रनजोरसिंह जी का "पंचम" की उपाधि सहित वर्णन किया है। पंचम की उपाधि बुँदेला ठाकुरों के अतिरिक्त और किसी की नहीं हो सकती। छत्रप्रकाश में कई जगह यह उपाधि छत्रसाल को दी गई है। पंचमसिंह बुँदेलों के पूर्वज और बड़े प्रतापी थे, इसी कारण उनके कुल वाले अपने नाम के आगे पंचम लिखना सम्मानबोधक समझते हैं। अतः जान पड़ा कि महाराज रनजोर बुँदेला थे, और इन्हीं के आश्रय में भान ने यह ग्रन्थ "नरेन्द्र-भूषन" बनाया। इसकी रचना संवत् १८४५ में हुई, अतः इनका जन्मकाल सम्भवतः सवत् १८०० के लगभग होगा। इसमें कुल १७७ छंद हैं, जिनमें अलंकारों का पूरा वर्णन किया गया है। भाषा इसकी व्रजभाषा है और वह मनोहर एवं ज़ोरदार है। इसमें बहुधा उदाहरणों में राजा रनजोरसिंह के यश, युद्ध-विजय, कीर्ति इत्यादि वर्णित हैं। इसमें लगभग आधे उदाहरण वीर, अद्भुत, भयानक इत्यादि रसों के और आधे शृंगार रस के होंगे। ग्रन्थ अच्छा है और उदाहरण व लक्षण स्पष्ट हैं। हम इनको तोष की श्रेणी में रखते हैं। शिवसिंहसरोज मे एक भानदास बंदीजन चरखारी, के लिखे हैं, परन्तु उनका रूपविलास पिंगल बनाना कहा गया

है, और उनकी उत्पत्ति संवत् १८५५ की दी है। इन भान ने संवत् १८४५ में यह ग्रन्थ रचा, अतः ये महाशय सरोज में लिखित भानदास चरखारीनिवासी नहीं जान पड़ते, क्योंकि इनके और उनके समय में कम से कम ४० वर्ष का अंतर है और इन्होंने रूपविलास भी नहीं बनाया।

"पंचम मसाल रनजोर भुवपाल तेरी कीरति बिसाल तीनि लोक न समाति है"।

रन मतवारे के जोरावर दुलारे तुव,
बाजत नगारे भए गालिब दिगीस पर।
दल के चलत भरभर होत चारौ ओर,
चालति धरनि भारी भार सो फनीस पर॥
देखि कै समर सनमुख भयो ताही समे,
बरनत भान पैज कै कै बिसे बीस पर।
तेरी समसेर की सिफति सिंह रनजोर,
लखी एकै साथ हाथ अरिन के सीस पर॥
घन से सघन स्याम इन्दु पर छाय रहे,
बैठी तहाँ असित दुरेफनि की पाँति सी।
तिनके समीप तहाँ खंज कैसी जोरी लील
आरसी से अमल निहारे बहु भाँति सी॥
ताके ढिग अमल ललोहैं बिबि बिद्रुम से,
फलकति ओप जामैं मोतिन की पाँति सी।
भीतर ते कढ़ति मधुर बीन कैसी धुनि,
सुनि करि भान परि कानन सुहाति सी॥

(६८२) हठी।

इन्होंने संवत् १८४७ में राधाशतक नामक एक मनोहर ग्रन्थ बनाया। शिवसिंह जी ने लिखा है कि ये महाशय व्रजवासी थे। जान पड़ता है कि ये माथुर चौबे थे। इनकी भाषा व्रज भाषा है और इनके छन्द बहुत मधुर और सरस हैं, जो प्रायः घनाक्षरी होते हैं। हम इनकी गणना पद्माकर कवि की श्रेणी में करते हैं।

> बैठी रंग भरी है रँगीली रंग रावटी मैं
> कहाँ लौं सराहौं सुन्दराई सिरताज की।
> चाँदनी की, चम्पक की, मैनका तिलोत्तमा की,
> रम्भा रमा रति की निकाई कौन काज की॥
> मोतिन के हार गरे, मोतिन सों माँग भरे,
> मोतिन सों बेनी गुही हठी सुख साज की।
> चाल गजराज मृगराज कैसो लंक
> द्विजराजसो बदन रानी राजै व्रजराज की॥

> ऋषि सुवेद बसु शशि सहित निरमल मधु को पाय।
> माधव तृतिया भृगु निरखि रच्यो ग्रन्थ सुखदाय॥

(६८३) थान कवि।

थान कवि ने संवत् १८४८ में दलेलप्रकाश नामक ग्रन्थ बनाया। इन्होंने अपना वर्णन अच्छा कर दिया है:—

> बासी बैसवारे को विलासी खेरे डौंडिया को
> गिरिजा गिरीश को विरद करौं गान हौं।

पोना महासिंह को परोता लाल राय जू को
सुन तौ निहाल को भजत भगवान हौं ॥
नाती तौ धरमदास जू को कवि चन्दन को
भैनो शिष्य सेवक कहाऊँ कवि थान हौं ।
साहेब मेहेरबान दानि श्री दलेल जू को
ग्रन्थ बरनन करौं विविध विधान हौं ॥

समत अठारह सै जहाँ अड़तालीस विचार ।
शुक्र पक्ष दशमी सुतिथि माघ मास गुरुवार ॥
दानि दलेलप्रकास यह तब लीन्हों अवतार ।
मुद मंगल कल्यानमय रच्यो ग्रन्थ सुखसार ॥

इससे विदित होता है कि थानराम के प्रपितामह लालराय, पितामह महासिंह, पिता निहाल राय, मातामह धरमदास, मामा चन्दन कवि, और गुरु सेवक थे । ये महाशय डौंडिया खेरे में रहते थे । यह ग्राम बैसवारा ज़िला रायबरेली में एक प्रसिद्ध स्थान है। यह राना बेनीमाधव का वासस्थान था। थान कवि ने अपना कुल नहीं लिखा और न इनके कुल का हाल शिवसिंह-सरोज से विदित होता है, क्योंकि इस ग्रन्थ में थान कवि का नामही नहीं लिखा है। शिवसिंह जी ने थान के मामा चन्दन को भाट लिखा है। इससे विदित होता है कि ये भी भाट थे। थान-राम के जन्म-मरण आदि का संवत् ज्ञात नहीं है।

थानराम ने दलेलसिंह गौर के नाम पर अपना ग्रन्थ बनाया । दलेलसिंह के पिता जबरसिंह, पितामह महासिंह, और

प्रपितामह कीर्तिमल गौर थे। ये लोग बैसवारे के चँड़रा नगर में रहते थे। थान ने लिखा है कि इन्होंने गौरा देवा जीत कर ले लिया था।

दलेलप्रकाश में वन्दना के पीछे कविवंश और राजवंश का वर्णन एक अध्याय में है। दलेलप्रकाश में एकादश अध्याय और क़रीब साढ़े तीन सौ के छन्द हैं। इसमें गणविचार, गुण-दोष, भावभेद और रसभेद का वर्णन है। आदि में इन्होंने जिस जिस छन्द का नाम आ गया है उसका लक्षण भी उसी स्थान पर कह दिया है। इसी प्रकार जहाँ किसी छन्द में कोई मुख्य अलंकार आगया, वहाँ उसका भी लक्षण कह दिया गया है। एक स्थान पर राग रागिनियों का नाम आया, वहाँ इन्होंने उनका भी वर्णन कर दिया है। यह क्रम सम्भवतः तृतीयांश ग्रन्थ के ख़तम हो जाने पर छूट गया है। ग्रन्थ के अन्त में कुछ चित्रकविता भी की गई है। इन्होंने चित्रकाव्य के सम्बन्ध में हस्ताक्षरों का एक छन्द कहा है जो बहुत अच्छा है। इनकी कविता में अच्छे छन्द बहुतायत से हैं, और भाषा भी उत्तम है। आपने अनुप्रास का समावेश भी किया है, पर अधिकता से नहीं। कुल मिलाकर थानराम की कविता बहुत सन्तोषजनक है। इनको हम पद्माकर कवि की श्रेणी में रखते हैं।

जै लम्बोदर शम्भुसुवन अम्भोरुहलोचन।
चरचित चन्दन चन्द्रभाल वन्दन रुचि रोचन॥
मुख मंडल गंडालि गंड मंडित श्रुति कुंडल।
वृन्दारक वर वृन्द चरन वन्दत अखंड बल॥

वर अभय गदा अंकुश धरन विघनहरन मंगलकरन।
कवि थान मवासी सिद्धि वर एक दन्त जे तुव सरन ॥ १ ॥

दासन पे दाहिनी परम हंसबाहिनी हो
पोथी कर बीना सुर मंडल मढत है।
आसन कँवल अंग अम्बर धवल मुख
चन्द सो अवल रंग नवल चढत है ॥
ऐसी मातु भारती की आरती करत थान
जाको जस विधि ऐसो पंडित पढत है।
ताकी दयादीठि लाख पाथर निराखर के
मुख ते मधुर मंजु आखर कढत है ॥ २ ॥

कलुष हरनि सुख करनि सरन जन
बरनि बरनि जस कहत धरनि धर।
कलिमल कलित बलित अघ खल
गन लहत परम पद कुटिल कपट तर ॥
मदन कदन सुर सदन बदन शशि
अमल नवल दुति भजत भगत वर।
सुर सरि तुव जल परस दरस करि
सुरसरि सम गति लहत अधम नर ॥ ३ ॥

नाम—(६८४) खुमानसिंह, खुमान नखचशीचारण, करौली।
ग्रन्थ—स्फुट।
कविता-काल—१८५० के लगभग।
विवरण—ये महाराना मदनपाल के कवि थे। काव्य साधारण श्रेणी का है।

तिलक दिली को निरभै को नय तेजपुंज
अमर जिले को ओट आदिर अनीप को।
छत्रिन को छत्र है नछत्रपति जू को वंस
जगत प्रसंस जस गुजन समीप को॥
करन उदार देवनरु सो पुनीत सरि
उमरदराज साज साहस प्रदीप को।
चंदन सो चंद सो चहूँघा चारु चंद्रिका सो
दीप दीप छायो जस मदन महीप को॥

(६८५) बेनी बन्दीजन, बेंती, जिला रायबरेली वाले।

ये महाशय इसी नाम के असनी वाले कवि से इतर हैं। इनके दो ग्रन्थ ग्रेगार बहुत से भँड़ौआ छन्द हमारे देखने में आये हैं। अपने टिकैतरायप्रकाश में इन्होंने अपने कुल का वर्णन किया है, जिससे विदित होता है कि ये अवध के प्रसिद्ध वजीर महाराजा टिकैतराय के आश्रय में रहते थे। इनके पूर्वपुरुष साहेब राय ने जयपूर, जोधपूर ग्रेगार उदयपूर में मान पाया था ग्रेगार जम्मू, बद्रीनाथ ग्रेगार केदारनाथ की भी यात्रा की थी। कहते हैं कि लखनऊ के प्रसिद्ध कवि बेनीप्रवीन से एक बार इनसे वाद हुआ था ग्रेगार तबसे इन्होंने उन्हें प्रवीन बेनी की उपाधि दी। इनके पहले ग्रन्थ 'टिकैतरायप्रकाश' में अलंकारों का विषय कहा गया है। पंडित युगलकिशोर के पास यह अपूर्ण है, परन्तु हमने यह पूर्ण ग्रन्थ भी देखा है, जो लगभग हस्तलिखित ५० पृष्ठ का होगा। इसकी रचना बहुत प्रशंसनीय न होने पर भी अच्छी है। यह संवत

१८४९ में बना। इनके द्वितीय ग्रन्थ रसविलास में रसभेद और भाव-भेद का वर्णन है, जो संवत् १८७४ में बना। आकार में यह पद्माकरकृत जगद्विनोद के बराबर है और रचना भी इसकी मनोहर है। रसविलास लछिमनदास के नाम से बना है। इस ग्रन्थ से विदित होता है कि बेनी कवि स्वामी हितहरिवंश के मतानुयायी थे। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त बेनी के बनाये हुए ३६ भँड़ोआ हस्तलिखित हमने देखे हैं। ये तीनों ग्रन्थ पंडित युगलकिशोर के पुस्तकालय में हैं। इनके अतिरिक्त बेनी के बहुत से भँड़ौआ छन्द भँड़ोआ-संग्रह में मिलेंगे, जो भारतजीवन प्रेस में छपा है। इनका प्रथम ग्रन्थ साधारण और द्वितीय अच्छा है, परन्तु इनकी सबसे उत्कृष्ट रचना भँड़ौआ ही में पाई जाती है। ऐसे भड़कीले भँड़ौआ किसी भी प्राचीन कवि ने नहीं बनाये। इस कवि ने अनुप्रास और जमक का बड़ा ध्यान रक्खा है और यशवर्णन, शृंगार, नीति, और स्फुट विषयों पर कविता की है। इन्होंने संसार की असारता पर भी काव्य किया है। इन्होंने महाराजा टिकैतराय के आमों की प्रशंसा और दयाराम के आमों की दो छन्दों द्वारा भारी निन्दा की है। एक स्थान पर बुरी रज़ाई पाने पर भी आपने भँड़ौआ कह डाला। लखनऊ के कवि ललकदास की निन्दा में इन्होंने तीन भँड़ौआ कहे। इनको हम पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं।

जनक है ज्ञान को, बखान को युधिष्ठिर है,
दान को दधीचि कलि काम तरवर है।
प्रभु प्रजा पालन को, काल अरि जालन को
सुकवि मरालन को मान सरवर है॥

दौलति कुबेर बेनी मेरु मरजाद को है,
मुकुट महीपन को आदि इरवर है।
राजन को राजा महाराजा श्री टिकैत राय
जाहिर जहान में गरीबपरवर है॥

(टिकैतरायप्रकाश)।

अलि डसे अधर सुगन्ध पाय आनन को,
कानन में ऐसे चारु चरन चलाये हैं।
फाटि गई कंचुकी लगे ते कंट कुंजन के,
बेनी बरहीन खोली बार छवि छाये हैं॥
बेग ते गवन कीनो धक धक होत सीनो,
ऊरध उसासैं तन स्वेद सरसाये हैं।
भली प्रीति पाली बनमाली के बुलाइबे को
मेरे हेत आली बहुतेरे दुखपाये हैं॥

(रसविलास)

घर घर घाट घाट बाट बाट ठाट ठटे,
वेला औ कुवेला फिरैं चेला लिये आस पास।
कविन सों बाद करैं, भेद बिन नाद करैं,
महा उनमाद करैं धरम करम नास॥
बेनी कवि कहै बिभिचारिन को बादशाह
अतन प्रकास तन सतन सरम तास।
ललना ललक, नैन मैन की झलक, हँसि
हेरत अलक रद खलक ललक दास॥

चोंटी की चलावै को मसा के मुख आपु जाय,
स्वास की पवन लागे कोसन भगत है।
ऐनक लगाये मरु मरु कै निहारे जात,
अनु परमानु की समानता खगत है॥
बेनी कवि कहै हाल कहाँ लौं बखान करौं
मेरी जान ब्रह्म को विचारिबो सुगत है।
ऐसे आम दीन्हे दयाराम मन मोद करि
जाके आगे सरसों सुमेरु सो लगत है॥

(९८६) छेदीराम वैश्य [नेह]।

इन्होंने संवत् १८४९ में नेहपिंगल नाम का ग्रन्थ बनाया, जिसमें नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, मर्कटी, पताका, इत्यादि कहे गये हैं। रचना इसकी साधारण है। अपने नाम के अतिरिक्त और इस ग्रन्थ में उन्होंने कोई पता इत्यादि नहीं लिखा है। इसमें २६० अनुष्टुप श्लोकों के बराबर रचना है। हम इनको साधारण श्रेणी में रखते हैं।

(९८७) भौन कवि।

ये महाशय ब्रह्मभट्ट (भाट) थे। इनके पिता का नाम महापात्र खुशालचन्द था। ठाकुर शिवसिंह जी ने लिखा है कि ये नरहरिवंशी बन्दीजन बेती जिला रायबरेली में रहते थे। इनके पुत्र दयाल कवि संवत् १९३४ में, जब शिवसिंहसरोज बना था, वर्तमान थे। शिवसिंह जी ने भौन का जन्मकाल संवत् १८८१ माना है, परंतु इनका बनाया शक्तिचिंतामणि ग्रंथ सं० १८५१

का खोज में मिला है, इस कारण सरोज का संवत् अशुद्ध जान पड़ता है। इनका जन्मकाल सं० १८२५ समझना चाहिए। सरोजकार ने लिखा है कि भौन ने शृंगाररत्नाकर नामक अलंकार ग्रन्थ बनाया। यह ग्रन्थ हमने नहीं देखा, परन्तु 'रसरत्नाकर' नामक इनका एक द्वितीय ग्रन्थ पंडित युगलकिशोर के पुस्तकालय में वर्तमान है और इस समय हमारे सामने रक्खा है। इसमें ४३० छन्द हैं, और रसभेद तथा भावभेद का वर्णन है। यह बड़ा अच्छा ग्रन्थ है, परन्तु भाषा के बहुतेरे ग्रन्थों की भाँति अभी यह भी मुद्रित नहीं हुआ है। इस कवि की भाषा शुद्ध व्रजभाषा है, और कविता सर्वांगसुन्दर और निर्दोष है। भौन कवि को हम पद्माकर की श्रेणी में रखते हैं। आपने रूपक अच्छे कहे हैं।

> बार बार कोयन कनौटी बदलत बर
> विमल विसाल भाल छिति पर फेरे हैं।
> चूकत न चाय भरे चौकरी चलायबे में
> चतुर चलांक चित चातुर के चेरे हैं॥
> भौन कवि कहै बाग भौहनि के ठासे नेक
> नाचत नटा से नट निविड़ निबेरे हैं।
> मैन आतुरी से उड़यो चाहें चातुरी से
> बीर करत खुरी से ये तुरी से नैन तेरे हैं॥

(६८८) कृष्णदास।

कृष्णदास मिरजापुर वाले ने माधुर्यलहरी नामक ग्रन्थ भादों संवत् १८५२ से वैशाख १८५३ तक बनाया।

यह ग्रन्थ छतरपूर में है, जिससे इनके विषय की सब बातें जान पड़ती हैं। ये अष्टछाप वाले प्रसिद्ध कृष्णदास से इतर कवि थे। इनका ग्रन्थ ४२० भारी पृष्ठों का है, जिसमें विविध छन्दों में कृष्णकथा कही गई है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है। ये विन्ध्याचल के निकट गंगाजी के समीप गिरजापत्तन नामक ग्राम में रहते थे।

कैान काज लाज ऐसी करै जो अकाज
अहो बार बार कहा नरदेह कहाँ पाइये।
दुर्लभ समाज मिल्यो सकल सिधान्त जानि
लीला गुन नाम धाम रूप सेवा गाइये॥
बानी की सयानी सब पानी में बहाय दीजै
जानी सो न रीति जासों दम्पति रिझाइये।
जैसी जेसी गही जिन लही तैसी नैनन हूँ
धन्य धन्य राधा कृष्ण नित ही गनाइये॥

भागवत भाषा पद्य (११३८ पृष्ठ) श्रौर भागवत नामक इन के दो ग्रन्थ हैं।

इस समय के अन्य कवि गण।

नाम—(९८९) कुंजकुँवर (कुंजदास) ओड़छा।
ग्रन्थ—ऊषाचरित्र।
कविता काल—१८३१।

नाम—(९९०) प्यारेलाल तिवारी, बँभौरी बैसवाड़े के।

ग्रन्थ—(१) आनन्दलहरी (बारह खडी) (७८ पृष्ठ), (२) अयनानन्दलहरी (८७ पृष्ठ)।

कविता-काल—१८३१।

विवरण—छतरपूर में देखे। हीन श्रेणी।

नाम—(९९१) बाजेस।

कविता-काल—१८३१।

विवरण—इन्होंने गोसाईं अनूपगिरि की तारीफ में कविता की है। साधारण श्रेणी।

नाम—(९९२) भूपति, गोविंदपुर।

ग्रन्थ—(१) सुमतिप्रकाश, (२) रामचरित्र रामायण।

कविता-काल—१८३१।

विवरण—महाराजा पटियाला के यहाँ थे।

नाम—(९९३) प्रतापसिंह महाराजा, उपनाम मोदनारायण, दरभंगानरेश।

कविता काल—१८३२।

विवरण—विद्यापति ठाकुर की रीति पर कविता की है।

नाम—(९९४) भारती (स्यात् घोडछानरेश महाराजा भारती चन्द)।

ग्रन्थ—रसशृंगार।

कविता-काल—१८३२।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(९९५) भीखन जी।

ग्रन्थ—(१) ब्रजजीनरामावरी, (२) सारंगा की कथा (१८३४)।

कविता-काल—१८३२ ।

विवरण—राजपूतानी भाषा में है ।

नाम—(९९६) भीष्म जैनी साधू ।

ग्रन्थ—कालवादीरामतत्र ।

जन्मकाल—१८०० ।

कविता-काल—१८३२ ।

नाम—(९९७) रूपदास ।

ग्रन्थ—सेवादास की परिचई (पृ० ३०) ।

कविता-काल—१८३२ ।

नाम—(९९८) लाल कवि बनारसी ।

ग्रन्थ—(१) आनन्दरस (रस मूल), (२) कवित्त महाराजा महीप-नारायणसिंह तथा अन्य राजा गण, (३) लालचन्द्रिका ।

कविता-काल—१८३२ ।

विवरण—चेतसिंह काशीनरेश के यहाँ थे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(९९९) लाल गिरिधर ।

ग्रन्थ—नायिकाभेद पदो में ।

जन्मकाल—१८०७ ।

कविता-काल—१८३२ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१०००) हरिप्रसाद ।

ग्रन्थ—संस्कृतसतसती ।

कविता-काल—१८३२ ।

विवरण—राजा चेतसिंह काशीनरेश की आज्ञा से सतसई का संस्कृत में उल्था किया था।

नाम—(१००१) छत्रसाल, मोटा ज़िला झाँसी।

ग्रन्थ—प्रेमप्रकाश।

कविता-काल—१८३३।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१००२) दूल्हाराम।

ग्रन्थ—(१) साखी, (२) शब्द, (३, शब्दज्ञान।

कविता-काल—१८३३।

विवरण—सत्यनामी पंथ के तृतीय गुरु।

नाम—(१००३) बालकराम।

ग्रन्थ—भक्तमाल टीका।

कविता-काल—१८३३।

नाम—(१००४) विक्रमाजीत (लघुजन) महाराजा ओड़छा।

ग्रन्थ—(१) लघु सतसैया, (२) भारतसंगीत, (३) पदराग मालावती, (४) विष्णुपद दो ग्रन्थ।

कविता-काल—१८३३-७४।

विवरण—महाराष्ट्रों से लड़े। साधारण श्रेणी।

नाम—(१००५) लल्लू भाई ब्राह्मण, भृंगपुर।

ग्रन्थ—उदाहरणमंजरी (पृ० ७० गद्य पद्य)।

कविता-काल—१८३३।

नाम—(१००६) हितपरमानंद (ब्रजवासी)।

ग्रन्थ— (१) रस-विवाह भजन, (२) राधा-अष्टक, (३) गुरुभक्ति-विलास, (४) हितहरिवंश की जन्मवधाई, (५) गुरुप्रताप-महिमा, (६) जमुनामंगल, (७) जमुना-माहात्म्य।

कविता-काल—१८३३।

विवरण—हितहरिवंश जी की सम्प्रदाय के हैं।

नाम—(१००७) हरिनाथ झा।

जन्मकाल—१८०४।

कविताकाल—१८३४।

विवरण—महाराज दरभंगा के यहाँ थे।

नाम—(१००८) किंकर गोविन्द, बुंदेलखंडी।

जन्मकाल—१८१०।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(१००९) गोविंद जी।

जन्मकाल—१८०७।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—पूर्वी बोली में रचना की है। निम्न श्रेणी।

नाम—(१०१०) गुलाबसिंह पंजाबी, अमृतसर।

ग्रन्थ—(१) रामायण, (२) चन्द्रप्रबोध नाटक, (३) मोक्षपंथप्रकाश, (४) भाँवर-साँवर।

कविताकाल—१८३५।

नाम—(१०११) चन्द्रहित राधावल्लभी, मु० व्रज।

ग्रन्थ—(१) उपसुधानिधि की टीका (पृ० १६ पद्य) (राधास्तुति), (२) भावनापचीसी (राधाकृष्णविहार) (पृ० १४ पद्य), (३) समयपचीसी (विनय) (पृ० १६ पद्य), (४) अभिलापबत्तीसी (विनय) (पृ० १८ पद्य)।

कविताकाल—१८३५।

नाम—(१०१२) प्रतापसिंह महाराजा।

ग्रन्थ—(१) शृङ्गारमंजरी, (२) नीतिमंजरी, (३) वैराग्यमंजरी, (४) स्नेहसंग्राम, (५) संघसागर (१८५२), रेखता (१८-५२), भर्तृहरिशतक टीका (१८५२)।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—जयपुर महाराज, उपनाम व्रजनिधि।

नाम—(१०१३) बलदेव, बघेलखंडी।

ग्रन्थ—(१) सत्कविगिराविलाससंग्रह, (२) कादम्बरी।

जन्मकाल—१८०९।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—ये राजा विक्रमसाह बघेला देउरा नगरवाले के यहाँ थे। एक संग्रह सत्कविगिराविलास बनाया है, जिसमें १७ कवियों के काव्य हैं। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

नाम—(१०१४) मथुरानाथ मालवीय, काशी।

ग्रन्थ—(१) विरहबत्तीसी (पृ० ७६ पद्य) (१८३५), (२) चौसारपक

(पृ० ८ पद्य) (१८३७), (३) सूत्रार्थपातंजलि भाषा (पृ० १६ गद्य) (१८४६), (४) विवेकपञ्चामृत (१८५२), (पृ० ४१८ पद्य) (५) चूड़ामणिशकुन (पृ० ६ पद्य), (६) पातंजलि भाषा (पृ० ९४ पद्य) (१८४६)।

नाम—(१०१५) महादान चारण।

ग्रन्थ—(१) छन्द जलंधरनाथजी रो (१८६७), (२) गीता राना जी श्रीभीमसिंहजी रा (१८३५), (३) गीता महाराज मानसिंहजी रा (१८८५)।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—राजपूतानी कवि।

नाम—(१०१६) मानसिंह।

ग्रन्थ—मोक्षदायक पंथ।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—नानकपंथी गुलाबसिंह के शिष्य।

नाम—(१०१७) लाल कलानिधि।

ग्रन्थ—नखशिख।

जन्मकाल—१८०७।

कविताकाल—१८३५।

नाम—(१०१८) सखीसुख ब्राह्मण, नरवर बुँदेलखंड।

जन्मकाल—१८०७।

कविताकाल—१८३५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०१६) धनंतर।

ग्रन्थ—प्रोपधिविधि।

कविताकाल—१८३६ के पूर्व।

विवरण—गद्य ग्रन्थ।

नाम—(१०२०) व्यासदास।

ग्रन्थ—ब्रह्मज्ञान।

कविताकाल—१८३६ के पूर्व।

नाम—(१०२१) दयानिधि, बैसवाड़ा।

ग्रन्थ—शालिहोत्र भाषा छंदोबद्ध।

जन्मकाल—१८११।

कविताकाल—१८३६।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०२२) द्विज कवि।

ग्रन्थ—सभाप्रकाश।

कविताकाल—१८३६।

विवरण—रिपोर्ट से १८२६ का समय निकलता है।

नाम—(१०२३) अनेमानंद।

ग्रन्थ—नाटक दीपपंचदशी।

कविताकाल—१८३७।

नाम—(१०२४) किशवर अली।

ग्रन्थ—सारचन्द्रिका।

कविताकाल—१८३७।

नाम—(१०२५) किशोरी अली साधू।

ग्रन्थ—सारचन्द्रिका (पृ० ८६ पद्य)।

कविताकाल—१८३७।

विवरण—इन्हें मुसलमान न समझना चाहिए। सखी भाव से भक्ति करनेवाले अपने नामों के पीछे 'अली' प्रायः लिखते हैं। अली सखी को कहते हैं।

नाम—(१०२६) नवलराम।

ग्रन्थ—(१) सर्वांगसार, (२) नवलसागर।

कविताकाल—१८३७।

विवरण—रामचरण के शिष्य।

नाम—(१०२७) माधवदास कायस्थ, नागौड़वाले।

ग्रन्थ—(१) करुणाबत्तीसी, (२) नारायणलीला, (३) मुहूर्त-चिन्तामणि।

कविताकाल—१८३७।

नाम—(१०२८) रामचरणदास साधु (शायद महन्त) अयोध्या।

ग्रन्थ—(१) रामानन्दलहरी, (२) कौशलेन्द्ररहस्य, (३) पिंगल (१८४१), (४) शतपंचाशिका, (५) बटुकशतक, (६) रस-मल्लिका, (७) चरणचिन्ह, (८) दृष्टान्तबोधिका, (९) जय-मालसंग्रह, (१०) कवितावली (१८४४), (११) तीर्थयात्रा,

(१२) रामपदावली, (१३) सियारामरसमंजरी (१८८१), (१४) रामचरितमानस की टीका, (१५) सद्यानिधि, (१६) छन्द रामायण (१८४२), (१७)विरहशतक ।

विवरण—अच्छे पंडित, कवि और टीकाकार थे।

नाम—(१०२९) रामसजन।

ग्रन्थ—ब्रह्मसतूर।

कविताकाल—१८३७।

नाम—(१०३०) लाल झा मैथिल।

ग्रन्थ—(१) कनरपी घाट लड़ाई, (२) गौरीपरिणय नाटक।

कविताकाल—१८३७।

विवरण—नरेन्द्रसिंह दरभंगानरेश के यहाँ थे। नाटककार हैं।

नाम—(१०३१) हरिलाल व्यास, आज़मगढ़।

ग्रन्थ—(१) सेवकवानी सटीक, (२) रसिकमेदिनी, (३) रामजी की बधावली (पृष्ठ २०४)।

कविताकाल—१८३७।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०३२) गुमान तिवारी।

ग्रन्थ—(१) छंदाटवी, (२) कृष्णचन्द्रचंद्रिका।

कविताकाल—१८३८।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०३३) मडेवा प्रवीन या कलाप्रवीन।

ग्रन्थ—प्रवीनसागर।

कविताकाल—१८३८।

नाम—(१०३४) जनकनन्दिनीदास।

ग्रन्थ—भेदभास्कर।

कविताकाल—१८३९ के पूर्व।

नाम—(१०३५) भवानीसहाय।

ग्रन्थ—बैतालपचीसी।

कविताकाल—१८३९।

विवरण—कायस्थ, काशी।

नाम—(१०३६) जसवंत।

ग्रन्थ—(१) रामावतार, (२) दशावतार।

कविताकाल—१८४० के पूर्व।

नाम—(१०३७) रसिकराय।

ग्रन्थ—(१) सनेहलीला, (२) भँवरगीत, (३) रसिकपचीसी।

कविताकाल—१८४० के पूर्व।

नाम—(१०३८) मनीराम।

ग्रन्थ—(१) सारसंग्रह, (२) आनन्दमङ्गल।

कविताकाल—१८४० के पूर्व।

विवरण—साधारण कवि।

नाम—(१०३९) चेतसिंह।

ग्रन्थ—लक्ष्मीनारायणविनोद।

कविताकाल—१८४०।

नाम—(१०४०) उदेस भाट।
जन्मकाल—१८१५।
कविताकाल—१८४०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०४१) उमरावसिंह पवाँर, सैदपुर, सीतापुर।
कविताकाल—१८४०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०४२) गजनसिंह कायस्थ।
ग्रन्थ—शालिहोत्र।
कविताकाल—१८४०।

नाम—(१०४३) नारायण, काकूपुर ज़िला कानपूर वाले।
ग्रन्थ—(१) (शिवराजपुर के चन्देल राजाओं का छन्दोबद्ध इतिहास), (२) कथाचहारदरवेश।
जन्मकाल—१८०९।
कविताकाल—१८४०।

नाम—(१०४४) मकरन्द।
ग्रन्थ—जगन्नाथमाहात्म्य।
जन्मकाल—१८१४।
कविताकाल—१८४०।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०४५) ज्ञानचन्द यती, राजपूताना।

ान्मकाल—१८१३ ।

कविताकाल—१८४० ।

विवरण—टाड साहब ने इनकी सहायता से राजस्थान बनाया ।

नाम—(१०४६) मदनसिंह ।

ग्रन्थ—कर्मविपाक ।

कविताकाल—१८४१ के पूर्व ।

नाम—(१०४७) इच्छाराम वैष्णव ब्राह्मण रामानुजी ।

ग्रन्थ—(१) गोविन्दचन्द्रिका, (२) हनुमत्पचीसी ।

कविताकाल—१८४१ ।

विवरण—साधारण श्रेणी । विविध छन्दों में कृष्णकथा २५०४ छन्दों द्वारा वर्णित है ।

नाम—(१०४८) बहादुरसिंह ।

ग्रन्थ—ख्याल ।

कविता-काल—१८४१ ।

विवरण—ये महाराज कृष्णगढ़ के राजा थे ।

नाम—(१०४९) मनबोध वाजपेयी मालवीय ।

ग्रन्थ—भैरवभजन ।

कविता काल—१८४१ ।

विवरण—पिता का नाम रामदयाल था ।

नाम—(१०५०) जेठामल ।

ग्रन्थ—नारदचरित्र ।

कविता काल—१८४२ ।

नाम—(१०५१) लाड़िलीदास।

ग्रन्थ—धर्मसुबोधिनी।

कविता-काल—१८४२।

नाम—(१०५२) बानूराय।

ग्रन्थ—श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध संक्षेप कथा।

कविता काल—१८४३ के पूर्व।

नाम—(१०५३) अग्रनारायण।

ग्रन्थ—भक्तिरसबोधिनी टीका (भक्तमाल की)।

कविताकाल—१८४४।

नाम—(१०५४) गिरधर भाट, धोलपुर।

ग्रन्थ—रसमसाल।

कविताकाल—१८४४।

विवरण—महाराजा टिकैतराय दीवान लखनऊ के यहाँ थे साधारण श्रेणी।

नाम—(१०५५) गणपति।

कविता-काल—१८४४।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१०५६) छत्रसाल मिश्र, चन्देरी।

ग्रन्थ—(१) औषधसार (१८४४), (२) शकुनपरीक्षा, (३) स्वप्न परीक्षा।

कविताकाल—१८४४।

विवरण—चन्देरीनरेश राजा दुर्जनसिंह का सेनापति।

नाम—(१०५७) वैष्णवदास।

ग्रन्थ—(१) भक्तमालबोधिनी टीका, (२) भक्तमालमाहात्म्य, (३) भक्तमालप्रसंग।

कविताकाल—१८४४।

विवरण— खोज से इनका संवत् १७८२ भी निकलता है।

नाम—(१०५८) अमरसिंह कायस्थ, राजनगर छतरपूर।

ग्रन्थ—(१) सुदामाचरित्र, (२) रागमाला, (३) अमरचन्द्रिका (विहारीसतसई की गद्यपद्यमय टीका)।

जन्मकाल—१८२०।

कविता-काल—१८४५।

विवरण—छतरपूर राज्य के स्थापक कुँवर सोनेसाह के दीवान थे।

नाम—(१०५९) जगन्नाथ, छतरपूर।

ग्रन्थ—कृष्णायन (पृ० १३८)।

कविता-काल—१८४५।

नाम—(१०६०) जवाहिर वंदीजन बिलग्रामी।

ग्रन्थ—जवाहिररत्नाकर।

कविता-काल—१८४५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०६१) बद्रीदास कायस्थ, टटम, राज्य छतरपूर।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१८२०।

कविताकाल—१८४५।

नाम—(१०६२) भूपनारायणसिंह क्षत्रिय।

ग्रन्थ—(१) वर्णमाला (पृ० २८ पद्य), (२) भक्तिरसाल (पृ० २०६ देवीवंदना), (३) वेदरामायण (पृ० ३६) (चहारदरवेश का अनुवाद)।

कविता-काल—प्र० सं० १८४५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०६३) गंगाराम त्रिपाठी।

ग्रन्थ—ज्ञानप्रदीप।

कविता-काल—१८४६।

नाम—(१०६४) शिवनन्द।

ग्रन्थ—अगुण-सगुण-निरूपण-कथा।

कविता-काल—१८४६।

नाम—(१०६५) शेरसिंह।

ग्रन्थ—रामकृष्णयश।

कविता-काल—१८४६।

नाम—(१०६६) मनजू।

ग्रन्थ—हनूनाटक।

कविता-काल—१८४७ के पूर्व।

नाम—(१०६७) कमलाजन कायस्थ, कौंच।

ग्रन्थ—दस्तूरमालिका।

कविता-काल—१८४७ ।

विवरण—गणित । साधारण श्रेणी ।

नाम—(१०६८) वसतकुँवरि, उपनाम प्रिया सखी ।

ग्रन्थ—बानी ।

कविता-काल—१८४७ ।

विवरण—दतियानिवासिनी ।

नाम—(१०६९) राधिकानाथ बनर्जी, बनारस ।

ग्रन्थ—(१) सुहासिनी, (२) स्वर्णबाई ।

कविता-काल—१८४७ ।

विवरण—गद्यलेखक । ग्रन्थ हमने नहीं देखे ।

नाम—(१०७०) शिवराम भट्ट ।

ग्रन्थ—(१) प्रतापपचीसी, (२) विक्रमविलास ।

कविता काल—१८४७ ।

विवरण—राजा विक्रमादित्य ओड़छा के दर्बार में थे ।

नाम—(१०७१) इच्छागिरि ।

ग्रन्थ—(१) शालिहोत्र, (२) प्रपन्नप्रेमावली ।

कविता-काल—१८४८ ।

नाम—(१०७२) द्विज छत्र ।

ग्रन्थ—स्वप्नपरीक्षा ।

कविता-काल—१८४९ के पूर्व ।

नाम—(१०७३) सहदेव ।

ग्रन्थ—राजप्रकाश ।

कविता-काल—१८४९ के पूर्व।

नाम—(१०७४) मेहर्बानदास साधु, कोटवा, बाराबंकी।

ग्रन्थ—भागवतमाहात्म्य (१८४९)।

कविता-काल—१८४९।

नाम—(१०७५) रामचरण जी।

ग्रन्थ—(१) अनभै, (२) विश्वासबोध, (३) जिज्ञासुबोध, (४) बाणी, (५) विश्रामबोध, (६) रसमालिका ग्रन्थ।

कविता-काल—१८४९।

नाम—(१०७६) राधाकृष्ण चौबे, चित्रकूट।

ग्रन्थ—(१) बिहारीसतसैया पर पद्य टीका, (२) कृष्णचंद्रिका।

कविता-काल—१८५० के पूर्व।

नाम—(१०७७) डालचन्द आगरानिवासी।

कविता-काल—१८५०।

विवरण—बोधा के पुत्र।

नाम—(१०७८) तुलाराम बोहरा ब्राह्मण, बूँदी।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविता-काल—१८५०।

विवरण—राव राजा विष्णुसिंह तथा रामसिंह के समय में कार्य कर्त्ता थे। साधारण श्रेणी के कवि थे।

नाम—(१०७९) निहाल ब्राह्मण, निगोहाँ, लखनऊ।

जन्मकाल—१८२०।

कविता-काल—१८५०।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१०८०) प्राणनाथ ब्राह्मण वेसवारे के ।

ग्रन्थ—(१) चक्रव्यूह, (२) जीवनाथ-कथा ।

कविता-काल—१८५० ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१०८१) बालनदास ।

ग्रन्थ—रमलभाषा ।

जन्मकाल—१८२५ ।

कविता-काल—१८५० ।

विवरण—रमल का ग्रंथ लिखा है । निम्न श्रेणी ।

नाम—(१०८२) मदनमोहन ।

जन्मकाल—१८२३ ।

कविता-काल—१८५० ।

विवरण—महाराज चरखारी के मन्त्री ।

नाम—(१०८३) रसधाम ।

ग्रन्थ—अलकारचन्द्रिका ।

जन्मकाल—१८२५ ।

कविता काल—१८५० ।

नाम—(१०८४) लछिराम ।

ग्रन्थ—भागवत का अनुवाद ।

कविता-काल—१८५० ।

विवरण—हीन श्रेणी। इनके पद रागसागरोद्भव में हैं।

नाम—(१०८५) लोचनसिंह कायस्थ, राजमल, पटा।

ग्रन्थ—(१) गंगाशतक, (२) जातकालंकार।

जन्मकाल—१८२८।

कविता-काल—१८५०।

नाम—(१०८६) शिरताज, बरसानेवाले।

जन्मकाल—१८२५।

कविता-काल—१८५०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०८७) समनेश कायस्थ, रीवाँ।

ग्रन्थ—(१) काव्यभूषण पिंगल, (२) रसिकविलास।

कविताकाल—१८५०।

विवरण—महाराज जयसिंह के समय में बख्शी थे।

नाम—(१०८८) साजनराव ब्रह्मभट्ट, सिवनी (मध्य प्रदेश)

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

कविता-काल—१८५०। मरण-संवत् १८७४।

नाम—(१०८९) हरलाल (राव), बूँदी।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविता-काल—१८५० के लगभग।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१०९०) लालजी मिश्र।

ग्रन्थ—कोकसार।

कविता-काल—१८५१ के पूर्व।

नाम—(१०६१) सुखसखीजी।

ग्रन्थ—(१) रंगमाला, (२) आठों सात्विक, (३) स्फुट पद।

कविता-काल—१८५१ के पूर्व।

नाम—(१०६२) विष्णुदास।

ग्रन्थ—बारहखड़ी।

कविताकाल—१८५१।

नाम—(१०६३) काशीराम बुँदेलखंडी।

जन्मकाल—१८२६।

कविता-काल—१८५२।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१०६४) गोपालराय वंदीजन।

ग्रन्थ—(१) राधाशिखनख (१८९१) (बलभद्र के शिखनख पर टीका), (२) सुदामाचरित्र (१८५३)।

कविता-काल—१८५३।

विवरण—नरेन्द्रलाल शाह और आदिल खाँ के छन्द बनाये हैं।

नाम—(१०६५) रतनदास, श्री सेवकदास के शिष्य।

ग्रन्थ—(१) चौरासीजी की टीका (८२२ भारी पृष्ठ), (२) सेवक बानी की टीका, (३) स्वरोदय की टीका।

कविता-काल—१८५३।

विवरण—छतरपुर में देखे। टीकायें गद्य में हैं।

नाम—(१०९६) राधाकृष्ण।

ग्रन्थ—रागरत्नाकर।

कविता-काल—१८५३।

विवरण—जयपुरनिवासी गौड़ ब्राह्मण।

नाम—(१०९७) कैवात सरवरिया।

ग्रन्थ—आनन्दराम सापल की वार्ता।

कविता-काल—१८५४।

नाम—(१०९८) चंडीदान चारण।

कविता-काल—१८५५ के लगभग।

विवरण—सूरजमल के पिता।

नाम—(१०९९) दयालदासजी महंत।

ग्रन्थ—(१) करुणासागर, (२) साधूदयालजी की बानी।

कविताकाल—१८५५।

नाम—(११००) विक्रमादित्य महाराजा चरखारी।

ग्रन्थ—(१) विक्रमसतसई, (२) विक्रमविरुदावली, (३) हरि भक्ति-विलास।

कविता-काल—राजकाल १८५५ से १८८५।

विवरण—तोष कवि की श्रेणी। ये महाराज बड़े गुणी और गुणियों के आश्रयदाता थे।

नाम—(११०१) लच्छू।

जन्मकाल—१८२८।

कविता-काल—१८५५।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११०२) शिवप्रसाद कायस्थ, कालिंजर।

ग्रन्थ—स्फुट।

जन्मकाल—१८३०।

कविताकाल—१८७५। मृत्यु-१९१०।

विवरण—चौबे नाथूराम जागीरदार मालदेव बुंदेलखंड के यहाँ कवि थे।

नाम—(११०३) दशरथ।

ग्रन्थ—वृत्तविचार।

कविता काल—१८५६ के पूर्व।

विवरण—हीन श्रेणी।

उन्तीसवाँ अध्याय।

वेनी प्रवीन काल।

(काल १८५६-७५)।

(११०४) वेनी प्रवीन वाजपेयी।

ये महाशय लखनऊनिवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण उपमन्यु गोत्री ऊँचे के वाजपेयी थे। लखनऊ के बादशाह गाजी उद्दीन हैदर के दीवान राजा दयाकृष्ण कायस्थ के पुत्र नवलकृष्ण उपनाम ललनजी इनके आश्रयदाता थे। जगद्विदित महाराज बालकृष्ण इन्हीं ललन जी के भाई थे। वेनीप्रवीन जी ने ललन जी की आज्ञा से

"नवरसतरंग" नामक ग्रन्थ संवत् १८७४ में बनाया। इसके प्रथम ये 'शृंगारभूषण' नामक एक ग्रन्थ बना चुके थे, क्योंकि उसके छंद नवरसतरंग में उद्धृत किये गये हैं। बेनी प्रवीन जी का मान इन के यहाँ बहुत कुछ हुआ। इसके बाद ये महाशय महाराज नानारावजी के यहाँ बिठूर में गये और उनके नाम पर आपने "नानाराव-प्रकाश" नामक ग्रंथ बनाया, जो कि आकार एवं विषय में बिल्कुल कविप्रिया के समान है। इसमें कविप्रिया की रीति पर वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ पंडित नन्दकिशोरजी मिश्र (लखनऊ) ने अपने हाथ से लिखा था, परंतु ग़दर में जाता रहा। यह भी बहुत उत्कृष्ट था। बेनी प्रवीनजी के कोई पुत्र नहीं था और अन्त में ये रोगग्रस्त भी हो गये थे, सो पीड़ित हो कर ये महाशय सपत्नीक अर्बुद गिरि पर चले गये और फिर नहीं लौटे। वहीं इनका शरीरपात हुआ। यह सब हाल वाजपेयियों से जाना गया है और संवत् एवं आश्रयदाता का हाल नवरसतरंग में भी है।

इनका अभी कोई भी ग्रन्थ मुद्रित नहीं हुआ है। हमारे पास केवल हस्तलिखित नवरसतरंग है। इसमें १६५ पृष्ठ और ५५५ छन्द हैं। इसमें भावभेद एवं रसभेद का वर्णन है, परन्तु मतिराम एवं पद्माकर की भाँति इन्होंने भी नायिकाभेद से ग्रन्थारम्भ किया और अन्त में सूक्ष्मतया भावभेद और रसभेद के शेष भेद भी लिख दिये। इन्होंने ब्रजभाषा में कविता की और अनुप्रास का भी थोड़ा थोड़ा आदर किया। इनकी भाषा में मिलित वर्ण बहुत कम आने पाये हैं। इन्होंने प्राकृतिक वर्णन कई जगह पर बहुत उत्तम किये हैं और अमीरी का सामान भी बहुत कुछ दिखाया है। इनको रूपक

ते प्रिय थे और इनकी कविता में वे जहाँ तहाँ पाये जाते हैं। यों तो न्होंने कई विषयों पर विशाल काव्य किया है, परन्तु गणिका, परकीया, और अभिसारिका के बड़े ही विशद वर्णन इनकी रचना में है। आपकी कविता में उत्कृष्ट छन्दों की मात्रा बहुत विशेष है। उसमें जहाँ देखिए, टकसाली छन्द निकलेंगे। ऐसे बढ़िया छन्दों की इतनी मात्रा बहुत कवियों के ग्रन्थों में न मिलेगी। ये महाशय संस्कृत के भी अच्छे पंडित थे। इनकी कविता शृंगार काव्य का शृंगार है, परन्तु आश्चर्य है कि सेनापति जी की भाँति अद्यापि इन के ग्रन्थों को भी मुद्रण का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ है। भाषानुरागियों को इनके ग्रन्थ बहुत शीघ्र छपवाने चाहिए। इनकी गणना हम दास की श्रेणी में करते हैं। इनके कुछ छन्द यहाँ लिखे जाते हैं।

कालिहही गूँधि बबा कि सौं मैं गजमोतिन की पहिरी अति आला।
आई कहाँ ते इहाँ पुखराग की संग यई यमुना तट बाला॥
न्हात उतारी हौ बेनी प्रवीन हँसै सुनि बैनन नैन रसाला।
जानति ना अँग की बदली सब सों बदली बदली कहै माला॥ १॥
भोरहि न्योति गई ती तुम्हें वह गोकुल गावँ कि ग्वालिनि गोरी।
आधिक राति लौं बेनी प्रवीन कहा ढिग राखि करी बरजोरी॥
आवे हँसी मोहिँ देखत लालन भाल मैं दीन्ह महाउर घोरी।
एते बड़े ब्रजमंडल मैं न मिली कहुँ माँगेहु रंचक रोरी॥ २॥
जान्यो न मैं ललिता अलि ताहि जु सोवत माँहि गई करि हासी।
लाये हिये नख केहरि के सम मेरी तऊ नहिँ नींद बिनासी॥
लै गई अम्बर बेनी प्रवीन ओढ़ाय लटी दुपटी दुखरासी।

तोरि तनी तन छोरि अभूषन भूलि गई गल देन को फाँसी ॥ ३ ॥
घनसार पटीर मिलै मिलै नीर चहै तन लावै न लावै चहै।
न बुझै बिरहागिनि झार झरीहू चहै घन लावै न लावै चहै ॥
हम टेरि सुनावतीं बैनी प्रवीन चहै मन लावै न लावै चहै।
अग आवै बिदेस तें पीतम गेह चहै धन लावै न लावै चहै ॥ ४ ॥
मालिनि ह्वै हरवा गुहि देत चुरी पहिरावै बनै चुरिहेरी।
नाइनि ह्वै निरवारत केस हमेस करै बनै जोगिनि फेरी ॥
बेनी प्रवीन बनाय बिरी बरईनि बनै रहै राधिका केरी।
नन्दकिसोर सदा वृषभानु की पौरि पै ठाढे बिकै बनै चेरी ॥ ५ ॥

सोभा पाई कुंज भौन जहाँ जहाँ कीन्हो गौन
सरस सुगन्ध पौन पाई मधुपनि है।
बीथिन बिथोरे मुकुताहल मराल पाये
आलिन दुसाल साल पाये अनगनि है ॥
रैनि पाई चाँदनी फटक सी चटक रुख
सुख पायो पीतम प्रवीन बेनी धनि है।
बैन पाई सारिका पढ़न लागीं कारिका
सु आई अभिसारिका कि चारु चिन्तामनि है ॥ ६ ॥

(११०५) जसवन्तसिंह (तेरवाँ-नरेश)।

जसवन्तसिंह जी बघेले ठाकुर तेरवाँ के राजा थे। तेरवाँ जिला फ़र्रुखाबाद में एक मौजा कन्नौज से पाँच कोस की दूरी पर है। शिवसिंहसरोज में इनके जन्म का संवत् १८५५ वि० और

मरण का १८७१ वि० दिया हुआ है, पर यह अशुद्ध जान पड़ता है। इनका कविताकाल १८५६ प्रतीत होता है। सरोज में कविताकाल को प्रायः उत्पत्ति-काल कहा गया है। उसमें सिवा उत्पत्तिकाल के और कोई समय बहुत करके लिखा ही नहीं है। शिवसिंह जी लिखते हैं कि इनके पास संस्कृत तथा भाषा के बहुत से ग्रन्थ इकट्ठे थे। इन्होंने दो ग्रन्थ बनाये अर्थात् श्रृंगार-शिरोमणि, और शालिहोत्र। इनका प्रथम ग्रन्थ हमारे पुस्तकालय में वर्तमान है, परन्तु द्वितीय हमने अभी तक नहीं देखा। श्रृंगार-शिरोमणि में भावभेद और रसभेद वर्णित हैं। आकार में यह मतिराम के रसराज से डेवढ़ा होगा। अलंकारों का प्रसिद्ध ग्रन्थ भाषाभूषण इनका बनाया हुआ नहीं है। इनकी कविता को हम साधारण समझते हैं।

घनन के घोर सोर चारों ओर मोरन के
अति चितचोर तैसे अंकुर मुनै रहैं।
कोकिलन कूक हूक होत बिरहीन हिय
लूक से लगत चीर चारन चुनै रहैं॥
झिल्ली झनकार तैसो पिकन पुकार डारी
मारि डारी डारी द्रुम अंकुर सु नै रहैं।
लुनै रहैं प्रान प्रानप्यारे जसवन्त बिन
कारे पीरे लाल ऊदे बादर उनै रहैं॥

(११०६) यशोदानंदन।

इन महाशय का कोई विशेष पता न इनके ग्रन्थ में है और न

श्रौर कहीं। शिवसिंहसरोज में इनका जन्म-संवत् १८२८ दिया है। हमने जो ग्रन्थ देखा है वह संवत् १८७२ का लिखा हुआ है। इन्होंने बरवै नायिकाभेद नामक एक छोटा सा ग्रन्थ ६२ बरवै का बनाया है। इसकी भाषा मधुर है। इसमें ९ बरवै संस्कृत व ५३ भाषा के हैं। ग्रन्थ प्रशंसनीय है। हम इनको साधारण श्रेणी में समझते हैं।

> सस्कृत—यदि च भवति बुधमिलनं किं त्रिदिवेन।
> यदि च भवति शठमिलनं किं निरयेन॥
> भाषा—अहिरिनि मन की गहिरिनि उतरु न देइ।
> नैना करै मथनियाँ मन मथि लेइ॥
> तुरकिनि जाति हुरुकिनी अति इतराय।
> छुअन न देइ इजरवा मुरि मुरि जाय॥
> पीतम तुम कचलोहिया हम गजबेलि।
> सारस कै असि जोरिया फिरौं अकेलि॥

इनका कविताकाल सवत् १८५६ के आसपास जान पड़ता है।

(११०७) गणेश।

ये महाशय गुलाब कवि के पुत्र थे श्रौर लाल्ह कवि के पौत्र। ये काशी-नरेश महाराजा उदितनारायणसिंह के यहाँ रहते थे। इनका कविताकाल सवत् १८५७ के लगभग है। इन्होंने वाल्मीकीय रामायण बालकांड समग्र श्रौर किष्किन्धा के पाँच अध्यायों का प्रशंसनीय पद्यानुवाद 'वाल्मीकिरामायणश्लोकार्थप्रकाश' के नाम से किया श्रौर ऋतुवर्णन नामक एक द्वितीय पुस्तक

भी लिखी। इनकी कविता सानुप्रास और सबल होती थी। हम न्हें तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

बुद्धि के निधान जे प्रधान काव्य कारज में
दीजै बरदान ऐसे बरन हमेस के।
दूषन ते दूरि भूरि भूषन ते पूरि पूरि
भूषन समेत हेत नवो रस वेस के॥
भनत गनेस छन्द छन्द में ललाम रूप
भूप मन मोहैं मोहैं पंडित सुदेस के।
ग्रन्थ परिपूरन के कारन करनिहार
दीजिये निबाहि नेम नन्दन महेस के॥

खोज में 'हनुमतपचीसी' नामक इनका एक और ग्रन्थ मिला है।

नाम—(११०८) क्षेमकर्ण ब्राह्मण, धनौली बारहवंकी।

ग्रंथ—(१) रामरत्नाकर संस्कृत, (२) कृष्णचरितामृत, (३) वृत्तरामास्पद, (४) गुरुकथा, (५) आह्निक, (६) रामगीतमाला, (७) पदविलास, (८) रघुराजघनाक्षरी, (९) वृत्तभास्कर।

जन्मकाल—१८२८।

मरणकाल—१९१९।

विवरण—ये महाशय अच्छे कवि थे और इनका काव्य मनोहर है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में हो सकती है।

वृत्तरामास्पद से—

भे ज्यवनार तयार तरह ते रघुवर करत बियारी।
अनुज समेत मनुजपतिमंदिर सुर नर मुनि मनहारी॥

मंदि बरासन आसन बासन बासन की अधिकारी।
गेडुआ थार कटोर कटोरी पंचपात्र अरु भारी॥
आई है बरात पंसलेस की विदेहपुर
बसती के बालक तुरंत उठि धाए हैं।
देखि आए राज के समाज के विभूति भूति
सेना चतुरंग रंग रंग के सुहाए हैं॥
पूछें पितु मातु आए भूप सुत काहे पर
छेमकर सोई बात बंदि के बताए हैं।
दंत उजियारे भारे अरिन के फंद फारे
तापै दसरत्थ के दुलारे चढ़ि आए हैं॥

(११०६) भजन।

इस कवि का कोई ग्रन्थ हमारे देखने या सुनने में नहीं आया, वरन् स्फुट कवित्त भी बहुत ही थोड़े पाये जाते हैं, पर कविता अच्छी है। इनका जन्मकाल संवत् १८३० है, जो हिन्दी खोज में लिखा है। इसी नाम का एक मैथिल कवि भी था। इनका कविता-काल १८५७ के लगभग प्रतीत होता है। इनको हम तोष की श्रेणी में रखते हैं। भाषा इनकी अच्छी है। इनके दो छन्द हम नीचे देते हैं:—

अम्बर बीच पयोधर देखि के कौन को धीरज सो न गयो है?।
भजन जू नदिया यहि रुप की नाव नहीं रविहू अथयो है॥
पन्थिक राति बसो यहि देस भलो तुमको उपदेस दयो है।
या मग बीच लगै यह नीच जु पावक में जरि प्रेत भयो है॥ १॥

कोऊ कहै है कलंक कोऊ कहै सिन्धु पंक
कोऊ कहै छाया है तमोगुन के भास की।
कोऊ कहै मृगमद कोऊ कहै राहु रद
कोऊ कहै नीलगिरि आभा आस पास की॥
भंजन जू मेरे जान चन्द्रमा को छीलि विधि
राधे को बनायो सुख सोभा के विलास की।
ता दिन तै छाती छेद भयो है छपाकर के
वार पार दीखत है नीलिमा अकास की॥२॥

कुछ लोग पहले छन्द को लाल कवि का बतलाते हैं, पर वह भंजन का ही प्रतीत होता है और सरदार कवि के शृंगारसंग्रह एवं पंडित नकछेदी तिवारी की मदनमंजरी में इसी कवि के नाम से दिया गया है।

(१११०) करन कवि।

इनके विषय में ठाकुर शिवसिंहजी लिखते हैं कि ये पन्नानरेश के यहाँ थे और इन्होंने रसकल्लोल तथा साहित्यरस बनाये हैं। हमने इनका रसकल्लोल नामक ग्रंथ उक्त ठाकुर साहब के पुस्तकालय में देखा, परंतु उसमें कुछ संवत् या पता इत्यादि नहीं लिखा है। उसके देखने से इतना जान पड़ता है कि करन के पिता का नाम वंशीधर था। यह ग्रंथ संवत् १८८५ का लिखा हुआ है, जिससे यही जान सकते हैं कि उक्त संवत् के प्रथम यह बना होगा। इन्होंके लेखानुसार यह जान पड़ता है कि ये पाँड़े थेः—

"खटकुल पाँड़े पदिनिदा भरद्वाज वर बंस।
गुननिधि पाय निहाल के बन्दौं जगत प्रसंस॥"

वरन ने छत्रसाल का नाम लिखा है। छत्रसाल हाड़ा महाराज का शरीरपात १७१५ में हुआ था और छत्रसाल महेवा वाले का सं० १७८६ के लगभग। इन महाशय ने जो छंद लिखा है उसमें छता छितिपाल की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया है। यह ग्रंथ भी बहुत प्राचीन समय का लिखा है। इससे इनके पुराने कवि होने में संदेह नहीं है।

इनका कविताकाल खोज में संवत् १८५७ दिया है और यह भी लिखा है कि ये हिन्दूपति पन्नानरेश के यहाँ थे। यह यथार्थ जँचता है, क्योंकि हिन्दूपति महाराजा छत्रसाल के वंशधर थे।

ये महाशय पाँड़े थे, अतः इनका निवासस्थान कन्नौज असनी या गेगासों का होना संभव है, क्योंकि ये अपने को खटकुल अर्थात् उत्तम कान्यकुब्ज कहते हैं, और ऐसे पांड़े कनौजियों के मुख्य स्थान येही हैं।

इस ग्रंथ में २५२ छंद हैं, जिनमें रसभेद, ध्वनिभेद, गुण, लक्षणा इत्यादि वर्णित हैं। ग्रंथ प्रशंसनीय बना है। इनकी भाषा ब्रजभाषा है और यह ललित एवं श्रुतिमधुर है। इन्होंने काव्यसामग्री का विशाल वर्णन किया है। भाषाप्रेमियों से हम इस ग्रन्थ के पढ़ने का अनुरोध करते हैं। यह अभी मुद्रित नहीं हुआ है। हम इनको तोष की श्रेणी में रखते हैं।

खल खंडन मंडन धरनि उद्धत उदित उदंड ।
दल मंडन दारुन समर हिन्दुराज भुज दंड ॥ १ ॥

भौरनि को कंज राजहंसनि को मानसर
चंद्रमा चकोरन को कहन चितै गयो ।
दुजन को कामतरु कान्ह ब्रजमंडल को
जलद पपीहन को काहू ने रितै गयो ॥
दीपनि को दीप हीरहार दिगबालनि को
कोकनि को वासरेस देखत चितै गयो ।
छता छितिपाल छिति मंडल उदार धीर
धरा को अधार जो सुमेरु धौं कितै गयो ॥ २ ॥

कंटकित होत गात विपिन समाज देखि
हरी हरी भूमि हेरि हियो लरजतु है ।
एते पै करम धुनि परत मयूरनि की
चातक पुकार तेह ताप सरजतु है ॥
निपट चवाई भाई बधु जे बसत गाउँ
दाउँ परे जानि कै न कोऊ बरजतु है ।
अरजो न मानी तू न गरजो चलत बेर
परे घन वैरी अब काहे गरजतु है ॥ ३ ॥

झुरत सरित सरवर विटप विरह भार भर नीति ।
कहौ सुकैसे रारिहो कलित अंकुरित प्रीति ॥ ४ ॥

(१११९) रसिक गोविन्द ।

इनका बनाया हुआ जुगुलरसमाधुरी नामक ग्रन्थ हमने देखा है, जो बडा विशद है। इसमें २०१ छन्दों द्वारा वृन्दावन

तथा राधा-कृष्ण का वर्णन है। इनकी कविता परम मनोहर और गम्भीर होती थी। इन्होंने नैसर्गिक सुघराइयों का भी अच्छा वर्णन किया है। हम इन्हें दास कवि की श्रेणी में रक्खेंगे। इनका रचनाकाल खोज से १८५८ मिला है।

तैसिय निरमल नीर निकट जमुना बहि आई।
मनहु नील मनि माल विपिन पहिरे सुखदाई॥
अरुन नील सित पीत कमल फुल फूले फूलनि।
जनु बन पहिरे रंग रंग के सुरँग दुकूलनि॥
इन्दीवर कल्हार कोकनद पदुमनि सोभा।
मनु जमुना दृग करि अनेक निरखत घन सोभा।
तिन मधि भरन पराग प्रभा लखि दीठि न हारति।
निज घर की निधि रीझि रमा मनु वन पर वारति॥
सरस सुगंध पराग सने मधु मधुप गुँजारत।
मनु सुखमा लखि रीझि परसपर सुजस उचारत॥
पुलिन पवित्र विचित्र चित्र चित्रित जहँ अवनी।
रचित कनक मनि खचित लसति अति कोमल कमनी।

खोज द्वारा प्राप्त इनके अन्य ग्रन्थों के ये नाम हैं:—

(१) अष्टदेश भाषा, (२) गोविंदानंदघन, (३) कलियुग रासो (४) पिंगलग्रंथ, (५) समयप्रबंध, (६) श्रीरामायणसूचनिका।

(१११२) मुंशी गणेशप्रसाद कायस्थ।

(वल्द लाला तीर्थराज)

इन्होंने 'राधाकृष्णदिनचर्या' नामक ग्रन्थ दोहा-चौपाइयों में

पद्मपुराण पातालखण्डान्तर्गत वृन्दावनमाहात्म्य वाले चौदहवें अध्याय के आशय पर संवत् १८५९ में रचा। यह ग्रन्थ छतरपूर में है। इसमें ३२६ बड़े पृष्ठ हैं। इनका दूसरा ग्रन्थ 'ब्रजबनयात्रा' नामक भी दोहा चौपाइयों में १७८ बड़े पृष्ठों का छतरपूर में है। इस ब्रजयात्रा में वन उपवन आदि के वर्णन हैं। हम इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में करते हैं।

> पुनि जल बाहर आय, दिय निदेश यक विटप कहँ।
> बरपटु।पट समुदाय, अरु भूषन बहु भाँति के ॥

> नाना विधि के बसन सोहाये। अरु भूषन मनिमै छवि छाये ॥
> वृन्दावन पादप हैं जेते। सुरतरु सम ह्वै बरखे तेते ॥
> लखि ब्रज तिय अतिही हरषानी। पहिरहिं रुचि अनुसार सयानी ॥
> जो पादप सन बसन मँगाये। नहिँ आचरज बेद अस गाये ॥

(१११३) सम्मन ब्राह्मण।

ये मल्लावाँ जिला हरदोई में संवत् १८३४ में उत्पन्न हुए थे। इनका काव्यकाल संवत् १८६० मानना चाहिए। इन्होंने नीति के चुटीले दोहे कहे और पिंगलकाव्यभूषण नामक एक ग्रन्थ भी १८७९ में बनाया। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

> निकट रहे आदर घटे दूरि रहे दुख होय।
> सम्मन या संसार में प्रीति करौ जनि कोय ॥
> सम्मन चहु सुख देह को तो छोड़ो ये चारि।
> चोरी चुगुली जामिनी यार पराई नारि ॥

सज्जन मीठी बात सों होत सबै सुख पूर।
जेहि नहिं सीखो बोलिबो तेहि सीखो सब धूर॥

(१११४) गोस्वामी जत्तनलालजी।

इनका बनाया हुआ अनन्यसार ग्रन्थ हमने छतरपूर में देखा है। यह २९४ पृष्ठों का एक बड़ा ही उपकारी ग्रन्थ है, क्योंकि इसमें गोस्वामी हितहरिवंश का जीवनचरित्र तथा उनके चलाये हुए अनन्य मत का अच्छा वर्णन लिखा है और इस मत के बहुत से महात्माओं के हाल इस में वर्णित हैं। इनका समय जाँच से संवत् १८६० जान पड़ा। यह ८४ और २५२ वैष्णवों की वार्ताओं के ढंग पर अनन्य मत का परमोपकारी ग्रन्थ है। कविता की दृष्टि से इनको हम साधारण श्रेणी में रक्खेंगे। इस ग्रन्थ का प्रकाशित होना आवश्यक है।

> वृन्दावन सुख रसिक वास श्री कुंज महल में।
> दम्पति रूप प्रकास पास निजु सखी टहल में॥
> छिन छिन प्रकृति विचारि करति प्यारी पिय आगे।
> पुजवत सा सो चाह मोह मद आनँद पागे॥
> वर गैार बरन छवि प्रेम की रसमें जुगुल विहोर मन।
> नित सुमिरैां श्री हरिवंश का रसिकशिरोमणि प्रानधन॥

(१११५) मून।

शिवसिंहजी ने मून ब्राह्मण असोथर जिला ग़ाज़ीपूर वाले का समय सं० १८६० लिखा है। उन्होंने इनके रामरावण-युद्ध नामक ग्रन्थ का नाम लिख कर अन्य ग्रन्थों का होना माना है।

युगलकिशोर जी ने इनका एक नायिकाभेद पर ग्रन्थ देखा है, पर नाम स्मरण नहीं है। इनकी कविता आदरणीय है। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रखते हैं।

बिम्ब में प्रबाल में न जपा पुष्पमाल में
　　न ईंगुर गुलाल में न किंचित निहारे मैं।
दाड़िम प्रसून में न मून धरा सून मे
　　न इन्द्र की वधून में न गुंजा अँधियारे मैं॥
है कुसुम रंग में न कुंकुम पतंग में
　　न जावक मजीठ कज पुज वारे डारे मैं।
राधे जू तिहारी पदलालिमा की समता को
　　हेरि हारे कविता न आवत विचारे मैं॥

खोज में 'सीतारामविवाह' नामक इनका एक और ग्रन्थ मिला है।

(१११६) लल्लू जी लाल।

लल्लूजी लाल गुजराती ब्राह्मण आगरेवाले संवत् १८६० में वर्तमान थे। ये महाशय कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालेज में नौकर थे और वहाँ इन्होंने व्रजभाषामिश्रित खड़ी बोली गद्य का प्रेमसागर नामक भागवत दशम स्कन्ध की कथा का एक ग्रन्थ बनाया, जिसमें स्थान स्थान पर कुछ दोहा चौपाई भी लिखे। इनके ग्रन्थों के नाम नीचे लिखे जाते हैं :—

प्रेमसागर, लतायफ़ हिन्दी, राजनीति-वार्तिक (भाषा-हितोपदेश), संग्रह-सभाविलास, माधवविलास, सतसई की

टीका, भाषा व्याकरण, मसादिरे भाषा, सिंहासनबत्तीसी, बैताल-पचीसी, माधवानल और शकुन्तला। ये महाशय वर्तमान गद्य के जन्मदाता कहे जाते हैं। इनके प्रथम बहुत से गद्यलेखक हो गये हैं, पर उनके ग्रन्थ न ऐसे ललित थे और न ऐसे प्रख्यात ही हुए। इन्होंने दोहा आदि भी अच्छे कहे हैं। हम कविता की दृष्टि से इन्हें साधारण श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण प्रेमसागर से :—

"शुकदेव जी बोले कि राजा एक समय पृथ्वी मनुष्य तन धारण कर अति कठिन तप करने लगी। तहाँ ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन तीनों देवताओं ने आ तिस से पूछा कि तू किस लिये इतनी कठिन तपस्या करती है। धरती बोली कृपासिन्धु! मुझे पुत्र की वांछा है, इस कारण महा तप करती हूँ। दया कर मुझे एक पुत्र अति बल-वन्त महा प्रतापी, बड़ा तेजस्वी दो, ऐसा कि जिस्का सामना संसार में कोई न करे, न वह किसी के हाथ से मरे। यह वचन सुन प्रसन्न हो तीनो देवताओं ने वर दे उससे कहा कि तेरा सुत भौमासुर नाम अति बली महा प्रतापी होगा"।

लल्लूजी लाल का जन्मकाल १८२० के लगभग है और संवत् १८८१ में ये जीवित थे। इनके मरण का संवत् हम लोगों को ज्ञात नहीं है। ये आगरावासी औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे और जीविकार्थ मुर्शिदाबाद तथा कलकत्ते में रहे।

(१११७) सदल मिश्र।

वर्तमान गद्य के जन्मदाता सदल मिश्र और लल्लू जी लाल

माने जाते हैं। यों ते। पूर्वकाल में भी कई गद्य ग्रंथ लिखे गये, पर उस समय इस प्रकार के कुछ ग्रंथ बनने तथा बहुत से कवियों द्वारा कविता में उदाहरणार्थ गद्य लिखे जाने पर भी गद्य का प्रचार नहीं हुआ। देव जी ने एवं अन्य बहुत से कवियों ने यत्र तत्र अपनी अपनी कविता में गद्य भी लिखा, परन्तु किसी ने इसका प्राधान्य नहीं रक्खा। फिर उन सभों ने गद्य भी पद्य ही की भाँति ब्रजभाषा में लिखा। कुछ वैद्यक आदि की पुस्तकें भी गद्य में लिखी गईं और कई ग्रन्थों की टीकाएँ भी ब्रजभाषा गद्य में बनीं, परन्तु पहले पहल गोरखनाथ ने गद्य काव्य किया और फिर खड़ी बोली प्रधान गद्य में पुस्तक रूप से गंग भाट ने काव्य किया और जटमल ने संवत् १६८० में गोराबादल की लड़ाई लिखी। उसके पीछे सूरति मिश्र ने बैतालपचीसी का संस्कृत से ब्रजभाषा में अनुवाद संवत् १७७० के लगभग किया। इनके प्रायः १०० वर्ष बाद इन्हीं दोनों महाशयों ने गद्य में काव्य ग्रन्थ लिखे और तभी से वर्तमान गद्य हिन्दी की जड़ दृढ़ता से स्थिर हुई।

ये दोनों महाशय फ़ोर्ट विलियम कालेज में नौकर थे और वहाँ संवत् १८६० विक्रमाब्द में इन दोनों ने गद्य में ग्रन्थ बनाये। प्रेमसागर और नासकेतोपाख्यान दोनों इसी संवत् में जार्ज गिल क्राइस्ट की आज्ञानुसार बनाये गये। दोनों छात्रों के पठनार्थ बने। उसी समय से गद्य काव्य का विशेष प्रचार हुआ। लल्लूलाल ने तो ब्रजभाषा की मात्रा विशेष लिखी, परन्तु सदल मिश्र ने खड़ी बोली का आधिक्य रक्खा। इन दोनों ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली का मिश्रण किया है।

टीका, भाषा-व्याकरण, मसादिरे भाषा, सिंहासनबत्तीसी, बैताल-पचीसी, माधवानल और शकुन्तला। ये महाशय वर्तमान गद्य के जन्मदाता कहे जाते हैं। इनके प्रथम बहुत से गद्यलेखक हो गये हैं, पर उनके ग्रन्थ न ऐसे ललित थे और न ऐसे प्रख्यात ही हुए। इन्होंने दोहा आदि भी अच्छे कहे हैं। हम कविता की दृष्टि से इन्हें साधारण श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण प्रेमसागर से :—

"शुकदेव जी बोले कि राजा एक समय पृथ्वी मनुष्य तन धारण कर अति कठिन तप करने लगी। तहाँ ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन तीनों देवताओं ने आ जिस से पूछा कि तू किस लिये इतनी कठिन तपस्या करती है। धरती बोली कृपासिन्धु! मुझे पुत्र की वांछा है, इस कारण महा तप करती हूँ। दया कर मुझे एक पुत्र अति बलवन्त महा प्रतापी, बड़ा तेजस्वी दो, ऐसा कि जिस्का सामना ससार में कोई न करे, न वह किसी के हाथ से मरे। यह वचन सुन प्रसन्न हो तीनो देवताओ ने वर दे उस्से कहा कि तेरा सुत भौमासुर नाम अति बली महा प्रतापी होगा"।

लल्लूजी लाल का जन्मकाल १८२० के लगभग है और संवत् १८८१ में ये जीवित थे। इनके मरण का सवत् हम लोगो को ज्ञात नहीं है। ये आगरावासी औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे और जीविकार्थ मुर्शिदाबाद तथा कलकत्ते में रहे।

(९९९७) सदल मिश्र।

वर्तमान गद्य के जन्मदाता सदल मिश्र और लल्लू जी लाल

माने जाते हैं। यों तो पूर्वकाल में भी कई गद्य ग्रंथ लिखे गये, पर उस समय इस प्रकार के कुछ ग्रंथ बनने तथा बहुत से कवियों द्वारा कविता में उदाहरणार्थ गद्य लिखे जाने पर भी गद्य का प्रचार नहीं हुआ। देव जी ने एवं अन्य बहुत से कवियों ने यत्र तत्र अपनी अपनी कविता में गद्य भी लिखा, परन्तु किसी ने इसका प्राधान्य नहीं रक्खा। फिर उन सभों ने गद्य भी पद्य ही की भाँति व्रजभाषा में लिखा। कुछ वैद्यक आदि की पुस्तकें भी गद्य में लिखी गईं और कई ग्रन्थों की टीकाएँ भी व्रजभाषा गद्य में बनीं, परन्तु पहले पहल गोरखनाथ ने गद्य काव्य किया और फिर खड़ी बोली प्रधान गद्य में पुस्तक रूप से गंग भाट ने काव्य किया और जटमल ने संवत् १६८० में गोराबादल की लड़ाई लिखी। उसके पीछे सूरति मिश्र ने वैतालपचीसी का संस्कृत से व्रजभाषा में अनुवाद संवत् १७७० के लगभग किया। इनके प्रायः १०० वर्ष बाद इन्हीं दोनों महाशयों ने गद्य में काव्य ग्रन्थ लिखे और तभी से वर्तमान गद्य हिन्दी की जड़ दृढ़ता से स्थिर हुई।

ये दोनों महाशय फ़ोर्ट विलियम कालेज में नौकर थे और वहाँ संवत् १८६० विक्रमीय में इन दोनों ने गद्य में ग्रन्थ बनाये। प्रेमसागर और नासकेतोपाख्यान दोनों इसी संवत् में जार्ज गिलक्राइस्ट की आज्ञानुसार बनाये गये। दोनों छात्रों के पठनार्थ बने। उसी समय से गद्य काव्य का विशेष प्रचार हुआ। लल्लूलाल ने तो व्रजभाषा की मात्रा विशेष लिखी, परन्तु सदल मिश्र ने खड़ी बोली का आधिक्य रक्खा। इन दोनों ने व्रजभाषा और खड़ी बोली का मिश्रण किया है।

नासकेतोपाख्यान में ३८ पृष्ठ हैं। इसमें पहले तो नासकेतु की उत्पत्ति का वर्णन है और फिर उनके द्वारा यमपुरी का दर्शन और ऋषियों से उसका हाल कहना कथित है। कथा अच्छी कही गई है और इस गद्य में काव्यानन्द प्राप्त होता है। कहीं कहीं एकाध स्थान पर कुछ छन्द भी दे दिये गये हैं। अन्त के अध्याय में यमराज की सभा का वर्णन कुछ कुछ उपहासास्पद हो गया है। कुल मिलाकर यह ग्रंथ बहुत आदरणीय है। उदाहरणः—

> नरक निवासी सुख के रासी हरिचरित्र नहिँ गाये।
> क्रोध लोभ को नीच सग कर कहो कौन फल पाये॥
> त्यजि आचार महा मद माते हृदय चेत में ल्याये।
> आतुर ह्वै नारिन के पीछे मानुख जन्म गँवाये॥

सकल सिद्धिदायक जो देवतन में नायक गणपति को प्रणाम करता हूँ कि जिनके चरणकमल के स्मरण किये से विघ्न दूर होता है औ दिन दिन हिय में सुमति उपजती जो ससार में लोग अच्छा अच्छा भोग विलास कर सबसे धन्य धन्य कहा अन्त में परम पद को पहुँचते हैं कि जहाँ इन्द्र आदि देवता सब भी जाने को ललचाते रहते हैं।

चित्र विचित्र सुन्दर सुन्दर बड़ी बड़ी अटारिन से इन्द्रपुरी समान शोभायमान नगर कलिकत्ता महाप्रतापी वीर नृपति कम्पनी महाराज के सदा फूला फला रहे, कि जहाँ उत्तम उत्तम लोग बसते हैं औ देश देश से एक से एक गुणी जन आय आय अपने अपने गुण को सुफल करि बहुत आनन्द में मगन होते हैं।

(१११८) गुरदीन पाँड़े।

इन्होंने संवत् १८६० में वागमनोहर नामक ग्रन्थ बीस प्रकाशों में पूर्ण किया। इस ग्रन्थ से विशेष पता इस कवि का नहीं लगता। यह कविप्रिया के ढंग पर बनाया गया है, यहाँ तक कि कविप्रिया में भी बीस ही प्रकाश हैं और इसमें भी। इसमें कविप्रिया से इतनी विशेषता रक्खी गई है कि और विषयों के साथ कवि ने पूरा पिंगल भी कह दिया है। इसी कारण इसमें प्रायः हर प्रकार के छंद एवं मेरु, मर्कटी, पताका इत्यादि सब प्रस्तुत हैं। इस ग्रन्थ की रचनाशैली अच्छी है। इस तरह पर पिंगल और रीति के मिलित ग्रन्थ भाषा-साहित्य में कम हैं। जो जो विषय कि कविप्रिया में कहे गये हैं, वे सब पूर्ण रूप से इसमें भी वर्णित हैं। इसकी भाषा बैसवाडी तथा व्रजभाषा मिश्रित है और वह ललित तथा प्रशंसनीय है। इस एक ही ग्रन्थ को पढ़कर पाठक को भाषा-काव्य-रीति का ज्ञान हो सकता है। बड़े शोक का विषय है कि यह ग्रन्थ अभी तक मुद्रित नहीं हुआ है। हम कवि गुरदीन जी को पद्माकर की श्रेणी में समझते हैं। भाषा-काव्य-रसिकों को यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिए। यह आकार में १७५० अनुष्टुप् छन्दों भर होगा और रायल अठपेजी के इसमें प्रायः १४० पृष्ठ होंगे।

मुख ससी ससि दून कला धरे। कि मुकता गन जावक मे भरे॥
ललित कुंदकली अनुहारि के। दसन की वृषभानकुमारि के॥
सुपद जंत्र कि भाल सोहाग के। ललित मंत्र किधौं अनुराग के॥
भृकुटि यौं वृषभानसुता लसैं। जनु अनंगसरासन को हँसैं॥

मुकुर तो पर दीपति को धनी। ससि कलंकित राहु बिथा घनी॥
अपर ना उपमा जग में लहै। तव प्रियामुख की सम को कहै॥

(१११९) ब्रह्मदत्त ब्राह्मण।

ये महाशय काशीनरेश उदितनारायणसिंह के अनुज दीप नारायण के आश्रित थे। इन्होंने संवत् १८६० में विद्वद्विलास और १८६५ में दीपप्रकाश नामक ग्रन्थ बनाये। दीपप्रकाश छप चुका है। यह विशेषतया अलंकार-ग्रन्थ है, पर आदि में भाव एवं रस का भी इसमें वर्णन है। इनकी कविता अनुप्रासयुक्त अच्छी होती थी। इनको हम साधारण श्रेणी में रक्खेंगे।

कुसल कलानि में करन हार कीरति को
कवि कोविदन को कलप तरवर है।
सील सनमान बुधि विद्या को निधान ब्रह्म
मतिमान हंसन को मानसरवर है॥
दीप नारायन अवनीप को अनुज प्यारो
दीन दुख देखत हरत हरवर है।
गाहक गुनी को निरवाहक दुनी को नीको
गनी गज बकस गरीब परवर है॥

(११२०) माखन पाठक।

ये महाशय पटी टहनगा निवासी थे। इन्होंने संवत् १८६० में वसन्तमंजरी नामक एक भव्य ग्रन्थ बनाया, जिसमें होली ही में सम्पूर्ण नायिका नायक भेद, दशा, दूती इत्यादि कह दिया। इन्होंने

ाहों में स्वकृत छन्दों का लक्षण भी लिखा है। इनकी कविता सुन्दर है। हम इन्हें साधारण श्रेणी में रखते हैं।

> गनो नायका राधिका नायक नन्दकुमार।
> तिनकी लीला फागु की बरनौ परम उदार॥

पोर अँगूठी नचै डफ पै कर कंकन पींची चुरी दरसावति।
कानन पात तरौना डुलैं त्यों कपोलनि झाईं प्रभा सरसावति॥
माखन केसरि रंग कि चूनरि कंचुकी हार हियो तरसावति।
झूम करा अछरा मुख चन्द ते गावति मानो सुधा बरसावति॥

(११२१) मुरलीधर जी भट्ट।

ये तेलंग ब्राह्मण अलवर के राव राजा बख्तावरसिंह के कवि थे। इनका जन्म अनुमान से संवत् १८३७ में हुआ। कविता सरस करते थे। ये महाशय तोष की श्रेणी के कवि हैं।

> छाकी प्रेम छाकन के नेम मैं छबीली छैल
> छैल की बँसुरिया के छलन छली गई।
> गहरे गुलाबन के गहरे गरूर गरे
> गोरी की सुगध गैल गोकुल गली गई॥
> दर मैं दरीनहू मे दीपति दिवारी दरी
> दंत की दमक द्युति दामिनि दली गई।
> चौसर चमेली चारु चंचल चकोरन तैं
> चाँदनी मैं चंद्रमुखी चौंकत चली गई॥१॥

(११२२) सुबंस शुक्ल।

शिवसिंहसरोज में लिखा है कि ये महाशय बिगहपुर ज़िला उन्नाव के रहने वाले थे, और इन्होंने अमेठी के राजा उमरावसिंह बंधलगोत्री के यहाँ अमरकोष, रसतरंगिणी और रसमंजरी नामक ग्रन्थ संस्कृत से भाषा किये और फिर बैल वाले राजा बुद्धसिंह के यहाँ जाकर विद्वन्मोदतरंगिणी नामक ग्रन्थ बनाने में राजा साहब को सहायता दी। हमारे पास इनका उमरावकोष नामक ग्रन्थ हस्तलिखित वर्तमान है, जो अमरकोष का अनुवाद है। इसमें सुबंस ने अपने आश्रयदाता का पूरा वर्णन किया है। ये कहते हैं कि बिसवाँ (ज़िला सीतापुर) में चौधरियों के घराने में राजा बालचन्द्र के अमरसिंह पुत्र थे, जिनके शिवसिंह और भवानीसिंह नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। इन्हीं शिवसिंह के पुत्र उमरावसिंह इनके आश्रयदाता थे। बिसवाँ में चौधरी कायस्थों का यह घराना अद्यावधि वर्तमान है, और इनकी गणना अब भी रईसों में है। सुबंस जी ने लिखा है कि उन्होंने उमरावसिंह के नाम पर "उमरावशतक" और "उमरावप्रकाश" नामक दो ग्रन्थ बनाये थे और फिर उन्हीं की आज्ञानुसार संवत् १८६२ में "उमरावकोष" बनाया। अतः इनका अमेठी के राजा उमरावसिंह के आश्रय में ग्रन्थ बनाना प्रमाणित नहीं होता और इस विचार से सुबंस का "रसतरंगिणी" और "रसमंजरी" का अनुवाद करना भी ठीक नहीं जान पड़ता। यह सुना जाता है कि ये महाशय बैल में भी गये थे। इन्होंने लिखा है कि उमरावसिंह ने इनको घोड़ा, हाथी,-

इत्यादि दिये। सुवंस जी लिखते हैं कि उमरावसिंह ने भी "रस-चन्द्रिका" नामक ग्रन्थ बनाया। आपने उसका एक छंद भी अपने उमरावकोष में उद्धृत किया है। यथा—

लीला के सदन आय बैठे एक आसन पै
　　बाढ़ै लगी हरख मनोरथ के धाम की।
चंपलता सुन्दर तमाल मनिमाल चारौं
　　दुति दामिनी की अरु घन अभिराम की॥
सिंधु तनु रूप की तरंगें उठैं दुहुन के
　　भारै उमराव छवि लाजै रति काम की।
ईस चित चोभा है मुनीस मन लोभा लेखि
　　कोभा कवि कहै देखि सोभा स्यामा स्याम की॥

सुवंस कवि का केवल यही एक ग्रन्थ हमने देखा है, जिसमें अमरकोष के श्लोकों का अनुवाद अच्छे छन्दों में किया गया है, और ग्रन्थ १८४ पृष्ठों में पूर्ण हुआ है। इन्होंने हर एक शब्द के जितने नाम कहे हैं उनकी गिनती लिख दी है। गँधौलीवासी पं० युगलकिशोर जी मिश्र ने इसके अंत में एक शब्दानुक्रमणिका भी लगा दी है, जिससे ग्रन्थ और भी उपयोगी हो गया है। इसकी रचना से जान पड़ता है कि सुवंस जी सुकवि थे। इन्होंने बड़ी मधुर ब्रजभाषा में कविता की है। इनको हम तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं।

मोती जाकै छत्र मैं नछत्र के समान सोहैं
　　वचन पियूष करो रैयति को ढाल भो।

चंद्रिका सी कीरति चहूँधा जाकी फैलि रही
सुजन चकोर जासों परम निहाल भो ॥
सोई मनोराम गुनसागर को तनै भूमि
शत्रु कुल कंज को उदंड चली काल भो।
धवल बलंद सुख कंद यो सुबंस कंद
चंद के समान बालचंद महिपाल भो ॥

खोज में पिंगल नामक एक ग्रन्थ और मिला है जिसको इन्होंने संवत् १८६५ में राजा उमरावसिंह की आज्ञानुसार लिखा था।

नाम—(११२३) मानदास।

ग्रन्थ—(१) रामकूटविस्तार (६७ पृष्ठ), २ कृष्णविलास (३२५ पृष्ठ)।

समय—१८६३।

विवरण—रामकूटविस्तार में दोहा चौपाइयों द्वारा नाममहिमा, भक्तिमहिमा, भक्तिज्ञान इत्यादि का कथन है। कृष्णविलास में कृष्णचरित्र का ब्रज से द्वारका पर्यन्त वर्णन किया गया है। कविता साधारण श्रेणी की है। हमने ये ग्रन्थ दर्बार छतरपूर में देखे हैं।

कौसलेस सुव चरित सुहाये। धन दल सोय व्याहि घर आये ॥
पितुहित बसि बन करि सुर काजू। लंका जीति अवध करि राजू ॥

भजो मन राधे कृष्ण कृपाल।
जगन्नाथ जगदीस जगत गुरु ब्रजपति दीनदयाल ॥

मधुसूदन माधव मुकुंद हरि नाहरि श्रीनंदलाल ।
बनमाली बलबीर बिहारी राम कृष्ण गोपाल ॥ २ ॥

नाम—(११२४) उत्तमचन्द्र भंडारी ।

ग्रन्थ—(१) नाथचंद्रिका, (२) अलंकार आशय (१८३७), (३) तारकतत्त्व, (४) नीति की बात, (५) रत्न हम्मीर की बात । नाथपंथियों की महिमा ।

कवितकाल—१८६४ तक ।

विवरण—महाराजा भीमसिंह जोधपुर-नरेश के मन्त्री थे और कुछ दिन महाराजा मानसिंह के भी मन्त्री रहे । इनकी कविता साधारण श्रेणी की है ।

रहित विषय आश्रय स्वजन पद कुवलिय सुखकन्द ।
सदय अनामय जगनमय जै कंचन गिरि चन्द ॥
नर समुद्र मरु देस बिच जलज जोधपुर जान ।
जहँ बैठे राजस करत विधि विधि श्री नृप मान ॥

नाम—(११२५) महाराजा मानसिंह जोधपुर राजपूताना ।

ग्रन्थ—(१) रागाँ रो जोड़ो, (२) बिहारी सतसई टीका, (३) जलंधर नाथ जी रा चरित्र, (४) नाथचरित्र, (५) श्रीनाथजी, (६) रागसार, (७) नाथप्रशंसा, (८) कृष्णविलास, (९) महाराज मानसिंह जी की वंशावली, (१०) नाथ जी की वाणी, (११) नाथकीर्तन, (१२) नाथमहिमा, (१३) नाथपुराण, (१४) नाथसंहिता, (१५) रामविलास, (१६) संयोग शृंगार का

दोहा (देसी भाषा), (१७) कवित्त सवैया दोहे, (१८) सिद्ध-गंग (१८४२)।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—इन महाराज ने संवत् १८६० से १९०० तक राज्य किया। इनकी कविता की भाषा राजपूतानी है, परन्तु ब्रजभाषा में भी ये महाशय अच्छी कविता करने में समर्थ हुए हैं। इन्होंने बहुत से छन्दों में कविता की है और रचना में पूनकार्यता भी पाई है। इनकी भाषा मनोहर और सुकवियों की सी है। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

सीत मन्द सुखद समीर ते चलत मृदु
अम्बन के मंजर सुबास भरे चारों ओर।
जिनते उठत परिमल की लपट अति
ललित सुचित जौन भौरन को लेत चोर॥
आयो कुसुमाकर सोहायो सब लोकन को
हेरत ही हियरे उठत सुख की हिलोर।
अति उमदाने रहें महा मोद साने रहें
भौर लपटाने रहें जिन पर साँझ भोर॥

नाम—(११२६) महाराज सुन्दरसिंह, बनारस।

ग्रन्थ—(१) पंचाध्याई (१८६९), (२) गौरीबाई की महिमा (१८६९), ३ हुस्नचमन (१८७०)।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—इन्होंने अपनी रचना में श्रीकृष्णसम्बन्धी शृंगार कविता विशेषतया कही है, परन्तु एक ग्रन्थ में गौरी बाई की भी महिमा लिखी है। इन्होंने छन्दोभंग भी किये हैं। इनकी गणना हीन श्रेणी में है।

हरि गुन पै पल पल बलि जाऊँ। तिन किरपा ते हरि गुन गाऊँ॥
श्री नागरीदास महराज। हरि भक्तन औ कवि सिरताज॥
रूप नगर के राज सोहाय। वृन्दावन दम्पति मन लाय॥
छोड़ि राज व्यवहार कि आसा। दम्पति चरनन कीन्हो वासा॥

इश्क चमन के फूल सब रहे जहाँ तहँ फूल।
मैं सरवर को करि सको यह मेरी है भूल॥
इश्क चमन की चमन है ज्यों अकास में चन्द।
मैं पटबीज (हि) कहत हौं दीन हीन मतिमन्द॥

(११२७) ललकदास।

राजा इन्द्रविक्रमसिंहजी तालुकदार इटौंजा ज़िला लखनऊ के पुस्तकालय से हमको महाराज ललकदासकृत सत्योपाख्यान नामक २६४ बड़े पृष्ठों में घनी रीति से लिखा हुआ एक बड़ा ग्रन्थ प्राप्त हुआ। इसमें कवि के विषय में सिवा नाम के और कुछ भी नहीं लिखा है और न ग्रन्थ बनने का समय दिया है। राजा साहब के पास संवत् १९३१ की लिखी हुई प्रति है। इस कवि का नाम दितासि इसवाज में भी नहीं लिखा है। इनका नाम हमें कहीं भी नहीं मिला, केवल बेनी कवि ने कई कवित्तों द्वारा इनकी निन्दा की है, जिसका एक पद नीचे लिखा जाता है:—

बाजे बाजे ऐसे डलमऊ में बसत
जैसे मऊ के जोलाहे लखनऊ के ललकदास।

बेनी कवि का वेदान्त छोना शिवसिंहजी ने संवत् १८९२ में लिखा है श्रीर बेनी का रसविलास नामक ग्रन्थ संवत् १८७४ का बना हुआ है। बेनी कवि बड़े भंडाचार्य्य थे। इस पद में उन्होंने डलमऊ वालों की श्रोर कई स्थानों के निवासियों की निन्दा का ललकदास को उपमेय बनाया है। अतः अनुमान से ललकदास के ग्रन्थनिर्माण का संवत् १८७० के लगभग जान पड़ता है। लखनऊ में इनका पता नहीं लगता, परन्तु बेनी ने इन्हें लखनऊ-वासी माना है श्रीर इनका ग्रन्थ लखनऊ से १६ मील पर मिला। बेनी के एक छन्द से यह भी विदित होता है कि महात्मा ललक-दास कंठी धारण करते थे, इनके बहुत से शिष्य थे, श्रीर ये कवियों से वाद भी करते थे। जान पड़ता है कि इन्होंने कभी बेनी कवि से भी वाद किया था श्रीर इसी से रुष्ट होकर उसने इनके तीन भँड़ौश्रा छन्द बनाये। इन छन्दों के अनुचित होने पर भी हमें इनसे इस महात्मा के चरित्र जानने में बड़ी सहायता मिली।

सत्योपाख्यान में रामचन्द्र के जन्म से लेकर उनके विवाह-पर्यन्त कथा बड़े ही विस्तारपूर्वक वर्णित है। इसके पीछे उनकी होली श्रीर जलकेलि आदि के कथन हैं। राज्याभिषेक एवं बन-वासप्रसंग इन्होंने नहीं उठाया है। जो जो बातें इन्हें उचित नहीं जान पड़ीं, उन्हें ये छोड़ गये हैं। परशुराम से किसी भाँति का कोई भी विवाद न करा के इन्होंने उनसे राम को धनुषमात्र

दिला दिया है। इसी प्रकार वनवास की कथा न कह कर आपने ग्रन्थ ही समाप्त कर दिया। इन्होंने रामचन्द्र के जगद्विख्यात कर्मों का सूक्ष्म वर्णन किया, परन्तु उनके गार्हस्थ्य कार्य्यों में बड़ा ही विस्तार किया। वाल्मीकिजी ने बालकाण्ड में सब से अधिक विस्तार किया, परन्तु इस कवि ने उनसे भी दुगुना बालकांड बनाया है। इनकी भाषा माने गोस्वामी तुलसीदास की ही भाषा है और इनकी कविता बड़ी मनोहर है। कई जगह पर इन्होंने रघुवंश और नैपध के भाव रक्खे हैं, जिससे जान पड़ता है कि इनको संस्कृत का भी अभ्यास था। इन्होंने अपनी कथा भी पुराणों की रीति से लिखी है और वह प्रशंसनीय है। बहुत स्थानों पर इनके वर्णन तुलसीदास जी से मिल जाते हैं और इनके भक्ति-मार्ग के विचार भी गोस्वामी जी से मिलते जुलते हैं। इन्होंने बहुधा दोहा चौपाइयों में कथा कही है, परन्तु कहीं कहीं अन्य छन्द भी लिखे हैं। इन्होंने अनुप्रास आदि का ध्यान अधिक न रख के मुख्य वर्णन को प्रधान रक्खा है। हम इनकी गणना मधुसूदनदास की श्रेणी में करते हैं।

धरि निज अंक राम को माता।
लह्यो मोद लखि मुख मृदु गाता॥
दन्त कुन्द मुकता सम सोहैं।
बन्धु जीव सम जीभ बिमोहे॥
किसलय सधर अधर छवि छाजै।
इन्द्रनील सम गंड बिराजैं॥
सुन्दर चिबुक नासिका सोहै।

चुमचुम तिलक चिलक मन मोहैं ॥
काम चाप सम भृकुटि विराजैं।
अलक वलित मुख अति छवि छाजैं ॥
यदि विधि सकल राम के भगा।
लखि चूमति जननी मुख संगा ॥

नाम—(११२८) सागर वाजपेयी ऊँचे वाले।

ग्रन्थ—धामा मनरंजन।

जन्मकाल—१८४३।

मरणकाल—१८७०।

विवरण—आप लखनऊ वाले महाराजा टिकैतराय के यहाँ थे। इनका कोई ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आया, परन्तु आपकी स्फुट कविता सग्रहों में बहुत पाई जाती है, जो व्रजभाषा में मनोमोहिनी है। हम इनको पद्माकर की श्रेणी में समझते हैं।

जाके लगी सोई जानै विथा परपीर में को उपहास करै ना।
सागर ए चित मैं चुभि जात हैं कोटि उपाय करौ निसरै ना ॥
नेक सी कांकरी जाके परै सु तौ पीर क कारन धीर धरै ना।
परी सखी कल कैसे परै जब आँखि मैं आँखि परै निसरै ना ॥

(११२६) खुमान।

ठाकुर शिवसिंह जी के मतानुसार इनका जन्म संवत् १८४० विक्रमीय का था और ये बुँदेलखंड में चरखारी राजधानी के निवासी बंदीजन थे। जाँच से भी इनका कविताकाल १८७० समझ

पड़ता है। ये विक्रम साह चरखारी वाले के यहाँ थे। इन्होंने लक्ष्मण-शतक तथा हनुमाननखशिख नामक ग्रंथ बनाये। हमने लक्ष्मण-शतक देखा है जिसमें कुल १२९ छंदों द्वारा मेघनाद और लक्ष्मण का युद्ध कहा गया है। इन्होंने व्रजभाषा में ज़ोरदार रचना की है, जो प्रशंसनीय है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में समझते हैं।

आयो इंद्रजीत दसकंध को निबंध बंध
　　बोल्यो रामबंधु सों प्रबंध किरवान को।
को है मसुमाल को है काल बिकराल मेरे
　　सामुहे भए न रहै मान महेसान को॥
तूतो सुकुमार यार लच्छन कुमार मेरी
　　मार बेसुमार को सहैया घमासान को।
बीर ना चितैया रन मंडल रितैया काल
　　कहर बितैया हौं जितैया मघवान को॥

खोज से इनके निम्नलिखित ग्रंथ और मिले हैं:—अमरप्रकाश, अष्टयाम, हनुमानपंचक, हनुमतपचीसी, हनुमानपचीसी, नीति-निधान, समरसार, नृसिंहचरित्र और नृसिंहपचीसी। इनका एक और उदाहरण देते हैं।

भूप दसरथ को नवेलो अलवेलो रन
　　रेलो रूप झेलो दल राकस निकर को।
मान कवि कीरति उमंडी खलखंडी चंडी
　　पति सों घमंडी कुलकंडी दिनकर को॥
इन्द गज मंजन को भंजन प्रभंजन तनै
　　को मनरंजन निरंजन भरन को॥

रामगुन ग्राम मनवांछित को दाता।
हरिदासन को त्राता धनि ज्ञाता रघुबर को॥

कहते हैं कि ये महाशय जन्मांध थे। एक संन्यासी की कृपा से इन्हें कविता का बोध हुआ। इन्होंने संस्कृत और भाषा दोनों की कविता अच्छी की है। ये अनुप्रास के बड़े भक्त थे।

(११३०) धनीराम ब्रह्मभट्ट।

ये महाशय असनी ज़िला फ़तेहपुर के निवासी ब्रह्मभट्ट कवि ठाकुर के पुत्र और कविशंकर एवं सेवकराम के पिता थे। इनके वंश का विशेष वर्णन सेवक जी की समालोचना में द्रष्टव्य है। इन्होंने बाबू जानकीप्रसाद काशीवासी के आश्रय में उन्हीं के नाम पर रामचंद्रिका एवं मुक्तिरामायन का तिलक और रामाश्वमेध तथा काव्यप्रकाश के अनुवाद किये, जिनमें काव्यप्रकाश का उल्था थोड़े ही प्रकाशों पर्यंत हो सका। इनकी स्फुट रचना वाग्विलास में यत्र तत्र कवि सेवक ने लिखी है। इनका कोई ग्रन्थ मुद्रित नहीं हुआ और न हमने देखा है। यह समालोचना स्फुट कविता के आश्रय से लिखी जाती है। खोज में रामगुणोदय नामक इनका एक ग्रन्थ भी लिखा है। धनीराम जी के जन्म मरण इत्यादि के समय सेवक की जीवनी में नहीं दिये गये हैं। अनुमान से जाना जाता है कि इनका जन्म लगभग सं० १८४० के हुआ होगा और कदाचित् ये ५० वर्ष से अधिक जीवित न रहे होंगे, क्योंकि इनका काव्यप्रकाश अपूर्ण रह गया। इनका कविता-काल १८७० के लगभग समझ पड़ता है। ये महाशय संस्कृत के ज्ञाता जान पड़ते हैं और भाषा

की कविता भी इनकी सरस और प्रशंसनीय है। ये तोष कवि की श्रेणी के हैं॥

चूमत फिरत मुख चारु पर नारिन के,
साधुन में पावत बड़ाई साधु रसकी।
गुनि जन कंठ राखै सुमनसहार ताही
भार अरि डरन दरार भारी मसकी॥
कहै धनीराम भूप जानकी प्रसाद जाकी
गाइ कवि सुमति सुपाइ पार न सकी।
धावै देस देसन चपल गति गानी कहूं
जानी न परति गति रावरे सुजस की॥१॥

तारे सुत सगर उधारे बहु पातकिन
भारे पाप पुञ्जनि विदारे प्राक पन से।
परम पिरीति पारवती को विहाय शंभु
शीश पर धरयो हे बचन क्रम मनसे॥
कहै धनीराम गंग परम पुनीत तेरे
छाप तीनो लोक ओक ओक जस धनसे।
गाई जलकन गरुआई चारयो ओर पाई
पाई कहूँ बडेन बडाई बडे तन से॥२॥

नाम—(११३१) जानकीप्रसाद बनारसी।

ग्रन्थ—१ रामचन्द्रिका टीका, २ युक्ति-रामायण, ३ रामभक्ति-प्रकाशिका।

कविताकाल—१८७२। ये महाशय अच्छे विद्वान् कवि हुए हैं। आपने रामचन्द्रिका की टीका बड़ी उत्तम की और । त्य

भी बढ़िया रचा। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

कुंडलित सुंड गंड मुंडत मलिंद पुंद बंदन
 विराजै मुंड अद्भुत गति को।
बाल ससि भाल तीनि लोचन बिसाल राजै
 फनि गन माल सुभ सदन सुमति को॥
ध्यावत बिनाही श्रम लावत न बार नर
 पावत अपार भार मोद धन पति को।
पाप तरु कदन को बिघन निकंदन को
 आठौ जाम बंदन करत गनपति को॥

नाम—(११३२) महाराजा जैसिंह रीवाँ।

ग्रन्थ—१ कृष्णतरंगिणी, २ हरिचरितामृत, ३ श्रीरीसिंह कथा, ४ वामन कथा, ५ परशुराम कथा, ६ हरिचरितचंद्रिका, ७ कपिलदेवकथा, ८ पृथुकथा, ९ नारदसनत्कुमारकथा, १० स्वयंभुव मनु-कथा, ११ दत्तात्रेय-कथा, १२ ऋषभदेव-कथा, १३ व्यासचरित्र कथा, १४ वलदेवकथा, १५ नरनारायण-कथा, १६ हरि-अवतार-कथा, १७ हयग्रीव-कथा, १८ चतुश्लोकी भागवत।

रचनाकाल—१८७३ से १८९० तक।

ये महाराज रीवाँ नरेश थे। इनकी कविता बड़ी ही सरस और मधुर होती थी। इस राज्य में सदैव कवियों का सम्मान होता रहा है और इनके पुत्र तथा पौत्र भी अच्छे कवि हुए हैं। इस राज्य से कविता को बहुत सहायता पहुँची। इनकी गणना तोष

की श्रेणी में की जाती है। आप का जन्म संवत् १८२१ में हुआ था और सं० १८६५ से १८९१ तक राज्य रहा। आप ने सं० १८६९ में अँगरेज़ों से सन्धि की।

(११३३) नवलसिंह कायस्थ ।

ये महाशय झाँसी-निवासी श्रीवास्तव कायस्थ समथर-नरेश राजा हिन्दूपति की सेवा में थे। सुकवि होने के अतिरिक्त ये चित्रकार भी अच्छे थे। इन्हों ने संवत् १८७३ से १९२६ पर्यन्त ग्रन्थ-रचना की। इन के तीस ग्रन्थ खोज में मिले हैं, जिन में एक व्रजभाषा गद्य का भी है। ग्रन्थों के नाम ये हैं:—

रासपंचाध्यायी, रामचन्द्रविलास का आदि खंड, रामचन्द्र-विलास का रासखंड, रामायणकोश (१९०३), शङ्कामोचन (१८७३), रसिकरंजनी (१८७७), विज्ञानभास्कर (१८७८), व्रजदीपिका (१८८३), शुकरम्भासंवाद (१८८८), नामचिन्तामणि (१९०३), जौहरिनतरङ्ग (१८७५), मूलभारत (१९१२), भारतसावित्री (१९१२), भारतकवितावली (१९१३), भाषासप्तशती (१९१७), कविजीवन (१९१८), आल्हा रामायण (१९२२), आल्हा भारत (१९२२), रुक्मिणी-मङ्गल (१९२५), मूल ढोला (१९२५), रहस लावनी (१९२६), अध्यात्म रामायण, रूपक रामायण, नारीप्रकरण, सीतास्वयम्वर, रामविवाहखंड, भारतवार्तिक, रामायणसुमिरनी, विलासखंड, पूर्वश्रृङ्गारखंड, मिथिलाखंड, दानलोभसंवाद और जन्म खंड। ज्ञात संवतों के इनके ग्रन्थ ५३ वर्षों पर फैले हैं। इन्होंने विविध छन्दों में रचना की है, जिसका चमत्कार साधारण श्रेणी का है। आप ने व्रजभाषा का प्रयोग किया है। उदाहरण:—

११२

"श्री सदारायन कौ मेरी नमस्कार है हैं कैसे नारायन जिन के सुदरसन चक्र की भ्रमिन ते उतपंन भयो जो नैमिषारन्य तीर्थ ताके विषै सौनकादिक रिषिश्वर भागवत भक्ति जग्य करकै विष्णु भगवान कौ आराधन चिर काल ते करत ते तहां एक समै मैं सूत पौराणिक के पुत्र उग्रश्रवा कौ आइबो भयौ।"

"अमय अनादि अनन्त अपारा। अमन अमान अमद अविकारा॥
अज अतीत आतम अविनासी। अगम अगोचर अविरल वासी॥
अधि अव्यक्त अनाम अमाया। अचय अनामय अभय अजाया॥
अकथनीय अद्वैत अरामा। अमल अखेद अकर्म अकामा॥
सतत अलिप्त ताहि उर ध्याऊं। अनुपम अमल सुजस मय गाऊं॥
एक अनेके आतमा रामा। अभिमत अध्यातम अभिरामा॥"

"सगुन सरूप सदा सुषमा निधान मंजु
बुद्धि गुन गुनन अगाध धनपति से।
भनै नवलेस फैलो विसद मही मैं जस
बरनि न पावै पार भार फनपति से॥
जक निज भक्तन के कलुष प्रभंजै रंजै
सुमति बढ़ावै धन धाम धनपति से।
अवर न दूजौ देव सहज प्रसिद्ध यह
सिद्ध वर दैन सिद्ध ईस गनपति से॥

(११३४) नाथूराम चौबे।

आपने संवत् १८७४ में दोहों द्वारा चित्रकूटशत नामक एक साधारण श्रेणी का ग्रन्थ रचा। छत्रपूर में हमने इसे देखा।

चित्रकूट बन बास करु करि सन्तन के। साथ ।
आस तजै सब जगत की भजै सदा रघुनाथ ॥
• चित्रकूट सब कामदा पाप पुंज हरि लेत ।
छिन छिन उज्जल जस बढ़त राम भगति को देत ॥

(११३५) जयगोपाल ।

ये काशीपुरी मोहल्ला दारानगर के रहने वाले राधाकृष्ण के पुत्र थे। अपनी जाति या कुल का कोई पता इन्होंने नहीं दिया है। सन्त रामगुलाम इन के गुरु थे। इन्होंने संवत् १८७४ में तुलसी शब्दार्थ प्रकाश नामक भाषाकोष बनाया, जिस में तीन प्रकाश हैं। प्रथम प्रकाश में वस्तु संख्या-वर्णन, द्वितीय में शब्दार्थ-निर्णय एवं तृतीय में गुह्य स्थलों के अर्थों का कथन है। हमारे पुस्तकालय में इस ग्रन्थ का केवल प्रथम प्रकाश हस्त-लिखित है, जिसमें १ से लेकर १८ पर्यन्त शब्दों का वर्णन दोहों में हुआ है, जो इस क्रम से कहा गया है, कि जैसे यदि एक का वर्णन किया गया, तो उस में जितने पदार्थ एक हैं उनका कथन कर दिया गया। पुस्तक उपयोगी है और यदि पूरा ग्रन्थ हो तो अर्थ समझने में बहुत सहायता दे सकता है। हमारी हिन्दी भाषा में कोषों का अभाव सा है और जो कुछ हैं भी वे मुद्रित नहीं हुए हैं। यदि खोजकर कोष-ग्रन्थ प्रकाशित किये जावें, तो कोष का इतना अभाव कदाचित् न रहे। हमारे ही पास सुवंस शुक्ल कृत "अमरकोष भाषा," पं० व्रजराज मिश्र-कृत "हिन्दी-कोष" और यह ग्रन्थ अपूर्ण प्रस्तुत हैं। यदि विशेष

खोज की जाये ते बहुत से कोषग्रंथ हस्तगत हो सकते हैं।
भाषा इस ग्रंथ की साधारण श्रेणी की है।

उदाहरण—एकादि वस्तु गणना।

स्वस्तिश्री गणपतिदसन रूप भूमि अरु चंद।
शुक्रदृष्टि पुनि चक्र रवि एक सच्चिदानंद॥

(११३६) हरिवल्लभ।

इन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का भाषानुवाद दोहों में किया, परंतु कहीं सन् संवत् या अपना पता नहीं दिया। हमारे पास इसकी एक लिखी पुस्तक संवत् १८७५ की वर्तमान है। अतः इसका रचनाकाल इसके प्रथम का होगा। यह अनुवाद अच्छा हुआ है। यद्यपि गीता से ग्रंथ का अनुवाद करना और उसके एक श्लोक का अभिप्राय एकही दोहे में कह देना बड़ाही कठिन काम है, जो शायद होही नहीं सकता, तथापि इन्होंने जो अनुवाद किया है वह संतोषप्रदायक है। यह गीता मूल, अनुवाद, अन्वय और वार्तिक अर्थ से अलंकृत करके लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस के स्वामी ने प्रकाशित किया है। इसमें कहीं कहीं दोहों में अशुद्धियाँ रहगई हैं, तो भी पुस्तक देखने और पढ़ने योग्य है। खोज में इनका एक और ग्रंथ संगीत भाषा मिला है। काव्य के विचार से हम हरिवल्लभ जी को साधारण श्रेणी में रखते हैं।

लरत मरे लहि है स्वरग जीते पुहुमी भोग।
उठि अर्जुन तू जुद्ध करि यहै जु तो को योग॥ १॥
लाभ हानि अरु दुःख सुख लाभ हानि समजानि।
ताते अरजुन युद्ध करि पाप लेहि जनि मानि॥ २॥

साख्य बुद्धि तोसो कही कहत योग बुधि तोहि।
ता बुधि के सयोग ते रहै न कर्मनि मोहि ॥ ३ ॥
कर्म करै बिन कामना ताको होय न नास।
अल्प किए हू धर्म यह काटत भव भय पास ॥ ४ ॥
बुद्धि जु निश्चयवंत की एकै है तू जानि।
जिनके निश्चय नाहिनै तिनहि बुद्धि बहुमानि ॥ ५ ॥
गीता हरि बल्लभ कियो भाषा कृष्ण प्रसाद।
भयो प्रथम अध्याय यह अरजुन कियो विषाद ॥ ६ ॥

(११३७) वृन्दावन जी।

इनका जन्म सवत् १८४८ में बाबू धर्मचन्द जी जैन के यहाँ शाहाबाद ज़िले के बारा नामक ग्राम में हुआ था। सवत् १८६० में ये काशी में रहने लगे। सवत् १९०५ तक इन्होंने ग्रन्थ बनाये, परन्तु इसके पीछे इनका हाल अविदित है। इनका मृत्युकाल १९१५ के लगभग है। इनको गोस्वामी जी की रामायण की भांति जैनरामायण बनाने की बडी चाह थी, पर यह ग्रन्थ कुछ कारणो से ये बना न सके। इन्होंने अपने पुत्र अजितदास से उसे बनाने का कहा और उन्होंने उसके ७१ सर्ग बनाये भी, पर पीछे उनका भी शरीरपात हो गया। अब उनके पुत्र हरिदास उसे समाप्त करना चाहते हैं।

वृन्दावन जी ने १५ वर्ष की अवस्था से ही काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी थी। इन्होंने प्रवचनसार (१९०५ में), तीस चैाबीस पाठ (१८५६ में), चोवीसी पाठ (१८७५ में), छन्दशतक

(१८९८ में) और अर्हत्पासा केवली नामक पाँच ग्रन्थ बनाये हैं और वृन्दावनविलास नामक १५० पृष्ठ का ग्रन्थ इनकी स्फुट कविताओं का संग्रह है। प्रवचनसार महात्मा कुन्दकुन्दाचार्य्य के इसी नाम वाले ग्रन्थ के आशय पर बना है। यह २३० पृष्ठ का एक बड़ा और उत्तम जैनधर्मग्रन्थ है। छन्दशतक में १०० उत्तम छन्द छाँट कर कवि ने कहे हैं और प्रत्येक छन्द का नाम उसी छन्द में कह दिया है। यह ग्रन्थ बहुत विलक्षण है। अर्हत्पासावली केवली एक शकुनग्रन्थ है। वृन्दावन जी ने यमक, अनुप्रासादि का अच्छा प्रयोग किया और सबल कविता की। इनकी भाषा ब्रजभाषा है, परन्तु खड़ी बोली में भी इनकी कुछ कविता मिलती है। ये महाशय आशुकवि भी थे। चौबीसी पाठ इन्होंने एक रात भर में बना डाला था। हम इन्हें तोष की श्रेणी में रक्खेंगे।

बेजान में गुनाह मुझ से बन गया सही।
  ककरी के चोर को कटार मारिये नहीं॥
आनन्द कन्द श्री जिनन्द देव है तुही।
  जस वेद औ पुरान में परमान है यही॥
केवली जिनेश की प्रभावना अचिंत मिंत
  कज पै रहैं सु अन्तरिच्छ पाद कंजरी।
मूष औ बिडाल मोर व्याल बैर टाल टाल
  हैं जहाँ सुमीत ह्वै निचीत भीत भंजरी॥
अंगहीन अंग पाय दर्प को कहा न जाय
  नैनहीन नैन पाय मंजु कंज खंजरी॥

श्रौर प्रातिहार्य की कथा कहा कहैं सुवृन्द
शोक थोक को है सुअशोक पुष्पमंजरी ॥
(अशोक पुष्पमंजरी छन्द का उदाहरण है)
चारु चरन आचरन चरन चित हरन चिह्नकर ।
चंद चंद तन चरित चंदथल चहत चतुर नर ॥
चतुक चंड चकचूरि चारि दिक चक्र गुनाकर ।
चंचल चलित सुरेस चूलनुत चक्र धनुरहर ॥
चर अचर हितू तारन तरन सुनत चहकि चिरनंद सुचि ।
जिन चन्द चरन चरच्यो चहत चित चकोर नचि रचि रुचि ॥

इस कविरत्न के रचे हुए प्रवचनसार श्रौर वृन्दावनविलास नामक दो उत्तम ग्रन्थ हमारे पास हैं ।

इस समय के अन्य कवि गण ।

नाम—(११३८) जैनी साधु ।

ग्रन्थ—सरधा अलखवारी ।

कविताकाल—१८५६ ।

नाम—(११३९) अलिरसिकगोविन्द, जैपुर ।

ग्रन्थ—(१) गोविन्दानन्दघन, (२) अष्टदेश भाषा, (३) युगलरस-माधुरी, (४) कलियुगरासो, (५) पिंगल ग्रन्थ, (६) समय-प्रबन्ध, (७) श्रीरामायणसूचनिका ।

कविताकाल—१८५७ ।

विवरण—हरिव्यास के शिष्य होकर वृन्दावन में रहने लगे थे ।

नाम—(११४०) यदुनाथ शुक्ल (बनारस)।

ग्रन्थ—(१) पंचांगदर्शन (१८७७), (२) बृहज्जातक तथा रा प्रश्न, (४) न्यायप्रिय।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—पिता का नाम मथुरानाथ शुक्ल।

नाम—(११४१) प्रेमदास अग्रवाल, अलीगढ़।

ग्रन्थ—(१) गेंदलीला, (२) पंचरत्नगेंदलीला, (३) श्रीकृष्णलीला (४) प्रेमसागर, (५) नासिकेत की कथा, (६) विसातिन लीला, (७) भगवत्विहारलीला।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११४२) भोजराज।

ग्रन्थ—(१) रसिकविलास, (२) उपवनविनोद (१८८४), (३) भोज भूषण।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—महाराजा विक्रमाजीत बुँदेलखंड के यहाँ थे। चरखारी-नरेश विजयबहादुर एवं रत्नसिंह के यहाँ भी गये।

नाम—(११४३) रामशरण, हमीरपुर-इटावा।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—हिम्मतबहादुर के मुसाहब।

नाम—(११४४) रामसिंह बुँदेलखंडी।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—तोष श्रेणी। ये महाशय हिम्मतबहादुर के यहाँ थे।

नाम—(११४५) श्यामसखा।

ग्रन्थ—रामध्यानसुन्दरी।

कविताकाल—१८५७।

नाम—(११४६) शिव कवि।

ग्रन्थ—वागविलास।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—ग्वालियरनरेश दौलत राय सेंधिया के दरबार में थे।

नाम—(११४७) सुन्दरदास, बनारस।

ग्रन्थ—(१) श्रीसुन्दरश्यामविलास (१८६७), (२) विनयसार (१८५७), (३) सुन्दरशतशृंगार (१८६१)।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—हीन श्रेणी। विशेषतया दोहा चौपाई में रचना है।

नाम—(११४८) हरदेव, बनिया वृन्दावन।

ग्रन्थ—(१) छंदपयोनिधि, (२) नायिका लक्षण।

जन्मकाल—१८३०।

कविताकाल—१८५७।

विवरण—अप्पा साहब नागपूर के यहाँ थे।

नाम—(११४९) परमानंदकिशोर।

ग्रन्थ—कृष्णचौंतीसी।

कविताकाल—१८५८ के पूर्व।

नाम—(११५०) काज़िमअली।

ग्रन्थ—सिंहासनबत्तीसी।

कविताकाल—१८५८।

नाम—(११५१) प्राणनाथ कायस्थ, राजनगर तथा महोबा।

ग्रन्थ—(१) सुदामाचरित्र, (२) रागमाला।

जन्मकाल—१८३३।

कविताकाल—१८७८।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११५२) भूपनारायण भाट, काकूपुर।

ग्रन्थ—चदेलवंशावली।

कविताकाल—१८५८।

विवरण—शिवराजपुर के चँदेलों की वंशावली बनाई। साधारण श्रेणी।

नाम—(११५३) हरिसहाय गिरि, मिर्ज़ापुर।

ग्रन्थ—(१) रामाश्वमेध, (२) रामरत्नावली (१८८५)।

कविताकाल—१८५९।

नाम—(११५४) जैदेव।

जन्मकाल—१८३५।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११५५) नित्यानन्द ।

ग्रन्थ—(१) भ्रमनिवारण, (२) भजन ।

कविताकाल—१८६० के क़रीब ।

विवरण—चरणदास इनके दादा-गुरु थे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(११५६) वख़्तावर, हाथरस, ज़िला अलीगढ़ ।

ग्रन्थ—सुन्नीसार ।

कविताकाल—१८६० ।

नाम—(११५७) वेनीदास ।

ग्रन्थ—भीखूचरित्र ।

कविताकाल—१८६० ।

नाम—(११५८) मिर्ज़ा मदनायक बिलग्राम ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

कविताकाल—१८६० ।

विवरण—अच्छे गवैया और कवि थे ।

नाम—(११५९) रघुराय ।

जन्मकाल—१८३० ।

कविताकाल—१८६० ।

विवरण—साधारण कवि ।

नाम—(११६०) रामदास ।

ग्रन्थ—(१) अनिरुद्ध ऊषा की कथा (१८६७), (२) प्रह्लादलीला ।

जन्मकाल—१८३९ ।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—मालतीग्राम मालवा प्रान्त के निवासी, पिता का नाम मनोहरदास।

नाम—(११६१) लक्ष्मणसिंह प्रधान, बुन्देलखंडी।

ग्रन्थ—सभाविनोद।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—दफ़्तर आदि का कथन।

नाम—(११६२) लाला पाठक, रुकुमनगर।

ग्रन्थ—शालिहोत्र।

जन्मकाल—१८३१।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११६३) सवसुख कायस्थ, बलवन्तपुर, ज़िला झाँसी।

ग्रन्थ—चित्रगुप्तप्रकाश।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—चरखारीनरेश महाराज विक्रमाजीत के यहाँ थे।

नाम—(११६४) सिंह।

जन्मकाल—१८३५।

कविताकाल—१८६०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११६५) हित प्रियादास।

ग्रन्थ—दोहा ।

कविताकाल—१८६० ।

विवरण—छत्रपूर में देखा । साधारण श्रेणी । ये महाशय रीवां-नरेश महाराजा विश्वनाथसिंह के गुरु थे ।

नाम—(११६६) महेश ।

ग्रन्थ—हम्मीर रासो ।

कविताकाल—१८६१ के पूर्व ।

नाम—(११६७) उमेदराम चारण, अलवर ।

ग्रन्थ—वाणीभूषण ।

कविताकाल—१८६१ ।

विवरण—साधारण श्रेणी । तिजोर महाराज के वास्ते यह ग्रन्थ बनाया ।

नाम—(११६८) मनराखनदास कायस्थ ।

ग्रन्थ—छन्दोनिधि पिंगल ।

कविताकाल—१८६१ ।

विवरण—हरीनारायणदास बाँदा वाले के पुत्र ।

नाम—(११६९) नोनेसाह ।

ग्रन्थ—(१) सूर प्रभाकर (१८६१), (२) वैद्यमनोहर (१८५१), (३) संजीवनसार (१८६६) ।

कविताकाल—१८६१ ।

नाम—(११७०) तेजसिंह कायस्थ, जिगनी ।

ग्रन्थ—दफ़तररस।
कविताकाल—१८६२।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११७१) चन्द्रघन।
ग्रंथ—भागवतसार भाषा।
कविताकाल—१८६३ के पहले।

नाम—(११७२) जैचन्द, जैपुर।
ग्रंथ—स्वामी कार्तिकायन प्रेक्ष।
कविताकाल—१८६३।
विवरण—जैनग्रंथ है।

नाम—(११७३) दिनेश, टिकारी, गया।
ग्रंथ—(१) रसरहस्य, (२) नखशिख।
कविताकाल—१८६४।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११७४) मंसाराम पाँड़े।
ग्रन्थ—भारतप्रबन्ध।
कविताकाल—१८६४।
विवरण—महाभारत का सार बनाया है। साधारण श्रेणी।

नाम—(११७५) देवीदास कायस्थ, टटम, राज छतरपूर।
ग्रंथ—(१) सुदामाचरित्र, (२) हनुमत-नखशिख, (३) नाममाला रामायण (बालकाण्ड), (४) राजनीति के कवित्त।

जन्मकाल—१८४०।

कविताकाल—१८६५।

विवरण—ये वैद्यकी का उद्यम करते और मिर्ज़ापूर में रहा करते थे।

नाम—(११७६) प्रताप कवि कायस्थ झाँसी।

ग्रंथ—(१) चित्रगोपित्रप्रकाश। (२) श्री वास्तवन के पटाके अष्टक।

कविताकाल—१८६५।

विवरण—राव रामचन्द्र झाँसी वाले के समय में थे।

नाम—(११७७) पहिलवानदास साधू, भीखीपूर, जि० बाराबंकी।

ग्रन्थ—उपखानविवेक (पृ० २६ पद्य)।

कविताकाल—१८६५।

नाम—(११७८) रामदास।

जन्मकाल—१८३९।

कविताकाल—१८६५।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(११७९) शिवलाल दुबे, डौंड़िया खेरा, उन्नाव।

ग्रन्थ—(१) नखशिख, (२) षटऋतु।

जन्मकाल—१८३९।

कविताकाल—१८६५।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(११८०) संग्रामसिंह राजा।

ग्रन्थ—काव्यार्णव (पृ० १२०)।

कविताकाल—१८६६।

विवरण—रीति-ग्रन्थ।

नाम—(११८१) हितगुलाललाल (ब्रजवासी)।

ग्रन्थ—वाणी।

कविताकाल—१८६७ के पूर्व।

विवरण—ये हितहरिवंश जी के सम्प्रदाय के थे।

नाम—(११८२) अमृतराम साधु निरंजनी।

ग्रंथ—ग्राजीरी नकल।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—राजपूतानी भाषा।

नाम—(११८३) चैनदास।

ग्रंथ—गीतानाथजीरो।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—राजपूतानी भाषा।

नाम—(११८४) दौलतराम।

ग्रंथ—(१) जलन्धरजीरोगुण, (२) परिचयप्रकाश।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—राजपूतानी भाषा के कवि हैं।

नाम—(११८५) पहलाद बन्दीजन, चरखारी।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—राजा जगतसिंह के यहाँ थे।

नाम—(११८६) मगजी सेवक।

ग्रन्थ—गीतासेवक मगरा।

कविताकाल—१८६७।

नाम—(११८७) मनोहरदास।

ग्रन्थ—(१) जलग्रभूपणचन्द्रिका, (२) फूलचरित्र।

कविताकाल—१८६७।

नाम—(११८८) मेधा।

ग्रन्थ—चित्रभूपणसंग्रह।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(११८९) रिझवार।

ग्रन्थ—(१) कविता श्री हजूरा रा, (२) कवित्त श्रीनाथ जी रा, (३) नाथ चरित्र रो हकीकत नामा, (४) रिझवार के कवित्त।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—राजपूताना का कवि। आश्रयदाता जोधपुर-नरेश महाराजा मानसिंह।

नाम—(११९०) रिपुवार।

ग्रन्थ—कविता श्री हजूरन रा।

कविताकाल—१८६७।

विवरण—भूपति के साथ यह ग्रन्थ बनाया।

नाम—(११९१) शम्भुनाथ मिश्र, मुरादाबाद, उन्नाव।

ग्रन्थ—राजकुमारप्रबोध।

कविताकाल—१८६७।

नाम—(११६२) स्वरुप मान।

ग्रन्थ—जलन्धरचन्द्रोदय।

कविताकाल—१८६७।

नाम—(११६३) भगवतदास।

ग्रन्थ—(१) रामरसायन पिंगल, (२) भगवतचरित्र।

कविताकाल—१८६८।

विवरण—साधारण श्रेणी॥

नाम—(११६४) गंगादास चंदेल क्षत्रिय।

ग्रन्थ—(१) शांतसुमिरनी, (२) शब्दसार, (३) महालक्ष्मी जू के पद।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—हरिसिंह के पुत्र नवनदास के शिष्य।

नाम—(११६५) जानकीदास कायस्थ।

ग्रन्थ—(१) नामबत्तीसी, (२) स्फुट दोहा, कवित्त और पद।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—दतियानरेश महाराजा परीक्षित के यहाँ थे। साधारण श्रेणी। सानुप्रास कविता।

नाम—(११६६) प्रयागदास भाट, बसारी, राज्य छतरपूर।

ग्रन्थ—(१) हितोपदेश, (२) शब्दरत्नावली (१८६९)।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—चरखारीनरेश खुमानसिंह के यहाँ थे।

नाम—(११९७) बिनोदी लाल।

ग्रन्थ—कृष्णबिनोद।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—ये राजा चिरंजीलाल उदयपुरवासी के पुत्र हैं।

नाम—(११९८) मारकंडे मिश्र।

ग्रन्थ—चंडीचरित्र।

कविताकाल—१८६९ के पूर्व।

नाम—(११९९) लखनसेन।

ग्रन्थ—महाभारत का हिंदी अनुवाद।

कविताकाल—१८७० के पूर्व।

विवरण—बड़ा ग्रन्थ।

नाम—(१२००) फरनेस।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—चंद्रशेखर कवि के गुरु थे।

नाम—(१२०१) चिरंजीव ब्राह्मण, बैसवारा गोसाँई खेरा।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—साधारण।

नाम—(१२०२) दूलमदास।

कविताकाल—१८६७।

नाम—(११६२) स्वरूप मान।

ग्रन्थ—जलन्धरचन्द्रोदय।

कविताकाल—१८६७।

नाम—(११६३) भगवतदास।

ग्रन्थ—(१) रामरसायन पिंगल, (२) भगवतचरित्र।

कविताकाल—१८६८।

विवरण—साधारण श्रेणी॥

नाम—(११६४) गंगादास चंदेल क्षत्रिय।

ग्रन्थ—(१) शांतसुमिरनी, (२) शब्दसार, (३) महालक्ष्मी जू के पद।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—हरिसिंह के पुत्र नवनदास के शिष्य।

नाम—(११६५) जानकीदास कायस्थ।

ग्रन्थ—(१) नामबत्तीसी, (२) स्फुट दोहा, कवित्त और पद।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—दतियानरेश महाराजा परीक्षित के यहाँ थे। साधारण श्रेणी। सानुप्रास कविता।

नाम—(११६६) प्रयागदास भाट, बसारी, राज्य छतरपूर।

ग्रन्थ—(१) हितोपदेश, (२) शब्दरत्नावली (१८६९)।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—चरखारीनरेश खुमानसिंह के यहाँ थे।

नाम—(११६७) विनोदी लाल।

ग्रन्थ—कृष्णविनोद।

कविताकाल—१८६९।

विवरण—ये राजा चिरंजीलाल उदयपुरवासी के पुत्र हैं।

नाम—(११६८) मारकंडे मिश्र।

ग्रन्थ—चंडीचरित्र।

कविताकाल—१८६९ के पूर्व।

नाम—(११६९) लखनसेन।

ग्रन्थ—महाभारत का हिंदी अनुवाद।

कविताकाल—१८७० के पूर्व।

विवरण—बड़ा ग्रन्थ।

नाम—(१२००) करनेस।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—चंद्रशेखर कवि के गुरु थे।

नाम—(१२०१) चिरंजीव ब्राह्मण, बैसवारा गोसाईं खेरा।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—साधारण।

नाम—(१२०२) बूलमदास।

ग्रन्थ—शब्दावली।

कविताकाल—१८७० के लगभग।

विवरण—ये जगजीवनदास के पुत्र या शिष्य थे, जिन्होंने जगजीवनदासी पंथ कोटवा गाँजर में चलाया है। इस मत के अनुयायी उत्तर में बहुत हैं। इनको हुए क़रीब १०० वर्ष के हुए।

नाम—(१२०३) धीर कवि।

ग्रन्थ—कवि प्रिया टीका।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—महाराजा धीरकिशोर के यहाँ थे।

नाम—(१२०४) मनीराम।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—चन्द्रशेखर कवि के पिता।

नाम—(१२०५) संगम।

जन्मकाल—१८४०।

कविताकाल—१८७०।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१२०६) अनन्तराम।

ग्रन्थ—वैद्यक ग्रन्थ की भाषा।

कविताकाल—१८७१ के पूर्व।

विवरण—महाराजा सवाई प्रतापसिंह जैपुरनरेश की आज्ञानुसार लिखा (१७७८—१८०३ सन्) कविता साधारण श्रेणी।

नाम—(१२०७) भवानीशंकर।

ग्रन्थ—बैतालपचीसी।

कविताकाल—१८७१।

विवरण—लक्ष्मण पाठक के पुत्र।

नाम—(१२०८) श्रीसूर्य्य या सूर्य्य।

ग्रन्थ—कर्मविपाक।

कविताकाल—१८७२ के पूर्व।

नाम—(१२०९) कृष्णलाल जी गोस्वामी (कृष्ण), बूँदी।

ग्रन्थ—(१) कृष्णविनोद (१८७२), (२) रसभूषण (१८७४), (३) भक्तमाल की टीका।

कविताकाल—१८७२।

विवरण—साधारण श्रेणी की कविता करते थे। आप प्रसिद्ध गोस्वामी गदाधरलाल के वंश में थे।

नाम—(१२१०) मानदास, चरखारी (बुँदेलखंड)।

ग्रन्थ—रूपविलास (पिंगल)।

जन्मकाल—१८४५।

कविताकाल—१८७२।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१२११) जनमोहन।

ग्रन्थ—सनेहलीला।

कविताकाल—१८७३ के लगभग।

विवरण—ओड़छा राज्य के पुरोहित थे।

नाम—(१२१२) भीम जू कायस्थ, भदरस, ज़ि० कानपूर।

ग्रन्थ—लीलावती अनुवाद।

कविताकाल—१८७३ के पूर्व।

नाम—(१२१३) लक्ष्मणराव।

ग्रन्थ—लछिमनचन्द्रिका।

कविताकाल—१८७३।

विवरण—महाराजा ग्वालियर दौलतराव सेंधिया के उच्च पदाधिकारी थे।

नाम—(१२१४) शंभूदत्त ब्राह्मण (पूस करणा) जोधपूर।

ग्रन्थ—(१) राजकुमारप्रबोध, (२) राजनीति उपदेश।

कविताकाल—१८७३।

विवरण—श्लोकसंख्या ३२५।

नाम—(१२१५) सागरदान चारण।

ग्रन्थ—गुणविलास।

कविताकाल—१८७३।

विवरण—आप जोधपूर के ठाकुर केसरीसिंह के यहाँ थे।

नाम—(१२१६) भगवदमुदित।

ग्रन्थ—(१) हितचरित्र, (२) सेवकचरित्र, (३) रसिक-अनन्य-माला।

कविताकाल—१८७४ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी। राधावल्लभी सम्प्रदाय के थे।

नाम—(१२१७) गंगाप्रसाद उदैनिया।

ग्रन्थ—रामानुग्रह।

कविताकाल—१८७४।

नाम—(१२१८) जयगोपालसिंह ब्रजवासी।

ग्रन्थ—(१) तुलसीशब्दार्थप्रकाश।

कविताकाल—१८७४।

विवरण—रामगुलाम मिर्ज़ापुर वाले के चेले हैं।

नाम—(१२१९) रामनाथ।

ग्रन्थ—चित्रकूट सतमाला।

कविताकाल—१८७४।

नाम—(१२२०) रसालगिरि।

ग्रन्थ—(१) वैद्यप्रकाश, (२) स्वरोदय।

कविताकाल—१८७४।

विवरण—मैनपुरीनिवासी मोदि गिरि के शिष्य थे। सन्यासी हो कर मथुरा चले गये।

नाम—(१२२१) द्विज दीनदास।

ग्रन्थ—गोकुलकांड।

कविताकाल—१८७५ के पूर्व।

नाम—(१२२२) ऊधो।

जन्मकाल—१८५३।

कविताकाल—१८७५ ।
विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१२२३) जीवनसिंह नल्लवंशी चारण, करौली ।

ग्रन्थ—स्फुट ।
कविताकाल—१८७५ के लगभग ।
विवरण—करौली दरबार में कवि थे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(१२२४) दरियावसिंह (चान) कायस्थ, पन्ना ।

ग्रन्थ—धनुपपचासा ।
जन्मकाल—१८५० ।
कविताकाल—पन्नानरेश हरवंशराय के समय में थे ।

नाम—(१२२५) दीनदरवेश मुसल्मान, बुँदेलखंड ।

ग्रन्थ—स्फुट कुंडलियायें ।
कविताकाल—१८७५ ।
विवरण—महाराजा मानसिंह मारवाड़नरेश के यहाँ थे ।

नाम—(१२२६) फ़तहराम चौबे, बूँदी ।

ग्रन्थ—स्फुट ।
कविताकाल—१८७५ ।
विवरण—राव राजा उमेदसिंह बूँदी महाराज के आश्रित थे काव्य साधारण श्रेणी का है ।

नाम—(१२२७) बहादुरसिंह कायस्थ, चरखारी ।

ग्रन्थ—हनुमानचरित्र, (२) रघुवरविलास, (३) पांडवाश्वमेध, (४) वीर रामायण।

जन्मकाल—१८५०।

कविताकाल—१८७५।

विवरण—चरखारीनरेश महाराज रतनसिंह के यहाँ थे।

नाम—(१२२८) बाँकीदास जी कविराजा चारण।

ग्रन्थ—(१) श्रीहजूरान री कविता, (२) राठोर राजाओं की फुटकर ख्याति।

जन्मकाल—१८४०।

कविताकाल—१८७५।

विवरण—ये महाशय मुरारिदान के पितामह थे। ये उत्तम अनुप्रासपूर्ण रचना करते थे। इनकी गणना तोप कवि की श्रेणी में हो सकती है।

नाम—(१२२६) ब्रजलाल भट्ट, काशी।

ग्रन्थ—(१) चन्द्ररत्नाकर (१८८१), (२) उदितकीर्तिप्रकाश (१६०९), (३) हनुमन्तबालचरित्र (१८७६)।

जन्मकाल—१८५०।

कविताकाल—१८७५।

विवरण—काशीनरेश के आश्रित मान कवि के पुत्र।

नाम—(१२३०) मानसिंह या मैनसिंह नानकपंथी।

ग्रन्थ—मोक्षदायक पथ (पृ० २८८८ पद्य)।

कविताकाल—१८७५।

नाम—(१२३१) शिवलाल पाठक।

ग्रन्थ—(१) अभिप्राय दीपक, (२) मानसमयंक।

कविताकाल—१८७५।

विवरण—रामायण की टीका की है।

नाम—(१२३२) श्रीलाल गुजराती, बाडेर, राजपूताना।

जन्मकाल—१८५०।

कविताकाल—१८७०।

तीसवाँ अध्याय।

पद्माकर-काल।

(१८७९-८९)।

(१२३३) पद्माकर भट्ट।

पद्माकर भट्ट के विषय में डुमरावँ-निवासी पण्डित नकछेदी तिवारी ने एक लेख लिखा था, जो देवनागर के प्रथम वर्ष की प्रथम संख्या में प्रकाशित हुआ। इस लेख के ऐतिहासिक भाग को हम मुख्यशः उसी के आधार पर लिखते हैं, क्योंकि हमारे पास उससे श्रेष्ठतर कोई प्रमाण नहीं है। पद्माकर ने अपने किसी ग्रन्थ में सन्-संवत् का कोई ब्यौरा नहीं दिया। अतः उनके ग्रन्थों का पूर्वापर क्रम बहिरंग प्रमाणों और अनुमानों पर ही निर्भर है।

पद्माकर भट्ट तैलंग ब्राह्मण थे। उनका जन्म संवत् १८१० में बाँदा में हुआ और संवत् १८९० में वे कानपूर में गंगातट पर स्वर्गवासी हुए। इस देश में तैलंगियों की माथुर और गोकुलस्थ नामक दो शाखायें हैं। पद्माकर ने जगद्विनोद के कई अध्यायों के अन्त में लिखा है कि "मथुरास्थाने मोहनलालभट्टात्मज कवि-पद्माकरविरचित," जिससे जान पड़ता है कि ये महाशय माथुर शाखा के थे। ये लोग अत्रिगोत्री हैं। मधुकर भट्ट की पाँचवीं पीढ़ी में जनार्दन भट्ट उत्पन्न हुए। इनके पाँच पुत्र थे, अर्थात् अम्बाजू, गुधरजू, मोहनलाल, क्षेमनिधि और श्रीकृष्ण। मोहनलालजी बाँदा नगर में संवत् १७४३ में उत्पन्न हुए। ये महाशय पूरे पण्डित होने के अतिरिक्त कवि भी थे। आप पहले नागपूर के महाराजा रघुनाथ राव उपनाम अप्पा साहब के यहाँ रहे और फिर संवत् १८०४ में पन्ना के महाराज हिन्दू-पति के यहाँ जाकर उनके मन्त्र-गुरु हुए और उन्होंने इन्हें पाँच गाँव भी दिये। वहाँ से मोहनलालजी जयपुर के नरेश प्रतापसिंह के यहाँ गये। ये महाराज संवत् १८३६ में सिंहासनारूढ़ और संवत् १८६० में स्वर्गवासी हुए। प्रतापसिंह माधवसिंह के पुत्र थे। इन्हीं के पुत्र महाराजा जगत्सिंह थे, जो संवत् १८३० में गद्दी पर बैठे। इन्होंने १७ वर्ष तक राज्य किया। प्रतापसिंह के यहाँ मोहनलाल ने एक हाथी, जागीर, सुवर्णपदक, तथा कविराजशिरोमणि की पदवी पाई।

पद्माकरजी मोहनलाल भट्ट के पुत्र थे। विद्या पढ़ने में इन्होंने संस्कृत और प्राकृत का भी अच्छा अभ्यास किया था। ये महाराज "सुगरा" में नोने अर्जुनसिंह के मन्त्र-गुरु हुए। इनके वंशधर

अब भी यहाँ मन्त्र-गुरु होते हैं। संवत् १८४९ में ये महाराज गोसाईं अनूपगिरि उपनाम हिम्मतबहादुर के यहाँ थे। हिम्मत-बहादुर की प्रशंसा में इन्होंने जो कविता की है, और जिसका कुछ अंश नीचे दिया जायगा, वह उत्तम है। इन्होंने रामरसायन नामक एक रामायण भी बहुत लम्बी चौड़ी बनाई है। यह ग्रन्थ आकार में वाल्मीकीय रामायण से कुछ ही छोटा और प्रायः उसी का भाषानुवाद सा है। रामरसायन तुलसीकृत रामायण की भाँति दोहा, चौपाइयों में बनी है। यह कथा-प्रासंगिक ग्रन्थ है न कि नैषध आदि की भाँति काव्यछटाप्रदर्शक। इसके प्रथम तीन कांड (बाल, अयोध्या, और अरण्य) हमारे पास वर्तमान हैं। ये भारत-जीवन प्रेस में छपे हैं। पद्माकरजी की अन्य कविता देखते हुए रामरसायन की कविता को बहुत शिथिल कहना पड़ता है। पद्माकरकृत किसी ग्रन्थ की कविता ऐसी शिथिल नहीं है। इससे विदित होता है कि संवत् १८४९ में हिम्मतबहादुर के यहाँ जाने और "हिम्मतबहादुर-विरदावली" नामक ग्रन्थ बनाने के पहले ये महाशय रामरसायन बना चुके थे। पण्डित नकछेदी तिवारी ने लिखा है कि जगद्विनोद बना चुकने के पीछे उन्होंने रामरसायन बनाया है, परन्तु जगद्विनोद की काव्यप्रौढ़ता और राम-रसायन की शिथिलता देख कर हम यह कथन किसी अंश में प्रामाणिक नहीं मान सकते। कविता का गौरव देख कर हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि राम-रसायन पद्माकर का प्रथम ग्रन्थ होगा और प्रायः संवत् १८३७ से १८४२ पर्यन्त बना होगा; अन्यथा वह पद्माकरकृत ग्रन्थही न होगा। उदाहरण नीचे लिखा जाता है:—

धन्य जनक तुम दोऊ भाई। पूजत जिनहिं सकल ऋषिराई॥
तुम नित लहहु अनन्द बधाये। यौं कहि दशरथ डेरन आये॥
नान्दीमुख तहँ कीन्ह सराधू। पूजि सुमोहित गुरु मुनि साधू॥
प्रातहि बहु गोदान कराये। इक इक लाख सुविप्रन पाये॥

विधिवत चारो सुतन सौं यौं गोदान दिवाय।
याचत भे धन द्विजन को दशरथ हिय हरषाय॥

बाँदा में बहुत लोग कहते हैं कि यह ग्रन्थ पद्माकरकृत नहीं है बरन् उनके सोनारिन से उत्पन्न हुए पुत्र मनीराम का बनाया हुआ है। पद्माकर जी हिम्मतबहादुर के संवत् १८४९ वाले एक युद्ध में वर्तमान थे। इसका संवत् पद्माकर जी ने स्वयं वर्णन किया है। हिम्मतबहादुर पहले नवाब बाँदा के यहाँ रहते थे। ये बड़े बहादुर युद्ध-कर्ता थे। पीछे से ये अवध के बादशाह के यहाँ नौकर हो गये और उनकी ओर से बहुत सी लड़ाइयों में सम्मिलित रहे। ये महाशय बक्सर की लड़ाई में भी लड़े और उसमें घायल हुए थे। पद्माकर जी ने इनके साथ बहुत दिनों तक रह कर "हिम्मतबहादुरविरदावली" नामक एक उत्तम ग्रंथ बनाया। यह ग्रन्थ हमने नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित देखा है और वह हमारे पुस्तकालय में प्रस्तुत है। इनके साथ पद्माकर संवत् १८५६ तक रहे थे। सो उसी समय तक यह ग्रंथ बना होगा।

(२) तीखे तेग बाही जे सिलाही चढ़े घोड़ेन पै
स्याही चढ़ै अमित अरिंदन की पेल पै॥

कहै पदुमाकर निसान चढ़े हाथिन पै
धूरिधार चढ़ै पाकशासन के सैल पै ॥
साजि चतुरंग चमू जंग जीतिबे के लिए
हिम्मति बहादुर चढ़त फर फैल पै ॥
लाली चढ़ै मुख पै बहाली चढ़ै बाहन पै
काली चढ़ै सिंह पै कपाली चढ़ै बैल पै ॥१॥
तुपक तमंचे तीर तोर तरवारन में
काटि काटि सेना करी सोचित सतारे की।
कहै पदुमाकर महावत के गिरे कूदि
बिलक किलाए आप गज मतवारे की ॥
हेरन हसन हरखन सान धन बह
जूझन पवाँर बीर अरजुन भारे की।
जंगमेंन थाका करयो सूरन में साका जिहि
ताका ब्रह्मलोक को पताका लै पँवारे की ॥२॥

इस ग्रंथ की कविता मनोहर और भाषा प्राकृतमिश्रित ब्रज भाषा है। संवत् १८५६ में पद्माकर जी सितारे के महाराज रघुनाथ राव उपनाम रघोबा के यहाँ गये। सुना जाता है कि इनकी कविता से प्रसन्न होकर रघुनाथ राव ने इन्हें १ हाथी, १ लाख रुपया और १० गाँव दिये। रघुनाथ राव केदान की प्रशंसा जगद्विनोद में कई जगह वर्णित है। उनके यहाँ कुछ दिन रह कर पदुमाकर जी जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह के यहाँ गये। प्रतापसिंह जी बड़े वीर पुरुष होने के अतिरिक्त कवि भी थे, अतः उन्होंने पद्माकर का सम्मान करके उन्हें अपने यहाँ नौकर रख

लिया। संवत् १८६० में महाराजा प्रतापसिंहजी वैकुंठवासी हुए और उनके पुत्र महाराजा जगत्सिंहजी गद्दी पर बैठे। इन्होंने पद्माकर का पूर्ववत् मान तथा पद स्थिर रक्खा। इन्हीं महाराज की आज्ञा से पद्माकरजी ने संवत् १८६७ के लग भग अपनी कविता का भूपण जगद्विनोद ग्रंथ निर्माण किया। यह ६२७ छन्दों का एक बड़ा ग्रन्थ है और इसमें भावभेद एवं रस-भेद विस्तारपूर्वक वर्णित है। भाव भेद के अन्तर्गत नायिकाभेद भी आजाता है। जगद्विनोद न केवल पद्माकरजी की कविता का वरन् भाषा-साहित्य का शृंगार है। इसके छन्द पद्माकर के साहित्यगुणों के वर्णन में लिखे जायँगे। नायिकाभेद के पढ़ने वाले जगद्विनोद और मतिरामजी कृत रसराज सब से पहले पढ़ते हैं और इन दोनों ग्रंथों की कविता जैसी मनोहर है वैसे इनके लक्षण वा उदाहरण भी बहुत ही साफ़ हैं। शृङ्गार-रस के ग्रंथों में इन दोनों के बराबर किसी अन्य ग्रन्थ का प्रचार नहीं है और भाषा-रसिकों ने जितना आदर इन ग्रन्थों को दिया है वह योग्य है।

इसी समय या इसके कुछ ही आगे पीछे पद्माकरजी ने पद्माभरण नामक एक अलङ्कारों का ग्रन्थ बनाया, जिसमें केवल दोहा चौपाइयों द्वारा अलङ्कारों के लक्षण व उदाहरण दिखलाये गये हैं। इस ग्रंथ में ३४४ छंद हैं। काव्य की उत्तमता में यह साधारण है। उदाहरणार्थ दो एक छंद नीचे दिये जाते हैं।

घन से तम से तार से अंजन की अनुहार।
अलि से मावस रैनि से बाला तेरे बार॥

निरखि रूप नँदलाल को दृगन रुचै नहिँ श्रान।
तजि पियूष कोऊ करत कटु श्रौषधि को पान॥
तो बचननि की मधुरता रही सुधा महँ छाय।
चारु चमक नल मीन की नैनन गही बनाय॥

संवत् १८७१ में महाराज मानसिंह का विवाह जगत्सिंह की बहन से श्रौर महाराजा जगत्सिंह का विवाह कृष्णगढ के राजा मानसिंह के यहाँ हुश्रा। उस समय जगत्सिंहजी के साथ पद्माकरजी भी थे श्रौर उनसे श्रौर कविराजा बाँकीदास से छेड़ छाड हुई थी।

तदनन्तर पद्माकरजी उदयपूर के महाराजा भीमसिंह के यहाँ गये। भीमसिंहजी का राजत्वकाल संवत् १८३६ से १८८६ तक रहा है। उनके यहाँ पद्माकरजी संभवतः संवत् १८७३ के लग भग गये होंगे। वहाँ जाकर रानाजी के चित्तविनोदार्थ इन्होंने गुनगौर-मेले का वर्णन किया। इस मेले को रानाजी बहुत पसंद करते थे। यह मेला उदयपुर में श्रव तक होता है। रानाजी ने इनका बड़ा सम्मान करके सुवर्णपदक श्रौर भूषणादि देकर इन्हें प्रसन्न किया।

कुछ दिनों के पीछे ये ग्वालियर के महाराजा सेंधिया दौलतराव के दरबार में गये। इनका राजत्वकाल संवत् १८५३ से १८८५ तक है। सेंधिया महाराज के यहाँ इन्होंने निम्नलिखित छन्द पढ़ाः—

मीनगढ़ बम्बई सुमद मंदराज, बंग,
बंदर को बंद करि बंदर बसावैगो।

कहै पदुमाकर कसकि कासमीर हू को
पिंजर सो घेरि कै कलिञ्जर छुड़ावैगो ॥
बाँका नृप दैालत अलीजा महराज कबूँ
साजि दल पकरि फिरंगिन दबावैगो ।
दिल्ली दहपट्टि पटना हू को झपट्टि करि
कबहूँक लत्ता कलकत्ता को उड़ावैगो ॥

सेंधिया महाराज के यहाँ भी पद्माकर का अच्छा मान हुआ। इनके नाम पर पद्माकरजी ने आलीजाप्रकाश नामक ग्रन्थ बनाया है, परन्तु सुना जाता है कि इसके आदि में दैालतराव की प्रशंसा के कुछ छन्द रख कर मुख्य विषय में कवि ने जगद्विनोद ही को रख दिया है। यह ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ, श्रैार न हमने इसे देखा है। अतः इसके विषय में निश्चयात्मक कुछ नहीं कह सकते।

कहते हैं कि सेंधिया-दरबार के मुख्य मुसाहब ऊदाजी दक्खिनी के कहने से पद्माकर ने हितोपदेश का भाषानुवाद भी किया था। यह ग्रन्थ भी अभी प्रकाशित नहीं हुआ श्रैार न हमारे देखने में आया है। अतः हम इसके बाबत नहीं कह सकते कि इसकी कविता कैसी है, श्रैार इसका पद्माकर द्वारा इस समय निर्मित होना ठीक है या नहीं।

पंडित मकछेदी तिवारी ने पद्माकर का रघुनाथ राव के यहाँ से दैालतराव के यहाँ होकर श्रैार वहाँ आलीजाप्रकाश श्रैार भाषा-हितोपदेश बनाकर जयपुर जाना लिखा है। परन्तु हमको

पूर्वोक्त क्रम से उनका सितारा, जयपुर, और ग्वालियर जाना यथार्थ मालूम पड़ता है। कारण यह है कि संवत् १८६० में महाराजा प्रतापसिंह स्वर्गवासी हुए थे और तिवारीजी ने लिखा है कि पद्माकर उनके यहाँ नौकर रहे हैं, तो इस हिसाब से पद्माकर का प्रतापसिंह के यहाँ कम से कम क़रीब दो साल के रहना मानना पड़ेगा। फिर महाराजा रघुनाथराव के यहाँ भी उन्होंने प्रचुर पुरस्कार पाया था, सो वहाँ भी ये साल डेढ़ साल से कम क्या रहे होंगे। तिवारीजी के कथनानुसार पद्माकर संवत् १८५६ में हिम्मतबहादुर के यहाँ से चले। तब संवत् १८६० तक उनको इतना समय कहाँ से मिलता कि वे रघुनाथराव और प्रतापसिंह के यहाँ भी रहते और बीच में महाराजा सेंधिया के यहाँ जाकर दो ग्रन्थ भी बना आते? महाराजा जगत्सिंह ने सम्वत १८६० तक राज्य किया और सेंधिया दौलतराव ने संवत् १८८६ तक। अतः पद्माकर का जयपुर के पीछे ग्वालियर जाना मानने में कोई आपत्ति भी नहीं है। ग्वालियर से ये महाशय बूँदी गये और वहाँ से अपने घर बाँदा को वापस आये। सुना जाता है कि अंत में यह कुछ रोग से पीड़ित हो गये थे।

इसी समय रोगमुक्त होने की अभिलाषा से इन्होंने प्रबोधपचासा नामक ५१ छन्दों का एक भक्ति-रस का ग्रन्थ बनाया। यह ग्रन्थ बहुत अच्छा बना है और पद्माकर के ग्रन्थों में पूज्य दृष्टि से देखने योग्य है। इसके छन्दों से निर्वेद टपकता है और जान पड़ता है कि दुनिया के देखे हुए और उससे उकताये

हुए किसी बुड्ढे ने इसे बनाया है। स्थानाभाव के कारण केवल एक छन्द इसका उद्धृत करते हैं; परन्तु छन्द इसके सब दर्शनीय हैं।

मानुष को तन पाय अन्हाय अघाय पियो किन गंग को पानी।
आपत क्यों न भयो पदुमाकर रामहिँ राम रसायन सानी॥
सारँगपानि के पाँयन को तजि कै मनरे! कत होत गुमानी।
मोटी मुवंड महा-मतवारिनि मूड़ पै मीचु फिरै मड़रानी॥

रोगमुक्त होने पर पद्माकरजी गंगा-सेवनार्थ कानपुर चले गये और वहीं सुखपूर्वक अपनी आयु के शेष दिन उन्होंने प्रायः ७ साल तक व्यतीत किये। इसी समय आपने गंगालहरी नामक ५६ छन्दों का एक उत्तम ग्रन्थ बनाया। इसके भी सब छन्द बड़े चित्ताकर्षक हैं। उदाहरणार्थ १ छन्द नीचे लिखते हैं।

जैसे तैं न मोकों कहूँ नेकहू डेरात हुतो
तैसे अब तोसों हौं हूँ नेकहू न डरिहौं।
कहै पदुमाकर प्रचंड जो परैगो तो
उमंड करि तोसों भुजदंड ठोंकि लरिहौं॥
चलो चलु चलो चलु बिचलु न बीचही ते
कीच बीच नीच तो कुटुंबहि कचरिहौं।
एरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिँ
गंगा की कछार मैं पछारि छार करिहौं॥

पद्माकरजी ने अपने पापों को अपार कहा है। हमने बाँदा में जाँच करने से केवल इतना सुना था कि इन्होंने एक सुनारिन को घर बिठला लिया था। इस एक पातक को कोई अपार

नहीं कह सकता। जान पड़ता है कि रोगी हो जाने के कारण पद्माकरजी अपने को उस जन्म का पापी समझते थे, इसी कारण उन्होंने ऐसे दीन वाक्य कहे हैं।

अन्य कवियों की भाँति पद्माकरजी ने प्रधानतः शृंगार-कविता न करके वीर और भक्ति पक्ष का काव्य बहुत अधिक किया है। इनके सात ग्रन्थों में केवल जगद्विनोद में शृंगार काव्य है, परन्तु समय के कुचक्र से इनका केवल यही ग्रन्थ परम प्रसिद्ध हुआ।

पद्माकरजी ने संवत् १८९० में गंगाजी के किनारे कानपूर में शरीर-त्याग किया। इन्होंने लाखों रुपये पैदा किये और ये सदैव बड़े आदमियों की भाँति महाराजाओं से सम्मान पाकर रहते रहे और अन्त में पुत्र-पौत्रों से सम्पन्न हो, अस्सी वर्ष की वृद्धावस्था में श्रीगंगाजी के किनारे देवताओं की भाँति यह संसार छोड़ कर देवलोक की यात्रा कर गये। इनके लिए कविता कामधेनु हो गई। इस प्रकार सुखपूर्वक बहुत कम कवियों का समय बीता। अपने विषय में पद्माकर ने केवल एक निम्नलिखित छन्द बनाया है, जिससे इनकी महत्त्व-पूर्ण जीवनी का पूरा परिचय मिलता है।

> भट्ट तिलँगाने को बुँदेल खंड बासी नृप-
> सुजस प्रकासी पदुमाकर सुनामा हैं।
> जोरत कवित्त छन्द छप्पय अनेक भाँति
> संसकृत प्राकृत पढ़ो जु गुन ग्रामा हैं॥

हय रथ पालकी गयन्द गृह ग्राम चारु
आखर लगाय लेत लाखन की सामा हौं।
मेरे जान मेरे तुम कान्ह हौ जगतसिंह
तेरे जान तेरो वह विप्र मैं सुदामा हौं॥

पद्माकर के मिहीलाल और अम्बाप्रसाद (उपनाम अम्बुज) नामक दो पुत्र थे। गदाधर कवि इनके पौत्र थे। पद्माकर के वंशधर जयपुर, बाँदा, दतिया और छत्रपुर आदि स्थानों में रहते हैं।

इनके ग्रन्थों का वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं। अब सूक्ष्मतया इनकी कविता के गुण दोष नीचे लिखे जाते हैं।

इनकी कविता का सर्वप्रधान गुण अनुप्रास है। भाषा में किसी कवि ने यमक और अन्य अनुप्रासों का इतना व्यवहार नहीं किया। इन्होंने अनुप्रास इतना अधिक रक्खा है कि कहीं कहीं वह बुरा मालूम होता है। यथा—

मल्लिकान मंजुल मलिंद मतवारे मिले
मंद मंद मारुत मुहीम मनसाकी है।
कहै पदुमाकर त्यों नादत नदीन नित
नागरि नवेलिन की नजरि निसा की है॥
दौरत दरेरे देत दादुर सु दूदैं दीह
दामिनी दमंकनि दिसान में दसा की है।
बद्दलनि बूँदन विलोकै बगुलान बाग
बंगलन बेलिन बहार बरखा की है॥

अन्य सुकवियों की भांति इनकी भाषा बहुत मधुर ग्रैार कोमल है। ऐसी उत्तम भाषा लिखने में बहुत कविजन समर्थ नहीं हुए हैं। यथा—

ए ब्रजचंद चलो किन वा ब्रज लूकैं बसंत की ऊकन लागीं।
त्यों पदुमाकर पेखैा पलासन पावक सी मनौं फूकन लागीं॥
वै ब्रजवारी विचारी बधू बनि बावरी लैा हिए हूकन लागीं।
कारी कुरूप कसाइनें पैसी कुहू कुहू क्वैलिया कूकन लागीं॥

पद्माकर ने कहीं कहीं लोकोक्तियां भी बहुत अच्छी कही हैं। यथा—

सोने में सुगंध ग्रैा सुगंध में सुन्यैा न सोनो
सोनो ग्रैा सुगंध ताै में दोनो देखियत हैं।
सांचहू ताको न होत भलो जो कहो
नहिँ मानत चारि जने की॥

मतिरामजी की भांति पद्माकर ने भी प्राय: हर उदाहरण में बड़े छन्दों के साथ एक एक दोहा भी कहा है जो ग्रक्सर उत्तम ढंग का होता है। यथा—

कछु गजपति के ग्राहटनि छिन छिन छीजत सेर।
बिधु-बिकास बिकसत कमल कछू दिनन के फेर॥
मदन लाज बस तिय नयन देखत बनत इकंत।
इँचे खिँचे इत उत फिरत ज्यौं दुनारि के कंत॥
कनक-लता श्रीफल फरी रही बिजन बन फूलि।
ताहि तजत क्यों बावरे ग्ररे मधुप मति भूलि॥

पद्माकर की कविता में बढ़िया छंद बहुतायत से पाये जाते हैं। उदाहरण देना हम व्यर्थ समझते हैं, क्योंकि ऐसे छंद इनके किसी अच्छे ग्रन्थ में हर जगह मिल सकते हैं और ऊपर के उद्धृत छन्दों में भी आ चुके हैं।

देवजी की भाँति पद्माकर ने भी कहीं कहीं ऐसा सच्चा वर्णन किया है कि मानो तसवीर खींच दी है। यथा—

आरस सों आरत सम्हारत न सीस-पट
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहै पद्माकर सुरा सों सरसार तैसे
बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर॥
छाजत छबीले छिति छहरि छरा के छोर
भोर उठि आई केलि-मन्दिर दुआर पर।
एक पद भीतर औ एक देहरी पै धरे
एक करकंज एक कर है किँवार पर॥

इससे विशेष इनकी कविता जो पाठक देखना चाहें उनको चाहिए कि पद्माकररचित जगद्विनोद, गंगालहरी और प्रबोध-पचासा देखें।

बहुतेरे कवियों की दृष्टि में इनकी कविता बिलकुल निन्द्य है, क्योंकि उनके मतानुसार पद-लालित्य के फेर में पड़ कर इन्होंने निरर्थक अथवा शिथिल अर्थवाले शब्द बहुत से रख दिये हैं और इनके विशेषण बहुत स्थानों पर अप्रयुक्त एवं अशुद्ध हैं। इधर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र तक इनकी कविता के प्रेमी थे और कर्पूरमञ्जरी में उन्होंने मुक्तकंठ से इनका भारी कवि होना स्वीकार किया है।

ये महाशय अनुपयुक्त विशेषण पद कहीं कहीं अवश्य लिख जाते थे, परन्तु इस बहुतायत से नहीं जैसा कि इनके तीव्रसमालोचक बतलाते हैं। इस एक छोटे से दूषण से इनकी प्रशस्त कविता दूषित नहीं ठहर सकती। ये महाशय ऐसे ऊँचे दरजे के सुकवि भी नहीं हैं कि हम इनकी गणना परमोत्तम कवियों में कर सकें। इन सब बातों पर ध्यान देकर हमने इन्हें तृतीय श्रेणी का कवि माना है, जिस के नायक यही हैं।

नाम—(१२३४) महाराज।

कविताकाल—१८७६ के पूर्व।

विवरण—तोष कवि की श्रेणी।

इनका कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आया, पर इन की कविता ऐसी मनोहर है कि इन की गणना सुकवियों में की जाती है।

उदाहरण।

बात चली चलिबे की जहाँ फिरि बात सोहानो न गात सोहानो।
भूषन साजि सकै कहिको महराज गयो छुटि लाज को बानो॥
यों कर मीडति है बनिता सुनि पीतम को परभात पयानो।
आपने जीवन के लखि अन्तहि आयु की रेख मिटावति मानो॥

नाम—(१२३५) रामसहायदास।

इस कविचूडामणि की बनाई हुई एक सतसई छपी है, जिसका नाम इनके नाम पर "रामसतसई" था, परन्तु उसमें उसके विषय पर भ्रम हो जाता था। अतः भारतजीवन प्रेस के स्वामी ने

इसका नाम पलट कर "शृंगारसतसई" रख दिया । यह ग्रन्थ संवत् १८९२ का लिखा हुआ प्रकाशक को मिला था, सो इस कवि का समय इस संवत् के प्रथम ठहरता है। इनका नाम सूदन कवि की नामावली में नहीं है, जिससे अनुमान होता है कि ये सूदन के पीछे के हैं। अपने विषय में इन्होंने इतनाही लिखा है कि इनके पिता का नाम भवानीदास है। खोज में इनका कविता-काल १८७७ दिया है और इनके बनाये चार और ग्रन्थ वृत्ततरंगिनी सतसई, ककहरा, रामसप्तसतिका और वाणीभूषण भी लिखे हैं।

इस कवि ने अपनी कविता की प्रणाली बिल्कुल बिहारीलाल से मिला दी है और बिहारीसतसई से शृंगार-सतसई इतनी मिल गई है कि यदि बिहारी के दोहे सब लोगों को इतना याद न होते और ये चौदहौ सौ दोहे मिलाकर रख दिये जाते ते। बिहारी के सात सौ दोहे छाँटने में दो सौ दोहे तक इस कवि के भी छँट आते। बिहारी की समता करने में और कोई भी कवि इतना कृतकार्य्य नहीं हुआ है। बिहारी के केवल उत्तमोत्तम दोहे इस कवि के आगे निकल जाते हैं, परन्तु उन के शेष दोहे इसके दोहों से बढ़ कर नहीं हैं। रामसहाय के दोहों की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। इसमें भाषा, जमक, अनुप्रासादि सब बिहारी के समान हैं। इस कवि ने अपनी सूक्ष्मदर्शिता का अच्छा परिचय दिया है। सुकुमारता का भी इन्होंने अच्छा वर्णन किया है। उत्तम छन्दों की मात्रा इस ग्रन्थ में बहुत अधिक है। इन ७२७ दोहों में इस कवि ने कोई क्रम नहीं रक्खा है और इन सब में शृंगार

रस की स्फुट कविता है। परन्तु ढूँढ़ने से इसमें प्राय: सभी भावाङ्गों के उदाहरण मिल जायँगे।

सब प्रकार से बिहारी के पैरों पर पैर रख कर भी इस कवि ने बिहारी की चोरी नहीं की है, केवल बिहारी की छाया कुछ छन्दों में आ गई है।

यथा —

सतरोहैं मुख रुख किये कहे रुखोहैं बैन ।
सैन जगे के नैन ये सने सनेह दुरै न ॥
खंजन कज न सरि लहैं बलि अलि को न बखानि ।
पनी की अँखियानि ते ये नीकी अँखियानि ॥
गुलुफनि लों ज्यों त्यो गयो करि करि साहस ज़ार ।
फिरि न फिरयो मुरवानि चपि चित अति खात मरोर ॥
पेखि चन्द्रचूड़हि अली रही भली विधि सेइ ।
खिन खिन खोटति नखन छद नखनहुँ खतन देइ ॥

इनकी कविता के उदाहरण नीचे लिखते हैं —

सीस झरोखे डारि कै झाँकी घूँघुट टारि ।
कैवर सी कसकै हिये बाँकी चितवनि नारि ॥
बेलि कमान प्रसून सर गहि कमनैत बसन्त ।
मारि मारि बिरहीन क प्रान करै री अन्त ॥
मनरंजन तव नाम को कहत निरंजन लोग ।
जदपि अधर अंजन लगे तदपि न नींदन जोग ॥
सखि सँग जाति हुती सु ती भटभेरो भो जानि ।
सतरौहीं मोहन करी बतरौहीं अँखियानि ॥

भौंह उचै, आँखिया नचै, चाहि कुचै, सकुचाय ।
दरपन में मुख लखि खरी दरप भरी मुसुकाय ॥
ल्याई लाल निहारिये यह सुकुमारि विभाति ।
उचके कुचके भार ते लचकि लचकि कटि जाति ॥

हम इस कवि को दासजी की श्रेणी में रखते हैं ।

(१२३६) ग्वाल कवि ।

ये महाशय वन्दीजन सेवाराम के पुत्र थे। इन्होंने यमुनालहरी में उसके बनने का समय एवं अपने कुल, ठिकाने आदि का हाल सूक्ष्मतया लिखा है। उसीसे विदित होता है कि ये मथुरानिवासी थे और संवत् १८७९ में इन्होंने यमुनालहरी बनाई। ठाकुर शिवसिंहजी ने इनके विषय में यह लिखा है—

"ये कवि साहित्य में बड़े चतुर हो गये हैं। इनके संगृहीत दो ग्रन्थ बहुत बड़े बड़े हमारे पास हैं, और नखशिख, गोपीपचीसी, जमुनालहरी, इत्यादि छोटे छोटे ग्रन्थ, और साहित्यदूषण, साहित्यदर्पण, भक्तिभाव, शृंगारदोहा, शृंगारकवित्त, रसरंग, अलंकार, हमीरहठ, बहुत सुन्दर ग्रन्थ हैं।"

सो उन्होंने इनके पाँच ऐसे ग्रन्थों के नाम लिखे हैं जो उनके पास न थे और अन्य पाँच ग्रन्थ उनके पास थे, जिनमें से दो संग्रह हैं। हमारे पास ग्वाल कवि के यमुनालहरी और कविहृदयविनोद नामक ग्रंथ हैं, और इनके रचित रसरंग (१९०४) और नखशिख भी हमने देखे हैं। यमुनालहरी में १०८ कवित्त और ५ दोहा हैं। कविहृदयविनोद वास्तव में कोई स्वच्छन्द

ग्रंथ नहीं जान पड़ता, परन्तु यह ग्वालरचित कविता का संग्रह-मात्र है। इसमें २११ छंद हैं और इसका उत्तर भाग प्रशंसनीय है। गोपीपचीसी, षट्ऋतु इत्यादि सब इसी के अंतर्गत हैं। इसकी रचना यमुनालहरी के पीछे की जान पड़ती है। इसके अतिरिक्त इनका एक नखशिख भी हमने ठाकुर शिवसिंह सेंगर के पुस्तकालय में देखा है, जो संवत् १८८४ का रचित है। इनका ग्रन्थ रसिकानंद खोज की रिपोर्ट में लिखा है, और राधामाधवमिलन तथा राधाष्टक नामक दो ग्रंथ इनके और कहे जाते हैं।

ग्वाल ने व्रजभाषा में कविता की है और वह प्रशंसनीय भी है। यमुना की प्रशंसा में इन्होंने नव रस और षट् ऋतु भी दिखाये हैं। इनको अनुप्रास और जमक बहुत पसन्द थे और इनकी कविता में उनका प्रयोग भी बहुत हुआ है।

संवत् निधि ऋषि सिद्धि ससि कातिक मास सुजान।
पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान॥

दयाल जमुना के लखि नाके भये चित्रगुप्त,
धौन करना के धोलि मेरी मति ध्वै गई।
कौन गहै कर में कलम कौन काम करै,
रोस की दवाइति सों रोसनाई ध्वै गई॥
ग्वाल कवि काहे ते न कान दै जमेस सुनौ,
नौकरी चुकाय कहाँ तेरी आँखि ख्वै गई।
लेखा भयो झोड़ो रोजनामा को संरखा भयो,
खाता भयो खतम फरद रद ह्वै गई॥

सोहत सजीले सित असित सुरंग श्याम,
जीन सुचि अजन अनूप रुचि हेरे हैं।
सील भरे लसत असील गुन सार दै कै
लाज की लगाम काम कारीगर फेरे हैं॥
घूँघुट फरस ताने फिरत फवित फूले,
ग्वाल कवि लोक अवलोकि भये चेरे हैं।
मोर वारे मनके त्यों पनके मरोर वारे,
त्यौर वारे तरुनी तुरंग दृग तेरे हैं॥

प्रीति कुलीनन सों निबहै अकुलीन की प्रीति में अंत उदासी।
खेलन खेल गयो अबही हमें जोग पठाय बन्यो अविनासी॥
त्यों कवि ग्वाल बिरंचि विचारिकै जोरी मिलाय दई अतिघासी।
जैसोई नंद के पालकु कान्ह सु तैसिही कूबरी कंस की दासी॥

इनकी गणना पद्माकर कवि की श्रेणी में है।

नाम—(१२३७) कान्ह प्राचीन।

जन्मकाल—१८५२।

कविताकाल १८८०।

विवरण—इनका काव्य सरस है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

उदाहरण—

कानन लैां अँखिया ये तिहारी हथेरी हमारी कहाँ लग फैलिहैं।
मूँदे हू पै तुम देखती हो यह कोर तुम्हारी कहाँ लैा सकेलिहैं॥
कान्हहूको सुभाउ यहै उनको हम हाथन ही पर झेलिहैं।
राधेजी माने बुरो कै भलो अँखिमूँदने सग तिहारे न खेलिहैं॥

ग्रंथ नहीं जान पड़ता, वरन् यह ग्वालरचित कविता का संग्रह-मात्र है। इसमें २११ छंद हैं और इनका उत्तर भाग प्रशंसनीय है। गोपीपचीसी, षट्ऋतु इत्यादि सब इसी के अंतर्गत हैं। इसकी रचना यमुनालहरी के पीछे की जान पड़ती है। इसके अतिरिक्त इनका एक नखशिख भी हमने ठाकुर शिवसिंह सेँगर के पुस्तकालय में देखा है, जो संवत् १८८४ का रचित है। इनका ग्रन्थ रसिकानंद खोज की रिपोर्ट में लिखा है, और राधामाधवमिलन तथा राधाष्टक नामक दो ग्रंथ इनके और कहे जाते हैं।

ग्वाल ने ब्रजभाषा में कविता की है और वह प्रशंसनीय भी है। यमुना की प्रशंसा में इन्होंने नव रस और षट् ऋतु भी दिखाये हैं। इनको अनुप्रास और जमक बहुत पसन्द थे और इनकी कविता में उनका प्रयोग भी बहुत हुआ है।

संवत् निधि ऋषि सिद्धि ससि कातिक मास सुजान।
पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान॥
दयाल जमुना के लखि नाके भये चित्रगुप्त,
बैन करुना के बोलि मेरी मति ख्वै गई।
कौन गहै कर में कलम कौन काम करै,
रोस की दवाइति सों रोसनाई स्वै गई॥
ग्वाल कवि काहे ते न कान दै जमेस सुनौ,
नौकरी चुकाय कहाँ तेरी अखि ख्वै गई।
लेखा भयो झोड़ो रोजनामा को संरखा भयो,
खाता भयो खतम फरद रद ह्वै गई॥

सोहत सजीले सित असित सुरंग अंग,
जीन सुचि प्रजन अनूप रुचि हेरे हैं।
सील भरे लसत असील गुन लाल दै कै
लाज की लगाम काम कारीगर फेरे हैं॥
घूँघुट फरस ताने फिरत फबित फूले,
ग्वाल कवि लोक अवलोकि भये चेरे हैं।
मोर वारे मनके त्यों पनके मरोर वारे,
त्योर वारे तरुनी तुरंग दृग तेरे हैं॥

प्रीति कुलीनन सौं निवहै अकुलीन की प्रीति में भ्रत उदासी।
खेलन खेल गयेर ग्रबहीं हमैं जोग पठाय कह्यो अविनासी॥
त्यौं कवि ग्वाल विरचि विचारिकै जोरी मिलाय दई अतिखासी।
जैसोई नंद के पालकु कान्ह सु तैसिही कूबरी कंस की दासी॥

इनकी गणना पद्माकर कवि की श्रेणी में है।

नाम—(१२३७) कान्ह प्राचीन।

जन्मकाल—१८५२।

कविताकाल १८८०।

विवरण—इनका काव्य सरस है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में है।

उदाहरण—

कानन लौं अँखियां ये तिहारी इथेरी हमारी कहाँ लग फैलिहैं।
मूँदे हू पै तुम देखती हो यह कोर तुम्हारी कहाँ लो सकेलिहैं॥
कान्हरहूको सुभाउ यहै उनको हम हाथन ही पर झेलिहैं।
राधेजी मानौ बुरो कै भलो अँखिमूँदनी संग तिहारे न खेलिहैं॥

(१२३८) चन्द्रशेखर वाजपेयी।

ये महाशय पौषशुक्ल १० संवत् १८५५ में मुअज्जमाबाद ज़िला फ़तेहपूर में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम मनीराम था। यह भी अच्छे कवि थे। शेखरजी कविता में असनी-निवासी महापात्र करनेश कवि के शिष्य थे। २२ वर्ष की अवस्था में ये महाशय दरभंगा की ओर गये और ७ वर्ष तक उस प्रान्त के राजाओं के यहाँ रहे। उसके पीछे यह जोधपूर-नरेश महाराजा मानसिंह के यहाँ ६ वर्ष तक रहे और १००) मासिक पाते रहे। फिर ये पटियाला-नरेश महाराजा कर्मसिंह के यहाँ गये और यावज्जीवन प्रतिष्ठा-पूर्वक इनके तथा इनके पुत्र महाराजा नरेन्द्रसिंह के यहाँ रहते रहे। इनका शरीर-पात संवत् १९३२ में हुआ। इनके पुत्र गौरीशंकरजी अब तक पटियाले में रहते हैं और अच्छे कवि हैं। उन्हीं के आधार पर यह जीवनी छापी गई है।

चन्द्रशेखरजी ने हम्मीरहठ, विवेकविलास, रसिकविनोद, हरिभक्तिविलास, नखशिख, वृन्दावनशतक, गुरुपंचाशिका, ज्योतिष का ताजक, और माधवीवसन्त नामक ग्रन्थ बनाये। इनमें से रसिकविनोद, नखशिख, और हम्मीरहठ हमने देखे हैं। इनमें से हम्मीरहठ पर हमने सन् १९०० की सरस्वती में समालोचना प्रकाशित की थी। उसमें हमने इनकी कविता के गुण-दोष यथाशक्ति दिखाये हैं। हम्मीरहठ में प्रधानतया वीर काव्य है। जो गुण इनकी रचना के वीर काव्य में प्रकट हुए थे वह सब शृंगार काव्य में भी वर्तमान हैं, और क्या वीर क्या शृंगार सभी

विषयों में इनके वर्णन अत्यन्त मनोहर हैं। इनको प्रताप वर्णन करने में बड़ी पटुता प्राप्त थी और इनके ऐसे वर्णन देखते ही बन आते हैं।

उदाहरण—

उदित उदंड मारतंड सो प्रताप पुंज,
देखि देखि दुवन दुनो के दहियत है।
सहज सिकार धूम धौंसा की धुकार धाक,
देस देस रिपु को न लेस लहियत है॥
शेखर सराहै श्री नरेन्द्रसिंह महाराज,
रावरी सभा में चैन साँचे कहियत है।
उड़ि गए रेज़ा लौं अरीन के करेजा,
अब कौन पै मजेजदार नेज़ा गहियत है॥ १॥

आलम नेवाज सिरताज पातसाहन के !
गाज ते दराज कोप नजरि तिहारी है।
जाके डर डिगत अडोल गढ़धारी,
डगमगत पहाड़ औ डुलन महि सारी है॥
रंक जैसो रहत ससंकित सुरेस भयो
देस देसपति में अतंक अति भारी है।
भारी गढ़धारी सदा जंग की तयारी धाक
मानै ना तिहारी या हमीर हठ धारी है॥ २॥

इनकी शृंगारकविता से उदाहरणार्थ दो छन्द यहाँ लिखे जाते हैं—

ह्वै व्रज बालन मैं घमिये विनु कारज
घेर करैं कुलवामैं ।
ह्वै गुरु लोगन माँझ गनी,
कुल कानि घनी धरती प्रतिजामैं ॥
ह्वै तुम प्रान हितू सिगरी,
कवि शेखर देहु सिखावन यामैं ।
गैल मैं गोपद नीर भरो लखि !
चौथिको चन्द परयो लखि तामैं ॥ १ ॥
थोरी थोरी वैसवारी नवल किसोरीसवै,
भोरी भोरी बातनि विहँसि मुख मोरतीं ।
बसन विभूषन विराजित विमल वर,
मदन मरोरनि तरकि तन तोरतीं ॥
प्यारे पातसाह के परम अनुराग रँगी,
चाय भरी चायल चपल दृग जोरतीं ।
काम अबला सी कलाधर की कला सी,
चारु चम्पक लता सी चपला सी चित चोरतीं ॥२॥

उपरोक्त उदाहरणों से यह भी विदित है कि शेखरजी पदमैत्री का अच्छा व्यवहार कर सकते थे। भारी उद्दंडता, प्राबल्य ग्रैार गौरव इनकी कविता के प्रधान गुण हैं। भाषासाहित्य में बैताल, लाल, भूषण, हरिकेशादि कुछ ही कवियों को छोड़कर किसी कवि में ऐसी उमंगोत्पादक शक्ति नहीं पाई जाती।

उवै भानु पच्छिम प्रतच्छ दिन चन्द प्रकासै।
उलटि गंग वरु बहै काम रति प्रीति विनासै॥

तजै गौरि अरधंग अचल ध्रुव आसन चलै ।
अचल पौन वरु होय मेरु मन्दर गिरि हल्लै ॥
सुरतरु सुखाय लोमस मरै मीर संक सब परिहरौ ।
मुख बचन बीर हम्मीर को बोल न यह तबहू टरौ ॥

शेखरजी में विविध विषयों के यथोचित वर्णन करने की शक्ति बहुत बढ़ी चढ़ी थी। अलाउद्दीन की मृगया, मोल्हन और हम्मीर का वादानुवाद, शाही सेना की रणथम्भोर पर आक्रमण हेतु तैयारी, और हम्मीरदेव का जौहर पर शोक, इन वर्णनों में कवि की पटुता प्रकट होती है। शाही सेना के भगाने में ही कैसा आनन्द किया है।

भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे,
　　भागे खानजादे प्रान मरत बचाय कै ।
भाजि गज बाजी रथ पथ न सम्हारैं परैं
　　गोलन पै गोल सूर सहमि सकाय कै ॥
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि बेगि
　　बलित बितुंड पै बिराजि बिलखाय कै ।
जैसे लगै जंगल में ग्रीषम की आगि चलै
　　भागि मृग महिष बराह बिललाय कै ॥

हाथियों का भी वर्णन इन्होंने अच्छा किया है और कोट उड़ाने में शब्दों ही द्वारा माना आसमान तक रज भर दी।

ये महाशय मुख्य वर्णन पर पाठक को शीघ्र पहुँचा देते हैं और व्यर्थ वर्णनों से कथा को नहीं बढ़ाते। कहीं कहीं ये कुछ विषय प्रच्छन्न रीति पर वर्णन कर जाते हैं और उनका पूर्ण तात्पर्य

हैं ब्रज पालन में बसियो विनु कारज
बैर करैं कुलयामैं।
हैं। गुरु लोगन मांझ गनी,
कुल कानि घनी घरतीं प्रतिज्ञामैं॥
हैं तुम प्रान हितू सिगरी,
कवि शेखर देहु सिखावन यामैं।
गैल मैं गोपद नीर भरी सखि!
चौथिको चन्द परयो लखि तामैं॥१॥
थोरी थोरी बैसवारी नवल किसोरीसवै,
भोरी भोरी बातनि बिहँसि मुख मोरतीं।
बसन विभूषन विराजित विमल वर,
मदन मरोरनि तरकि तन तोरतीं॥
प्यारे पातसाह के परम अनुराग रँगी,
चाय भरी चायल चपल दृग जोरतीं।
काम अवला सी कलाधर की कला सी,
चारु चम्पक लता सी चपला सी चित चोरतीं॥२॥

उपरोक्त उदाहरणों से यह भी विदित है कि शेखरजी पदमैत्री का अच्छा व्यवहार कर सकते थे। भारी उद्दंडता, प्राबल्य और गौरव इनकी कविता के प्रधान गुण हैं। भाषासाहित्य में वैताल, लाल, भूषण, हरिकेशादि कुछ ही कवियों को छोड़कर किसी कवि में ऐसी उमंगोत्पादक शक्ति नहीं पाई जाती।

उवै भानु पच्छिम प्रतच्छ दिन चन्द प्रकासै।
उलटि गंग बरु बहै काम रति प्रीति विनासै॥

तजै गौरि अरधंग अचल ध्रुव आसन चल्लै।
अचल पौन वरु होय मेरु मन्दर गिरि हल्लै॥
सुरतरु सुखाय लोमस मरै मीर संक सब परिहरौ।
मुख बचन बीर हम्मीर को बोल न यह तबहू टरौ॥

शेखरजी में विविध विषयों के यथोचित वर्णन करने की शक्ति बहुत बढ़ी चढ़ी थी। अलाउद्दीन की मृगया, मोल्हन और हम्मीर का वादानुवाद, शाही सेना की रणथम्भौर पर आक्रमण हेतु तैयारी, और हम्मीरदेव का जौहर पर शोक, इन वर्णनों में कवि की पटुता प्रकट होती है। शाही सेना के भगाने में ही कैसा आनन्द किया है!

भागे मीरजादे पीरजादे औ अमीरजादे,
भागे खानजादे प्रान मरत बचाय कै।
भाजि गज बाजी रथ पथ न सम्हारैं परैं
गोलन पै गोल सूर सहमि सकाय कै॥
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि बेगि
बलित बितुंड पै बिराजि बिलखाय कै।
जैसे लगै जंगल में ग्रीषम की आगि चलै
भागि मृग महिष बराह बिललाय कै॥

हाथियों का भी वर्णन इन्होंने अच्छा किया है और कोट उड़ाने में शब्दों ही द्वारा मानो आसमान तक रज भरदी।

ये महाशय मुख्य वर्णन पर पाठक को शीघ्र पहुँचा देते हैं और व्यर्थ वर्णनों से कथा को नहीं बढ़ाते। कहीं कहीं ये कुछ विषय प्रच्छन्न रीति पर वर्णन कर जाते हैं और उनका पूर्ण तात्पर्य

समझना मर्मज्ञ पाठकों पर छोड़ देते हैं। घनघोर युद्ध के समय कोट के उच्च शिखर पर हम्मीर देव के सम्मुख नृत्य कराने से कवि का शत्रु के चिढ़ाने से प्रयोजन है। इनको युद्ध का कुछ स्वाभाविक अनुभव सा था। 'भटभेरा तेरा रहा भरि गोली की मार' में युद्ध कर्त्ताओं के ही शब्द भी आये हैं, और इसी भाँति 'धरै मुच्छ पर हाथ बहुरि निरखै समसेरै' में एक शूर का फ़ोटो खींच दिया गया है। शेखरजी युद्ध की तैयारी में वीर रस प्रधान रखते हैं और समराग्नि भभक उठने पर रौद्र और भयानक रसों का व्यवहार करने लगते हैं। ये महाशय नायकों के शील गुण निभाने में कृतकार्य्य नहीं हुए हैं। नर्त्तकी के मारे जाने पर इन्होंने हम्मीर देव को सशंकित करा कर उनसे यहाँ तक कहला दिया कि 'हठ करि मंड्यो युद्ध वृथाही'। यह उचित नहीं हुआ, क्योंकि एक प्रकार से उनका हठ छूट गया। सब बातें विचार कर हम शेखरजी को दास की श्रेणी में रक्खेंगे।

(१२३८)प्रेमसखी ने १३६ सवैया तथा घनाक्षरियों में 'श्रीराम तथा सीताजी का शिख नख' कहा है। यह ग्रन्थ छतरपुर में है। इनकी कविता अच्छी है। हम इन्हें तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। इनका कविता-काल जाँच से १८८० जान पड़ा।

> कलपलता के सिद्धि दायक कलपतरु
> काम धेनु कामना के पूरन करत हैं।
> तीनि लोक चाहत कृपा-कटाक्ष कमला की
> कमला सदाई जाके सेवत सरन हैं॥

चिन्तामनि चिन्ता के हरन हारे प्रेमसखी
तीरथ जनक वर वानिक बरन हैं।
नख बिधु-पूषन समन सब दूषन ये
रघुवंस भूपन के राजत चरन हैं॥

कवित्त और होरी नामक इनके दो और ग्रन्थ मिले हैं।

(१२४०) रसज्ञानकृत भक्तिरत्नावलीभाषा (१८८०) ग्रन्थ छोटे साइज़ के ९० पृष्ठ का है। हमने इसे छतरपूर दरबार में देखा। काव्य-चातुरी इसकी साधारण श्रेणी की है।

(१२४१) प्रताप साहि।

ये महाशय वन्दीजन रतनेस के पुत्र थे और चरखारी के महाराज विक्रम साहि के यहाँ रहते थे। इन्होंने संवत् १८८२ में व्यंग्यार्थकौमुदी और १८८६ में काव्यविलास बनाया, जैसा कि इन ग्रन्थों से ही विदित होता है। यद्यपि वे महाराज इस समय के करीब सौ वर्ष प्रथम स्वर्गवासी हो चुके थे, पर सरोजकार ने भ्रमवश इन का पन्ना-नरेश महाराजा छत्रसाल के यहाँ होना लिख दिया है। इसी भ्रम में पड़ कर खोज वालों ने प्रताप साहि और प्रताप नामक दो कवि माने हैं और इन्हीं प्रताप साहि के ग्रन्थों में व्यंग्यार्थकौमुदी प्रताप के नाम लिख दी और शेष ग्रन्थ प्रताप साहि के नाम। वास्तव में प्रताप साहि एक ही कवि था, और सब ग्रन्थ इसी कविरत्न के बनाये हैं। महाराज छत्रसाल के यहाँ किसी प्रताप कवि का होना पाया नहीं जाता।

इनके बनाये हुए तीन ग्रन्थ हमारे पास वर्त्तमान हैं, अर्थात् रामचन्द्र का शिषनख, व्यंग्यार्थकौमुदी और काव्यविलास, जिनमें से प्रथम और तृतीय हस्तलिखित हैं। शिवसिंहसरोज में इनके काव्यविलास एवं व्यंग्यार्थकौमुदी का नाम लिखा है और यह कहा गया है कि इन्होंने भाषाभूषण और बलभद्र के शिख नख का तिलक भी लिखा है। हमने इनके बनाये हुए तिलक नहीं देखे हैं। शिवसिंहसरोज में लिखा है कि ये दोनों तिलक प्रताप ने विक्रम साहि की आज्ञा के अनुसार बनाये। इनके शिख-नख में केवल पचीस छन्द हैं, जिनमें रामचन्द्र की शोभा का वर्णन है। इस ग्रन्थ में संवत् नहीं दिया हुआ है, परन्तु काव्य-प्रौढ़ता के देखते यह इनका प्रथम ग्रन्थ समझ पड़ता है। तो भी इसके प्रायः सब छन्द मनोहर हैं। उदाहरणार्थ केवल एक छन्द लिखते हैं।

डोरे रतनारे विच कारे ओर सारे सेत
जिनके निहारे ते कुरंग गन भूले हैं।
आनँद उमाहन सुकीधौं विधु मंडल मैं
सरद के खजन सुभाय अनुकूले हैं॥
ज़नकसुता के मुखचन्द के चकोर किधौं
बरने न जात अति उपमा अतूले हैं।
राजैं रामलोचन मनोज अति ओज भरे
सोभा के सरोवर सरोज जुग फूले हैं॥

व्यंग्यार्थकौमुदी संवत् १८८२ में बनी थी। इसमें १३० छन्दों द्वारा केवल व्यंग्यों का वर्णन हुआ है। यह बहुत सराहनीय ग्रन्थ

है और इसे भाषा-साहित्य का रत्न समझना चाहिए। इसके उदाहरण आगे इनकी कविता में दिये जायँगे।

काव्यविलास संवत् १८८६ में बनाया गया था। यह ८२ पृष्ठों का एक विलक्षण ग्रन्थ है। इसमें काव्यलक्षण, पदार्थनिर्णय (जिसमें तात्पर्य भी कहा गया है), ध्वनि, रस, भाव, रसवदादि, गुण, दोष, और दोष-शान्ति का थोड़े में बहुत अच्छा वर्णन हुआ है। इनके ग्रन्थों में यह सर्वोत्तम है। इनके बनाये नीचे लिखे ग्रन्थ खोज में मिले हैं:—

जयसिंहप्रकाश (१८५२), शृंगारमञ्जरी (१८८९), शृंगारशिरोमणि (१८९४), अलंकारचिन्तामणि (१८९४), काव्यविनोद (१८९६), रसराज टीका (१८९६), तथा रत्नचन्द्रिका (सतसई की टीका) (१८९६)।

प्रताप के सब गुणों में प्रधान इनकी भाषा-प्रौढ़ता है। इस कवि के स्वरूप में मानो डेढ़ सौ वर्ष पीछे स्वयं मतिराम ने अवतार लिया था। प्रताप की भाषा बहुत ही प्रशंसनीय है। ऐसी मधुर ब्रजभाषा बहुत कम सुकवि भी लिखने में समर्थ हुये हैं। प्रताप ने मिलित वर्ण बहुत कम लिखे हैं। इनकी और मतिराम की भाषा में केवल इतना अन्तर है कि इन्होंने अनुप्रास का उनसे कुछ अधिक आदर किया है। यथाः—

> तड़पै तड़िता चहुँ ओरन ते छिति छाई समीरन की लहरैं।
> मदमाते महा गिरिशृंगन पै गन मंजु मयूरन के कहरैं॥
> इनकी करनी बरनी न परै मगरूर गुमानन सों गहरैं।
> घन ये नभ मंडल में छहरैं घहरैं कहुँ जाय कहूँ ठहरैं॥

इनकी कविता में अच्छे छन्द बहुतायत से पाये जाते हैं, वरन् यों कहें कि बुरे छन्द बहुत ढूँढ़ने से कहीं मिल सकते हैं।

पूजतीं और सबै बनिता जिनके मन में अति प्रीति सुहाति है।
कौन की सीख धरी मन मैं चलि कै वलि काहे नजीक न जाति है॥
लाड़ति या बरसाइति की बर लाइति ऐसी न और लखाति है।
कौन सुभाव री तेरो परो बर पूजत काहे हिये सकुचाति है॥

प्रताप ने प्राकृतिक वर्णन भी अच्छे किये हैं।

चंचला चपल चारु चमकत चारों ओर
झूमि झूमि धुरवा धरनि परसत है।
सीतल समीर लगै दुखद वियोगिन
सँजोगिन समाज सुख साज सरसत है॥
कहै परताप अति निविड़ अँध्यार माहँ
मारग चलत नहीं नेकु दरसत है।
झुमड़ि झलानि चहुँ कोद तै उमड़ि आजु
धाराधर धारन अपार बरसत है॥

इस कवि में उद्दंडता भी ख़ूब पाई जाती है। यथा—

महाराज राम राज रावरो सजत दल
होत मुख अमल अनिन्दित महेस के।
सेवैं यों दरीन केते गव्वर गनीम रहैं
पन्नग पताल जिमि डरन खगेस के॥
कहै परताप धरा धसत त्रसन कसमसत
कमठ पीठि कठिन कलेस के।

कहरत कोल, हहरत हैं दिगीस दस,
लहरत सिन्धु, थहरत फन सेस के ॥

प्रताप को रामचन्द्र का इष्ट सा था; सो इन्होंने एक तो उनका नखशिख लिखा और फिर जहाँ तहाँ उनकी प्रशंसा के बहुत से छन्द बनाये। इनकी कविता हर प्रकार से प्रशंसनीय है। हम इन्हें दास कवि की श्रेणी में रखते हैं।

(१२४२) श्रीधर (ठाकुर सुब्बासिंह)।

ये महाशय ग्रोयल वाले राजा वख्तसिंह के लघु भ्राता वैस ठाकुर ज़िला खीरी के निवासी थे। इनके कोई संतति न थी। आपने संवत् १८८४ वि० में विद्वन्मोदतरंगिणी नामक ग्रंथ संगृहीत किया। अनुमान से इनका जन्म संवत् लगभग १८५० का जान पड़ता है। यह ग्रंथ इन्होंने अपने गुरु कवि सुवंस शुक्ल की सहायता से बनाया। इसमें भावभेद, रसभेद, इत्यादि का वर्णन विस्तारपूर्वक किया गया है। श्रीधरजी ने लक्षण अपने दिये हैं पर उदाहरणों में प्राचीन कवियों के छंद लिखे हैं। सुवंसजी के छंद इसमें बहुत से लिखे गये हैं। श्रीधरजीकृत उदाहरण पचीस तीस से अधिक न होंगे। विद्वन्मोदतरंगिणी में श्रीधर के अतिरिक्त जिन ४३ प्राचीन और नवीन अन्य कवियों के छन्द उदाहरण में लिखे गये उनके नाम ये हैं:—सुवंस, कविंद, रघुनाथ, तोप, ब्रह्म, शंभु, शंभुराज, देव, श्रीपति, बेनी, कालिदास, केशव, चिंतामणि, ठाकुर, देवकीनंदन, पद्माकर, दूलह, बलदेव, सुंदर, संगम, जवाहिर, शिवदास, मतिराम, सुलतान, सखी-

सुख, हठी, शिव, दास, परमाद, मोहन, निहाल, कविराज, सुमेर, जुगराज, नदन, नेवाज, राम, परमेश, काशीराम, रसखानि, मनसा, हरिकेश, गोपाल, और लीलाधर। यह ग्रंथ हस्तलिखित फुलस्कैप साइज के ११६ पृष्ठों पर है और हमने इसे ठाकुर शिवसिंहजी के भतीजे ठाकुर नौनिहालसिंहजी के पास देखा है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

जासु की दीपति दीप तें सौगुनी दामिनि कुन्दन केसरि आइका।
काम की खानि सदा मृदुबानि सनेह सनी छिति छेम विछाइका॥
अग अनूपम की बरनै सब भगन प्रीतम को सुखदाइका।
मानौ रची बिधि मूरति मोहनी श्रीधर ऐसी सराहत नाइका॥

(१२४३) बाबा दीनदयाल गिरि।

ये महाशय काशी के पश्चिम द्वार में विनायक देव के पास रहते थे। इनके बनाये हुए दो ग्रन्थ अर्थात् 'अनुरागबाग' और अन्योक्तिकल्पद्रुम हमारे पास वर्त्तमान हैं। शिवसिंहजी ने इन ग्रन्थों के अतिरिक्त इनके 'बाग़बहार' नामक एक तीसरे ग्रन्थ का भी नाम लिखा है, परन्तु जान पड़ता है कि यह ग्रन्थ उनके देखने में नहीं आया। अनुरागबाग चैत्र शुक्ला ९ संवत् १८८८ को समाप्त हुआ था, और अन्योक्तिकल्पद्रुम संवत् १९१२ विक्रमीय माघ सुदी में वसन्त पञ्चमी के दिन। इन संवतों का व्योरा और बाबा जी के निवासस्थान का हाल इन ग्रन्थों से ही विदित होता है। जान पड़ता है कि ये महाराज सदैव काशी में ही रहे। इन्होंने ये दोनों ग्रन्थ काशी में ही बनाये थे।

अनुरागबाग में एक प्रकार से श्रीकृष्णचन्द्रजी का जीवन चरित्र वर्णित है, परन्तु सब घटनायें न कह कर बावा जी ने केवल बाललीला, माखनचोरी, होली, रास, अन्तर्द्धानलीला, मथुरागमन, बारहमासा, उद्धव का ब्रजगमन, षट ऋतु, उद्धव का गोपिकाओं से वार्त्तालाप, और उद्धव का कृष्ण से गोपिकाओं के सन्देश कहने के वर्णन किये हैं। उद्धवसंवाद बड़ा लम्बा चौड़ा है और उसमें सूरदास की भाँति इन्होंने भी उद्धव का प्रेमोन्मत्त होना लिखा है। इस ग्रन्थ में पाँच केदार (अध्याय) हैं, जिनमें से चार में उपर्युक्त कथा वर्णित है और पंचम में देवताओं की स्तुति है।

बावा जी के इस ग्रन्थ में शब्दवैचित्र्य बहुतायत से पाया जाता है। इन्हें इसका बहुत बड़ा शौक था। इसके अतिरिक्त ये महाशय रूपक के भी बड़े प्रेमी थे। इन्होंने अन्य काव्यांगों का भी वर्णन किया है। इस ग्रन्थ के देखने से यह नहीं जान पड़ता कि यह कोई कथाप्रासंगिक ग्रन्थ है। इन्होंने साहित्य-रीति पर चलकर कथा कही है। कई स्थानों पर प्राकृतिक वर्णन भी अच्छे देख पड़ते हैं। इनकी कविता में बुरे छन्द प्रायः कोई भी नहीं हैं, परन्तु परमोत्तम छन्दों का भी अकाल सा है। जैसे टक-साली छन्द उत्कृष्ट कवियों की रचनाओं में मिलते हैं, वैसे बावाजी के ग्रन्थों में नहीं पाये जाते। इन उपर्युक्त कथनों के उदाहरण स्वरूप अनुरागबाग से कुछ छन्द नीचे लिखे जाते हैं।

फब धौं पहिरि पीरे झँगा को सजै गो लाल
फब धौं धरनि धीरे ह्वैक पग राखि है।

रगरि रगरि कर धैंचरा गहैगो हरि
कब हरि भगरि भगरि करि मागि हैं ॥
मेरे अभिलापन को पूरि कर सावन सों
दामन के संग कब मामन को चाखि हैं।
भैया भैया बोलि बलभैया सों कहैं गे
कब मैया मैया मोकहँ कन्हैया कब भाखि हैं ॥
गुंजत पुंज अली गन के बहु राजत लम्ब कदम्ब दली है।
ताहि थली यक टैल वली गिर सोहन पच्छन की अवली है ॥
माल लसै धवली गर मैं कर दीनदयाल रली मुरली है।
कुञ्ज गली मैं अचानकहीं भली भांति अली उन मोहिं छली है ॥
कोमल मनोहर मधुर सुर ताल सने
नूपुर निनादनि सों कौन दिन बोलि हे।
नीके मम ही के वृन्द वृन्दन सु मोतिन को
गहि कै रुपा की कब चोंचन सों तोलि हे ॥
नेम धरि छेम सों प्रमुद हाय दीनदयाल
प्रेम कोकनद बीच कब धौं कलोलि हे।
चरन तिहारे जदुवंस राजहंस कब
मेरे मन मानस में मन्द मन्द डोलि हे ॥

अन्योक्तिकल्पद्रुम इनके प्रथम ग्रन्थ से आकार में कुछ छोटा है। इसमें ८४ पृष्ठ रायल अठपेजी के हैं ग्रीर उसमें १०४।

इस में प्रायः अन्योक्तियें ही का वर्णन है। जहां किसी साधारण बात की आड से किसी अन्य वस्तु का उत्कृष्ट वर्णन होता है वहां कवि गण अन्योक्ति अलंकार कहते हैं।

इसमें बाबा दीनदयाल गिरि ने बहुतेरे विषयों के सहारे अन्योक्तियाँ कही हैं। यह ग्रन्थ विशेषतः कुंडलियाओं में कहा गया है। दो चार स्थानों पर दोहा, मालिनी छन्द और सवैया एवं घनाक्षरी हैं। यह ग्रन्थ भी प्रशंसनीय बना है और इसकी अन्योक्तियाँ दर्शनीय हैं। यद्यपि यह अनुरागबाग के चौबीस वर्ष पीछे बना, तथापि कविता के गुणों में उससे न्यून है। बाबा जी को हम तोष कवि की श्रेणी में रखते हैं। अन्योक्तिकल्पद्रुम के उदाहरणार्थ एक छन्द नीचे लिखा जाता है।

गरजै बातन ते कहा धिक नीरधि गम्भीर।
विकल बिलोकैं कूप पथ तृषावन्त तो तीर॥
तृषावन्त तो तीर फिरैं तोहिँ लाज न आवै।
भँवर लोल कल्लोल कोटि निज विभव दिखावै॥
बरनै दीन दयाल सिन्धु तो को को बरजै।
तरल तरङ्गी ख्यात वृथा बातन ते गरजै॥

खोज में विश्वनाथनवरत्न, चकोरपंचक, दृष्टान्ततरंगिनी, काशीपंचरत्न, वैराग्यदिनेश, दीपकपंचक, और अन्तर्लापिका नामक इन के और ग्रंथों का पता लगा है।

(१२४४) बलवानसिंह (उपनाम काशिराज)।

गौतम ऋषि के वंश में महाराजा बरिबंडसिंह काशीनरेश हुए। उनके पुत्र महाराजा चेतसिंह काशिराज हुए। इन्हीं के पुत्र कुमार बलवानसिंह ने चित्रचन्द्रिका नामक ग्रन्थ संवत् १८८९ में बनाया। हिन्दी-साहित्य का यह बड़ा सौभाग्य रहा है कि बड़े

यह राज महाराजे तक इसे इतना पसन्द करते आये हैं कि उन्होंने अनेकानेक ग्रन्थ बनवाए और स्वयं भी कविता की। चित्र चन्द्रिका २३३ पृष्ठों का एक बड़ा ग्रन्थ है, जिसमें टीका भी शामिल है। बिना टीका के यह ग्रन्थ साधारण पाठकों की समझ में कभी न आता। इसमें आद्योपान्त चित्र काव्य है और प्रायः सभी प्रकार के चित्रों का इसमें उत्तम और पूर्ण वर्णन है। इस कवि की भाषा बहुत सन्तोषदायक है। चित्र कविता का विचार छोड़ कर इसमें स्वतन्त्र दृष्टि से देखने पर उत्कृष्ट छन्द बहुत नहीं हैं। इसका कारण यही है कि इसमें शब्दवैचित्र्य पर अधिक ध्यान रक्खा गया है और कवि को चित्र-काव्य करने के कारण लाचार ऐसा करना पड़ा है। फिर भी इस ग्रन्थ में प्रकृष्ट छन्दों का अभाव नहीं है और अनेकानेक उत्तम चित्र देख कर कवि-पांडित्य की मुक्तकंठ से प्रशंसा करनी पड़ती है। चित्रकाव्य इतना सांगोपांग किसी कवि ने नहीं कहा है और इस ग्रन्थ से श्रेष्ठतर चित्रकाव्य शायद ही किसी भाषा ग्रन्थ में हो। इसमें सात सात अर्थों तक के कवित्त वर्त्तमान हैं और फिर भी इनकी भाषा बिगड़ने नहीं पाई है। इस कवि को हम तोष की श्रेणी में रखते हैं। उदाहरणार्थ कुछ छन्द नीचे लिखते हैं —

सप्तार्थ कवित्त—अभंग श्लेष।

बर हंस करि साहै धारण किये हैं हरि दायक परम शिव अंग में बखानिये। कह्यो नैन सदा प्रिय गुण शुभ राजत है पक्ष मैं रुचिर रुचि लोक लोक गानिये॥ धरम प्रगट किया रुचिर शकति धर भग छवि छाजत है बचन प्रमानिये। भनि काशिराज ऐसे हरि हरि हरि ऐसे हरि हरि किधौं प्रौढ़ा तिय जानिये॥

द्व्यर्थ का[illegible]त्त ।

सीकर ललित सोहै सुमन स[illegible]ाल पर राजै द्विजराज दुति हंस कलरत जात। कवि कारिराज भनि मृदु सुखदानि बानी मैन सैन रसन रसालहि भरत जात॥ सोभै उर वसी रति सुन्दर सुकेशी वेस रसन वलय मंजु घोष[illegible]उचरत जात। रति बिपरीत किधौं जय करि इन्द्र आज वारन ते[illegible]मुकुता हजारन झरत जात॥

निर्मात्रिक का[illegible]वैत्त ।

कनक लजत तन अमल बसन[illegible]सज बदन कमल वर कचन सघन घन। मलन करत कर रदन[illegible]चमक पर वचन सरस मन वसन अतन तन॥ नयन सयन सर[illegible]गमन लसत गज चरन नरम छँद सरँग फजन बन। रमत गहन[illegible]न चलन न धर अब तरल लखत पथ कहत अपन पन॥

नाम—(१२४५) रामनाथ प्र[illegible]न अयोध्या वाले रीवाँ के मंत्रिवर्ग में से हैं।

ग्रन्थ—(१) रामकलेवा (१९००) (२) [illegible]ध्याननीति, (३) रामहोरीरहस्य।

जन्म—१८७७।

काव्यकाल—१८९९। इनकी कविता[illegible]उत्कृष्ट और भाषा मनोहर है। ग्रन्थों में नीति वर्णन अच्छा[illegible]है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है। इनकी रामकलेवा[illegible]हमारे पास है, और प्रधान-नीति भी हमने देखी है।

उदाहरण—

जै गनपति गिरिजा गिरि[illegible]ापति [illegible] सरस्वति माता।
जै गुरु देव केसरीनन्दन चरन कम[illegible]ल सुखदाता॥

जन्मकाल—१८५५ ।

कविता-काल—१८८० ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१२७८) सुकवि ।

जन्मकाल—१८५५ ।

कविता काल—१८८० ।

विवरण—लोप श्रेणी ।

नाम—(१२७९) हरीदास (हरी) कायस्थ, चरखारी ।

ग्रन्थ—राधाशिखनख ।

कविता काल—१८८० ।

विवरण—महाराजा रतनसिंह के समय में थे ।

नाम—(१२८०) कविराज ।

कविताकाल—१८८१ ।

विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(१२८१) गोपाल बन्दीजन ।

ग्रन्थ—(१) शिखनखदर्पण (अर्थात् बलभद्र कृत शिखनख की टीका) (१८९१), (२) मानपचीसी, (३) वृन्दावनधाम अनुरागावली, (४) दम्पतिवाक्यविलास ।

ना-काल—१८८१ ।

ग—चरखारीनरेश राजा रतनसिंह के यहाँ थे ।

(१२८२) गणेश कायस्थ पँवारी या दतिया ।

ज्योतिषपुञ्जप्रकाश, (५) भजनभास्कर, (६) खुद-राज-नामा, (७) गुरुमहिमा।

जन्मकाल—१८५२।

कविता-काल—१८८०।

नाम—(१२७३) बेनी प्रकट ब्राह्मण, नरवल।

कविता-काल—१८८०।

नाम—(१२७४) रामनाथ सिरोहिया, बूँदी।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविता-काल—१८८० के लगभग।

विवरण—साधारण कवि थे।

नाम—(१२७५) राम राव राजा

ग्रन्थ—काव्यप्रभाकर।

कविता-काल—१८८०।

विवरण—क्षत्रिय, सूर्यवंशी।

नाम—(१२७६) श्री गोविन्दजी सरदार।

ग्रन्थ—(१) नखशिख (१८८०) (पृ० ६ ४६)।

कविता-काल—१८८०।

विवरण—आश्रयदाता गोपालपुरा के

नाम—(१२७७) साधर।

जन्मकाल—१८५५ ।

कविता-काल—१८८० ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१२७८) सुकवि ।

जन्मकाल—१८५५ ।

कविता-काल—१८८० ।

विवरण—तोष श्रेणी ।

नाम—(१२७९) हरीदास (हरी) कायस्थ, चरखारी ।

ग्रन्थ—राधाशिखनख ।

कविता-काल—१८८० ।

विवरण—महाराजा रतनसिंह के समय में थे ।

नाम—(१२८०) कविराज ।

कविताकाल—१८८१ ।
विवरण—निम्न श्रेणी ।

नाम—(१२८१) गोपाल बन्दीजन ।

ग्रन्थ—(१) शिखनखदर्पण (अर्थात् बलभद्र-कृत शिखनख की टीका) (१८९१), (२) मानपचीसी, (३) वृन्दावनधाम अनुरागावली, (४) दम्पतिवाक्यविलास ।

वेता-काल—१८८१ ।

रण—चरखारीनरेश राजा रतनसिंह के यहाँ थे ।

म—(१२८२) गणेश कायस्थ पँवारी या दतिया ।

ग्रन्थ—(१) गुण निधि-सार, (२) दफ़्तरनामा।
कविता-काल—१८८२।
विवरण—दतियानरेश परीच्छित के यहाँ रहे थे।

नाम—(१२८३) गाढ़ूराम।
ग्रन्थ—(१) यशभूषण, (२) यशरूपक।
कविता-काल—१८८२।

नाम—(१२८४) पद्मार सैयद।
ग्रन्थ—(१) वैद्यमनोहर, (२) रसरत्नाकर, (३) रससार-ग्रन्थ।
कविताकाल—१८८२ के पूर्व।

नाम—(१२८५) बदनजी चारण।
ग्रन्थ—रसगुलज़ार।
कविताकाल—१८८२।
विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१२८६) शिवनाथ शुक्ल, मकरन्दनगर, फ़र्रुख़ाबाद।
ग्रन्थ—वंशावली रीवाँ।
कविताकाल—१८८२।
विवरण—साधारण श्रेणी। ये महाशय देवकीनन्दन के भाई थे।

नाम—(१२८७) लक्ष्मीनाथ।
ग्रन्थ—(१) राजविलास, (२) भजनविलास।
कविताकाल—१८८३।

नाम—(१२८८) जयरामदास।
ग्रन्थ—ज्वरविनाशन।
कविताकाल—१८८४ के पूर्व।

नाम—(१२८९) अयसलद्दूनाथ जी।
ग्रन्थ—सिद्धांतसार शतक टीका सहित।
कविताकाल—१८८४।

नाम—(१२९०) लाद्दूनाथ जोगी, जोधपुर।
ग्रन्थ—सिद्धातसार की टीका।
कविताकाल—१८८४।
विवरण—योगवर्णन।

नाम—(१२९१) गंगादीन, पिता परमसुख कायस्थ, डौंड़ियाखेरा।
ग्रन्थ—शिवपुराण भाषानुवाद।
जन्मकाल—१८६०।
कविताकाल—१८८५। मृत्यु स० १९३०।
विवरण—राव विजयसिंह जागीदार वेरी के निरीक्षक थे।

नाम—(१२९२) चैनराम।
ग्रन्थ—भारतसार भाषा।
कविताकाल—१८९५।
विवरण—देउनी जैपुर वाले चंदसिंह की इच्छानुसार बना।

नाम—(१२९३) दुर्गा।
जन्मकाल—१८६०।

कविताकाल—१८८५।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१२६४) महेश।

जन्मकाल—१८६०।

कविताकाल—१८८५।

विवरण—तोष कवि की श्रेणी।

नाम—(१२६५) हरसहाय भट्ट, पटना।

ग्रन्थ—(१) रामरत्नावली (पृष्ठ १५२) (२) रामरहस्य।

कविताकाल—१८८५।

विवरण—ग़ाज़ीपुरनिवासी जीवनदास के शिष्य।

नाम—(१२६६) लछिमनदास।

ग्रन्थ—(१) दोहाओं का संग्रह, (२) गुरुचरितामृत।

कविताकाल—१८८६ के पूर्व।

नाम—(१२६७) जवाहिरसिंह कायस्थ, चरखारी राज्य।

ग्रन्थ—(१) मंगलपचासा, (२) वाल्मीकीय रामायण का छन्दोबद्ध अनुवाद।

जन्मकाल—१८६०।

कविताकाल—१८८६।

विवरण—चरखारी-नरेश महाराज रतनसिंह के राज-कवि थे।

नाम—(१२६८) मोगजी।

ग्रन्थ—खीची चौहानों का इतिहास।

कविताकाल—१८८६ ।

विवरण—राजपूताना वाले ।

नाम—(१२९९) रतनसिंह, महाराजा चरखारी पटना ।

ग्रन्थ—(१) नटनागरविनोद, (२) विनयपत्रिका की टीका ।

कविताकाल—१८८६ ।

विवरण—साधारण ।

नाम—(१३००) कृष्णदेव ।

ग्रन्थ—रासपंचाध्यायी ।

कविताकाल—१८८७ के पूर्व ।

नाम—(१३०१) जनदयाल ।

ग्रंथ—प्रेमलीला ।

कविताकाल—१८८७ के पूर्व ।

नाम—(१३०२) अमीरदास, भूपाल ।

ग्रंथ—(१) सभामंडन, (२) वृत्तचन्द्रोदय? दूषणोल्लास ।

कविताकाल—१८८७ ।

नाम—(१३०३) गिरिधर भट्ट ब्राह्मण, गौरिहार थाँदानिवासी ।

ग्रंथ—(१) राधानखशिख (१८८६), (२) सुवर्णमाला, (३) भाव-प्रकाश (१९१२) ।

कविताकाल—१८८७ ।

विवरण—साधारण से कुछ अच्छे ।

नाम—(१३०४) गोपाल कायस्थ, रीवाँ।

ग्रंथ—गोपालपचीसी।

कविताकाल—१८८७।

विवरण—महाराजा विश्वनाथसिंह जू देव रीवाँनरेश के मन्त्री थे।
साधारण श्रेणी।

नाम—(१३०५) गिरिधर। था।

ग्रन्थ—मकुंदजी की वार्त्ता, मकुंदजी की (२) र वाणी।

कविताकाल—१८८७।

विवरण—बनारस के गोपालमन्दिर के म के हन्त थे।

नाम—(१३०६) जगन्नाथ क्षत्रिय, डेंगरस ज़िला प्रतापगढ़।

ग्रन्थ—(१) जुद्धजोत्सव (युद्धोत्सव)
(२) ब्रह्मसमाधियोग। चरित (पृष्ठ ४०, पद्य १८८७),

कविताकाल—१८८७।

नाम—(१३०७) तोनरदास। काय स,

ग्रन्थ—शब्दावली (पृष्ठ १३४)। मीर प्रिय

कविताकाल—१८८७।

नाम—(१३०८) दयाल कवि गुजरा ती ब्राह्मण।

ग्रन्थ—दायदीपक (पृष्ठ १६६ गद्य-पद्य)।

कविताकाल—१८८७। सिंह थे

विवरण—धर्मनीति। संवत् १७५४ वाले सूदन कवि ने भी एक
दयाल का नाम लिखा है।

नाम—(१३०६) पूर्णदास (नगर्भारा)।

ग्रन्थ—(१) कबीरदास का बीजक टीका, (२) बानी (१८८७)।

कविताकाल—१८८७।

विवरण—ये महाशय अपने गुरु दयालदास की गद्दी पर संवत् १८८४ में बैठे।

नाम—(१३१०) सन्तसिंह साधु।

ग्रन्थ—(१) भावप्रकाशिनी टीका, (२) विमल वैराग्य सम्पादिनी, (३) ज्ञान-वैराग्य-सम्पादिनी, (४) भावप्रकाश।

कविताकाल—१८८७।

विवरण—रामायण तुलसीकृत की टीका।

नाम—(१३११) सीताराम दतिया।

ग्रन्थ—रामायण।

कविताकाल—१८८७।

विवरण—दतियानरेश राजा पारीछत के दरबार में।

नाम—(१३१२) ईसवी खाँ।

ग्रन्थ—बिहारी-सतसई टीका।

कविताकाल—१८८९ के पूर्व।

नाम—(१३१३) साहिजू पण्डित।

ग्रन्थ—बुँदेल वंशावली।

[illegible]

नाम—(१३१४) सेवक।

ग्रन्थ—(१) अकबरनामा, (२) वशिष्ट श्रीरामजी का सवाद।

कविताकाल—१८८८ के पूर्व।

नाम—(१३१५) चतुर्भुजसहाय कायस्थ, महम्मदनगर, जिला छपरा।

ग्रन्थ—स्फुट।

कविताकाल—१८८८।

विवरण—छतरपूर के दीवान थे।

नाम—(१३१६) जनकराज किशोरीशरण।

ग्रन्थ—अनन्यतरंगिनी।

कविताकाल—१८८८।

नाम—(१३१७) दामोदर देव महाराष्ट्र, उरछा निवासी।

ग्रन्थ—(१) रस-सरोज (१८८८), (२) बलभद्रशतक, (३) उपदेश-अष्टक, (४) बलभद्रपचीसी, (५) वृन्दावन चन्द्र शिखनख ध्यान मजूषा।

कविताकाल—१८८८।

विवरण—उरछा नरेश राजा हम्मीरसिंह के गुरु थे।

नाम—(१३१८) अकबर खाँ अजैगढ़ वाले।

ग्रन्थ—योगदर्पणसार।

कविताकाल—१८८९।

विवरण—वैद्यक पद्य ग्रन्थ।

नाम—(१३१६) ताराचरण व्यास ।

ग्रन्थ—नाथानन्दप्रकाशिका ।

कविताकाल—१८८९ ।

नाम—(१३२०) टीकाराम फ़ीरोज़ाबाद, आगरा ।

जन्मकाल—१८६५ ।

कविताकाल—१८८९-१९२३ तक ।

विवरण—आप बोधा कवि के पौत्र थे । आपके पुत्र गोपीलाल अभी तक जीवित हैं ।

नाम—(१३२१) दयानाथ दुबे ।

ग्रन्थ—आनन्दरस ।

कविताकाल—१८८९ ।

विवरण—नायिकाभेद का ग्रन्थ बनाया है । साधारण श्रेणी ।

अज्ञात-कालिक प्रकरण।

इकतीसवाँ अध्याय।

अज्ञात काल।

बहुत से कवियों के विषय में प्रयत्न करने पर भी काल-निरूपण नहीं हो सका, परन्तु इसी कारण उन्हें छोड़ देना अनुचित समझ कर हम ने उनके लिए यह अध्याय नियत कर दिया है। इन में कलस और रागनिया की कविता कुछ अच्छी प्रतीत होती है। इन कवियों में दो चार का सूक्ष्मतया हाल समालोचनाओं द्वारा लिखकर चक्र द्वारा शेष का वर्णन कर देवेंगे॥

(१३२२) कलस।

इस कवि का केवल एक छन्द हमने देखा है, परन्तु वह ऐसा अच्छा है कि इसका नाम न लिखना हम अन्याय समझते हैं। इस कवि की रचना बड़ी ही रसीली है। इसका समय हम नहीं जान सके हैं, और न इसका नाम शिवसिंह सरोज में लिखा है। इसका एक छन्द हम नीचे लिखते हैं। इसकी गणना तोष श्रेणी के कवियों में है॥

नाम—(१ ३ २ ४) ब्रजमोहन।

विवरण—इनकी कविता सरस है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

केसरि को मुख राग धरे जेहि की उपमा न कोऊ समतूल्यो।
जोबन में विकसै विलसे लखि मीत सुगंध पिये अलि भूल्यो॥
कोमल अग मनोहर रंग सुपीन की झोक लगे तन झूल्यो।
नारि नई निरखी ब्रजमोहन नारि नहीं मनों पंकज फूल्यो॥१॥

नाम—(१ ३ २ ५) पंडित, बिगहपूर।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि थे। इन्होंने ग्रामीण भाषा में अच्छी पहेलियाँ कहीं हैं।

यथा।

अगहनु पइठ चढ़त के प्याट। तेहि पर पडित करैं भप्याट॥
है नेरे पइहो ना हेरे। पडित कहैं बिगहपुर केरे॥
(कचौरी)

नाम—(१ ३ २ ६) भवानीप्रसाद पाठक।

विवरण—ये महाशय मौजा मोरावाँ जिला उन्नाव के वासी थे। इन्होंने काव्यशिरोमणि नामक काव्य का रीतिग्रंथ बनाया। इसमें कुल ३०० छद हैं, जिनमें लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, व्यंग्य इत्यादि के वर्णन हैं। इनकी भाषा बैसवाड़ी तथा ब्रजभाषा मिश्रित है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में की जाती है। उदाहरण:—

धंग अरसौहैं छवि अधरम सौहैं
पड़ी आरस की भौंहैं धरैं आसा रतिराज की।
सुकवि कलस तैसे लोचन पगे हैं ... नेह
जिन मैं निकाई अरुनोदय स... रोज की ॥
आछी छवि छाकि मन्द मन्द मुसक... ान लागी
बिचल बिलोकि तन भूषन ... ऽ फैाज की।
राजै रद मंडली कपोल मंडली मैं ...
माने रूपके खज़ाने पर मोहर... ् मनोज की ॥

(१३२३) खगनि... या।

उन्नाव ज़िला में रणजीत पुरवा नामक ... ् एक कसबा है। इसी में वासू नामक एक तेली रहता था, जिस... की पुत्री खगनिया ने ग्रामीय भाषा में बहुत सी अच्छी पहेलि... यां बनाई हैं। हैं तो ये बहुतही साधारण भाषा में, परन्तु इन में ... कुछ ऐसा स्वाद है कि ये कविगण के भी पसन्द आती हैं। इस... के समय का निरूपण हम नहीं कर सके हैं। उदाहरणार्थ इस ... स्त्री कवि की तीन कहानियाँ हम नीचे लिखते हैं।

आधा नर आधा मृगराज। युद्ध बिगारै ... ै आवै काज ॥
आधा टूटि पेट माँ रहै। बासू केरि खगनि... या कहै ॥ (नरसिंहा)
लम्बी चैाड़ी आँगुर चारि। दुहू ओर ते ... डारिनि फारि ॥
जीव न होय जीवका गहै। वासू केरि ख... गनिया कहै ॥ (कंघी)
भीतर गूदर ऊपर नांगि। पानी पियै पर... या मांगि ॥
तिहि की लिखी करारी रहै। वासू केरि ख... गनिया कहै ॥ (दावात)

नाम—(१३२४) व्रजमोहन।

विवरण—इनकी कविता सरस है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

केसरि को मुख राग धरे जेहि की उपमा न कोऊ समतूल्यो।
जोबन मैं बिकसै बिलसै लखि मीत सुगंध पियै अलि भूल्यो॥
कोमल अंग मनोहर रंग सुपीन की झोक लगे तन झूल्यो।
नारि नई निरखी व्रजमोहन नारि नहीं मनौं पंकज फूल्यो॥१॥

नाम—(१३२५) पंडित, बिगहपूर।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि थे। इन्होंने ग्रामीण भाषा में अच्छी पहेलियाँ कही हैं।

यथा।

अगहनु पइठ चढ़त के प्याट। तेहि पर पंडित करैं झप्याट॥
है नेरे पइहौ ना हेरे। पंडित कहैं बिगहपुर केरे॥
(कचौरी)

नाम—(१३२६) भवानीप्रसाद पाठक।

विवरण—ये महाशय मौज़ा मौरावाँ ज़िला उन्नाव के वासी थे। इन्होंने काव्यशिरोमणि नामक काव्य का रीतिग्रंथ बनाया। इसमें कुल ३०० छंद हैं, जिनमें लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, व्यंग्य इत्यादि के वर्णन हैं। इनकी भाषा बैसवाड़ी तथा व्रजभाषा मिश्रित है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में की जाती है। उदाहरणः—

थाम धरे सम देखिकै मारग ऊँच औ नीच परै पग नाहिन।
एकहि हाथ कठोर करी छृति एक करौट परे कहँ आहिन॥
पूरन प्रेम मई अनुकूलता देखि लगी मन मैं रुचि काहि न॥
भावन भावती के सुखदायक धीर कहूँ दुर सो दुर ताहिन॥

नाम—(१३२७) मनसा।

विवरण—तोष श्रेणी।

उदाहरण।

मलयज गारा करैं अंगन सिँगारा करैं,
गहि उर डारा करैं माल मुकतान की।
आरती उतारा करैं पंखा चौर ढारा करैं,
छाँहैं विसतारा करैं विसद वितान की॥
मुख सौं निहारा करैं दुख को निसारा करैं,
मनसा इसारा करैं सारा अँखियान की।
मानिक प्रदीपन सौं थारा साजि ताराजू की
आरती उतारा करैं दारा देवतान की॥ १॥

नाम—(१३२८) राम कवि।

ग्रन्थ—रसिकजीवनसंग्रह।

विवरण—इस संग्रह में दस महात्माओं की वाणी तथा पद संग्रह किये गये हैं। यह एक बड़ा ग्रंथ है, परंतु किसी का भी समय इसमें नहीं कहा गया है। यदि समय इत्यादि भी दे दिये जाते तो बड़ा ही उपयोगी होजाता। यह संग्रह हमने दरबार छतरपूर में देखा है।

नाम—(१३२६) वहाब।

ग्रन्थ—बारामासा।

विवरण—बारामासा की रचना खड़ी बोली में अच्छी है। साधारण श्रेणी के कवि थे। उदाहरणः—

असाढ़ब साजि कै दल मुझको घेरा।
कहो घनश्याम से जा हाल मेरा॥
नगारे मेघ के बाजे गगन पर।
विरह की चोट मारी मेरे मन पर॥
लगे भींगुर नफीरी सी वजावन।
पिया बिन कानकी चिनगी उड़ावन॥

नाम—(१३३०) सबल श्याम।

विवरण—इन महाशय का बरवै षटऋतु हमने देखा है, जिसमें १२२ छंद हैं। इनका इससे विशेष हाल नहीं मालूम है। इस कवि की भाषा व्रजभाषा है और काव्य-गरिमा साधारण श्रेणी की है। उदाहरणः—

तपन तपै रितु ग्रीषम तीपन घाम।
ताकि तरुनि तन सीतल सोवे काम॥
छाँह सघन तरु भावै बालम साथ।
की प्रिय परम सरोवर सीतल पाथ॥

इस अध्याय के शेष कवि गण।

नाम—(१३३१) अखयराम।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

नाम—(१३४७) इनायतशाह मुसलमान।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(१३४८) इंदु।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१३४९) उदयभानु कायस्थ।

ग्रन्थ—गणेशकथा।

नाम—(१३५०) उदितप्रकाशसिंह, बनारस।

ग्रन्थ—गीतशत्रुंजय।

नाम—(१३५१) उमादत्त।

ग्रन्थ—बारहमासा।

नाम—(१३५२) ऊमा।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

नाम—(१३५३) ऋणदान चारण।

ग्रन्थ—सिद्धराय सतसई।

नाम—(१३५४) कनकसेन।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१३५५) कनीराम।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१३५६) कमोदसिंह कायस्थ, बिजावर।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१३५७) करुणानिधि।

विवरण—भक्तकवि।

नाम—(१३५८) कर्तारास।

ग्रन्थ—दानलीला।

विवरण—राजा मँझौली के यहाँ थे।

नाम—(१३५९) कामताप्रसाद, असोथर।

ग्रन्थ—नखशिख।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१३६०) कालिकाप्रसाद, लखनऊ।

ग्रन्थ—प्रफुल्ला।

विवरण—गद्यलेखक।

नाम—(१३६१) कालिका बंदीजन।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१३६२) कालिदास।

ग्रन्थ—भ्रमर गीत।

नाम—(१३६३) कालीदीन।

ग्रन्थ—दुर्गाभाषा।

विवरण—इन्हों भाषा बड़ी ओजस्विनी भाषा में लिखी है और स्फुट छंद भी इनके सुनने में आते हैं। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है।

नाम—(१३६४) कालूराम।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१३६५) काशी।

ग्रन्थ—ज्ञानसहेला।

विवरण—चिंतामणि के साथ बनाया।

नाम—(१३६६) काशीराज (स्यात् बलवान सिंह)।

ग्रन्थ—चित्रचंद्रिका।

नाम—(१३६७) क़ासिम।

ग्रन्थ—रसिकप्रिया की टीका।

विवरण—वाजिद के पुत्र थे।

नाम—(१३६८) किलोल।

ग्रन्थ—ढोला मारू रा दोहा।

नाम—(१३६९) किशोरीजी।

ग्रन्थ—बानी।

विवरण—यह पुस्तक हमने दरबार छतरपूर में देखी। सा श्रेणी।

नाम—(१३७०) किशोरीदास।

ग्रन्थ—(१) वंशावली वृषभानु राय की (पृ० ८ पद्य), (२) बारह-खोरी।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(१३७१) किशोरीलाल।

ग्रन्थ—युगुलशतक।

नाम—(१३७२) किशोरीशरण।

ग्रन्थ—(१) अष्टयामपदप्रबंध, (२) अभिलाषमाला।

विवरण—इनका प्रथम ग्रंथ हमने दरबार छतरपूर में देखा। कविता साधारण श्रेणी की है। कुल ५९ पद इस ग्रंथ में हैं।

नाम—(१३७३) किसनिया चाकर मारवाड़।

ग्रन्थ—किसनिया रा दोहा (श्लोक-संख्या २००)।

विवरण—उपदेश (७८)।

नाम—(१३७४) कुलपति मिश्र, आगरा।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१३७५) कुलमणि।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१३७६) कुबेर।

ग्रन्थ—महाभारतभाषा।

नाम—(१३७७) कुशलसिंह।

ग्रन्थ—नखशिख (पृ० २०)।

नाम—(१३७८) कुंज गोपी जयपूरवासी गौड़ ब्राह्मण।

नाम—(१३७९) कुंजबिहारीलाल कायस्थ, दिल्ली।

ग्रन्थ—(१) चित्तविनोद, (२) ब्रह्मदर्शन, (३) प्रेमसरोवर, (४) सिद्धांतसरोवर, (५) ब्रह्मप्रकाश, (६) ब्रह्मानंद, (७) ज्ञानसागर, (८) सर्वसंग्रह, (९) निर्णयसिद्धांत।

नाम—(१३८०) कूवा।

विवरण—भक्त कवि थे।

नाम—(१३८१) केशव कवि।

ग्रन्थ—(१) हनुमानजन्मलीला, (२) बालचरित्र।

नाम—(१३८२) केशवगिरि।

ग्रन्थ—आनंदलहरी (पृ० ३२)।

नाम—(१३८३) केशव मुनि।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१३८४) केशवराम।

ग्रन्थ—भ्रमर गीत।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१३८५) केशवराय, बुँदेलखंड, कायस्थ।

ग्रन्थ—गणेशकथा।

नाम—(१३८६) केशोदास ग्राम पिचीयाक (मारवाड़)।

ग्रन्थ—केशवबावनी।

विवरण—ज्ञान विषय।

नाम—(१३८७) कृपानाथ।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१३८८) कृपा सखी।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१३८९) कृपा सहचरी।

ग्रन्थ—रहस्योपास्य ग्रन्थ।

विवरण—वैष्णव, सखी उपासना।

नाम—(१३९०) कृष्णलाल, बाँकीपूर।

ग्रन्थ—(१) मुद्राकुलीन, (२) समुद्र में गिरीन्द्र।

विवरण—गद्यलेखक।

नाम—(१३९१) खुसाल पाठक, रायबरेली वाले।

नाम—(१३९२) खूबी।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१३९३) खूबचन्द।

विवरण—साधारण श्रेणी। राजा गम्भीरसिंह ईदर वाले के समय में थे।

नाम—(१३६४) खेतल।

नाम—(१३६५) खेमराय कायस्थ, बाँदा।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

नाम—(१३६६) खोजी साधु, पालडी (गाँव) मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर बानी।

विवरण—धर्मोपदेश।

नाम—(१३६७) गजेन्द्रपाद गजराजसिंह, हर्दी।

ग्रन्थ—रामायण।

नाम—(१३६८) गयाप्रसाद कायस्थ।

ग्रन्थ—(१) मालाविरुदावली।

नाम—(१३६६) गिरिधर।

ग्रन्थ—रसमलाल (पृ० ९८ पद्य)।

विवरण—नायिकाभेद।

नाम—(१४००) गिरिधर गोस्वामी।

ग्रन्थ—मुहूर्त्तमुक्तावली।

विवरण—आदूनाथ गोस्वामी के वंशज।

नाम—(१४०१) गिरिधारी ब्राह्मण सुलतांपुर।

नाम—(१४०२) गिरिवरदान चारण, मारवाड़।

ग्रन्थ—डिंगलभाषा के फुटकर गीत कवित्त।

नाम—(१४१३) गोपालसिंह ब्रजवासी।

ग्रन्थ—(१) तुलसीशब्दार्थप्रकाश, (२) अष्टछापसंग्रह।

नाम—(१४१४) गोपीचंद मगही कवि।

विवरण—इनका नाम डाक्टर ग्रियर्सन साहब ने लिंग्विस्टिक सर्वे में लिखा है।

नाम—(१४१५) गोवर्धनदास कायस्थ।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१४१६) गोविंदसहाय कायस्थ, सिकंदराबाद।

ग्रन्थ—श्यामकेलि।

नाम—(१४१७) गोसाईं राजपूताना वाले।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१४१८) गौरि।

ग्रन्थ—आदित्यकथा बड़ी।

नाम—(१४१९) गंगन।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१४२०) गंगल।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१४२१) गंगा।

ग्रन्थ—(१) सुदामाचरित्र, (२) विष्णुपद।

विवरण—स्त्री-कवि बुँदेलखंड की।

नाम—(१४२२) गंगाधर बुँदेलखंडी।

ग्रन्थ—उपसतसैया (सतसई पर कुंडलिया लिखी हैं)।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि हैं।

नाम—(१४२३) घमंडीदास जी साधु।

ग्रन्थ—नाममाहात्म्य।

नाम—(१४२४) घमंडीराम साधु।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(१४२५) घाटमदास साधु।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१४२६) घासी भट्ट।

नाम—(१४२७) घासीराम उपाध्याय, समथर, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—ऋषिपंचमी की कथा।

विवरण—(दोहा चौपाई) साधारण।

नाम—(१४२८) चक्रपाणि मैथिल।

नाम—(१४२९) चतुर्भुज मैथिल।

नाम—(१४३०) चरपट जोगी।

ग्रन्थ—फुटकर बानी ज्ञानमार्ग की।

नाम—(१४४७) जगनेस।

नाम—(१४४८) जगन्नाथ।

ग्रन्थ—चौरासी बोल।

नाम—(१४४९) जगन्नाथ मिश्र, जौनपुर।

ग्रन्थ—राजा हरिचंद्र की कथा (पृ० ३६ पद्य)।

नाम—(१४५०) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, कुसी ज़ि० मथुरा।

ग्रन्थ—१० वर्ष की फलरीति।

नाम—(१४५१) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, समथर (बुं० खं०)।

ग्रन्थ—व्रजदर्शनमाला।

विवरण—इस ग्रंथ में समथरनरेश की व्रजयात्रा का वर्णन है।

नाम—(१४५२) जनगूजर।

[illegible]ष्णपचीसी।

नाम—(१४५३) जनछीतम।

विवरण—कवि व भक्त थे।

नाम—(१४५४) जनजगदेव।

ग्रन्थ—ध्रुवचरित्र।

नाम—(१४५५) जनतुलसी।

विवरण—भक्त व कवि थे।

नाम—(१४५६) [illegible]मीर।

ग्रन्थ—रामरहस्य।

नाम—(१४५७) जन हर जीवन साधु।

ग्रन्थ—फुटकर भजन।

नाम—(१४५८) जयनंद मैथिल कायस्थ।

नाम—(१४५९) जयराम।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१४६०) जयमंगलप्रसाद।

ग्रन्थ—गंगाष्टक।

नाम—(१४६१) जयनारायण।

ग्रन्थ—काशीखंड भाषा।

नाम—(१४६२) जयानंद कायस्थ।

ग्रन्थ—मैथिल भाषा में स्फुट रचना की है।

नाम—(१४६३) जानराय साधू।

ग्रन्थ—फुटकर भजन।

नाम—(१४६४) जीवनदास।

ग्रन्थ—ककहरा।

नाम—(१४६५) जुगराज।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१४६६) जुगलकिशोर।

ग्रन्थ—जुगल आह्निक।

नाम—(१४६७) जुगलदास।

विवरण—निम्न श्रेणी। पदरचना की है।

नाम—(१४६८) जैमलदास महाराजा।

ग्रन्थ—(१) जैमलदास महाराजाजीरीपदबंध वाती, (२) जैमल-जीरा-पद।

नाम—(१४६९) जोधाचारण, मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत कवित्त।

नाम—(१४७०) ज्वालासहाय (सेवक) कायस्थ।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१४७१) ज्वालास्वरूप कायस्थ, सिकंदराबाद।

ग्रन्थ—रामायण।

नाम—(१४७२) टहकन पंजाबी।

ग्रन्थ—पांडव का यज्ञ।

नाम—(१४७३) टामसन।

ग्रन्थ—(१) गोलाध्याय, (२) हिन्दी अँगरेज़ी कोष।

नाम—(१४७४) ठाकुरराम।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१४७५) ढाकन।

विवरण—साधारण श्रेणी के कवि हैं।

नाम—(१४७६) तार (नाहर) खान मुसलमान।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१४७७) तारपानि।

ग्रन्थ—भागीरथी-लीला।

नाम—(१४७८) तीकम (टीकम) दास साधु।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१४७९) तुलछराय।

नाम—(१४८०) तेजसी राजपूत, मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत कवित्त।

नाम—(१४८१) तैलंग भट्ट जैसलमेर।

ग्रन्थ—रणजीत-रत्नमाला वैद्यक।

विवरण—ये महारावल रणजीतसिंह जैसलमेर-नरेश के दरबार में थे। साधारण श्रेणी। संवत् १८२० तक यहाँ कोई महाराजा रणजीतसिंह नहीं हुए। शायद इसके पीछे के हों।

नाम—(१४८२) दत्त।

ग्रन्थ—स्वरोदय।

नाम—(१४८३) दयाकृष्ण।

ग्रन्थ—(१) पदावली, (२) स्फुट कवित्त।

नाम—(१४८४) दयादास।

ग्रन्थ—(१) जनकपचासा, (२) विनयमाला।

नाम—(१४८५) दयाल कायस्थ, बनारस।

ग्रन्थ—रागमाला।

नाम—(१४८६) दयासागर सूरि।

ग्रन्थ—धर्मदत्तचरित्र।

विवरण—जैन कवि मालूम पड़ते हैं।

नाम—(१४८७) दर्शनलाल कायस्थ।

ग्रन्थ—रामायण तुलसीकृत।

विवरण—बनारस नरेश महाराजा ईश्वरीप्रसादसिंह के यहाँ नौकर थे।

नाम—(१४८८) दसानद।

ग्रन्थ—हरदौलाजी को ख्याल।

नाम—(१४८९) दाक।

विवरण—खेतीसंबंधी काव्य है।

नाम—(१४९०) दास अनन्त।

ग्रन्थ—(१) रैदास की परचई (पृ० १४ पद्य), (२) कबीर साहिब की परचई (पृ० १४)।

नाम—(१४९१) दासगोविंद।

विवरण—भक्त व कवि थे।

नाम—(१४६२) दासी।

विवरण—भक्तिन कवि।

नाम—(१४६३) दीनदास।

ग्रन्थ—गोकुलकांड।

नाम—(१४६४) दुर्गाप्रसाद।

ग्रन्थ—अजीतसिंह फ़तेहरस अर्थात् नायक रासो।

नाम—(१४६५) दुर्जनदास साधु।

ग्रन्थ—रागमाला।

नाम—(१४६६) दूलनदास।

ग्रन्थ—शब्दावली (पृ० १५४)।

विवरण—रामनाममाहात्म्य।

नाम—(१४६७) देवनाथ।

नाम—(१४६८) देवमणि।

ग्रन्थ—(१) चाणक्यनीति भाषा (१६ अध्याय तक), (२) घरनायके (पृ० १२)।

विवरण—राजनीति।

नाम—(१४६९) देवराम।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१५००) देवीदत्त।

ग्रन्थ—नरहरिचम्पू।

नाम—(१५०१) देवीदत्तराय।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा।

नाम—(१५०२) देवीदास।

ग्रन्थ—(१) भाषा भागवत द्वादश स्कंध, (२) दामोदरलीला (पृ० ६६ पद्य)।

विवरण—कृष्ण विषयक।

नाम—(१५०३) देवीप्रसाद मुजफ़्फ़रपूर।

ग्रन्थ—प्रवीण पथिक।

विवरण—गद्यलेखक थे।

नाम—(१५०४) द्वारिकादास साधु।

ग्रन्थ—फुटकर भजन।

नाम—(१५०५) द्वारिकेश (व्रज)।

ग्रन्थ—द्वारिकेशजी की भावना।

नाम—(१५०६) द्विजकिशोर।

ग्रन्थ—तेरहमासी।

नाम—(१५०७) द्विजनंदास।

नाम—(१५०८) द्विजनद।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१५०९) द्विजराम।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१५१०) धरणीधर।

ग्रन्थ—सभाप्रकाश (पृ० २७०)।

विवरण—ज्ञान भक्ति।

नाम—(१५११) धरमपाल।

ग्रन्थ—छछूँदरि रायसो।

नाम—(१५१२) धोंधी।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१५१३) ध्यानदास साधु।

ग्रन्थ—(१) हरिचंदशत, (२) दानलीला, (३) मानलीला।

नाम—(१५१४) नकुल।

ग्रन्थ—सालिहोत्र।

विवरण—१८ वीं शताब्दी के ज्ञात होते हैं।

नाम—(१५१५) नजमी।

नाम—(१५१६) नरपाल।

ग्रन्थ—समरसिन्धु।

नाम—(१५००) देवीदत्त।

ग्रन्थ—नरहरिचम्पू।

नाम—(१५०१) देवीदत्तराय।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा।

नाम—(१५०२) देवीदास।

ग्रन्थ—(१) भाषा भागवत द्वादश स्कंध, (२) दामोदरलीला (पृ० ६६ पद्य)।

विवरण—कृष्ण विषयक।

नाम—(१५०३) देवीप्रसाद मुज़फ़्फ़रपुर।

ग्रन्थ—प्रवीण पथिक।

विवरण—गद्यलेखक थे।

नाम—(१५०४) द्वारिकादास साधु।

ग्रन्थ—फुटकर भजन।

नाम—(१५०५) द्वारिकेश (व्रज)।

ग्रन्थ—द्वारिकेशजी की भावना।

नाम—(१५०६) द्विजकिशोर।

ग्रन्थ—तेरहमासी।

नाम—(१५०७) द्विजनदास।

ग्रन्थ—रागमाला।

नाम—(१५०८) द्विजनद।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१५०९) द्विजराम।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१५१०) धरणीधर।

ग्रन्थ—सभाप्रकाश (पृ० २७०)।

विवरण—ज्ञान भक्ति।

नाम—(१५११) धरमपाल।

ग्रन्थ—छछूँदरि रायसो।

नाम—(१५१२) धोंधी।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१५१३) ध्यानदास साधु।

ग्रन्थ—(१) हरिचदशत, (२) दानलीला, (३) मानलीला।

नाम—(१५१४) नकुल।

ग्रन्थ—सालिहोत्र।

विवरण—१८ वीं शताब्दी के ज्ञात होते हैं।

नाम—(१५१५) नजमी।

नाम—(१५१६) नरपाल।

ग्रन्थ—समरसिन्धु।

नाम—(१५१७) नरमल।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१५१८) नरहरिदास च शी।

ग्रन्थ—बारहमासी।

नाम—(१५१९) नरिंद।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१५२०) नवनिधि शिष्य कबीर।

ग्रन्थ—संकटमोचन (पृ० ५२, पद्य)।

नाम—(१५२१) नवलकिशोर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१५२२) नापा चारण मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत, कवित्त।

नाम—(१५२३) नारायणदास साधु।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(१५२४) नारायण राव भट्ट, बनारस।

ग्रन्थ—भाषाभूषण का तिलक।

विवरण—ये भट्ट सरदार कवि के शिष्य थे।

नाम—(१५२५) नित्यनाथ।

ग्रन्थ—मन्त्रखंड रसरत्नाकर।

नाम—(१५२६) निर्गुण साधु।

ग्रन्थ—भजनकीर्तन ।

नाम—(१५२७) नेही।

विवरण—तोपश्रेणी ।

नाम—(१५२८) नैनूदास साधु ।

ग्रन्थ—भजन ।

नाम—(१५२६) नौबतराय कायस्थ ।

ग्रन्थ—तत्वज्ञानदर्शावली ।

नाम—(१५३०) नंदकिशोर ।

ग्रन्थ—रामकृष्ण गुणमाल ।

विवरण—तोप श्रेणी ।

नाम—(१५३१) नंदीपति ।

ग्रन्थ—मैथिल कवि ।

नाम—(१५३२) पखान ।

नाम—(१५३३) पजन कुँवरि ।

ग्रन्थ—बारहमासी ।

विवरण—बुंदेलखंड बोली ।

नाम—(१५३४) पनजी चारण, मारवाड़ ।

ग्रन्थ—फुटकर गीत, कवित्त ।

नाम—(१५३५) परमल्ल, शंकर के पुत्र।

ग्रन्थ—श्रीपालचरित्र।

नाम—(१५३६) परमानंद भट्ट।

ग्रन्थ—सूदनचरित्र।

नाम—(१५३७) परशुराम महाराजा।

ग्रन्थ—(१) हरियशमजन, (२) बालनचरित्र, (३) महाराजा परसराम जी की बानी।

नाम—(१५३८) परागीलाल कायस्थ।

ग्रन्थ—भवानीस्तोत्र।

नाम—(१५३९) परिपूर्णदास।

ग्रन्थ—तिरजा (साखी हिंडोला आदि का गद्यानुवाद है)।

विवरण—कबीरपंथी।

नाम—(१५४०) पलटू साहब (कबीरपंथी)।

ग्रन्थ—कुंडलिया पलटू साहब (पृ० १०)।

विवरण—कबीरपंथी ज्ञात होते हैं।

नाम—(१५४१) पाडपान चारण, आड़ा, मारवाड़।

ग्रन्थ—गोगादेरूपक।

विवरण—राठौर गोगादे राजा का यश।

नाम—(१५४२) पारसराम।

ग्रन्थ—नखशिख।

नाम—(१५४३) पीपो चारण ।

ग्रन्थ—फुटकर गीत, कवित्त ।

नाम—(१५४४) पीपाजी ।

ग्रन्थ—पीपाजी की बानी ।

विवरण—दादूपंथी । ये १४५७ वाले पीपाजी से पृथक् जान पड़ते हैं ।

नाम—(१५४५) पूरन चन्द ।

ग्रन्थ—रामरहस्य रामायण ।

नाम—(१५४६) पूरण मिश्र ।

ग्रन्थ—(१) रागनिरूपण, (२) नादोदधि (नादार्णव) ।

नाम—(१५४७) पृथ्वीनाथ ।

ग्रन्थ—(१) सिसमाध आत्मप्रचार योग ग्रन्थ, (२) फुटकर छन्द ।

नाम—(१५४८) पृथ्वीराज चारण ।

ग्रन्थ—गण अभैविलास ।

नाम—(१५४९) पृथ्वीराज प्रधान कायस्थ, बुंदेलखंडी ।

ग्रन्थ—शालिहोत्र ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१५५०) प्रधान केशवराय ।

ग्रन्थ—शालिहोत्र भाषा ।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१५५१) प्रिया सखी।

ग्रन्थ—रसरत्नमंजरी।

विवरण—अयोध्या के महन्त, रामानुजी संप्रदाय के थे।

नाम—(१५५२) प्रियादास। (राधावल्लभी संप्रदाय)।

ग्रन्थ—(१) प्रियादासजी की वार्ता, (२) स्फुट पद टीका, (३) सेवा-दर्पण, (४) तिथिनिर्णय, (५) भाषाचर्चास्तव।

विवरण—पिता का नाम था श्रीनाथ। पहले पटना में रहते थे फिर वृन्दावन में रहने लगे।

नाम—(१५५३) प्रेमकेश्वरदास।

ग्रन्थ—द्वादश स्कन्ध भागवत भाषा।

नाम—(१५५४) प्रेमनाथ इन्द्रावती।

ग्रन्थ—पदावली (पृ० २७६ प०)।

विवरण—आप योगी थे। आपकी समाधि रियासत पन्ना में है।

नाम—(१५५५) फतेहसिंह।

नाम—(१५५६) फूली बाई, उपनाम अनन्तदास।

ग्रन्थ—फूली बाई की परई

नाम—(१५५७) फेर

विवरण [illegible] श्रेणी।

नाम—(१५५८) बकसी ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१५५९) बखताजी चारण, (खिड़िया) मारवाड़ ।

ग्रन्थ—फुटकर गीत ।

नाम—(१५६०) बजरंग ।

विवरण—हीन श्रेणी ।

नाम—(१५६१) बजहन ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१५६२) बद्रीदास साधु ।

ग्रन्थ—फुटकर भजन ।

नाम—(१५६३) बनानाथ जोगी ।

ग्रन्थ—बानी (एक छंद) ।

विवरण—श्लोक संख्या २८७ । विषय उपदेश ज्ञान ।

नाम—(१५६४) बरगराय ।

ग्रन्थ—गोपाचलकथा ।

विवरण—ग्वालियर की कथा इसमें है ।

नाम—(१५६५) बरजोर प्रधान कायस्थ, लुगासी बुँदेलखंड ।

ग्रन्थ—रुक्मिणीमंगल ।

नाम—(१५६६) बलदेवप्रसाद कायस्थ, मँझोली, ज़िला गोरखपुर ।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१५५१) प्रिया सखी।

ग्रन्थ—रसरहस्यमंजरी।

विवरण—अयोध्या के महन्त, रामानुजी संप्रदाय के थे।

नाम—(१५५२) प्रियादास। (राधावल्लभी संप्रदाय)।

ग्रन्थ—(१) प्रियादासजी की वार्ता, (२) स्फुट पद टीका, (३) सेवा-दर्पण, (४) तिथिनिर्णय, (५) भाषावर्षोत्सव।

विवरण—पिता का नाम था श्रीनाथ। पहले पटना में रहते थे फिर वृन्दावन में रहने लगे।

नाम—(१५५३) प्रेमकेश्वरदास।

ग्रन्थ—द्वादश स्कन्ध भागवत भाषा।

नाम—(१५५४) प्रेमनाथ इन्द्रावती।

ग्रन्थ—पदावली (पृ० २७६ प०)।

विवरण—आप योगी थे। आपकी समाधि रियासत पन्ना में है।

नाम—(१५५५) फ़तेहसिंह।

नाम—(१५५६) फूली बाई, उपनाम अनन्तदास।

ग्रन्थ—फूली बाई की परची।

नाम—(१५५७) फेरन।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(१५७५) बालकदास साधु।

ग्रन्थ—(१) फुटकर भजन, (२) सुदामाचरित्र (१८३३)।

विवरण—कदम के शिष्य।

नाम—(१५७६) बालकृष्णदासजी साधु।

ग्रन्थ—राजप्रशस्ति का उलथा।

विवरण—ये विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के वैष्णव थे।

नाम—(१५७७) बालगोविंद कायस्थ, इलाहाबाद।

ग्रन्थ—श्रीआनंदलहरी।

विवरण—ज़िला जौनपुर के मौज़े परशुरामपुर में ज़िमींदारी। इनकी प्राचीन जागीर थी।

नाम—(१५७८) बालचंद जैन।

ग्रन्थ—रामसीताचरित्र।

नाम—(१५७९) बासुदेवलाल।

ग्रन्थ—हिन्दी इतिहाससार।

नाम—(१५८०) वाहिद।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(१५८१) बिट्ठल कवि।

विवरण—शृंगार रस की कविता की है, जो निम्न श्रेणी की है।

नाम—(१५८२) विद्यानाथ चतुर्वेदी।

ग्रन्थ—चित्रगुप्तपचीसी।

नाम—(१५६७) बलिदास।

ग्रन्थ—दानलीला।

नाम—(१५६८) बल्लू चारण, मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत।

नाम—(१५६९) बाघा चारण, मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत।

नाम—(१५७०) बाज।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१५७१) बाजाराम।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(१५७२) बाजिदजी।

ग्रन्थ—बाजिदजी के अरेला।

नाम—(१५७३) बाबासाहब, नैपाल।

ग्रन्थ—(१) उपदंशारि (पृ० ७० गद्य), (२) अमृतसंजीवनी (पृष्ठ ४६ गद्य), (३) ज्वरचिकित्साप्रकरण (पृ० २५२ गद्य), (४) स्त्री-रोगचिकित्सा (पृ० १४७ गद्य)।

विवरण—वैद्यक विषय आपने कहा है।

नाम—(१५७४) बाबू भट्ट।

नाम—(१५७५) बालकदास साधु।

ग्रन्थ—(१) फुटकर भजन, (२) सुदामाचरित्र (१८३३)।

विवरण—क़दम के शिष्य।

नाम—(१५७६) बालकृष्णदासजी साधु।

ग्रन्थ—राजप्रशस्ति का उलथा।

विवरण—ये विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के वैष्णव थे।

नाम—(१५७७) बालगोविंद कायस्थ, इलाहाबाद।

ग्रन्थ—श्रीश्रानंदलहरी।

विवरण—ज़िला जौनपुर के मौजे परशुरामपुर में जिमींदारी। इनकी प्राचीन जागीर थी।

नाम—(१५७८) बालचंद जैन।

ग्रन्थ—रामसीताचरित्र।

नाम—(१५७९) बासुदेवलाल।

ग्रन्थ—हिन्दी इतिहाससार।

नाम—(१५८०) वाहिद।

विवरण—तोप श्रेणी।

नाम—(१५८१) विट्ठल कवि।

विवरण—शृंगार रस की कविता की है, जो निम्न श्रेणी की है।

नाम—(१५८२) विद्यानाथ चंतवेंदी।

नाम—(१५८३) विनायक लाल कायस्थ, छपरा सिउनी, मध्यप्रदेश।

ग्रन्थ—(१) चन्द्रभागा, (२) वीरविनोद उपन्यास।

नाम—(१५८४) विश्वनाथ बंदीजन, टिकई ज़ि० रायबरेली।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१५८५) विश्वेश्वर।

विवरण—निम्न श्रेणी, वैद्यक का ग्रंथ बनाया है।

नाम—(१५८६) विश्वेश्वरदत्त पांडे, बिलासपुर।

ग्रन्थ—(१) हितोपदेशसार, (२) दत्तात्रेयोपदेश, (३) हनुमान-स्तोत्र, (४) रामरक्षा।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१५८७) विष्णुदत्त महापात्र, विन्ध्याचल।

ग्रन्थ—दुर्गाशतक (पृ० २८ पद्य)।

नाम—(१५८८) विष्णु स्वामी बालकृष्णजी।

ग्रन्थ—अजितोदय-भाषा।

नाम—(१५८९) बिसंभर।

नाम—(१५९०) बिंदादत्त।

नाम—(१५९१) बीट्ठू (जी) चारण, ग्राम जागलू, ज़िला बीकानेर।

ग्रन्थ—राव खीमसी श्रौर कँवरसी की वार्ता ।

विवरण—आश्रयदाता राव खीमसी (लाखल) ।

नाम—(१५६२) बुद्धिसेन ।

विवरण—निम्न श्रेणी के कवि थे ।

नाम—(१५६३) बुधानंद ।

ग्रन्थ—फुटकर कविता ।

विवरण—भक्त थे ।

नाम—(१५६४) बुलाकीदास ।

नाम—(१५६५) बेनीमाधव भट्ट ।

नाम—(१५६६) बेसाहूराम ।

ग्रन्थ—नाममाला ।

नाम—(१५६७) बैजनाथ दीक्षित, बदरका बैसवाड़ा ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१५६८) बेन।

नाम—(१५६६) बोध ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६००) बृन्दावन कायस्थ, ताईकुआँ, झाँसी ।

ग्रन्थ—(१) कृष्णचरितावली, (२) दोहावलीप्रदीपिका, (३) राम-चरितावली ।

नाम—(१६०१) वंश।

ग्रन्थ—कृष्णविलास (पद्य)।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६०२) व्यंकटेशजू।

ग्रन्थ—आत्माप्रबोध।

नाम—(१६०३) ब्रजनन्द।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१६०४) ब्रजवल्लभदास।

ग्रन्थ—(१) प्रह्लादचरित्र, (२) सुदामाचरित्र, (३) अजामिलचरित्र।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१६०५) ब्रजेश, बुँदेलखंडी।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६०६) ब्रह्मदास।

ग्रन्थ—ब्रह्मदास जी के छन्द।

नाम—(१६०७) ब्रह्मज्ञानेन्द्र।

ग्रन्थ—ब्रह्मविलास।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१६०८) भगत।

ग्रन्थ—भक्तचालीसा (पृ० ६)।

नाम—(१९०९) भगवानदास ।

नाम—(१९१०) भड्डरी, शाहाबाद (विहार) ।

ग्रन्थ—भड्डरीपुराण ।

विवरण—ज्योतिष शकुनावली बनाई । इनकी भाषा अवधी ग्रामीण है; इस कारण ये विहार के नहीं जान पड़ते । निम्न श्रेणी ।

नाम—(१९११) भद्र ।

ग्रन्थ—नखशिख ।

नाम—(१९१२) भद्रसेन ।

ग्रन्थ—छन्दसंग्रह ।

नाम—(१९१३) भरथ (भरत) ।

ग्रन्थ—हनूमान विरदावली (पृ० २४ पद्य) ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१९१४) भवानीदत्त ।

ग्रन्थ—दुघरिया मुहूर्त भाषा ।

नाम—(१९१५) भाऊदास साधु ।

ग्रन्थ—फुटकर भजन ।

नाम—(१९१६) भीखजन ब्राह्मण ।

ग्रन्थ—बावनी ।

विवरण—नीति, ज्ञानोपदेश। श्लोक-संख्या ५००।

नाम—(१६१७) भीमजी।

ग्रन्थ—हुंडीरायोल।

विवरण—रापूतानी भाषा के कवि।

नाम—(१६१८) भूधर मल।

ग्रन्थ—भूपालचौबीसी।

नाम—(१६१९) भूप, शाहजादपुर।

ग्रन्थ—चम्पू सामुद्रिक भाषा।

नाम—(१६२०) भेख।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६२१) भैरों कवि, लुहार सीकर।

ग्रन्थ—स्फुट।

विवरण—खेतड़ी के राजा बाघसिंह की प्रशंसा में बहुत से छन्द बनाये थे। साधारण श्रेणी।

नाम—(१६२२) भोलानाथ, कन्नौज।

ग्रन्थ—(१) बैतालपचीसी, (२) भाषालीलावती।

विवरण—दीक्षित।

नाम—(१६२३) मतिरामजी।

ग्रन्थ—कविरत्नमालिका।

नाम—(१६२४) मदनगोपाल, चरखारी वाले।

विवरण—हीन श्रेणी।

नाम—(१६२५) मदनसिंह कायस्थ, अजयगढ़ ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

विवरण—राजकुमारों के संरक्षक थे ।

नाम—(१६२६) मननिधि ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६२७) मनरस ।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त ।

नाम—(१६२८) मन्य ।

ग्रन्थ—रसकुंड ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१६२९) महावीरप्रसाद कायस्थ, भागलपूर ।

ग्रन्थ—ज्ञानप्रभाकर ।

नाम—(१६३०) महासिंह राजपूत ।

ग्रन्थ—स्फुट कविता ।

नाम—(१६३१) महीपति मैथिल ।

नाम—(१६३२) मातादीन कायस्थ, लखनऊ ।

ग्रन्थ—(१) ख़यालात मातादीन, (२) ख़याल राजा भरथरी ।

नाम—(१६३३) माधवप्रसाद ।

ग्रन्थ—काशीयात्रा ।

नाम—(१६३४) माधवराम।

ग्रन्थ—माधोराम कुंडलिया (पृ० १८०)।

नाम—(१६३५) माधवनारायण, उपनाम केशन मैथिल।

विवरण—राजा प्रतापसिंह के यहाँ थे।

नाम—(१६३६) मानिकदास माथुर कवि।

ग्रन्थ—(१) मानिकबोध, (२) कवित्तप्रबन्ध।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६३७) मुकुंदलाल(जौहरी) कायस्थ काकारी, लखनऊ

ग्रन्थ—करीमा में भाषा पद्य।

विवरण—फ़ारसी के दो दो पद्यों के अनन्तर हिन्दी का एक एक दोहा मन प्रसन्नकारक बनाया है।

नाम—(१६३८) मुनि, ब्राह्मण गाज़ीपुर।

ग्रन्थ—राम रावण का युद्ध।

नाम—(१६३९) मुनिलाल।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६४०) मुनी।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१६४१) मुरलीदास साधु।

ग्र[illegible]

नाम—(१६४२) मुरलीराम साधु ।

ग्रन्थ—(१) चितावनी सारबोध, (२) साखियाँ ज्ञान ब्रह्म को अंग ।

नाम—(१६४३) मुरली राय ।

ग्रन्थ—महाराज मुरलीराम जी रा पद ।

नाम—(१६४४) मुरारीदास साधु ।

ग्रन्थ—फुटकर भजन-कीर्तन ।

नाम—(१६४५) मूरतिराम ।

ग्रन्थ—साधान श्रीमूरतिराम जीरा पद ।

नाम—(१६४६) मेघराज मुनि, मु० फगवाड़ा ।

ग्रन्थ—मेघविनोद (पृ० ४१८ पद्य) ।

विवरण—वैद्यक ।

नाम—(१६४७) मेणा भाट ।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त ।

नाम—(१६४८) मोहकम ।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त ।

नाम—(१६४६) मोहनदास ।

ग्रन्थ—(१) कृष्णचंद्रिका, (२) भागवत दशम स्कंध भाषा ।

विवरण—शायद राजा मधुकरशाह के वंशधरों के पुरोहित थे ।

नाम—(१६५०) मोहनदास भंडारी ।

ग्रन्थ—पद ।

नाम—(१६५१) मोहनलाल कायस्थ, हरिद्वार।

ग्रन्थ—गोरक्षा में सर्वसम्मति।

नाम—(१६५२) मंगद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६५३) मंगलराज।

ग्रन्थ—महाभारत भाषा।

नाम—(१६५४) मंगलीप्रसाद कायस्थ, फ़ैज़ाबाद।

ग्रन्थ—रामचरित्र नाटक।

नाम—(१६५५) युगलप्रसाद चौबे।

ग्रन्थ—दोहावली।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१६५६) रघुनाथदास।

ग्रन्थ—हरदास की परचई (पृ० २०)।

विवरण—१८ वीं शताब्दी।

नाम—(१६५७) रघुवर।

विवरण—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६५८) रघुवर शरण।

ग्रन्थ—(१) जानकी जू को मंगलाचरण, (२) बानी।

नाम—(१६५६) रघुलाल।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६६०) रघुश्याम।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६६१) रसकटक।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६६२) रसट्टक।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६६३) रसनेश।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६६४) रसिकनाथ ब्राह्मण।

ग्रन्थ—रसिकशिरोमणि।

नाम—(१६६५) रसिक प्रवीन।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६६६) राघवजन।

ग्रन्थ—रामायण।

विवरण—अयोध्या के महंत।

नाम—(१६६७) राजा किशोरीलाल कायस्थ, घनश्यामपुर जि० जौनपुर।

ग्रन्थ—जुगुलशतक (पृ० ४८ पद्य)।

विवरण—पिता का नाम अयोध्याप्रसाद था।

नाम—(१९६८) राजा मुसाहेब, बिजावर वाले।

ग्रन्थ—(१) विनयपत्रिका पर टीका, (२) रसराज पर टीका।

नाम—(१९६९) राधिकाप्रसाद कायस्थ, बिजावर।

ग्रन्थ—स्फुट।

विवरण—रियासत बिजावर में नाज़िम थे।

नाम—(१९७०) रामकरण।

ग्रन्थ—हम्मीर रासो का उलथा।

नाम—(१९७१) रामचरण ब्राह्मण, गणेशपुर, बाराबंकी।

ग्रन्थ—(१) कायस्थकुलभास्कर (संस्कृत), (२) कायस्थकुल-भूषण।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९७२) रामचन्द्र स्वामी।

ग्रन्थ—(१) पांडवगीता, (२) राधाकृष्णविनोद।

नाम—(१९७३) रामदत्त।

नाम—(१९७४) रामदया।

ग्रन्थ—रागमाला।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६७५) रामदान।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६७६) रामदेव।

ग्रन्थ—अयोध्याविंदु (पृ० ८२)।

नाम—(१६७७) रामदेवसिंह, खंडासावाले।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१६७८) रामप्रसाद कायस्थ, कड़ा, जिला इलाहाबाद।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१६७९) रामबख़्श उपनाम राम।

ग्रन्थ—(१) रससागर, (२) विहारी सतसई की टीका।

विवरण—पद्माकर श्रेणी, राना शिरमौर के यहाँ थे।

नाम—(१६८०) रामभरोसे, ब्राह्मण बहराइच।

ग्रन्थ—पद्य व्याकरणसार (पृ० ३१)।

नाम— १६८१) रामराय।

ग्रन्थ—लैलामजनू।

नाम—(१६८२) रामरंग खान।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१६८३) रामसज्जनजी।

ग्रन्थ—ज्ञानरसिक गुणविलास।

नाम—(१६८४) रामसनेही, चरणदास के पुत्र।

ग्रन्थ—हठजोगचन्द्रिका (२४० पृष्ठ)।

विवरण—छत्रपूर में देखा। साधारण कवि।

नाम—(१६८५) रामसहाय कायस्थ, बलिया।

ग्रन्थ—भजनावली।

नाम—(१६८६) रामसिंह कायस्थ, बुँदेलखंड।

ग्रन्थ—दस्तूरमालिका।

विवरण—साधारण।

नाम—(१६८७) रामसिंह राव ब्रह्मभट्ट, मडला, मध्य-प्रदेश।

ग्रन्थ—नर्मदापचीसी।

विवरण—विषय नर्मदा नदी की महिमा। आश्रयदाता राजा अदमशाह।

नाम—(१६८८) रामसेवक।

ग्रन्थ—अक्षरावली (पृ० २४)।

नाम—(१६८६) रामा।

विवरण—भक्त कवि थे।

नाम—(१६६०) रामाकान्त।

नाम—(१६६१) रामचन्द्र ब्राह्मण नागर।

ग्रन्थ—विचित्रमालिका (पृ० ८२)।

विवरण—नलविलासकथा।

नाम—(१९६२) रायजू।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९६३) राहिब।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त।

नाम—(१९६४) रिवदान, चारण मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत।

नाम—(१९६५) रूघा साधु।

ग्रन्थ—ब्रह्मस्तुति।

नाम—(१९६६) रूप।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१९६७) रूपमंजरी।

ग्रन्थ—अष्टयाम।

विवरण—चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी वा सखीसम्प्रदाय के थे।

नाम—(१९६८) रूपसखी वैष्णव।

ग्रन्थ—होरी।

नाम—(१९६९) रंगखानि।

विवरण—इन्होंने कोई ग्रन्थ बनाया है, पर उसका नाम याद नहीं।

नाम—(१७००) लक्षण।

ग्रन्थ—निर्वाणरमैनी।

विवरण—कबीरपंथी मालूम होते हैं।

नाम—(१७०१) कृष्णशरण साधु, अयोध्या।

ग्रन्थ—रामलीलाविहारनाटक (पृ० २७० गद्यपद्य)।

नाम—(१७०२) लक्ष्मी।

नाम—(१७०३) लक्ष्मीनारायण, ग्राम भग्गहरनगर (वितस्ता नदी के तीर) सारस्वत ब्राह्मण।

ग्रन्थ—(१) विद्यार्थी बाललीला (पृ० ६ पद्य,) (२) गोरक्षाशतक (पृ० ३६ पद्य)।

विवरण—देवस्तुति और अनुवाद।

नाम—(१७०४) लक्ष्मीप्रसाद कायस्थ, कड़ा, ज़िला इलाहाबाद।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१७०५) लघुकेशव साधु।

ग्रन्थ—फुटकर भजन।

नाम—(१७०६) लघुमति।

ग्रन्थ—चरनायके।

नाम—(१७०७) लघुराम।

ग्रन्थ—(१) कवित्त, (२) भक्तविरुदावली।

नाम—(१७०८) लघुलाल।

ग्रन्थ—स्फुट भजन।

नाम—(१७०९) ललिता सखी।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(१७१०) लाजब।

नाम—(१७११) लाभवर्द्धन जैनी।

ग्रन्थ—उपपदी (जैनशिक्षा)।

नाम—(१७१२) लाल गोपाल।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७१३) लालबुभक्कड।

ग्रन्थ—किस्से।

नाम—(१७१४) लालसिंह भाट।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

विवरण—आश्रयदाता सिवनी के कायस्थ तथा मुसलमान मीर अमीर।

नाम—(१७१५) सिवनी, छपारा (मध्यप्रदेश)।

नाम—(१७१६) लुकमान मुसलमान।

ग्रन्थ—वैद्यक (पृ० ५६ गद्य)।

नाम—(१७१७) टेकराज कायस्थ, अकबरपुर, कानपुर।

ग्रन्थ—चित्रगुप्त उत्पत्ति।

नाम—(१७१८) टेरिक, मगही कवि।

विवरण—इनका नाम डाक्टर ग्रियर्सन साहब ने लिंग्विस्टिक सर्वे में लिखा है।

नाम—(१७१९) शम्भुप्रसाद।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७२०) शिवचरण।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७२१) शिवदान, चारण मारवाड़।

ग्रन्थ—फुटकर गीत।

नाम—(१७२२) शिवदीन, कायस्थ गौरहार।

ग्रन्थ—स्फुट।

नाम—(१७२३) शिवराज।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७२४) शिवदास, डीपूर वाले।

ग्रन्थ—(१) रत्नमाल, (२) शिवसागर।

नाम—(१७२५) शिवानन्द ब्राह्मण, हल्दी।

ग्रन्थ—शिवरामसरोज।

नाम—(१७२६) शेख सुलेमान ।

ग्रन्थ—खालिकनामा ।

विवरण—मुहम्मद पैगम्बर का हाल ।

नाम—(१७२७) शोभ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७२८) शृंगारचन्द ।

ग्रन्थ—बलदेवदासमाला ।

नाम—(१७२९) श्यामराय कायस्थ, जयपुर ।

ग्रन्थ—दुर्गाविनोद ।
विवरण—दुर्गाजी की स्तुति ।

नाम—(१७३०) श्यामसनेही ।

ग्रन्थ—(१) ध्यान, (२) ध्यानस्वरोदय, (३) स्वरोदययोगवर्णन ।
विवरण—छत्रपूर में ग्रन्थ छोटे छोटे देखे । साधारण श्रेणी ।

नाम—(१७३१) श्रीधर स्वामी ।

ग्रन्थ—श्रीमद्भागवत प्रथम से सप्तम स्कंध तक ।

नाम—(१७३२) श्रीराम ।

ग्रन्थ—छन्द-मजरी ।

नाम—(१७३३) सतीदास साधु ।

ग्रन्थ—भजन ।

नाम—(१७३४) सतीप्रसाद।

ग्रन्थ—जयचन्द्रयशावली।

विवरण—कमाली जिला बनारस के जमींदार बहादुरसिंह इनके आश्रयदाता थे।

नाम—(१७३५) सतीराम।

ग्रन्थ—सतगीता।

नाम—(१७३६) सदाराम, चित्रकूट।

ग्रन्थ—(१) अखंडप्रकाश (पृ० १४२), (२) बोधविलास (पृ० १२०), (३) अनुभव आनन्दसिन्धु (पृ० ९२), (४) नाटकदीपिका (पृ० ३६)।

नाम—(१७३७) सबलजी।

ग्रन्थ—इन्द्रसिंह री कमाल।

विवरण—राजपूतानी कवि।

नाम—(१७३८) सबलश्याम।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७३९) समीरत्न (रसराज)।

ग्रन्थ—माँड श्रोर टप्पे।

नाम—(१७४०) समुद्र।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७४१) सरसदास ।

ग्रन्थ—बानी ।

विवरण—स्वामी हरिदास या बिहारिनदास के अनुयायी ।

नाम—(१७४२) सरसराम ।

विवरण—मैथिल कवि ।

नाम—(१७४३) सरूपदास ।

ग्रन्थ—पांडव-यश-चन्द्रिका ।

विवरण—महाभारत का सार । आश्रयदाता राजा बलवन्तसिंह रतलाम ।

नाम—(१७४४) सरूपराम ।

नाम—(१७४५) साधुराम साधु ।

ग्रन्थ—भजन ।

नाम—(१७४६) साह ।

ग्रन्थ—स्फुट ।

नाम—(१७४७) सिकदार ।

ग्रन्थ—फुटकर कविता ।

नाम—(१७४८) सिंगार ।

ग्रन्थ—बलदेवरासमाला ।

नाम—(१७४९) सिंगी भैवराज ।

ग्रन्थ—फुटकर कवित्त ।

नाम—(१७५०) सुखनिधान।

ग्रन्थ—दोहे और पद।

नाम—(१७५१) सुखशरण।

ग्रन्थ—मीराबाई री परची।

नाम—(१७५२) सुजान।

ग्रन्थ—शिखनख।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७५३) सुथरा नानकसाही।

ग्रन्थ—चौबोला (फुटकर कविता)।

नाम—(१७५४) सुन्दरकली।

ग्रन्थ—बारह बाट।

विवरण—यवनी थीं।

नाम—(१७५५) सुन्दर बन्दीजन, असनी ज़िला फ़तेहपुर।

ग्रन्थ—(१) बारहमासी, (२) रसप्रबोध।

नाम—(१७५६) सुमतगोपाल।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७५७) सूरसिंह।

ग्रन्थ—भजन।

नाम—(१७५८) सेवकराम परमहंस।

ग्रन्थ—(१) परमहंसजी की बाणी, (२) झूलना।

नाम—(१७५९) सेवादास।

ग्रन्थ—(१) सेवादास की वाणी (पृ० २४४) (२) परब्रह्म की बारा-मासी, (३) परमार्थरमैनी।

विवरण—कड़ा-मानिकपुर वासी मलूकदास के शिष्य।

नाम—(१७६०) सोमदेव।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७६१) सोहनलाल।

ग्रन्थ—व्रजगोपिका-विनय।

विवरण—माथुर चौबे।

नाम—(१७६२) संग्रामदास।

ग्रन्थ—संग्रामदासजी की फुटकर कुंडलिया।

नाम—(१७६३) संतोष वैद्य।

ग्रन्थ—विषनाशन।

नाम—(१७६४) स्कन्द गिरि।

ग्रन्थ—रसमोदक।

विवरण—ग्रन्थ देखा।

नाम—(१७६५) हकीम फ़रासीस।

ग्रन्थ—मंजुलीपुरान।

नाम—(१७६६) हनुमानप्रसाद कायस्थ मेहरे।

ग्रन्थ—हनुमाननखशिख।

नाम—(१७६७) हरतालिकाप्रसाद त्रिवेदी।

ग्रन्थ—हनुमान अष्टक।

विवरण—भोजपुरनिवासी।

नाम—(१७६८) हरदयाल।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१७६९) हरराज।

ग्रन्थ—(१) ढोलामारू वार्ता, (२) चौपही।

विवरण—यादौराज की आज्ञा से बनाई।

नाम—(१७७०) हरिचंद बरसाने वाले।

ग्रन्थ—(१) छंद स्वरूपिणी पिंगल, (२) हरिचंद्रशतक।

विवरण—निम्न श्रेणी।

नाम—(१७७१) हरिजीवन।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७७२) हरिभानु।

ग्रन्थ—नंदभानु।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७७३) हरिया।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७७४) हरिराम।

ग्रन्थ—जानकीरामचरित्र नाटक।

विवरण—ललकीत के वंशज।

नाम—(१७७५) हितनंद।

विवरण—यमकयुक्त काव्य है। इनकी गणना साधारण श्रेणी में है।

नाम—(१७७६) हिम्मतराज।

ग्रन्थ—फुटकर कविता।

नाम—(१७७७) हीर सूरि जैनी।

ग्रन्थ—फुटकर ढाल (गीत)।

नाम—(१७७८) हेम चारण।

ग्रन्थ—महाराजा गजसिंह जीरा गुण रूपक।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(१७७९) हेमनाथ।

विवरण—कल्याणसिंह खीरी के यहाँ थे। साधारण श्रेणी के कवि हैं।

नाम—(१७८०) हंसविजय जती।

ग्रन्थ—कल्पसूत्र की टीका।

विवरण—जैन।

नाम—(१७८१) ज्ञानविजय जती।

ग्रन्थ—महवमलयाचरित्र ।

टी।

नाम—(१७८२) ज्ञानीराम।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

हित]

विवरण—लल्लो

नाम—(१७७

विवरण—यमकर

में है।

नाम—(१७७

ग्रन्थ—फुटकर

नाम—(१७५

ग्रन्थ—फुटकर

नाम—(१७

ग्रन्थ—महारा

विवरण—सा

नाम—(१

विवरण—क

व

नाम—(१

ग्रन्थ—क

विवरण—

नाम—(

ग्रन्थ—म

शुद्धि-पत्र।

पंक्ति	लिखित	उचित
५	अध्याय	प्रकरण
१७	उगुलाय	डगुलाय
६	बन्दनवार	वन्दनवार
१८	श्री	श्रीवृन्दावनधाम
२१	वृन्दावन धाम	०
४	सुदेय	सुदेस
९	धरयो	धरयो
१९	१७७८	१८९२
२०	१७९७	१९११
२१	कवि	कवि
१५	सरेस	सरोस
३	द्रुम	द्रुम
१५	हरत	लसत
२२	पलरजि	पलरनि
१८	कुच	गुच
१९	हरिदास	हरिदास
२	बाहन	वदन

नाम—(१७८२) ज्ञानीराम।

ग्रन्थ—स्फुट कविता।

पृष्ठ	पंक्ति	लिखित	उचित
८५४	८	विदित	मिट्य
८६०	८	चढ़ां	चढ़ी
८६५	१८	गीठ	गीठ
९०४	११	मजन	भजन
१००५	१५	आगी	आगीर
१०३१	१३	पायँदी	पनयँदी
१०३७	१६	नाति	नीति